ज़ुआन फालुन

(हिंदी अनुवाद)

ली होंगज़ी

द्वितीय संस्करण, 2022

दाफा के बारे में

(लुनयु[1])

दाफा[2] विधाता का ज्ञान है। यह उस सृष्टि का आधार है जिस पर आकाश, पृथ्वी एवं विश्व का निर्माण हुआ है। इसमें सभी कुछ समाहित है, अत्यंत सूक्ष्म से लेकर वृहत से वृहत्तम तक, यह विश्व के प्रत्येक स्तरों पर भिन्न रूप से अभिव्यक्त होता है। ब्रह्माण्ड की गहराईयों से जहाँ सूक्ष्मतम कण सर्वप्रथम प्रकट होते हैं, इसमें परत दर परत असंख्य कण हैं, जो आकार में सूक्ष्म से विशाल तक होते हुए, उन बाह्य आयामों तक पहुँचते हैं जिनका मानवजाति को ज्ञान है - परमाणुओं, अणुओं, ग्रहों एवं आकाशगंगाओं तक - और उससे आगे, जो और भी विशाल है। विभिन्न आकार के कण विभिन्न आकार के जीवनों तथा विभिन्न आकार के संसारों का निर्माण करते हैं जो ब्रह्माण्ड में सर्वत्र व्यापक हैं। कणों के विभिन्न स्तरों में से किसी में भी जीवों को अगले बड़े स्तर के कण उनके आकाशों में ग्रहों के रूप में प्रतीत होते हैं, एवं यह समस्त स्तरों में सत्य है। विश्व के हर स्तर के जीवों को - यह अनंत तक जाता प्रतीत होता है। यह दाफा था जिसने काल एवं अवकाश, अनेकों जीवों व प्रजातियों, तथा सम्पूर्ण सृष्टि का निर्माण किया; सब जो अस्तित्व में है इसी से है, और कुछ भी इससे बाहर नहीं है। ये सभी, दाफा के गुणों *ज़न, शान* और *रेन*[3] के विभिन्न स्तरों पर साकार रूप हैं।

मनुष्यों के अंतरिक्ष की खोज एवं जीवन के अनुसंधान के तरीके कितने भी उन्नत क्यों न हों, प्राप्त जानकारी विश्व के एक निम्न स्तर पर इस एक आयाम के कुछ हिस्सों तक सीमित है, जहाँ मनुष्यों का वास है। पूर्व-ऐतिहासिक काल की सभ्यताओं के दौरान भी मनुष्यों ने दूसरे ग्रहों की खोज की थी। किन्तु सभी ऊँचाइयां एवं दूरियां हासिल करने पर भी, मानवजाति कभी इस आयाम से बाहर नहीं निकल पाई जहाँ इसका अस्तित्व है। विश्व की सही तस्वीर मानवजाति कभी समझ नहीं पायेगी। यदि मनुष्य को विश्व, काल-

---

[1] *लुनयु* - टिप्पणी

[2] *दाफा* - महान सिद्धांत या महान मार्ग

[3] *ज़न, शान, रेन* - सत्य, करुणा, सहनशीलता

अवकाश, एवं मानव शरीर के रहस्यों को समझना है, उसे एक सच्चे पथ की साधना करनी होगी और अपने स्तर में सुधार करते हुए सच्ची ज्ञानप्राप्ति करनी होगी। साधना से उसका नैतिक चरित्र उन्नत होगा, तथा एक बार वह बुराई से वास्तविक अच्छाई, और दुर्गुण से सदगुण में अंतर करना सीख जाता है, तथा वह मानव स्तर से आगे चला जाता है, वह विश्व की वास्तविकताओं तथा दूसरे आयामों व स्तरों के जीवन को देख और संपर्क कर पायेगा।

जबकि लोग अक्सर दावा करते हैं कि उनके वैज्ञानिक लक्ष्य "जीवन की गुणवत्ता सुधारने" के लिए हैं, यह तकनीकी प्रतिस्पर्धा है जो उनसे यह करवाती है। और ज्यादातर मामलों में वे तभी फलित हुए जब लोगों ने दिव्यता को हटा दिया और नैतिक संहिता का परित्याग कर दिया जो आत्म-नियंत्रण के लिए आवश्यक हैं। इन्ही कारणों से अतीत की सभ्यताओं का कई बार विनाश हुआ। लोगों की खोजें इस भौतिक जगत तक ही सीमित रहती हैं, तथा विधियां ऐसी हैं कि केवल उसी का अध्ययन किया जाता है जिसे मान्यता प्राप्त है। इस बीच, वस्तुएँ जो मानव आयाम में अस्पर्श और अदृश्य हैं, किन्तु जो निष्पक्ष रूप से विद्यमान हैं और सही मायनों में खुद को इस वर्तमान जगत में प्रत्यक्ष करती हैं - जैसे कि अध्यात्म, श्रद्धा, दिव्य वचन, एवं चमत्कार - इनको निषेध माना जाता है, क्योंकि लोगों ने दिव्यता को बहिष्कृत कर दिया है।

यदि मानव जाति अपने चरित्र, आचरण, एवं सोच को नैतिक-मूल्यों पर आधारित करके सुधारने में सक्षम होती है, तो सभ्यता का स्थायित्व, और यहाँ तक कि मानव जगत में फिर से चमत्कारों का होना संभव होगा। अतीत में अनेक बार, इस संसार में ऐसी संस्कृतियों का उद्भव हुआ जो उतनी अलौकिक थीं जितनी मानवीय और लोगों को जीवन व विश्व की सच्ची समझ पर पहुँचने में मदद की। जब लोग दाफा को इस संसार में अभिव्यक्त होने पर उचित सम्मान व श्रद्धा प्रदान करेंगे, तो वे, उनका वर्ग, या उनका राष्ट्र आशीर्वाद या सम्मान प्राप्त करेंगे। यह दाफा था - विश्व का महान पथ - जिसने ब्रह्माण्ड, विश्व, जीवन तथा सारे सृजन का निर्माण किया। कोई जीवन जो दाफा से विमुख हो जाता है, वास्तव में भ्रष्ट है। कोई भी व्यक्ति जो दाफा के साथ समन्वय में हो सकता है सच में एक अच्छा व्यक्ति है, और स्वास्थ्य एवं सुख से पुरस्कृत व धन्य होगा। और कोई साधक जो दाफा के साथ एक हो जाता है वह एक ज्ञानप्राप्त व्यक्ति है - दिव्य।

ली होंगज़ी

मई 24, 2015

विषय सूची

लुनयु i

उपदेश एक

लोगों का उच्चस्तरों की ओर सच्चा मार्गदर्शन 1

विभिन्न स्तरों का फा भिन्न है 6

ज़न-शान-रेन ही अच्छे और बुरे लोगों में भेद करने का एकमात्र मानक है 11

चीगोंग एक पूर्व ऐतिहासिक संस्कृति है 14

चीगोंग साधना अभ्यास है 19

आपका गोंग आपके अभ्यास के साथ क्यों नहीं बढ़ता? 22

फालुन दाफा की विशिष्टताऐं 32

उपदेश दो

दिव्य नेत्र संबंधित विषय 42

दूरदृष्टि की दिव्य सिद्धि 56

पूर्व-ज्ञान व अतीत-ज्ञान की दिव्य सिद्धि 59

पंच तत्वों और त्रिलोक को पार करना 64

इच्छा प्रयास का विषय 70

उपदेश तीन

मैं सभी अभ्यासियों को अपना शिष्य मानता हूँ 82

बुध्द विचारधारा चीगोंग और बुद्धमत 83

केवल एक साधना मार्ग का अभ्यास करना 88

दिव्य सिद्धियाँ और गोंग सामर्थ्य 92

विपरीत साधना और गोंग ऋण 94

प्रेत या पशु द्वारा ग्रसित होना 102

विश्वक भाषा 110

गुरु ने अभ्यासियों को क्या दिया है? 113
शक्ति क्षेत्र 122
फालुन दाफा अभ्यासियों को अभ्यास किस प्रकार फैलाना चाहिए? 123

उपदेश चार

त्याग और प्राप्ति 128
कर्म का रूपांतरण 130
शिनशिंग को बढ़ाना 143
शक्ति-पात 150
दिव्य मार्ग को उचित स्थान पर रखना 155

उपदेश पाँच

फालुन प्रतीक 164
चीमन विचारधारा 167
दुष्ट साधना का अभ्यास 169
स्त्री और पुरुष की युग्म साधना 173
मन और शरीर की साधना 176
फा-शरीर 178
प्रतिमा को प्रतिष्ठापित करना 179
झाड़-फूंक का विषय 188

उपदेश छः

साधना पागलपन 191
साधना में आसुरिक विघ्न 203
स्वयं अपने मन द्वारा आसुरिक विघ्न 211
आपकी मुख्य चेतना प्रबल होनी चाहिए 218
आपका मन उचित होना आवश्यक है 219
युद्ध -कला चीगोंग 227
दिखावे की मानसिकता 233

उपदेश सात

वध का विषय 238

मांस खाने का विषय 243

इर्ष्या 251

रोग उपचार का विषय 258

अस्पताल उपचार और चीगोंग उपचार 264

उपदेश आठ

बीगू 271

ची को चुराना 274

ची एकत्रित करना 277

जो कोई साधना अभ्यास करता है वही गोंग प्राप्त करेगा 281

अलौकिक परिपथ 290

उत्साह का मोहभाव 301

बोल-चाल की साधना 304

उपदेश नौ

चीगोंग और शारीरिक व्यायाम 307

मनो-विचार 310

एक स्पष्ट और स्वच्छ मन 318

जन्मजात गुण 325

ज्ञानप्राप्ति 328

महान जन्मजात गुण वाला व्यक्ति 336

उपदेश एक

लोगों का उच्च स्तरों की ओर सच्चा मार्गदर्शन

मेरे *फा* [1] और साधना अभ्यास की शिक्षाओं के पूरे क्रम के दौरान, मैं समाज और साधकों की ओर उत्तरदायी रहा हूँ। जो नतीजे हमें मिले हैं वे अच्छे रहे हैं, और उनका पूरे समाज पर प्रभाव भी बहुत अच्छा रहा है। कुछ वर्ष पूर्व कई *चीगोंग* [2] गुरु थे जो चीगोंग सिखाते थे। उन्होंने जो कुछ सिखाया वह केवल आरोग्य व स्वस्थ बनने से संबंधित था। निश्चित ही, मैं यह नहीं कह रहा हूँ कि उनके अभ्यास के तरीके अनुचित थे। मैं केवल यह स्पष्ट कर रहा हूँ कि उन्होंने उच्च स्तर पर कुछ नहीं सिखाया। मैं पूरे देश में चीगोंग की स्थिति को भी जानता हूँ। वर्तमान में, मैं अकेला व्यक्ति हूँ जो यहाँ तथा विदेश में चीगोंग को वास्तव में उच्च स्तरों की ओर सिखा रहा है। अभी तक किसी ने ऐसा क्यों नहीं किया यानि चीगोंग को उच्च स्तरों की ओर सिखाना? क्योंकि इसका संबंध बहुत महत्वपूर्ण प्रश्नों, महान ऐतिहासिक कारणों, बहुत से पहलुओं तथा बहुत गंभीर विषयों से है। यह कुछ ऐसा नहीं है जिसे कोई साधारण व्यक्ति सिखा सके, क्योंकि इसमें कई चीगोंग विचारधाराओं की पद्धतियाँ सम्मिलित हैं। विशेषरूप से, हमारे कई अभ्यासी जो आज एक पद्धति का अभ्यास करते हैं तो कल किसी और का, उन्होंने अपने शरीरों को पहले ही खराब कर लिया है। उनकी साधना असफल होनी निश्चित है। जबकि कुछ लोग साधना के मुख्य मार्ग पर आगे बढ़ रहे हैं, ये लोग बगल के मार्ग पर हैं। यदि वे एक पद्धति से अभ्यास करते हैं, तो दूसरी बाधा उत्पन्न करती है। यदि वे दूसरी पद्धति अपनाते हैं, तो पहली पद्धति बाधा उत्पन्न करती है। उनके साथ सभी कुछ दखल कर रहा है, और वे साधना अभ्यास में सफल नहीं हो सकते।

हम इन सभी समस्याओं को सुलझाएंगे और अच्छे अंश को रखते हुए तथा बुरे अंश को हटा कर, सुनिश्चित करेंगे कि आप इसके पश्चात साधना अभ्यास कर सकें। किन्तु, उसके लिए आपको यहाँ सच्चाई से यह *दाफा* [3] सीखना होगा। यदि आप अनेक प्रकार के मोहभावों से प्रेरित हैं तथा दिव्य सिद्धियाँ प्राप्त करने आए हैं, रोगों का उपचार कराने, कुछ सिध्दांत सुनने या किसी दुर्भावना से आए हैं, तो यह आपके लिए कार्य

नहीं करेगा। जैसा मैंने उल्लेख किया है, यह इसलिए क्योंकि मैं अकेला व्यक्ति हूँ जो ऐसा कर रहा है। इस प्रकार के बहुत से अवसर नहीं होते, और मैं इस प्रकार हमेशा नहीं सिखाऊँगा। मेरे विचार से जो व्यक्तिगत रूप से मेरे व्याख्यान सुन सकते हैं, मैं सच्चाई से कहता हूँ, आप भविष्य में समझेंगे कि यह समयावधि अत्यंत बहुमूल्य है। निश्चित ही हम पूर्व निर्धारित संबंधों में विश्वास करते हैं। यहां सभी पूर्व निर्धारित संबंधों के कारण ही बैठे हैं।

आप सब यह सोचें : चीगोंग को उच्चस्तरों की ओर सिखाने का क्या तात्पर्य है? क्या यह मानव जाति का उद्धार करना नहीं है? मानव जाति के उद्धार से तात्पर्य है कि आप वास्तव में साधना अभ्यास करेंगे, न केवल रोग उपचार करना व स्वस्थ रहना। इसीलिए, सच्चे साधना अभ्यास में अभ्यासियों को ऊँचे *शिनशिंग* की आवश्यकता होती है। सभी यहाँ इस दाफा को सीखने के लिए आए हैं, इसलिए यह आवश्यक है कि आप एक सच्चे अभ्यासी की भांति आचरण करें, और आपको मोहभाव त्यागने होंगे। यदि आप इस अभ्यास तथा इस दाफा को विभिन्न उद्देश्यों से प्रेरित होकर सीखने आये हैं तो आप कुछ नहीं सीखेंगे। सच कहा जाए तो, एक अभ्यासी के लिए पूरी साधना पद्धति का अर्थ ही है निरन्तर मानव मोह बधंनों का त्याग करते जाना। एक साधारण मानव समाज में, लोग थोड़े से निजी लाभ के लिए एक दूसरे से प्रतिस्पर्धा करते हैं, छलते हैं, और हानि पहुँचाते हैं। इन सभी मानसिकताओं को छोड़ना होगा। मुख्यत: वे लोग जो आज अभ्यास सीख रहे हैं, उन्हें ये मानसिकताऐं और अधिक त्यागनी चाहिऐं।

मैं यहाँ रोगों के उपचार के बारे में बात नहीं करूँगा, और न ही हम रोगों का उपचार करेंगे। किन्तु एक सच्चे अभ्यासी होते हुए, रोगग्रस्त शरीर के साथ आप साधना अभ्यास नहीं कर सकते। मैं आपके शरीर को शुद्ध करूँगा। शरीर का शुद्धिकरण केवल उन्हीं के लिए किया जाएगा जो वास्तव में अभ्यास और फा सीखने आए हैं। हमारे लिए यह महत्वपूर्ण है : यदि आप रोग से मोह या चिन्ता नहीं छोड़ सकते, तो हम कुछ नहीं कर सकते तथा आपकी मदद करने में असमर्थ रहेंगे। ऐसा क्यों है? यह इसलिए क्योंकि विश्व में ऐसा ही नियम है : बुद्ध विचारधारा के अनुसार, साधारण मानवीय कार्यकलापों में सभी का पूर्व निर्धारित संबंध है। जन्म, बुढ़ापा, रोग तथा मृत्यु का अस्तित्व इस प्रकार केवल साधारण व्यक्तियों के लिए है। विगत में किये अनुचित कार्यों द्वारा उत्पन्न कर्म के परिणाम स्वरुप मनुष्य रोग अथवा कष्ट ग्रहण करता है। दु:ख भोगना कार्मिक

ऋण का भुगतान करना है, और इसलिए कोई इसे सहज ही नहीं बदल सकता। इसे बदलने का अर्थ है कि किसी व्यक्ति को ऋण में होते हुए भी ऋण न चुकाना पड़े, और यह मन चाहे रूप से नहीं किया जा सकता। वर्ना यह एक अनुचित कार्य करने जैसा ही है।

कुछ लोग सोचते हैं कि रोगियों का उपचार करना, उनके रोग ठीक करना व उनके स्वास्थ्य को सुधारना अच्छे कार्य हैं। मेरे विचार में, उन्होंने रोग को वास्तव में ठीक नहीं किया है। उन्हें हटाने के स्थान पर, उन्होंने रोग को या तो विलंबित कर दिया है या रुपांतरित। ऐसे कष्टों को वास्तव में दूर करने के लिए, कर्म को हटाना आवश्यक है। यदि कोई वास्तव में रोग ठीक कर सके तथा पूर्णतया इस कर्म को हटा सके, तो उसका स्तर बहुत ऊँचा होना आवश्यक है। आपने अब तक एक तथ्य देख लिया होगा: साधारण मानव समाज के नियमों का सहज ही उल्लंघन नहीं किया जा सकता। साधना अभ्यास के दौरान, एक अभ्यासी अपने करुणा भाववश, कुछ अच्छे कार्य कर सकता है जैसे लोगों के रोगों को ठीक करने में मदद करना या उन्हें स्वस्थ करना - इनकी अनुमति है। किन्तु वह लोगों को पूर्णतया रोगमुक्त नहीं कर सकता। यदि किसी साधारण व्यक्ति के रोग के कारण को वास्तव में हटा दिया जाऐ, तो वह व्यक्ति जो अभ्यासी नहीं है रोगमुक्त हो जाएगा। एक बार यहां से बाहर कदम रखने के पश्चात, वह एक साधारण व्यक्ति ही बना रहेगा। वह अभी भी साधारण व्यक्तियों की तरह अपने हित के लिए प्रतिस्पर्धा करेगा। उसके कर्म सहज ही कैसे हटाए जा सकते हैं। यह पूर्णतया निषेध है।

तब किसी अभ्यासी के लिए यह कैसे किया जा सकता है? यह इसलिए क्योंकि एक अभ्यासी अत्यंत बहुमूल्य है, क्योंकि वह साधना अभ्यास करना चाहता है। इसलिए, इस विचार का विकसित होना सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। बुद्धमत में बुद्ध-स्वभाव के बारे में कहा जाता है। जब किसी व्यक्ति का बुद्ध-स्वभाव उभरता है तो ज्ञानप्राप्त व्यक्ति उसकी मदद कर पाते हैं। इसका क्या अर्थ है? यदि आप मुझसे पूछें, क्योंकि मैं उच्चस्तरों पर अभ्यास सिखा रहा हूँ, इसमें उच्च स्तरों के नियमों तथा बहुत महत्वपूर्ण विषयों का समावेश होता है। हमने देखा है इस विश्व में मानवीय जीवन की उत्पत्ति साधारण मानव समाज में नहीं हुई है; वास्तविक जीवन की रचना इस विश्व के अन्तरिक्ष में हुई है। क्योंकि इस विश्व में विभिन्न प्रकार का पदार्थ बहुतायत में है, यह पदार्थ पारस्परिक क्रिया द्वारा, जीवन की रचना कर सकता है। दूसरे शब्दों में एक व्यक्ति का प्रारम्भिक जीवन विश्व से आया है। विश्व का अन्तरिक्ष प्रारम्भ से ही करुणामयी है

और इसमें ज़न-शान-रेन की प्रकृति का समावेश है। उत्पत्ति के समय, प्राणी विश्व की प्रकृति से आत्मसात होता है। किन्तु जैसे प्राणियों की संख्या बढ़ती है, सामाजिक संबंधों का एक प्रारूप विकसित होता है जिसमें कुछ प्राणियों में स्वार्थ उत्पन्न हो सकता है और क्रमश: उनका स्तर निम्न कर दिया जाता है। यदि वे इस स्तर पर भी नहीं रह सकते तो वे और नीचे जाएंगे। उस स्तर पर भी यदि वे अच्छे नहीं रहते तो वे वहाँ भी स्थायी नहीं रह सकते। उनका उतार निरन्तर होता रहेगा, जब तक अन्त में वे इस मानवीय स्तर पर न आ जाऐं।

संपूर्ण मानवीय समाज एक ही स्तर पर है। दिव्य सिद्धियों अथवा महान ज्ञानप्राप्त प्राणियों के दृष्टिकोण से, इन प्राणियों को इस स्तर तक गिरने पर नष्ट हो जाना चाहिए था। किन्तु, महान ज्ञानप्राप्त प्राणियों ने अपने करूणामयी स्वभाव से, उन्हें एक अवसर और दिया तथा इस विशिष्ट वातावरण और अनोखे आयाम का निर्माण किया। इस आयाम के सभी प्राणी विश्व के दूसरे आयामों से भिन्न हैं। इस आयाम के प्राणी न तो दूसरे आयामों के प्राणियों को देख सकते हैं और न ही विश्व का सत्य जान सकते हैं। इस प्रकार, ये मानव वास्तव में एक भूलभुलैया में उलझे हैं। रोग उपचार करने या कष्टों और कर्म से मुक्ति के लिए, इन लोगों को साधना करनी होगी और अपनी मूल प्रकृति की ओर लौटना होगा। यही सभी विभिन्न साधना पद्धतियों का मत है। हमें अपनी मूल, सच्ची प्रकृति की ओर लौटना चाहिए, यही मानव होने का सही अभिप्राय है। इसलिए, जब कोई व्यक्ति साधना अभ्यास करना चाहता है, यह माना जाता है कि उसके बुद्ध-स्वभाव का उदभव हो गया है। इस प्रकार का विचार अत्यन्त मूल्यवान है, क्योंकि यह व्यक्ति अपनी मूल प्रकृति की ओर जाना चाहता है और साधारण मानव स्तर से उठना चाहता है।

शायद सभी ने बुद्धमत का यह कथन सुना होगा : "जब किसी के बुद्ध-स्वभाव का उदभव होता है, यह "दस दिशाओं वाले जगत को हिला देगा।" [4] जो कोई भी यह देखेगा वह इस व्यक्ति की बिना शर्त मदद करेगा। मानवजाति का उद्धार करने में, बुद्ध विचारधारा कोई शर्त नहीं रखती और न ही लाभ देखती है, यह बिना शर्त मदद करती है। इस प्रकार, हम अभ्यासियों के लिए कई प्रयोजन कर सकते हैं। किन्तु एक सांसारिक व्यक्ति के लिए जो केवल एक साधारण व्यक्ति बना रहना चाहता है, यह प्रभावी नहीं होगा। कुछ लोग सोचते हैं, "जब मेरा रोग ठीक हो जाएगा तब मैं साधना अभ्यास करूँगा।" साधना अभ्यास के लिए कोई शर्त नहीं होती, और यदि आप चाहते हैं तभी

आपको साधना अभ्यास करना चाहिए। तो भी, कुछ लोगों के शरीर पर रोग होते हैं, और कुछ लोगों के शरीर पर अव्यवस्थित संदेश होते हैं। कुछ लोगों ने कभी चीगोंग का अभ्यास नहीं किया। ऐसे भी लोग हैं जो वर्षों से अभ्यास कर रहे हैं और अभी भी *ची* [5] स्तर पर ही हैं, किन्तु साधना में कोई प्रगति नहीं की है।

इसके लिए क्या करना होगा? हम उनके शरीरों को शुद्ध करेंगे और उन्हें उच्च स्तरों पर साधना के योग्य बनाएंगे। साधना के निम्नतम स्तर पर एक स्थिति परिवर्तन होता है और यह है कि आपके शरीर को पूरी तरह शुद्ध किया जाए। आप के मन से सभी बुरे पदार्थ, आपके शरीर को घेरे कर्म क्षेत्र, और आपके शरीर को रोगी बनाने वाले तत्वों का शोधन किया जाएगा। यदि उनका शोधन नहीं होता है, तो आप इस अशुद्ध, कलुषित शरीर और मैले मन के साथ, कैसे उच्च-स्तर की ओर साधना अभ्यास कर सकते हैं? हम यहाँ ची का अभ्यास नहीं करते। आपको इतने निम्न स्तर पर अभ्यास की आवश्यकता नहीं है, हम आपको इससे आगे बढ़ा देंगे, जिससे आपका शरीर रोग मुक्त स्तर पर पहुँच जाए। इस बीच, हम आपके शरीर में पूर्वनिर्मित यन्त्रों की एक प्रणाली की स्थापना करेंगे जो निम्न स्तर पर नींव डालने के लिए आवश्यक है। इस प्रकार, आप एक अति उच्च स्तर पर साधना अभ्यास करेंगे।

साधना अभ्यास की मान्यताओं के अनुसार यदि ची को सम्मिलित किया जाए तो इसके तीन स्तर होते हैं। सच्चे साधना अभ्यास में, हालांकि कुल मिलाकर दो मुख्य स्तर हैं (ची अभ्यास को हटाकर)। एक है त्रिलोक-फा[6] *(शि-ज्येन-फा)* साधना अभ्यास, जबकि दूसरा है पर-त्रिलोक-फा *(चू-शि-ज्येन-फा)* साधना अभ्यास। त्रिलोक-फा और पर-त्रिलोक-फा साधना पद्धतियाँ, पूजा स्थलों की "लोक" और "पर-लोक" से भिन्न हैं जो केवल सैद्धांतिक शब्द हैं। हमारी पद्धति साधना अभ्यास द्वारा दो मुख्य स्तरों पर मानव शरीर के सच्चे रुपांतरण की है। क्योंकि त्रिलोक-फा साधना अभ्यास के दौरान व्यक्ति के शरीर का निरंतर शुद्धिकरण किया जाएगा, जब वह त्रिलोक-फा के उच्चतम स्तर पर पहुँचता है तो शरीर उच्च शक्ति तत्वों से पूर्णतया प्रतिस्थापित किया जा चुका होगा। पर-त्रिलोक-फा साधना अभ्यास मूलत: बुद्ध शरीर की साधना है। वह शरीर उच्च शक्ति तत्वों से बना होता है, और सभी दिव्य शक्तियाँ पुन: विकसित की जाएंगी। ये दो मुख्य स्तर हैं जिनका हम उल्लेख करते हैं।

हम पूर्वनियोजित संबधों में विश्वास करते हैं। मैं ऐसा कार्य यहाँ बैठे सभी व्यक्तियों के लिए कर सकता हूँ। अभी यहाँ दो हजार से कुछ अधिक व्यक्ति हैं। मैं यह कई हजार या उससे भी अधिक व्यक्तियों के लिए, यहाँ तक कि दस हजार से भी अधिक व्यक्तियों के लिए कर सकता हूँ। कहने का तात्पर्य है, आपको निम्न स्तर पर अभ्यास करने की आवश्यकता नहीं है। आपके शरीर के शुद्धिकरण और आपका उत्थान करने के साथ, मैं आपके शरीर में एक पूर्ण साधना अभ्यास प्रणाली की स्थापना करूँगा। तुरंत ही आप उच्च स्तरों पर साधना अभ्यास करेंगे। किन्तु यह केवल अभ्यासियों के लिए किया जाएगा जो सच्चाई से साधना अभ्यास के लिए आए हैं, आपके केवल यहां बैठने का अर्थ नहीं है कि आप अभ्यासी हैं। ये वस्तुऐं तभी उपलब्ध कराई जाऐंगी जब तक आप अपनी विचारधारा में मूल रुप से बदलाव नहीं लाते, और ये केवल इन्ही तक सीमित नहीं है। बाद में आप समझेंगे मैने प्रत्येक को क्या दिया है। हम यहां रोगों को ठीक करने की भी बात नहीं करते। बल्कि हम अभ्यासियों के शरीरों को पूर्ण रूप से व्यवस्थित करने की बात करते हैं जिससे आप साधना अभ्यास के लिए समर्थ हो सकें। एक अस्वस्थ शरीर के साथ आप *गोंग* [7] बिल्कुल विकसित नहीं कर सकते। इसलिए, आप मेरे पास रोगों के निदान के लिए न आऐं, और न ही मैं ऐसा कुछ करुंगा। मेरा जन साधारण में आने का मुख्य कारण लोगों का उच्च स्तरों की ओर मार्गदर्शन है, लोगों का उच्चस्तरों की ओर सच्चा मार्गदर्शन।

विभिन्न स्तरों का फा भिन्न है

अतीत में अनेक चीगोंग गुरुओं का मत था कि चीगोंग का तथाकथित आंरभिक स्तर, मध्यम स्तर व उच्च स्तर होता है। वह सभी ची से संबधित था और केवल ची के अभ्यास के स्तर तक सीमित था, किन्तु यह भी आंरभिक स्तर, मध्यम स्तर और उच्च स्तर चीगोंग में वर्गीकृत किया गया था। वास्तविक उच्च स्तर विषयों के संबंध में हमारे अधिकांश चीगोंग अभ्यासियों के मस्तिष्क शून्य थे, क्योंकि वे उनके बारे में कुछ भी नहीं जानते थे। अब से आगे, जो कुछ भी हम कहेंगे वह उच्च स्तरों का फा होगा। इसके साथ ही, मैं चीगोंग अभ्यास की ख्याति को पूर्वस्थिति में लाऊँगा। अपने उपदेशों में मैं साधक समुदाय में चल रही कुछ अस्वस्थ घटनाओं पर प्रकाश डालूंगा। मैं यह भी बताऊँगा कि हमें इन घटनाओं के बारे में कैसा व्यवहार व दृष्टिकोण

रखना चाहिए। साथ ही, किसी साधना प्रणाली तथा उच्चस्तरीय फा को सिखाना अनेक पहलुओं और बहुत महत्वपूर्ण विषयों को सम्मिलित करता है, जिनमें से कुछ तो अत्यधिक गम्भीर हैं; मैं इन पर भी प्रकाश डालना चाहूँगा। हमारे साधारण मानव समुदाय में, विशेष रूप से साधकों के समुदाय में, कुछ विघ्न दूसरे आयामों से आते हैं। मैं इसे भी सार्वजनिक करना चाहूँगा। साथ ही, मैं अभ्यासियों के लिए इन समस्याओं का निदान करूंगा। यदि इन समस्याओं को हल नहीं किया जाता है तो आप साधना अभ्यास करने में असमर्थ रहेंगे। इन विषयों के आधारभूत निदान के लिए, हमें सभी को सच्चा अभ्यासी मानना होगा। निश्चित ही, आपकी विचारधारा में एकाएक बदलाव आना सुगम नहीं है; आने वाले व्याख्यानों के दौरान आप अपने विचार क्रमबद्ध रुपांतरित करेंगे। मुझे विश्वास है कि सभी सुनते समय एकाग्रचित रहेंगे। मेरा साधना अभ्यास सिखाने का तरीका दूसरों से भिन्न है। कुछ लोग इसे सिखाने के लिए अपनी अभ्यास पद्धतियों के सिध्दातों के बारे में कुछ संक्षिप्त चर्चा करते हैं। इसके पश्चात, वे अपने संदेश आप से जोड़ते हैं और आपको व्यायामों का एक संग्रह सिखाते हैं, और केवल इतना ही। लोग अब तक इस प्रकार अभ्यास सिखाने के तरीके से अभ्यस्त रहे हैं।

सच्चे रुप से साधना प्रणाली सिखाने के लिए फा या ताओ सिखाने की आवश्यकता होती है। दस व्याख्यानों में मैं सभी उच्चस्तरीय नियमों की जानकारी दूंगा जिससे आप साधना अभ्यास कर सकें। अन्यथा, आप साधना अभ्यास कर ही नहीं सकते। जो कुछ और लोगों ने सिखाया है वह आरोग्य और स्वस्थ रहने के स्तर पर है। यदि आप उच्च स्तरों की ओर साधना अभ्यास करना चाहते हैं तो उच्चस्तरीय फा के मार्गदर्शन के बिना आप साधना में सफल नहीं हो सकते। यह स्कूल में जाने जैसा है : यदि आप कॉलेज में प्राथमिक स्कूल की पुस्तकें ले जाऐं, तो आप एक प्राथमिक स्कूल के विद्यार्थी ही रहेंगे। कुछ लोग सोचते हैं कि उन्होने कई पद्धतियां सीख ली हैं, जैसे यह पद्धति या वह पद्धति, और उनके पास प्रमाणपत्रों का पूरा ढेर है, किन्तु उनका गोंग अभी भी विकसित नहीं हुआ है। उनके विचार में यही चीगोंग के मूल तत्व हैं और चीगोंग इन्हीं तक सीमित है। नहीं, वे केवल चीगोंग के आवरण स्तर मात्र हैं और वह भी निम्नतम स्तर पर। चीगोंग इन्हीं वस्तुओं तक सीमित नहीं है, क्योंकि यह साधना अभ्यास है और साथ ही यह बहुत विशाल और महान है। इसके अलावा, विभिन्न स्तरों पर भिन्न फा का अस्तित्व है। इस प्रकार, यह ची की उन पद्धतियों से भिन्न है

जिन्हें हम अभी जानते हैं; वे वही रहेंगी चाहे आप जितना भी अधिक सीख लें। उदाहरण के लिए, हालांकि आपने ब्रिटेन की प्राथमिक स्कूल पुस्तकें, अमेरिका की प्राथमिक स्कूल पुस्तकें, जापान की प्राथमिक स्कूल पुस्तकें और चीन की प्राथमिक स्कूल पुस्तकें पढ़ी हैं, आप एक प्राथमिक स्कूल के विद्यार्थी ही रहेंगे। जितनी अधिक निम्न स्तर चीगोंग की शिक्षा आप लेते हैं और जितना अधिक आप उनसे ग्रहण करते हैं, उतनी ही क्षति आप स्वयं को पहुंचाते हैं- आपका शरीर पहले से ही खराब हो चुका है।

मैं एक और विषय को महत्व देना चाहूँगा : हमारे साधना अभ्यास में साधना पद्धति और फा दोनो को सिखाने की आवश्यकता होती है। मठों के कुछ भिक्षुओं, विशेष रूप से जो ज़ेन बुद्धमत से हैं, की धारणा भिन्न हो सकती है। यदि उन्हें पता चले कि फा सिखाया जा रहा है, वे सुनने से इन्कार कर देंगे। ऐसा क्यों है? ज़ेन बुद्धमत का विश्वास है कि फा सिखाया नहीं जाना चाहिए, फा यदि सिखाया जाए तो फा नहीं है, और सिखाये जाने योग्य कोई फा नहीं है; व्यक्ति केवल हृदय और मन द्वारा ही कुछ सीख सकता है। परिणामस्वरुप, ज़ेन बुद्धमत आज तक कोई फा नहीं सिखा सका है। ज़ेन बुद्धमत के वरिष्ठ आचार्य बोधिधर्म ने इन बातों की शिक्षा शाक्यमुनी[8] के एक उल्लेख के आधार पर दी जिसमें उन्होंने कहा था "कोई धर्म[9] निश्चित नहीं है।" उन्होंने शाक्यमुनी के इस उल्लेख के आधार पर ज़ेन बुद्धमत की स्थापना की थी। हम इस साधना मार्ग को "बैल के सींग में खोदने"[10] की संज्ञा देते हैं। इसे बैल के सींग में खोदना क्यों कहा जाता है? जब बोधिधर्म ने इसमें खुदाई आरम्भ की तो उन्होने पाया कि यह बहुत खुला है। जब धर्म आचार्य II ने खोदा तो उन्हें बहुत खुला नहीं लगा। धर्म आचार्य III के समय तक यह किसी प्रकार निकलने योग्य था, किन्तु धर्म आचार्य IV के लिए यह बहुत संकरा था। धर्म आचार्य V को आगे जाने के लिए लगभग कोई स्थान नहीं था। धर्म आचार्य VI हुइनेंग के समय तक, यह एक बंद मार्ग तक पहुँच चुका था तथा और आगे नहीं जा सकता था। यदि आज आप किसी ज़ेन आचार्य से धर्म सीखने जाऐं तो आपको कोई प्रश्न नहीं पूछने चाहियें। यदि आपने कोई प्रश्न किया तो वह पीछे घूमकर आपके सर पर एक छड़ी मारेगा, जिसे "छड़ी चेतावनी" कहा जाता है। इसका अर्थ है कि आपको खोजबीन नहीं करनी चाहिए, और आपको स्वयं ज्ञान प्राप्त करना चाहिए। आप कहेंगे, "मैं सीखने आया हूँ क्योंकि मैं कुछ नहीं जानता। मैं किस बारे में ज्ञान प्राप्त करुं? आप मुझे छड़ी से क्यों मारते हैं?" इसका अर्थ है ज़ेन

बुद्धमत बैल के सींग के अन्त तक पहुँच गया है और अब और सिखाने के लिए कुछ शेष नहीं है। बोधिधर्म ने कहा था कि उनकी शिक्षा केवल छ: पीढ़ियों तक हस्तांतरित हो सकती है, जिसके बाद इसका कोई उपयोग नहीं रहेगा। कई सौ वर्ष बीत चुके हैं। किन्तु आज भी ऐसे लोग हैं, जो ज़ेन बुद्धमत की विचारधाराओं को जकड़ कर बैठे हैं। शाक्यमुनि की घोषणा "कोई धर्म निश्चित नहीं है" का क्या अर्थ था? उनके बाद कई भिक्षु, शाक्यमुनि के स्तर तक, उनकी सोच की विचारधारा तक, उनके सिखाए धर्म के वास्तविक अर्थ तक, अथवा जो उन्होंने कहा उसके वास्तविक अर्थ तक, ज्ञान प्राप्त नहीं कर पाए। इसलिए, बाद में लोगों ने इसे इस प्रकार या उस प्रकार, बहुत उलझी हुई व्याख्या के साथ भाषातंर किया। उन्होंने सोचा कि "कोई धर्म निश्चित नहीं है" का अर्थ है कि यह किसी को सिखाना नहीं चाहिए और यदि यह सिखाया गया तो यह धर्म नहीं होगा। वास्तव में, उसका यह अर्थ नहीं है। जब बोधि वृक्ष के नीचे शाक्यमुनि को ज्ञान प्राप्त हुआ था, वे सीधे ही तथागत[11] स्तर पर नहीं पहुँच गये थे। वे भी, अपने उनचास वर्षों के धर्म सिखाने के दौरान स्वयं को निरंतर उन्नत करते रहे। जब भी वे स्वयं को और अधिक ऊँचे स्तर तक उन्नत करते, वे पीछे देखते व अनुभव करते कि जो धर्म उन्होंने बताया था, वह गलत था। जब वे फिर उन्नति करते, वे पाते कि, अभी जो धर्म उन्होंने बताया वह फिर गलत था। और आगे उन्नति करने के बाद वे फिर अनुभव करते कि, अभी जो धर्म उन्होंने बताया वह फिर गलत था। उन्होंने निरंतर उनचास वर्षों तक इस प्रकार उन्नति की। जब भी वे और अधिक ऊँचे स्तर पर पहुंचते, वे पाते कि, जो धर्म उन्होंने पहले बताया था, वह अपने अर्थ में अति निम्न स्तर का था। उन्होंने यह भी पाया कि प्रत्येक स्तर का धर्म, सदैव उस स्तर के धर्म का प्रर्दशित रूप है; कि सभी स्तरों पर धर्म है, तथा उनमें से कोई भी विश्व का संपूर्ण सत्य नहीं है। उच्च स्तर का धर्म, निम्न स्तर के धर्मों की तुलना में विश्व की प्रकृति के अधिक पास है। इसलिए, उन्होंने कहा - "कोई धर्म निश्चित नहीं है।"

अन्त में शाक्यमुनी ने यह भी घोषणा की, "मैने अपने जीवनकाल में कोई धर्म नहीं सिखाया।" ज़ेन बुद्धमत ने इसे भी गलत समझा और अर्थ लगाया कि सिखाने के लिए कोई धर्म है ही नहीं। अपने अंतिम वर्षों में, शाक्यमुनी तथागत स्तर पर पहुँच चुके थे। उन्होंने क्यों कहा कि उन्होनें कोई धर्म नहीं सिखाया? उन्होंने वास्तव में किस विषय को उठाया? वे समझा रहे थे, "मेरे तथागत स्तर पर भी मैने न तो विश्व के परम सत्य को देखा है न ही यह कि परम धर्म क्या है।" इस प्रकार, बाद के लोगों के लिए उनका कहना

था कि वे उनके शब्दों को निश्चित और अपरिवर्तनीय सत्य न माने। अन्यथा इससे तथागत और उससे निम्न स्तर के व्यक्ति बाधित होंगे और वे उच्च स्तरों की ओर स्तर भेदन नहीं कर सकेंगे। बाद में, लोग उनके इस वाक्य का वास्तविक अर्थ नहीं समझ पाए और सोचा कि धर्म यदि सिखाया जाए तो धर्म नहीं है- उन्होंने इसे इस प्रकार समझा। वास्तव में, शाक्यमुनी कह रहे थे कि विभिन्न स्तरों का धर्म भिन्न है, और यह कि प्रत्येक स्तर का धर्म विश्व का परम सत्य नहीं है। फिर भी एक स्तर का धर्म उस स्तर के पथप्रदर्शक की भूमिका निभाता है। वास्तव में, वे इस नियम की बात कर रहे थे।

अतीत में, कई लोग, विशेषकर ज़ेन बुद्धमत से संबंधित, ऐसी अवधारणा से ग्रस्त थे और अत्यंत संकुचित दृष्टिकोण रखते थे। आप कैसे बिना शिक्षा और मार्गदर्शन के स्वयं अभ्यास और साधना कर सकते हैं? बुद्धमत में कई बौद्ध कहानियां हैं। कुछ लोगों ने उस व्यक्ति के बारे में पढ़ा होगा जो दिव्यलोक गया था। दिव्यलोक में पहुंचने पर, उसने पाया कि वज्र सूत्र[12] का प्रत्येक शब्द वहां पर यहां निम्न स्तर से भिन्न था, और उसका अर्थ संपूर्ण भिन्न था। यह वज्र सूत्र कैसे साधारण मानवीय जगत के वज्र सूत्र से भिन्न हो सकता था? ऐसे भी लोग हैं जो कहते हैं: सुखावती दिव्यलोक में धर्म ग्रंथ यहां निम्न स्तर से संपूर्ण भिन्न हैं, और यह लेशमात्र भी यहाँ जैसे नहीं हैं। न केवल शब्द भिन्न हैं बल्कि आशय और भावार्थ सभी भिन्न हैं, जैसे वे बदल गए हों। वास्तव में, यह इसलिए है क्योंकि समान फा के विभिन्न स्तरों पर भिन्न रुपांतरण और साकार रुप हैं, और यह अभ्यासियों के लिए विभिन्न स्तरों पर विभिन्न पथप्रदर्शकों की भूमिका प्रदान कर सकता है।

जैसे ज्ञातव्य है कि बुद्धमत में एक पुस्तिका है जिसका नाम सुखावती दिव्यलोक की एक यात्रा है। इसमें लिखा है कि एक बार एक भिक्षु ध्यान अवस्था में बैठा था, उसकी मूल आत्मा[13] *(युआनशन)* सुखावती दिव्यलोक तक पहुंची और वहां के दृश्य को देखा। उसने वहां एक दिन व्यतीत किया; जब वह मानव जगत में वापस आया, छ: वर्ष बीत चुके थे। क्या उसने वह देखा? उसने देखा, किन्तु जो उसने देखा वह उसकी वास्तविक अवस्था नहीं थी। क्यों? क्योंकि उसका स्तर पर्याप्त ऊँचा नहीं था, और जो उसे दिखाया गया वह बुद्ध फा की उसके अपने स्तर पर अभिव्यक्ति थी। क्योंकि उस प्रकार का दिव्यलोक फा द्वारा रचा गया एक दर्शन होता है, वह उसकी वास्तविक स्थिति नहीं देख पाया। यही अर्थ है जब मैं "कोई धर्म निश्चित नहीं है" के

बारे में बताता हूँ।

ज़न-शान-रेन ही अच्छे और बुरे लोगों में भेद करने का एकमात्र मानक है

बुद्धमत में लोग वाद-विवाद करते रहे हैं कि बुद्ध फा क्या है। ऐसे भी लोग हैं जो मानते हैं कि बुद्धमत में उल्लिखित धर्म ही संपूर्ण बुद्ध फा है। वास्तव में, यह नहीं है। शाक्यमुनी ने जिस धर्म की दो हजार पांच सौ वर्ष पूर्व व्याख्या की थी वह एक बहुत निम्न स्तर पर केवल साधारण लोगों के लिए था; यह उन को सिखाया गया था जो अभी प्राचीन सभ्यता से विकसित हुए थे और मन से अति सरल थे। आज धर्म विनाश का काल[14] है जिसका उन्होंने उल्लेख किया था। अब लोग उस धर्म से साधना अभ्यास नहीं कर सकते। धर्म विनाश काल में, मठों के भिक्षुओं के लिए भी स्वयं को बचाना कठिन है, दूसरों का उद्धार करने की बात तो छोड़ दीजिए। जो धर्म शाक्यमुनी ने उस समय सिखाया था, उसमें इस स्थिति को घ्यान में रखा था, और उन्होंने बुद्ध फा जो अपने स्तर पर समझा था उसे पूर्ण रुप से व्यक्त नहीं किया था। इसे सदा के लिए अपरिवर्तनीय रखना भी असंभव है।

जैसे समुदाय प्रगति करता है, मनुष्य का मन और अधिक परिष्कृत होता जाता है, जिससे लोगों के लिए इस तरह साधना अभ्यास करना सरल नहीं रह जाता। बुद्धमत का धर्म पूर्ण बुद्ध फा का वर्णन नहीं हो सकता, और यह बुद्ध फा का संक्षिप्त अंश मात्र ही है। बुद्ध विचारधारा में कई और महान साधना मार्ग हैं जो लोगों में क्रमदर चले आ रहे हैं। संपूर्ण इतिहासकाल में वे अकेले एक ही शिष्य को हस्तातंरित होते रहे हैं। विभिन्न स्तरों का फा भिन्न है और विभिन्न आयामों का फा भिन्न है, जो सभी बुद्ध फा के विभिन्न आयामों में तथा विभिन्न स्तरों पर अनेक रूप हैं। शाक्यमुनी ने यह भी उल्लेख किया था कि बुद्धत्व प्राप्त करने के चौरासी हजार साधना मार्ग हैं। बुद्धमत में, हालांकि, केवल दस से कुछ अधिक मार्ग ही सम्मिलित हैं, जैसे ज़ेन बुद्धमत, शुद्धावास, त्येनताइ, ह्वेयान और तन्त्रविद्या; ये सब बुद्ध फा का संपूर्ण प्रतिनिधित्व नहीं कर सकते। शाक्यमुनी ने स्वयं भी अपना संपूर्ण धर्म व्यक्त नहीं किया था; उन्होंने उसका केवल एक अंश ही सिखाया था जो उस समय के लोगों की समझ के उपयुक्त था।

तो फिर बुद्ध फा क्या है। इस विश्व की सबसे मूल प्रकृति, ज़न-शान-रेन, बुद्ध फा की उच्चतम अभिव्यक्ति है। यह सबसे आधारभूत बुद्ध फा है। बुद्ध फा विभिन्न स्तरों पर विभिन्न रुपों में साकार होता है और विभिन्न स्तरों पर विभिन्न पथप्रदर्शकों की भूमिका धारण करता है। जितना निम्न स्तर, उतना ही अधिक जटिल। यह प्रकृति, ज़न-शान-रेन, वायु, पत्थर, लकड़ी, मिट्टी, लोहे व स्टील और मानव शरीर के सूक्ष्म कणों में तथा सभी पदार्थों में उपस्थित है। प्राचीन समय में यह कहा जाता था कि विश्व की समस्त वस्तुऐं व पदार्थ पंचतत्वों[15] से बने हैं; उनमें भी इस प्रकृति ज़न-शान-रेन का समावेश है। एक अभ्यासी बुद्ध फा का विशिष्ट रूप केवल उस स्तर पर समझ सकता है जहां तक उसकी साधना पहुँची है, जो उसकी साधना फल पदवी[16] और स्तर है। पूर्ण रुप से कहें तो फा अत्यधिक अथाह है। अति उच्चतम स्तर के दृष्टिकोण से यह अति सरल है, क्योंकि फा स्वरुप में एक पिरामिड की तरह है। उच्चतम बिंदु पर, इसका सार तीन शब्दों में कहा जा सकता है : ज़न-शान-रेन। जब यह विभिन्न स्तरों पर साकार होता है तो अत्यधिक जटिल होता है। एक मनुष्य का उदाहरण लेते हैं। ताओ विचारधारा में मानव शरीर को एक लघु विश्व माना जाता है। व्यक्ति का एक भौतिक शरीर होता है, किन्तु व्यक्ति केवल भौतिक शरीर से पूर्ण नहीं हो जाता। उसके पास मानव स्वभाव, व्यक्तित्व, चरित्र और मूल आत्मा भी होने चाहिए जिससे एक पूर्ण और स्वतन्त्र मनुष्य अपनी विशिष्टता सहित बना है। ऐसा ही हमारे विश्व के साथ भी है, जिसमें आकाश गंगा, अन्य आकाश गंगाऐं, साथ ही जीवन और जल हैं। इस विश्व में सभी वस्तुऐं और पदार्थ भौतिक अस्तित्व के रुप हैं। यद्यपि साथ ही साथ यह प्रकृति ज़न-शान-रेन का भी समावेश किये हुए है। पदार्थ के सभी सूक्ष्म कणों में इस प्रकृति का समावेश है - अत्यन्त सूक्ष्म कणों में भी यह गुण है।

यह प्रकृति, ज़न-शान-रेन, विश्व में अच्छाई और बुराई को मापने के लिए मानक है। क्या अच्छा है या बुरा? इसकी तुलना इससे की जाती है। द [17] जिसका हम अतीत में उल्लेख करते थे वही है। निश्चित ही, आज के समाज के नैतिक आदर्श बदल चुके हैं और विकृत हो गये हैं। आज, यदि कोई लेयफंग[18] से सीखता है, तो उसे मानसिक रुप से दिवालिया समझा जाता है। किन्तु 1950 या 1960 के दशक में कौन यह कह सकता था कि यह व्यक्ति मानसिक दीवालिया है? मानवीय नैतिक आदर्श का तेजी से पतन हो रहा है, और मानवीय नैतिक मूल्यों का प्रतिदिन ह्रास हो रहा है। लोग केवल स्वार्थ की पूर्ति में लगे हैं और अपने तुच्छ से लाभ के लिए दूसरों का अहित

करने से भी नहीं चूकते। वे सभी प्रकार के साधन अपना कर एक दूसरे से प्रतिस्पर्धा और संघर्ष करते हैं। आप सब यह सोचें : क्या यह जारी रखना स्वीकार्य होगा? जब कोई व्यक्ति अनुचित कार्य कर रहा होता है, वह विश्वास नहीं करेगा यदि आप उसे बताऐं भी कि वह एक अनुचित कार्य कर रहा है। वह व्यक्ति वास्तव में विश्वास नहीं करेगा कि वह कुछ अनुचित कार्य कर रहा है। कुछ लोग अपनी तुलना पतित नैतिक आदर्श से करते हैं। क्योंकि आंकने के मानक बदल गए हैं, वे स्वयं को औरों से श्रेष्ठ समझते हैं। मानवीय नैतिक आदर्श चाहे जिस प्रकार बदलें, विश्व की यह प्रकृति अपरिवर्तनीय रहती है, और यह एकमात्र मानक है जो अच्छे लोगों को बुरे लोगों से भिन्न करती है। एक अभ्यासी के लिए, उसका व्यवहार विश्व की इस प्रकृति के अनुसार होना चाहिए न कि साधारण मानवीय मानक के अनुसार। यदि आप मूल, सच्ची प्रकृति की ओर लौटना चाहते हैं और साधना अभ्यास में प्रगति करना चाहते हैं, तो आपको इस मानक के अनुसार ही व्यवहार करना होगा। एक मनुष्य होते हुए आप तभी एक अच्छे व्यक्ति हैं यदि आप विश्व की प्रकृति ज़न-शान-रेन का अनुसरण कर सकें। जो व्यक्ति इस प्रकृति से विचलित होता है वह वास्तव में बुरा व्यक्ति है। कार्यस्थल में या समाज में, कुछ लोग कह सकते हैं कि आप बुरे हैं, किन्तु आवश्यक नहीं कि आप बुरे हों। कुछ कह सकते हैं कि आप अच्छे हैं, किन्तु हो सकता है आप वास्तव में अच्छे न हों। एक अभ्यासी होते हुए, यदि आप स्वयं को इस प्रकृति के साथ आत्मसात करते हैं तो आप वह हैं जिसे ताओ की प्राप्ति हो चुकी है - यह केवल इतना सरल नियम है।

ज़न-शान-रेन के अभ्यास में, ताओ विचारधारा ज़न की साधना पर बल देती है। इसलिए ताओ विचारधारा अपनी प्रकृति के विकास के लिए ज़न की साधना में विश्वास करती है; व्यक्ति को सत्य बोलना चाहिए, कार्य सच्चाई से करने चाहिए, सत्यवान बनना चाहिए, अपनी मूल प्रकृति की ओर लौटना चाहिए और अन्त में साधना के द्वारा एक सच्चा व्यक्ति बनना चाहिए। हालांकि यह शान और रेन को भी सम्मिलित करती है। किन्तु बल सत्य की साधना पर होता है। बुद्ध विचारधारा ज़न-शान-रेन में से शान की साधना पर बल देती है। क्योंकि शान की साधना महान, परोपकारी करुणा उत्पन्न कर सकती है, और जब करुणा उत्पन्न होती है तो व्यक्ति सभी प्राणियों को दुख भोगते हुए पाता है, बुद्ध विचारधारा इस कारण सभी प्राणियों के उद्धार की इच्छा विकसित करती है। इसमें ज़न और रेन भी हैं किन्तु बल शान की साधना पर है। हमारा फालुन दाफा विश्व के उच्चतम आदर्श ज़न, शान और रेन पर

आधारित है, जिन सभी की हम एक साथ साधना करते हैं। यह प्रणाली जिसकी हम साधना करते हैं अथाह है।

चीगोंग एक पूर्व ऐतिहासिक संस्कृति है

चीगोंग क्या है? कई चीगोंग गुरु इस बारे में बात करते हैं। जो मैं कह रहा हूँ उससे भिन्न है जो वे कहते हैं। कई चीगोंग गुरु इसके बारे में अपने स्तर पर कहते हैं, जबकि मैं चीगोंग की समझ पर उच्च स्तर से बात कर रहा हूँ। यह उनकी समझ से पूर्णतया भिन्न है। कुछ चीगोंग गुरु दावा करते हैं कि चीगोंग का हमारे देश में दो हजार वर्ष का इतिहास है। ऐसे लोग भी हैं जो कहते हैं कि चीगोंग का इतिहास तीन हजार वर्ष है। कुछ लोग उल्लेख करते हैं कि चीगोंग का इतिहास पांच हजार वर्ष है, जो लगभग हमारी चीनी सभ्यता के समकालीन है। जबकि कुछ और लोगों का पुरातत्व उत्खनन के आधार पर कहना है कि इसका इतिहास सात हजार वर्ष है, और इस प्रकार हमारी चीनी सभ्यता से भी अधिक प्राचीन है। किन्तु वे इसे कैसे भी समझें चीगोंग का अस्तित्व मानव सभ्यता के इतिहास से अधिक प्राचीन नहीं हो सकता। डार्विन के क्रम विकास के नियम के अनुसार, मनुष्य का विकास जलीय पौधों से होकर जलीय जीवों के द्वारा हुआ। इसके पश्चात, वे भूमि पर रहने आ गये और अन्तत: पेड़ों पर। फिर से भूमि पर, वे कपि बन गऐ और अन्त में उनका विकास संस्कृति और विचार सहित आधुनिक मानव के रुप में हुआ। उस गणना के अनुसार, मानवीय सभ्यता का वास्तविक उदभव दस हजार वर्ष के अधिक प्राचीन नहीं है। उससे भी पीछे जाऐं तो किसी प्रकार का लिखित अवशेष यहां तक की गांठे बांध कर याद रखना तक प्रचलित नहीं था। वे लोग पेड़ की छाल पहनते थे और कच्चा मांस खाते थे। उससे भी पीछे देखें तो वे पूरी तरह असभ्य और आदिमानव थे। वे अग्नि के प्रयोग से भी अनभिज्ञ थे।

किन्तु हमारे सामने एक समस्या है। संसार में अनेक स्थानों में ऐसे कई सांस्कृतिक अवशेष मिले हैं जो हमारी मानव सभ्यता से कहीं पहले के हैं। ये प्राचीन अवशेष अति उन्नत स्तर की शिल्पकारी संजोये हैं। कलात्मक दृष्टि से, वे अति उन्नत श्रेणी के हैं। आधुनिक मानव समुदाय तो केवल प्राचीन मनुष्यों की कला की नकल कर रहा है, और उनकी कला उत्कृष्ट कलात्मक श्रेणी की है। वे, हालांकि, एक लाख से भी

अधिक वर्ष, कई लाख वर्ष, करोड़ों वर्ष या फिर दस करोड़ वर्ष से भी अधिक प्राचीन अवशेष हैं। इसके बारे में आप सब सोचें : क्या वे आज के इतिहास का उपहास नहीं उड़ा रहे? यह वास्तव में, कोई उपहास नहीं है, क्योंकि मनुष्य जाति निरन्तर अपनी उन्नति व पुर्न-खोज करती रही है। समुदाय इसी प्रकार प्रगति करता है। आंरभिक समझ संभव है कि पूर्णतया सत्य न हो।

कई लोगों ने "पूर्व ऐतिहासिक संस्कृति" के बारे में सुना होगा जिसे "पूर्व ऐतिहासिक सभ्यता" भी कहते हैं। हम पूर्व ऐतिहासिक सभ्यता के बारे में बात करेंगे। इस पृथ्वी पर एशिया, यूरोप, दक्षिणी अमरीका, उत्तरी अमरीका, ओशोनिया, अफ्रीका, और अंर्टाकटिका के महाद्वीप हैं। भूगर्भविद इन्हें महाद्वीपीय परतें कहते हैं। महाद्वीपीय परतों की संरचना से लेकर आज तक करोड़ों वर्ष बीत चुके हैं। अर्थात, कई महाद्वीपों का समुंद्र तल में से उदभव हुआ है, और कई महाद्वीप जलमग्न भी हुए हैं। कुछ एक करोड़ से अधिक वर्षों से ही वे वर्तमान अवस्था में स्थिर हुए हैं। कई महासागरों की तलहटी में, यद्यपि, कुछ ऊँचे और विशाल प्राचीन वास्तुशिल्प की खोज हुई है। इन भवनो को बहुत सुंदरता के साथ बनाया गया था और वे आधुनिक मुनष्य की सांस्कृतिक धरोहर नहीं हैं। उनका निर्माण सागरतल में डूबने से पहले हुआ होगा। इन सभ्यताओं को लाखों वर्ष पूर्व किसने बनाया होगा? उस समय, हमारी मानव प्रजाति वानर तक नहीं थी। कैसे हम इतनी महान सूझ बूझ की वस्तुऐं बना सके? विश्वभर के पुरातत्वविदों ने एक जीव ट्राइलोबाइट की खोज की है जिनका 26 से 60 करोड़ वर्ष पूर्व अस्तित्व था। इस प्रकार के जीव 26 करोड़ वर्ष पूर्व लुप्त हो गए थे। एक अमरीकी वैज्ञानिक ने ट्राइलोबाइट का एक जीवाश्म खोजा है जिस पर एक मनुष्य का पदचिन्ह है; पदचिन्ह स्पष्ट रुप से जीवाश्म पर एक जूते पहने व्यक्ति से छपा है। क्या इससे इतिहासकारों का उपहास नहीं होता? डार्विन के क्रम विकास के नियम के अनुसार, 26 करोड़ वर्ष पूर्व मनुष्य का अस्तित्व कैसे हो सकता था?

पेरु के राष्ट्रीय विश्वविद्यालय के संग्रहालय में, एक शिला है जिस पर एक मानव आकृति खुदी है। जांच पड़ताल के बाद यह निर्धारित हुआ कि मानव आकृति की नक्काशी तीस हजार वर्ष पूर्व की गई थी। यह मानव आकृति कपड़े, टोपी और जूते पहने हुए है, हाथ में एक दूरबीन लिए है, और वह खगोल पिंड का निरीक्षण कर रहा है। कैसे तीस हजार वर्ष पूर्व लोग कपड़े बुन और पहन सकते थे? और भी आश्चर्यजनक यह है, कि वह खगोल का एक दूरबीन से निरीक्षण कर रहा था और उसे खगोलशास्त्र

का कुछ ज्ञान अवश्य था। हम हमेशा सोचते हैं कि गैलिलियो, एक यूरोपीय, ने दूरबीन का अविष्कार किया था, जिसका इतिहास केवल तीन सौ वर्ष से कुछ अधिक था। किन्तु तीस हजार वर्ष पूर्व किसने दूरबीन का आविष्कार किया होगा? ऐसे कई और अनसुलझे रहस्य हैं। उदाहरण के लिए, फ्रांस, दक्षिण अफ्रीका और एल्प की कई गुफाओं में भित्तिचित्रों की नक्काशी है जो बिल्कुल सजीव और वास्तविक लगते हैं। उनमें जो आकृतियां उभारी गई हैं वे अत्यन्त उच्च श्रेणी की दिखाई पड़ती हैं तथा इन्हें किसी खनिज रंग से रंगा गया है। ये लोग, हालांकि, समकालीन वस्त्र पहने हैं जो कुछ पश्चिमी सूट जैसे लगते हैं, और वे कसी पतलून पहने हैं। कुछ लोग धूम्रपान की नली जैसे कुछ पकड़ें हैं, तो कुछ चलने के लिए छड़ी पकड़े हैं, और टोपी पहने हैं। कई लाख वर्ष पूर्व के वानर कैसे इतने उन्नत कलात्मक स्तर पर पहुँच सकते थे?

इससे भी सुदूर प्राचीन काल का उदाहरण देखते हैं, अफ्रीका के गैबन प्रजातन्त्र में यूरेनियम खनिज पाया जाता है। यह देश अपेक्षाकृत अविकसित है। यह स्वयं यूरेनियम नहीं बना सकता और खनिज का उन्नत देशों को निर्यात करता है। 1972 में, एक फ्रांसिसी निर्माता ने यहां से खनिज यूरेनियम आयात किया। प्रयोगशाला में परीक्षण के उपरान्त, पता लगा कि खनिज से यूरेनियम निकाला हुआ था तथा उपयोग किया हुआ था। उन्हें यह बहुत असाधारण लगा और वैज्ञानिकों को तथ्य जानने के लिए भेजा। कई अन्य देशों के वैज्ञानिक भी वहां जांच पड़ताल के लिए गये। अन्त में, इस यूरेनियम की खान को समझ बूझ कर बनाया गया एक बहुत बड़ा नाभिकीय रियेक्टर प्रमाणित किया गया। यहाँ तक कि हमारे आधुनिक मनुष्य भी शायद उसे न बना सकें, तो इसका निर्माण कब हुआ? इसका निर्माण 2 अरब वर्ष पूर्व हुआ और 5 लाख वर्ष तक यह क्रियाशील रहा। ये बिल्कुल अविश्वस्नीय संख्याऐं हैं, और इन्हें किसी भी प्रकार डार्विन के क्रम विकास के नियम से नहीं समझाया जा सकता। ऐसे कई उदाहरण हैं। आज के वैज्ञानिक और तकनीकि समुदाय ने जो खोज की हैं वे हमारी पाठयपुस्तकों को बदल डालने के लिए बहुत हैं। एक बार मानव जाति की परंपरागत धारणाऐं कार्य करने और सोचने की क्रमबद्ध शैली अपना लेती हैं, तो नये विचारों को स्वीकारना बहुत दुष्कर हो जाता है। जब सत्य उजागर होता है, तो लोग उसे स्वीकारने का साहस नहीं जुटा पाते और स्वभाववश उसे अस्वीकार कर देते हैं। परंपरागत धारणाओं के प्रभाव के कारण आज किसी ने भी इन खोजों को क्रमबद्ध संकलित नहीं किया है। इस प्रकार, मानवीय विचारधाराऐं सदैव खोजों से पीछे ही रहती हैं। जैसे ही आप इसके बारे

में बात करते हैं, ऐसे लोग मिलेंगे जो इन्हें अंध-विश्वास कहेंगे और अस्वीकार करेंगे - हालांकि इनकी खोज पहले ही हो चुकी है। केवल वे अभी तक सार्वजनिक नहीं हुई हैं।

विदेशों में कई साहसी वैज्ञानिकों ने सार्वजनिक रुप से इसे पूर्व ऐतिहासिक संस्कृति और हमारे मानव समाज से पहले की सभ्यता बता कर मान्यता दी है। दूसरे शब्दों में, हमारी सभ्यता से पहले एक से अधिक अवधियों में सभ्यताऐं रही हैं। खुदाई में निकले अवशेषों से, हमें ऐसी वस्तुऐं मिली हैं जो केवल एक ही सभ्यता काल की नहीं हैं। इस प्रकार यह विश्वास किया जाता है कि अनेक बार जब मानव सभ्यता का विनाश हुआ उसके प्रत्येक के पश्चात, अल्पसंख्या में कुछ लोग बच जाते थे और आदिमकालीन जीवन यापन करते थे। उसके बाद, उनकी संख्या में धीरे धीरे वृध्दि होती थी जिससे एक नया मानव वंश बनता और एक नई सभ्यता आरंभ होती। बाद में, उनका पुन: विनाश होता और उसके बाद एक और मानव वंश की उत्पत्ति होती। यह परिवर्तन का क्रम इसी प्रकार चलता रहता। भौतिकविदों का मत है कि पदार्थ की गति विशिष्ट नियमों के अनुसार होती है। हमारे संपूर्ण विश्व के बदलाव का क्रम भी नियमानुसार ही होता है।

यह असंभव है कि हमारा पृथ्वी ग्रह, इस अथाह विश्व और आकाशगंगा में सदैव निर्विध्न परिक्रमा करता रहा होगा। संभव है कि यह किसी ग्रह से टकराया हो या कुछ और कठिनाई आई हो, जिससे घोर प्रलय उत्पन्न हुआ हो। हमारी दिव्य सिद्धियों के दृष्टिकोण से, यह इसी प्रकार व्यवस्थित था। मैने एक बार ध्यानपूर्वक जांच-पड़ताल की और पाया कि मानव जाति का इक्यासी बार संपूर्ण विनाश हुआ था। पिछली सभ्यता से शेष, केवल कुछ ही लोग बचते और नये युग में प्रवेश करते और फिर से आदिमकालीन जीवन व्यतीत करते। जैसे मानव जनसंख्या में वृध्दि होती, सभ्यता का अन्तत: फिर उदभव होता। मानवजाति इस प्रकार के आवधिक परिवर्तन इक्यासी बार अनुभव कर चुकी है, और जबकि मैने इसका अन्त तक पता नहीं लगाया। चीन के निवासी नक्षत्रीय काल स्थिति, अनुकूल पृथ्वी दशाऐं और मानवीय समन्वय के बारे में बात करते हैं। विभिन्न नक्षत्रीय परिवर्तन और विभिन्न नक्षत्रीय समय स्थितियां साधारण मानव समुदाय में विभिन्न परिस्थितियों की उत्पत्ति कर सकते हैं। भौतिकी के अनुसार, पदार्थ की गति विशिष्ट नियमों के अनुसार होती है - यह विश्व की गति के लिए भी मान्य है।

पूर्व ऐतिहासिक संस्कृति का उपरोक्त संदर्भ मूल रुप से आपको बताता है कि चीगोंग का अविष्कार भी हमारी इस मानवजाति ने नहीं किया था। यह एक अत्यन्त सुदूर युग से एक से दूसरे को हस्तांतरित होता चला आ रहा है और यह भी एक प्रकार की पूर्व-ऐतिहासिक संस्कृति थी। बुद्धमत के शास्त्रों से हम कुछ संबंधित उल्लेख भी पा सकते हैं। शाक्यमुनि ने एक बार कहा था कि वे साधना अभ्यास में कई लाख *कल्प* [19] पूर्व सफल हुए थे। एक कल्प में कितने वर्ष होते हैं? एक कल्प करोड़ों वर्ष की एक संख्या है। इतनी विशाल संख्या बिल्कुल अविश्वस्नीय लगती है। यदि सत्य है, तो क्या यह मानवजाति के इतिहास और संपूर्ण पृथ्वी के परिवर्तनों से एकमत नहीं होता? इसके अलावा शाक्यमुनि ने यह भी उल्लेख किया था कि उनसे पहले छ: मूल बुद्ध थे, यह कि उनके गुरु थे, इत्यादि, जो सभी साधना अभ्यास में कई करोड़ कल्प पूर्व सफल हुए थे। यदि यह सब वास्तविक है, क्या वे साधना मार्ग आज हमारे समुदाय में सिखाये जा रहे उन सच्चे, पांरपरिक अभ्यासों और सच्ची शिक्षाओं में उपलब्ध हैं? यदि आप मुझसे पूछें, तो अवश्य ऐसा है, किन्तु वे शायद ही दिखाई देते हैं। आजकल पांखडी चीगोंग, नकली चीगोंग, और वे लोग जो प्रेतग्रस्त हैं सभी ने अपने मन मुताबिक लोगों को धोखा देने के लिए कुछ भी बना लिया है, तथा इनकी संख्या सच्ची चीगोंग अभ्यास पद्धतियों से कई गुणा अधिक है। सच्चे और पांखडी में भेद करना कठिन है। एक सच्ची चीगोंग अभ्यास पद्धति का भेद करना सरल नहीं है, और न ही यह सरलता से उपलब्ध है।

वास्तव में न केवल चीगोंग सुदूर युग से हस्तांतरित होता चला आ रहा है, ताइजी[20], हतु, लुओ-श्यु[21], परिवर्तनों की पुस्तक[22], आठ त्रिआकृतियां[23], आदि, सभी पूर्व इतिहास से चलती आ रही हैं। इसलिए यदि हम आज साधारण व्यक्ति के दृष्टिकोण से उनका अध्ययन करें और समझें, हम उन्हें किसी भी प्रकार नहीं समझ पाऐंगे। साधारण व्यक्ति के स्तर, दृष्टिकोण और मनस्थिति से, सच्ची वस्तुऐं नहीं समझी जा सकतीं।

चीगोंग साधना अभ्यास है

क्योंकि चीगोंग का इतना प्राचीन इतिहास रहा है, यह किस उद्देश्य के लिए है? मैं सभी को बताना चाहूँगा, क्योंकि हम बुद्ध विचारधारा के एक महान साधना मार्ग से संबंधित हैं, नि:संदेह हम बुद्धत्व की साधना करते हैं। ताओ विचारधारा में ताओ की प्राप्ति के लिए ताओ की साधना की जाती है। मैं सभी को बताना चाहूँगा कि "बुद्ध" कोई अंधविश्वास नहीं है। यह एक संस्कृत का शब्द है, जो एक प्राचीन भारतीय भाषा है। जब इसे चीन में प्रचलित किया गया, इसे "फो तुओ"[24] कहा जाता था। कुछ लोगों ने इसका अनुवाद "फु तु"[25] किया। जैसे जैसे यह शब्द प्रचलित हुआ, हमारे चीनी लोगों ने एक अक्षर छोड़ दिया और इसे "फो" कहने लगे। चीनी भाषा में इसका क्या अर्थ है? इसका अर्थ है "एक ज्ञानप्राप्त व्यक्ति"। ऐसा व्यक्ति जिसे साधना अभ्यास के द्वारा ज्ञान प्राप्त हो चुका है। इसमे क्या अंधविश्वास है?

इसके बारे में आप सब सोचें : साधना अभ्यास के द्वारा दिव्य सिद्धियाँ प्राप्त की जा सकती हैं। आज विश्व में छ: आलौकिक सिद्धियाँ मानी जाती हैं, किन्तु वे इन्हीं तक सीमित नहीं हैं। मैं कहूँगा कि दस हजार से भी अधिक शुद्ध दिव्य सिद्धियों का अस्तित्व है। जैसे एक व्यक्ति यहां बैठा है, अपने हाथ और पैर हिलाऐ बिना वह वो करने में समर्थ है जो और लोग हाथ और पैरों से भी नहीं कर सकते और वह विश्व के प्रत्येक आयाम का वास्तविक सत्य देख सकता है। यह व्यक्ति विश्व का सत्य देख सकता है और वे वस्तुऐं जो साधारण मनुष्य नहीं देख सकते। क्या वह ऐसा व्यक्ति नहीं है जिसने साधना अभ्यास द्वारा ताओ प्राप्त कर लिया है? क्या वह एक ज्ञानप्राप्त व्यक्ति नहीं है? उसे एक साधारण व्यक्ति के समान कैसे माना जा सकता है? क्या वह साधना अभ्यास द्वारा ज्ञानप्राप्त व्यक्ति नहीं है? क्या उसे ज्ञानप्राप्त व्यक्ति कहना उचित नहीं होगा? प्राचीन भारतीय भाषा में उसे बुद्ध कहा जाता है। वास्तव में, वह यही है। यही चीगोंग का उद्देश्य है।

चीगोंग का उल्लेख किया जाए तो कुछ लोग कहेंगे, "बिना बीमारी के, कौन चींगोंग का अभ्यास करेगा?" यह दर्शाता है कि चीगोंग का प्रयाय रोग दूर करने के लिए है। यह एक अत्यधिक अपूर्ण धारणा है। यह आपका दोष नहीं है, क्योंकि कई चीगोंग गुरु वास्तव में ऐसे कार्य जैसे रोग दूर करना और स्वस्थ रहना, करते हैं। वे सब आरोग्य और स्वास्थ्य के बारे में बात करते हैं। कोई भी उच्च स्तरों की ओर कुछ नहीं सिखाता।

इसका यह अर्थ नहीं है कि उनकी अभ्यास पद्धतियां अच्छी नहीं है। उनका उद्देश्य आरोग्य और स्वास्थ्य के स्तर की वस्तुऐं सिखाना है, और चीगोंग का जन-प्रचार करना है। ऐसे कई लोग हैं जो उच्च स्तरों की ओर साधना अभ्यास करना चाहते हैं। उनके ऐसे विचार और इच्छाऐं हैं, किन्तु उन्हें साधना के लिए उचित प्रणालियां नहीं प्राप्त हुई हैं, जिससे बहुत सी कठिनाइयां और समस्याऐं उत्पन्न होती हैं। नि:संदेह, एक अभ्यास पद्धति को वास्तविक रुप से उच्च स्तरों पर सिखाने में अत्यन्त महत्वपूर्ण पहलुओं का समावेश होता है। इसलिए, हम लोगों और समाज के प्रति उत्तरदायी रहे हैं, और अभ्यास सिखाने का कुल मिला कर परिणाम अच्छा रहा है। कुछ विषय वास्तव में बहुत प्रगाढ़ हैं और, यदि चर्चा की जाए, तो अंधविश्वास की तरह लग सकते हैं। तो भी, हम उन्हें आधुनिक विज्ञान की मदद से समझाने में अपना सर्वोतम प्रयास करेंगे।

जब हम कुछ विशिष्ट विषयों के बारें में चर्चा करते हैं, कुछ लोग उन्हें अधंविश्वास कहने लगते हैं। ऐसा क्यों है? ऐसे व्यक्ति का यह मानक है कि वह जिसे विज्ञान ने मान्यता नहीं दी है, जो उसने अभी तक अनुभव नहीं किया है, या जो उसे लगता है कि संभव नहीं है, उन सभी को अंधविश्वासी और काल्पनिक मानता है- यही उसकी मानसिकता है। क्या यह मानसिकता उचित है? क्या वह जिसे विज्ञान ने मान्यता नहीं दी है या जो इसकी प्रगति के बाहर है उसे अंधविश्वास और काल्पनिक करार देना चाहिए? तब, क्या यह व्यक्ति स्वयं अंधविश्वासी और काल्पनिक नहीं हो रहा है? इस मानसिकता से, विज्ञान कैसे प्रगति कर सकता है तथा आगे बढ़ सकता है? और न ही मानव समुदाय आगे प्रगति कर सकता है। वह सब जिसका हमारे वैज्ञानिक और तकनीकि समुदाय ने अविष्कार किया है पुराने समय के लोगों के लिए अज्ञात था। यदि इन वस्तुओं को अंधविश्वासी कह दिया जाता, तो नि:संदेह प्रगति की आवश्यकता ही नहीं होती। चीगोंग कोई काल्पनिक विचारधारा नहीं है। ऐसे बहुत से लोग हैं जो चीगोंग को नहीं समझते और, इस प्रकार, हमेशा चीगोंग को काल्पनिक मानते हैं। वर्तमान में, वैज्ञानिक उपकरणों से हमने चीगोंग गुरु के शरीर में इन्फ्रासोनिक तरंगे, सुपरसोनिक तरंगे, इलेक्ट्रोमैग्नेटिक तरंगे, इन्फ्रारेड, अल्ट्रावायोलेट, गामा तरंगे, न्युट्रोन, परमाणु, विरल धातु तत्व, इत्यादि पाऐ हैं। क्या ये भौतिक अस्तित्व की वस्तुऐ नहीं हैं? चीगोंग को कैसे अंधविश्वास करार दिया जा सकता है? वे सभी पदार्थ से बनी हैं। क्या सभी कुछ पदार्थ से नहीं बना है? क्या और काल-अवकाश भी पदार्थ से नहीं बने हैं? चूंकि इसका प्रयोग बुद्धत्व की साधना के लिए होता है, इसमें अनेक प्रगाढ़ पहलुओं का

समावेश होना अवश्यंभावी है, और हम उन सभी पर चर्चा करेंगे।

यदि चीगोंग ऐसे उद्देश्य के लिए है, हम इसे चीगोंग क्यों कहते हैं? यह वास्तव में, "चीगोंग" नहीं कहलाता। यह क्या कहलाता है? यह "साधना अभ्यास" कहलाता है, और यह केवल साधना अभ्यास है। नि:संदेह इसके कई और विशिष्ट नाम है, किन्तु साधारणत: इसे साधना अभ्यास कहा जाता है। तो, इसे चीगोंग क्यों कहा जाता है? जैसे ज्ञात है कि चीगोंग का प्रचलन समाज में पिछले बीस वर्षों में हुआ है। यह पहली बार महान सांस्कृतिक आंदोलन[26] के मध्य में आंरभ हुआ था। बाद में यह अपने प्रसिद्धि के शिखर पर पहुँच गया। इसके बारे में आप सब सोचें : वामपंथी विचारधारा उस समय बहुत प्रचलित थी। हम यह उल्लेख नहीं करेंगे कि पूर्व ऐतिहासिक सभ्यताओं में चीगोंग के क्या नाम थे। अपनी प्रगति के दौरान, इस मानवीय सभ्यता को सामंतवादी काल से भी गुजरना पड़ा। इसलिए, अक्सर इसके नामों में सांमतवादी प्रभाव रहे हैं। धर्म से संबधित पद्धतियों के नाम भी अक्सर धार्मिक भावनाओं से ओतप्रोत रहे हैं। उदाहरण के लिए, तथाकथित, "ताओ का महान साधना पथ", "वज्र का ध्यान", "अरहत का पथ",[27] "बुद्ध धर्म का महान साधना पथ", "नवम आवधिक आन्तरिक प्रक्रिया", इत्यादि उनमें से कुछ हैं। यदि ये नाम महान सांस्कृतिक आंदोलन के दौरान प्रयोग किये गये होते, क्या इस पर आपत्ति नहीं होती? नि:संदेह उन चीगोंग गुरुओं की चीगोंग को प्रचलित करने की इच्छा उचित थी और उन्होने जनसाधारण में बीमारियां ठीक करने, स्वस्थ रहने और शारीरिक अवस्था में सुधार के लिए प्रयास किया - क्या ही अच्छा होता - यदि इसकी स्वीकृति ही न दी जाती। लोगों का साहस ही नहीं हुआ कि ऐसे नाम प्रयोग कर सकें। इसलिए, चीगोंग को प्रचलित करने के लिए, कई चीगोंग गुरुओं ने तान जिंग और ताओ जांग[28] के ग्रथों से दो शब्द लिए और "चीगोंग" नाम दे दिया। कुछ लोग चीगोंग नामकरण पर शोध भी करते हैं। यहां शोध करने योग्य कुछ है ही नहीं। विगत में, इसे केवल साधना अभ्यास कहा जाता था। चीगोंग केवल एक नव निर्मित शब्द है जो आधुनिक लोगों की मानसिकता से मेल खाता है।

आपका गोंग आपके अभ्यास के साथ क्यों नहीं बढ़ता?

आपका गोंग आपके अभ्यास के साथ क्यों नहीं बढ़ता? बहुत से लोग ऐसा सोचते हैं : "मैने सच्ची शिक्षा प्राप्त नहीं की है। यदि कोई गुरु मुझे कुछ विशेष कौशल और कुछ उन्नत तरीके सिखा दे, तो मेरा गोंग बढ़ जाएगा।" आजकल, पिचानवे प्रतिशत लोग ऐसे ही सोचते हैं, और मैं इसे बिल्कुल उपहासपूर्ण पाता हूँ। यह उपहासपूर्ण क्यों है? यह इसलिए क्योंकि चीगोंग कोई साधारण लोगों की तकनीक नहीं है। यह पूर्णत: दिव्य है। इसीलिए, इसकी जांच के लिए उच्च स्तरों के नियमों का प्रयोग होना चाहिए। मैं सभी को बताना चाहूँगा कि अपना गोंग बढ़ा पाने में असफल रहने का मूल कारण यह है : "साधना" और "अभ्यास" दो शब्दों में से, लोग केवल अभ्यास पर ही ध्यान देते हैं और साधना भूल जाते हैं। यदि आप किसी वस्तु को बाह्य जगत में ढूंढते हैं, आप इसकी प्राप्ति किसी भी प्रकार नहीं कर सकते। एक साधारण व्यक्ति के शरीर, एक साधारण व्यक्ति के हाथों और एक साधारण व्यक्ति के मन से, क्या आप सोचते हैं कि आप उच्च शक्ति पदार्थ को गोंग में रुपान्तरित कर लेंगे या गोंग बढ़ा लेंगे? यह इतना सरल कैसे हो सकता है ! मेरे मत में, यह एक उपहास है। यह इसके समान है कि बाह्य जगत में आप किसी वस्तु को प्राप्त करने का प्रयास कर रहे हैं और बाह्य जगत में उसे खोज रहे हैं। आप इसे कभी प्राप्त नहीं करेंगे।

यह साधारण लोगों का कोई कौशल नहीं है, जो आप कुछ धन देकर या कुछ तरीके सीख कर प्राप्त कर सकें। यह इस प्रकार नहीं है क्योंकि यह साधारण लोगों के स्तर से बाहर की वस्तु है। इसलिए आपसे आशा की जाऐगी कि आप दिव्य नियमों का पालन करें। तो आपके लिए क्या आवश्यक है? आपको अपनी आन्तरिक प्रकृति की साधना करनी होगी न कि वस्तुओं का बाह्य जगत में पीछा करना। बहुत से लोग वस्तुओं को बाह्य जगत में तलाश रहे हैं। वे आज एक वस्तु के पीछे पड़ते हैं और कल दूसरी के। इसके अलावा, वे दिव्य सिद्धियों की खोज की लालसा से बंधे हैं और हर प्रकार के भावों से घिरे रहते हैं। ऐसे भी लोग हैं जो चीगोंग गुरु बनना चाहते हैं और रोग उपचार करके धन कमाना चाहते हैं ! वास्तव में साधना अभ्यास के लिए, आपको अपने मन की साधना करनी होगी। इसे *शिनशिंग*[29] साधना कहते हैं। उदाहरण के लिए, एक दूसरे के बीच विवाद में, आपको विभिन्न निजी भावनाओं और इच्छाओं के बारे

में कम परवाह करनी चाहिए। निजी लाभ के लिए प्रतिर्स्पधा करते हुए आप अपना गोंग भी बढ़ाना चाहते हैं - ऐसा कैसे संभव हो सकता है? क्या आप एक साधारण व्यक्ति के ही समान नहीं हैं? आपका गोंग कैसे बढ़ सकता है? इसलिए, केवल शिनशिंग साधना पर ध्यान देने से आपका गोंग बढ़ सकता है और आपके स्तर की वृध्दि हो सकती है।

शिनशिंग क्या है? इसमें द (एक प्रकार का पदार्थ), सहनशीलता, ज्ञानप्राप्ति का गुण, बलिदान, साधारण व्यक्तियों की अनेक इच्छाओं और बंधनो का त्याग, कठिनाईयां सहने की योग्यता इत्यादि सम्मिलित हैं। यह अनेक वस्तुओं को सम्मिलित करता है। आपकी वास्तविक प्रगति के लिए शिनशिंग के प्रत्येक पहलू की वास्तविक वृध्दि आवश्यक है। यह गोंग सामर्थ्य (*गोंगली*) की उन्नति के लिए निर्णायक पहलू है।

कुछ लोग सोचेंगे : "शिनशिंग विषय जिसका आपने उल्लेख किया बहुत कुछ विचारधारा और व्यक्ति की सोच से संबंधित है। इसका गोंग जिसकी हम साधना करते हैं से कोई संबंध नहीं है।" यह क्यों समान विषय नहीं है? प्राचीन काल से, यह विवाद कि पदार्थ मन को निर्धारित करता है या इसके विपरीत, दर्शन जगत में निरन्तर चर्चा और बहस का विषय रहा है। वास्तव में, मैं सभी को बताना चाहूँगा कि पदार्थ और मन एक ही वस्तु हैं। मानव शरीर पर वैज्ञानिक शोध में, आज के वैज्ञानिकों का मत है कि मानवीय मस्तिष्क से उत्पन्न विचार एक पदार्थ है। यदि इसका भौतिक अस्तित्व है, तो क्या इसका मानसिक अस्तित्व नहीं है? क्या वे समान वस्तुऐं नहीं हुई? ठीक वैसे ही जैसे मैने विश्व का वर्णन किया, न केवल इसका भौतिक अस्तित्व है बल्कि इसके साथ इसकी प्रकृति भी है। एक साधारण मनुष्य, इस विश्व में, इस प्रकृति ज़न-शान-रेन, के अस्तित्व का पता नहीं लगा सकता, क्योंकि सभी साधारण मनुष्य समान स्तर पर हैं। जब आप साधारण व्यक्ति के स्तर से ऊपर उठते हैं, तो आप इसका पता लगा सकेंगे। आप इसका पता कैसे लगाते हैं? विश्व का संपूर्ण पदार्थ जिसमें विश्व में व्याप्त सभी तत्व सम्मिलित हैं, मानसिक क्षमता वाले जीवित प्राणी हैं, और वे सभी विश्व के फा के विभिन्न स्तरों पर अस्तित्व के रुप हैं। वे आपको ऊपर बिल्कुल नहीं बढ़ने देंगे। वे आपको ऊपर क्यों नहीं बढ़ने देते? यह इसलिए क्योंकि आपके शिनशिंग में अभी सुधार नहीं हुआ है। प्रत्येक स्तर पर आदर्श भिन्न हैं। यदि आप एक उच्च स्तर पर पहुँचना चाहते हैं, आपको अपने कुविचार त्यागने होंगे और स्वयं में व्याप्त बुराईओं का शोधन करना होगा। जिससे आप उस स्तर के आदर्श की आवश्यकताओं से आत्मसात

हो सकें। ऐसा करने से ही आप ऊपर उठ सकते हैं।

जैसे ही आप अपने शिनशिंग में वृध्दि करते हैं, आपके शरीर में एक महान परिवर्तन होगा। शिनशिंग में सुधार होने पर, आपके शरीर के पदार्थ का रुपांरतण अवश्यंभावी है। किस प्रकार के परिवर्तन होंगे? आप उन बुराईयों का त्याग कर देंगे जिनके प्रति आपको मोहभाव है। उदाहरण के लिए, यदि गंदी वस्तुओं से भरी बोतल को कस के बंद करके पानी में फेंक दिया जाए, तो यह पूरी तल तक डूब जाऐगी। आप इसके कुछ गंदे पदार्थ बाहर निकाल दें। जितना आप बोतल को रिक्त करेंगे, उतना ही अधिक ऊपर यह तैरेगी। यदि यह पूरी तरह रिक्त कर दी जाए तो यह पानी की सतह पर तैरने लगेगी। हमारे साधना अभ्यास के दौरान, आपको अपने शरीर में व्याप्त विभिन्न बुराईयों का शोधन करना होगा जिससे आप ऊपर की ओर प्रगति कर सकें। विश्व की यह प्रकृति वस्तुत: यही भूमिका निभाती है। यदि आप अपने शिनशिंग की साधना नहीं करते या अपने नैतिक आदर्श में वृध्दि नहीं करते, या आपके कुविचार और बुरे तत्व नहीं निकाले गऐ हैं, यह आपको ऊपर नहीं उठने देगी। आप कैसे कह सकते हैं कि वे समान वस्तुऐं नहीं हैं। मैं एक परिहास सुनाता हूँ। यदि एक व्यक्ति, जिसमें साधारण मनुष्यों वाली सभी मानवीय भावनाऐं और इच्छाऐं हैं, को ऊपर उठने दिया जाता है और वह एक बुद्ध बन जाता है - इसके बारे में सोचिए - क्या यह संभव है? एक बोधिसत्व[30] को इतना सुंदर देख उसे कोई दुष्ट विचार आ सकता है। हो सकता है यह व्यक्ति एक बुद्ध से विवाद कर बैठे क्योंकि उसकी ईर्ष्या समाप्त नहीं की गई है। ऐसा कैसे होने दिया जा सकता है? तो इसके बारे में क्या किया जाना चाहिए? आपको साधारण व्यक्तियों वाले सभी कुविचार त्यागने होंगे - तभी आप ऊपर की ओर प्रगति कर सकते हैं।

दूसरे शब्दों में, आपको शिनशिंग साधना पर ध्यान देना होगा और साधना का अभ्यास विश्व की प्रकृति ज़न-शान-रेन के अनुसार करना होगा। आपको साधारण व्यक्तियों की इच्छाओं को, अपवित्र विचारों और बुरे कर्म करने की धारणा को पूर्णतया छोड़ना होगा। आपकी मनस्थिति के प्रत्येक थोड़े से सुधार के साथ, आपके शरीर से कुछ बुराईयां दूर कर दी जाऐंगी। साथ ही, आपको थोड़े बहुत दु:ख भी भोगने चाहिऐं और कुछ कठिनाईयां झेलनी चाहिऐं जिससे आपके कर्म कम हो सकें। तब आप कुछ ऊपर बढ़ सकते हैं, यानि विश्व की प्रकृति आपका उतना ही विरोध नहीं करेगी। साधना आपके अपने प्रयत्नों पर निर्भर करती है, जबकि गोंग का रुपांतरण आपके गुरु द्वारा

किया जाता है। गुरु आपको गोंग यन्त्र प्रणाली देते हैं जो आपके गोंग का विकास करती है, और यह गोंग यन्त्र प्रणाली क्रियाशील होगी। यह द तत्व को आपके शरीर के बाहर गोंग में रुपान्तरित करती है। जैसे जैसे आप निरन्तर स्वयं की प्रगति करते हैं और साधना अभ्यास में ऊपर की ओर बढ़ते हैं, आपका गोंग स्तंभ (*गोंग ज़ू*) भी लगातार उच्च स्तरों की ओर भेदन करता रहेगा। एक अभ्यासी की भांति, आपके लिए साधारण व्यक्तियों के वातावरण में स्वयं की साधना करना तथा तपना आवश्यक है और धीरे-धीरे मोहभावों तथा विभिन्न इच्छाओं का समापन करना है। कई बार जिसे हमारा मानव समाज अच्छा समझता है, उच्च स्तरों के दृष्टिकोण से अक्सर बुरा होता है। इस प्रकार, लोग किसी व्यक्ति के लिए यह अच्छा समझते हैं कि वह साधारण व्यक्तियों के बीच और अधिक निजी लाभ की पूर्ति करे, जिससे बेहतर जीवन व्यतीत कर सके। महान ज्ञानप्राप्त प्राणियों की दृष्टि में, यह व्यक्ति बुरी स्थिति में है। इसमें बुरा क्या है? जितना अधिक कोई व्यक्ति लाभ अर्जित करता है, उतना ही वह दूसरों के अधिकारों पर अतिक्रमण करता है। वह वे वस्तुऐं भी प्राप्त कर लेगा जिन पर उसका अधिकार नहीं है। इस व्यक्ति को प्रसिद्धि और लाभ का मोह होगा, जिससे द की हानि कर लेगा। यदि आप शिनशिंग साधना पर ध्यान दिये बिना ही अपना गोंग विकसित करना चाहते हैं, तो आपके गोंग में तनिक भी वृध्दि नहीं होगी।

साधक समुदाय का मत है कि व्यक्ति की मूल आत्मा लुप्त नहीं होती। अतीत में, लोग भले ही मानव मूल आत्मा के बारे में बात करना अंधविश्वास मानते हों। यह ज्ञातव्य है कि मानव शरीर पर भौतिकि के शोध ने अणु, परमाणु, प्रोटोन, इलेक्ट्रान, इससे भी आगे क्वार्क और न्युट्रिनो आदि का पता लगाया है। उस स्तर पर, एक सूक्ष्मदर्शी भी उनका पता नहीं लगा सकती। यद्यपि वे जीवन के मूल और पदार्थ के मूल से कहीं दूर हैं। सभी जानते हैं कि नाभिकीय फ्यूजन या फिशन घटित होने के लिए अत्यधिक मात्रा में ऊर्जा और अत्यधिक ऊष्मा की आवश्यकता होती है। किसी व्यक्ति के शरीर में उपस्थित नाभिक उसकी मृत्यु के पश्चात सरलता से कैसे लुप्त हो सकते हैं? इसलिए, हमने पाया है कि जब किसी व्यक्ति की मृत्यु होती है, हमारे इस आयाम के केवल स्थूलतम आण्विक तत्व ही छूटकर अलग होते हैं, जबकि दूसरे आयामों के शरीरों का नाश नहीं होता। आप सब इसके बारे में सोचें : एक मानव शरीर सूक्ष्मदर्शी के द्वारा कैसा दिखाई पड़ता है। संपूर्ण मानव शरीर गतिशील है। जब आप यहां शांत बैठे हैं तो भी आपका शरीर गतिशील है। कोशिकाओं के अणु गतिशील हैं और पूरा शरीर

इस प्रकार विरल है जैसे रेत का बना हो। एक मानव शरीर सूक्ष्मदर्शी में ठीक ऐसा ही दिखाई पड़ता है, और जैसा हमारी नंगी आंखों से दिखाई पड़ता है, यह उससे बिल्कुल भिन्न है। यह इसलिए क्योंकि ये दो मानवीय आखें आपके लिए भ्रामक छवि पैदा करती हैं, और आपको इन वस्तुओं को देखने से रोकती हैं। जब व्यक्ति का दिव्य नेत्र[31] *(त्येनमू)* खुल जाता है, यह वस्तुओं को परावर्धित करके देख सकता है, वास्तव में यह एक मानवीय मूल प्रवृति है, जो अब दिव्य सिद्धि कहलाती है। यदि आप दिव्य सिद्धियाँ विकसित करना चाहते हैं, तो आपको अपनी मूल, सच्ची प्रकृति की ओर लौटना होगा और साधना के द्वारा वापस जाना होगा।

अब द के बारे में बात करें। इसका क्या विशिष्ट संबंध है। हम इसका विस्तार से विश्लेषण करेंगे। हम मानवों का अनेकों आयामों में प्रत्येक में एक शरीर है। हम अभी मानव शरीर की जांच करें, तो विशालतम तत्व कोशिकाऐं हैं, और उनसे मानवीय भौतिक शरीर की रचना हुई है। यदि आप कोशिकाओं और अणुओं के मध्य के अवकाश या परस्पर अणुओं के मध्य के अवकाश में प्रवेश कर सकें, तो आपको एक दूसरे आयाम में होने का अनुभव होगा। उस शरीर की संरचना का अस्तित्व कैसा है? निसंदेह, इसे समझने के लिए आप इस आयाम की धारणाओं का प्रयोग नहीं कर सकते, तथा आपका शरीर उस आयाम की संरचना के अस्तित्व के अनुरुप होना चाहिए। सबसे पहले तो दूसरे आयाम में आपका शरीर विशाल अथवा लघु रुप धारण कर सकता है। इस समय आपको यह भी असीमित आयाम जान पड़ेगा। यह एक सरल प्रकार के दूसरे आयामों का उदाहरण है जिनका अस्तित्व परस्पर एक ही स्थान पर है। अनेकों आयामों में से प्रत्येक में सभी का एक निर्दिष्ट शरीर है। एक निर्दिष्ट आयाम में मानव शरीर को घेरे हुए एक प्रभाव क्षेत्र है। यह किस प्रकार का प्रभाव क्षेत्र है। यह प्रभाव क्षेत्र द है जिसका हमने उल्लेख किया है। द एक श्वेत पदार्थ है और जैसा हम अतीत में सोचा करते थे, यह कोई आदर्शवादी या धारणात्मक वस्तु नहीं है - इसका वास्तविकता में एक प्रकार का भौतिक अस्तित्व है। इस प्रकार, पुराने समय में जब वृद्ध लोग द के संचयन अथवा हानि के बारे में कहते थे, तो उनका कहना बहुत कुछ विचारवान था। यह द एक प्रभाव क्षेत्र उत्पन्न करता है जो व्यक्ति के शरीर को चारों ओर से घेरे रहता है। अतीत में, ताओ विचारधारा का मत था कि गुरु शिष्य को चुनता है न कि शिष्य गुरु को। इसका क्या अर्थ है? एक गुरु जांच करता था कि इस शिष्य के शरीर में अत्यधिक मात्रा में द विद्यमान है अथवा नहीं। यदि इस शिष्य के पास प्रर्याप्त द

होता था, तो उसके लिए साधना का अभ्यास सरल होगा। अन्यथा, वह इसे सरलता से पूर्ण नहीं कर पाएगा, और उसे उच्च स्तरों की ओर गोंग विकसित करने में बहुत कठिनाई होगी।

इसी के साथ, एक काले पदार्थ का अस्तित्व है जिसे हम "कर्म" कहते हैं और बुद्धमत में यह "दुष्कर्म" कहलाता है। इन श्वेत और काले पदार्थों का अस्तित्व साथ-साथ ही होता है। इन दोनो पदार्थों के बीच क्या संबंध है? हम उस द को दुख भोग कर, कठिनाईयां झेल कर और अच्छे कर्म करने से प्राप्त करते हैं; काले पदार्थ का संचय बुरे कार्य करने से और बुराईयों में लिप्त होने से या लोगों को डराने धमकाने से होता है। वर्तमान में, कुछ लोग न केवल सभी कुछ लाभ की दृष्टि से देखते हैं, बल्कि वे सभी प्रकार के अनिष्ट करने पर उतारु हैं। वे धन के लिए सभी प्रकार के अनिष्ट कार्य करेंगे, और हत्या तक कर देंगे या हत्या के लिए किसी को धन देंगे, अनैतिक संबंधों में लिप्त होंगे और नशीली दवाओं का सेवन करेंगे। वे सभी प्रकार के दुष्कर्म करते हैं। जब कोई व्यक्ति अनिष्ट कार्य करता है तो उसे द की हानि होती है। व्यक्ति को द की हानि किस प्रकार होती है? जब कोई व्यक्ति दूसरे पर चीखता चिल्लाता है, तो उसे लगता है उसने बाजी मार ली है और सुखद अनुभव करता है। इस विश्व में एक नियम है -"हानि नहीं तो लाभ नहीं।" लाभ प्राप्त करने के लिए, कुछ खोना आवश्यक है। यदि आप कुछ खोना नहीं चाहते, आपको हानि के लिए बाध्य कर दिया जाऐगा। यह भूमिका कौन निभाता है? यह विश्व की प्रकृति ही है जो यह भूमिका धारण कर लेती है। इस प्रकार, यह असंभव है कि आप केवल लाभ की प्राप्ति की कामना करते रहें। तब क्या होगा? जब वह किसी व्यक्ति पर चीखता चिल्लाता है या उसे धमकाता है, तो वह अपना द उस दूसरे व्यक्ति पर फेंक रहा होता है। चूंकि दूसरा व्यक्ति वह पक्ष है जिसे लगता है उसके साथ अन्याय हुआ है तथा उसने कुछ खोया है और पीड़ित हुआ है, उसकी उसी प्रकार भरपाई होती है। जब एक व्यक्ति इधर चीख चिल्ला रहा होता है, उसके चिल्लाने से उसके अपने आयाम क्षेत्र से द का एक अंश दूसरे व्यक्ति के पास चला जाता है। जितना अधिक वह चिल्लाता है इतना अधिक द वह उसे देता है। दूसरे के मारने पीटने या धमकाने पर भी ऐसा ही होता है। जब कोई व्यक्ति किसी को मारता पीटता है, वह अपने द का एक अंश दूसरे को दे देगा, जो निर्भर करता है, उसने दूसरे को कितना पीटा। एक साधारण व्यक्ति इस नियम को इस स्तर पर नहीं देख सकता। अपमानित अनुभव कर, दूसरा व्यक्ति इसे सहन नहीं कर पाता और सोचता है, "क्योंकि तुमने मुझे पीटा है,

मुझे भी बदला लेना चाहिए।" "धूम" वह उस व्यक्ति को वापस मारता है और द वापस कर देता है। किसी ने न कुछ पाया न ही कुछ खोया। यदि वह सोचे, "तुमने तो मुझे एक ही बार मारा, मुझे तुमको दो बार मारना चाहिए। अन्यथा, मेरा प्रतिशोध पूरा नहीं होगा।" वह उसे दोबारा मारेगा, और द का एक और अंश दूसरे व्यक्ति को दे दिया जाऐगा।

यह द इतना अमूल्य क्यों है? द के रुपान्तरण में किस प्रकार का पारस्परिक संबंध है? धार्मिक मान्यताओं के अनुसार: "द होने पर, मनुष्य को इस जन्म में नहीं तो अगले जन्म में अवश्य फल प्राप्ति होगी।" उसे क्या प्राप्त होगा? अत्यधिक द होने पर, वह एक उच्च अधिकारी बन सकता है या बहुत सा धन अर्जित कर सकता है। वह जो चाहे प्राप्त कर सकता है, और वह उसे इस द के बदले मिल जाएगा। धार्मिक मान्यताओं का यह भी कथन है कि यदि व्यक्ति के पास लेश मात्र भी द नहीं है तो उसके शरीर और आत्मा दोनों का विनाश हो जाएगा। उसकी मूल आत्मा का विनाश हो जाएगा, और मृत्यु उपरान्त वह पूर्णत: मृत हो जाऐगा और कुछ शेष नहीं बचेगा। हमारे साधक समुदाय में, यद्यपि, हमारा मानना है कि द को सीधे गोंग में रुपान्तरित किया जा सकता है।

हम यह बताऐंगे कि द को गोंग में किस प्रकार रुपान्तरित किया जाता है। साधक समुदाय में एक कथन है: "साधना व्यक्ति के अपने प्रयत्नों पर आधारित होती है, जबकि गोंग का रुपान्तरण उसके गुरु द्वारा किया जाता है।" तब भी कुछ लोग "जमा की हुई औषधिक जड़ी बूटियों[33] का उपयोग कर शरीर को तपाने की भटटी बना कर *दान*[32] बनाने" और मानसिक क्रियाओं की बातें करते हैं और वे इन्हें बहुत महत्वपूर्ण मानते हैं। मैं आपको बताना चाहूँगा कि ये बिल्कुल भी महत्वपूर्ण नहीं हैं, और यह एक मोहभाव होगा यदि आप इनके बारे में अत्यधिक सोचते हैं। यदि आप इसके बारे में अत्यधिक सोचते हैं तो क्या आपको इसे पाने की इच्छा का मोह नहीं हैं? साधना व्यक्ति के अपने प्रयत्नों पर आधारित होती है, जबकि गोंग का रुपांतरण उसके गुरु द्वारा किया जाता है। यदि आपकी यह इच्छा है तो यह संतोषप्रद है। वास्तव में यह गुरु करते हैं, क्योंकि आप यह करने के लिए बिल्कुल असमर्थ हैं। आपका एक साधारण व्यक्ति का शरीर होते हुए, आप इसे उच्च शक्ति पदार्थ से बने उच्च जीवन के शरीर में कैसे रुपान्तरित कर सकते हैं? यह बिल्कुल असंभव है और एक उपहास जैसा लगता है। दूसरे आयामों में मानव शरीर की रुपान्तरण प्रक्रिया बहुत जटिल और पेचीदा है। आप

इस प्रकार के कार्य बिल्कुल नहीं कर सकते।

गुरु आप को क्या देते हैं? वे आपको गोंग यन्त्र प्रणाली देते हैं जो आपके गोंग का विकास करती है। चूंकि द का अस्तित्व व्यक्ति के शरीर के बाहर होता है, व्यक्ति का वास्तविक गोंग द से उत्पन्न होता है। व्यक्ति के स्तर की ऊँचाई और गोंग सामर्थ्य की शक्ति दोनों द से उत्पन्न होते हैं। गुरु आपके द को गोंग में रुपान्तरित करते हैं, जो एक घुमावदार रुप में ऊपर की ओर वृध्दि करता है। गोंग जो वास्तव में व्यक्ति का स्तर निर्धारित करता है, व्यक्ति के शरीर के बाहर विकसित होता है, और यह एक घुमावदार रुप में ऊपर की ओर वृध्दि करता है जो अन्तत: व्यक्ति के सर के ऊपर की ओर वृध्दि करने पर एक गोंग स्तंभ का आकार ले लेता है। इस व्यक्ति के गोंग स्तंभ की ऊँचाई पर एक ही दृष्टि डाल कर, उसके गोंग के स्तर का पता लगाया जा सकता है। यह व्यक्ति का स्तर और उसकी फल पदवि दर्शाता है जैसा कि बुद्धमत में उल्लेख है। ध्यान अवस्था मे बैठने पर, कुछ लोगों की मूल आत्मा शरीर छोड़ कर एक निश्चित स्तर पर पहुँच सकती है। प्रयत्न करने पर भी, उसकी मूल आत्मा और आगे नहीं बढ़ पाती, और यह ऊपर बढ़ने का साहस भी नहीं कर पाती। चूंकि यह अपने गोंग स्तंभ पर विराजमान होकर ऊपर उठती है, यह केवल उसी स्तर पर पहुँच सकती है। क्योंकि उसका गोंग स्तर केवल उतना ही ऊँचा है, यह उससे और ऊपर नहीं बढ़ सकती। यह विषय फल पदवि का है जिसका बुद्धमत में उल्लेख है।

शिनशिंग स्तर को मापने के लिए एक मानक भी है। मानक और गोंग स्तंभ का अस्तित्व एक ही आयाम में नहीं है, परन्तु एक साथ अवश्य है। आपकी शिनशिंग साधना ने अवश्य ही प्रगति कर ली है, यदि उदाहरण के लिए, जब साधारण लोगों के बीच में कोई आपको बुरा भला कहता है, आप एक भी शब्द नहीं कहते और बहुत शांत रहते हैं, या जब कोई आप पर मुष्टि प्रहार करता है, आप एक शब्द भी नहीं कहते और मुस्कुराहट के साथ अविचलित रहते हैं। आपका शिनशिंग स्तर अवश्य ही बहुत ऊँचा है। तो एक अभ्यासी की भांति, आपको क्या प्राप्त होना चाहिए? क्या आपको गोंग प्राप्त नहीं होने जा रहा है? जब आपके शिनशिंग में वृध्दि होती है, आप का गोंग बढ़ जाता है। एक व्यक्ति का गोंग स्तर उसके शिनशिंग स्तर के बराबर होता है, और यह एक अटल सत्य है। गत वर्षों में, लोग चीगोंग का अभ्यास यद्यपि घरों या उद्यानों में करते थे, वे बहुत परिश्रम और एकाग्रता से इसे करते थे, और अच्छा अभ्यास करते थे। किन्तु एक बार घर से बाहर निकलने पर, वे भिन्न प्रकार से आचरण करते और अपने

ही तरीके से चलते, साधारण लोगों के बीच प्रसिद्धि और लाभ के लिए प्रतिस्पर्धा और संघर्ष करते। वे अपना गोंग कैसे बढ़ा सकते थे? कुछ लोग एक लंबी अवधि के अभ्यास के पश्चात भी रोग मुक्त क्यों नहीं हो पाते? चीगोंग साधना अभ्यास पद्धति है और दिव्य है, यह साधारण लोगों के व्यायामों से अलग श्रेणी में है। शारीरिक रोगमुक्ति और गोंग की वृध्दि के लिए व्यक्ति को शिनशिंग पर ध्यान देना आवश्यक है।

कुछ लोग जमा की हुई औषधिक जड़ी बूटियों का उपयोग कर शरीर को तपाने वाली भटटी बनाकर दान बनाने में विश्वास करते हैं, और वे सोचते हैं कि दान ही गोंग है। जबकि यह नहीं है। यह दान शक्ति का केवल एक अंश ही एकत्रित करता है, और इसमें संपूर्ण शक्ति का समावेश नहीं है। दान किस प्रकार का पदार्थ है? जैसे ज्ञातव्य है कि जीवन के संवर्धन के लिए हमारे पास कुछ और भी वस्तुऐं हैं, और हमारे शरीर दिव्य सिद्धियाँ तथा और भी सिद्धियाँ विकसित करेंगें, जिनमें से अधिकतम बंधित कर दी जाती हैं और उनके उपयोग की अनुमति नहीं होती है। अनेकों दिव्य सिद्धियाँ होती हैं - लगभग दस हजार तक। जैसे ही एक विकसित होती है, उसे बंधित कर दिया जाता है। उनके प्रकट होने की अनुमति क्यों नहीं है? इसका औचित्य यह है कि साधारण मानव समाज में आपके द्वारा इनका अनुचित प्रयोग न हो सके। आपको साधारण मानव समाज में अकारण विघ्न डालने की अनुमति नहीं है, और न ही आपको अपनी सिद्धियों की साधारण मानव समाज में अकारण प्रदर्शन की अनुमति है। यह इसलिए है क्योंकि ऐसा करने से साधारण मानव समाज की स्थिति में विघ्न आ सकता है। अनेक लोग साधना अभ्यास ज्ञानोदय के मार्ग से करते हैं। यदि आप अपनी समस्त सिद्धियाँ उनको प्रदर्शित कर दें, वे देखेंगे कि यह सब वास्तविक है और सभी साधना अभ्यास करने आ जाऐंगें। लोग जिन्होने अक्षम्य कुकर्म किये हैं वे भी साधना अभ्यास करने आ जाऐंगे, और इसकी अनुमति नहीं है। आपके द्वारा इस प्रकार के प्रदर्शन की अनुमति नहीं है। साथ ही आप सरलता से कोई दुष्कर्म कर सकते हैं क्योंकि आप वस्तुओं का पूर्व नियोजित संबंध और वास्तविक प्रकृति नहीं देख सकते। आप समझते हैं कि आप एक अच्छा कार्य कर रहे हैं, जबकि यह एक बुरा कार्य हो सकता है। इसलिए, आपको उनके प्रयोग की अनुमति नहीं है, क्योंकि एक बार आप बुरा कार्य करते हैं, आपका स्तर निम्न कर दिया जाऐगा और आपकी साधना व्यर्थ जाऐगी। इस कारण, अनेक दिव्य सिद्धियाँ बंधित कर दी जाती हैं। उससे क्या होगा? उस समय जब व्यक्ति गोंग खुलने की स्थिति (*काईगोंग*) तक पहुंचता है और उसे ज्ञान प्राप्त होता है, यह दान एक

बम की तरह विस्फोट करेगा और सभी दिव्य सिद्धियों को, शरीर के सभी बंधों को, और सैकड़ों शक्तिमार्गों को खोल देगा। एक धमाके के साथ सभी कुछ खुल जाऐगा। यही है जिसके लिए दान का उपयोग होता है। मृत्यु होने पर, एक भिक्षु के क्रियाक्रम के उपरान्त "*सरीर*" शेष रहता है। लोग कहते हैं कि ये हड्डियां और दांत हैं। तो फिर साधारण लोगों का "सरीर" क्यों नही होता? वे केवल विस्फोटित दान हैं, जिनकी शक्ति मुक्त हो चुकी है। उनमें दूसरे आयामों के पदार्थों का समावेश अत्यधिक मात्रा में होता है। अन्ततः, उनका भी भौतिक अस्तित्व है, किन्तु उपयोग कुछ नहीं। लोग उन्हें अब अति मूल्यवान वस्तु समझ कर ले जाते हैं। उनमें शक्ति होती है, और चमकदार व बहुत कठोर होते हैं। यही उनकी वास्तविकता है।

गोंग बढ़ा पाने में असफल होने का एक और कारण भी है। जो है, उच्च स्तरों के फा को जाने बिना, व्यक्ति साधना अभ्यास में प्रगति नहीं कर सकता। इसका क्या अर्थ है? जैसा मैने अभी उल्लेख किया, कई लोग अनेक चीगोंग पद्धतियों का अभ्यास कर चुके हैं। मैं आपको बताना चाहूँगा कि आप चाहे जितना भी अध्ययन कर लें, यह तब भी व्यर्थ होगा। आप रहेंगे एक प्राथमिक कक्षा के ही छात्र - साधना अभ्यास में प्राथमिक कक्षा के छात्र। वे सभी निम्न स्तर के नियम हैं। ऐसे निम्न स्तर के नियम आपके उच्च स्तरों की ओर साधना अभ्यास के मार्गदर्शन में कोई भूमिका नहीं निभा सकते। यदि आप कॉलेज में प्राथमिक कक्षा की पाठ्यपुस्तकें पढ़ते हैं, आप प्राथमिक कक्षा के छात्र ही रहेंगे। चाहे आप कितनी भी पढ़ें, सब व्यर्थ जाऐगा। बल्कि, आपको और हानि ही होगी। विभिन्न स्तरों का फा भिन्न होता है, और फा विभिन्न स्तरों पर विभिन्न मार्गदर्शकों की भूमिका निभाता है। इस प्रकार, निम्न स्तर के नियम आपके साधना अभ्यास में उच्चस्तरों की ओर मार्गदर्शन नहीं कर सकते। जिनके बारे में हम बाद में चर्चा करेंगे वे सब साधना अभ्यास के उच्च स्तरों के नियम हैं। मैं शिक्षा में विभिन्न स्तरों की वस्तुओं को सम्मिलित कर रहा हूँ। वे इस प्रकार आपके आने वाले साधना अभ्यास में सदैव एक मार्गदर्शक की भूमिका निभाऐंगे। मेरे पास अनेक पुस्तकें, आडियो टेप तथा विडियो टेप हैं। आप पाऐंगे कि उन्हें एक बार देखने और सुनने के बाद, जब आप उन्हें कुछ बाद में देखते और सुनते हैं वे तब भी आपका मार्गदर्शन करते हैं। आप भी निरन्तर अपना विकास कर रहे हैं, और वे निरन्तर आपका मार्गदर्शन करते हैं - यह फा है। उपरोक्त दो कारण हैं जिससे गोंग नहीं बढ़ पाता। उच्च स्तरों की जानकारी के बिना, साधना अभ्यास नहीं किया जा सकता। अपने शिनशिंग और

आन्तरिक प्रकृति की साधना के बिना, व्यक्ति का गोंग नहीं बढ़ सकता। ये दो कारण है।

फालुन दाफा की विशिष्टताऐं

हमारा फालुन दाफा बुद्ध विचारधारा की चौरासी हजार साधना पद्धतियों में से एक है। इस मानव सभ्यता के ऐतिहासिक काल में इसे कभी भी सार्वजनिक नहीं किया गया। एक पूर्व ऐतिहासिक काल में, यद्यपि, एक बार इसका उपयोग मानव समुदाय का उद्धार करने में बहुतायत से किया गया था। इस अन्तिम महाविनाशकाल[34] की अन्तिम अवधि में, मैं इसे पुन: सार्वजनिक कर रहा हूँ। इसलिए, यह अत्यन्त मूल्यवान है। मैं द को सीधे गोंग में रुपान्तरित करने के तरीके की बात कर चुका हूँ। गोंग, वास्तव में, अभ्यास द्वारा प्राप्त नहीं होता। इसकी प्राप्ति साधना द्वारा होती है। कई लोग अपने गोंग को बढ़ाने का प्रयत्न करते हैं और केवल अभ्यास करने की विधि पर ही ध्यान देते हैं, इस बात की परवाह किये बिना कि साधना कैसे की जाए। वास्तव में, गोंग पूर्णत: शिनशिंग साधना के द्वारा प्राप्त किया जाता है। तब हम यहां व्यायाम भी क्यों सिखाते हैं? पहले, मैं यह बताना चाहूँगा कि एक भिक्षु व्यायामों का अभ्यास क्यों नहीं करता। वह केवल ध्यान में बैठता है, शास्त्रों का उच्चारण करता है, शिनशिंग की साधना करता है, और तब उसका गोंग बढ़ जाता है। वह गोंग बढ़ाता है जिससे उसके स्तर में वृध्दि होती है। चूंकि शाक्यमुनी ने लोगों को जगत में सब कुछ त्याग देने की शिक्षा दी थी - यहां तक उनके शरीर भी, इसलिए शारीरिक व्यायाम अनावश्यक हो गए। ताओ विचारधारा सभी प्राणियों को मोक्ष नहीं दिलाती। यह विभिन्न मानसिकताओं और स्तरों वाले सभी प्रकार के लोगों का सामना नहीं करती, जिनमें से कुछ अधिक स्वार्थी हों और कुछ कम स्वार्थी। यह अपने शिष्यों का चुनाव करती है। यदि तीन शिष्यों का चुनाव होता है, उनमें से केवल एक ही सच्ची शिक्षा ग्रहण करता है। इसके लिए यह सुनिश्चित करना आवश्यक है कि यह शिष्य बहुत सदगुणी है, बहुत अच्छा है और मार्ग भ्रमित नहीं होगा। यह इस प्रकार तकनीकि वस्तुओं की शिक्षा जैसे जीवन का संवर्धन और अलौकिक शक्तियां, कौशल, आदि पर बल देती है। इसके लिए कुछ शारीरिक व्यायाम आवश्यक हैं।

फालुन दाफा भी मन और शरीर की साधना अभ्यास पद्धति है, और इसमें व्यायाम आवश्यक हैं। एक ओर, व्यायामों का उपयोग दिव्य सिद्धियों को सुदृढ़ करने के लिए होता है। "सुदृढ़ करना" क्या होता है? यह आपके शक्तिशाली गोंग सामर्थ्य द्वारा आपकी दिव्य सिद्धियों का प्रबलन है, जिससे वे निरन्तर और अधिक शक्तिवान बन सकें। दूसरी ओर, आपके शरीर में कई चेतन सत्ताओं का विकास किया जाना आवश्यक है। उच्च स्तरीय साधना अभ्यास पद्धति में, ताओ विचारधारा में अमर शिशु (*युआन यिंग*) के जन्म की आवश्यकता होती है, जबकि बुद्ध विचारधारा में वज्र के अविनाशवान शरीर की आवश्यकता होती है। इसके अलावा, अनेक अलौकिक सिद्धियाँ विकसित की जानी चाहिऐं। इन वस्तुओं का विकास शारीरिक व्यायामों द्वारा किया जाना आवश्यक है, और इन्हीं का हमारे व्यायामों द्वारा संवर्धन होता है। मन और शरीर की एक संपूर्ण साधना अभ्यास पद्धति के लिए साधना और अभ्यास दोनो आवश्यक होते हैं। मुझे लगता है कि आप सब अब तक समझ गए होंगे कि गोंग की उत्पति कैसे होती है। गोंग जो वास्तव में आपकी उपलब्धि के स्तर को निर्धारित करता है, उसका विकास अभ्यास द्वारा बिल्कुल नहीं किया जाता, बल्कि साधना द्वारा किया जाता है। साधारण लोगों के बीच अपनी साधना में अपने शिनशिंग में वृध्दि करने और विश्व की प्रकृति के साथ आत्मसात होने से विश्व की प्रकृति आपके लिए बाधा उत्पन्न नहीं करेगी, उसके पश्चात आपको ऊपर उठने की अनुमति होगी। आपका द तब गोंग में रुपान्तरित होना आरंभ हो जाऐगा। जैसे-जैसे आपके शिनशिंग स्तर में सुधार आता है, वैसे ही आपके गोंग की वृध्दि होती है। इसका इस प्रकार का संबंध है।

हमारी मन और शरीर दोनो की सच्ची साधना अभ्यास पद्धति है। गोंग जिसकी हम साधना करते हैं शरीर की प्रत्येक कोशिका में संचित किया जाता है, और उच्च शक्ति तत्व के गोंग को एक अत्यन्त सूक्ष्म स्तर पर पदार्थ के मूल सूक्ष्म कणों में भी संचित किया जाता है। जैसे-जैसे आपका गोंग सामर्थ्य विकास करता है, गोंग के घनत्व में और शक्ति में भी वृध्दि होगी। ऐसा उच्च शक्ति तत्व प्रज्ञावान होता है। क्योंकि यह मानव शरीर की प्रत्येक कोशिका में जीवन के मूल तत्व तक संचित होता है, यह धीरे-धीरे आपके शरीर में कोशिकाओं के समान स्वरुप धारण कर लेगा, यह समान अणुओं की संरचना और नाभिक का स्वरुप धारण कर लेगा। हालांकि, इसका मूल तत्व बदल चुका है, क्योंकि यह शरीर अब मूल भौतिक कोशिकाओं से निर्मित नहीं रह गया है। क्या आप पंच तत्वों को पार नहीं कर गये हैं? निश्चित ही, आपका साधना अभ्यास

अभी समाप्त नहीं हुआ है, और आपको अब भी साधारण लोगों के बीच साधना के अभ्यास की आवश्यकता है। इसलिए, सतह पर आप अब भी एक साधारण व्यक्ति ही लगेंगे। केवल एक भिन्नता होगी कि आप अपनी उम्र के दूसरे लोगों से अधिक युवा दिखाई देंगे। निश्चित रुप से, आपके शरीर की बुरी वस्तुऐं, जिनमें रोग शामिल हैं, उन्हे पहले हटाना होगा, किन्तु हम यहां रोगों का उपचार नहीं करते। हम आपके शरीर की शुद्धि कर रहे हैं, और इसके लिए शब्द प्रयोग "रोग उपचार" भी नहीं है। हम इसे केवल "शरीर की शुद्धि" कहते हैं, और हम सच्चे अभ्यासियों के शरीरों का आन्तरिक शोधन करते हैं। कुछ लोग यहां केवल रोग उपचार के लिए आते हैं। जो लोग बहुत बीमार हैं, उन्हें हम कक्षाओं में आने की अनुमति नहीं देते क्योंकि वे बीमारी ठीक किये जाने का मोहभाव और बीमार होने की मनोदशा नहीं छोड़ सकते। यदि एक व्यक्ति बहुत बीमार है और बहुत परेशानी में है, क्या वह इसका विचार छोड़ सकता है? यह व्यक्ति साधना अभ्यास करने में असमर्थ है। हम समय-समय पर बलपूर्वक कहते रहे हैं कि हम गंभीर रुप से बीमार रोगियों की भर्ती नहीं करते। यह साधना अभ्यास है, जो उससे कहीं दूर है जिसके बारे में वे सोचते हैं। वे वह सब करने के लिए अन्य चीगोंग गुरु ढूंढ सकते हैं। नि:संदेह, कई अभ्यासी रोगग्रस्त होते हैं। क्योंकि आप सच्चे अभ्यासी हैं, हम आपके लिए इन वस्तुओं को संभालेंगे।

कुछ समय साधना अभ्यास करते रहने के बाद, हमारे फालुन दाफा अभ्यासी शक्लसूरत में बहुत कुछ अलग दिखाई देने लगते हैं। उनकी त्वचा कोमल और गुलाबी हो जाती है। वृद्ध लोगों में, झुर्रियां कम या नाममात्र के लिए रह जाती हैं, जो एक साधारण घटना है। मैं यहां कोई अविश्वस्नीय बात नहीं कर रहा हूँ, क्योंकि यहां बैठे हमारे कई अनुभवी अभ्यासी इस स्थिति से परिचित हैं। इसके अलावा, वृद्ध महिलाओं का मासिक धर्म फिर से आरंभ हो जाऐगा क्योंकि एक मन और शरीर के साधना अभ्यास में आवश्यक है कि मासिक धर्म शरीर का संवर्धन करे। मासिक धर्म होगा, किन्तु मासिक स्राव अधिक नहीं होगा। वर्तमान में, उतना थोड़ा सा ही पर्याप्त होगा। यह भी एक साधारण घटना है। अन्यथा, इसके बिना वे अपने शरीर की साधना कैसे कर पाऐंगी। वैसा ही पुरुषों के लिए होगा : वृद्ध तथा युवा सभी अनुभव करेंगे कि संपूर्ण शरीर हल्का हो गया है। जो सच्चे अभ्यासी हैं, वे इस रुपान्तरण का अनुभव करेंगे।

हमारी अभ्यास पद्धति साधना द्वारा जो विकसित करती है वह बहुत प्रगाढ़ है, उन अभ्यास पद्धतियों के विपरीत जिनके व्यायाम पशुओं की नकल पर आधारित हैं।

इस अभ्यास पद्धति द्वारा साधना अति विराट है। वे सभी नियम जिनका शाक्यमुनि और लाओ ज़[35] ने अपने समय में उल्लेख किया था, हमारी आकाशगंगा के अंदर के नियमों तक सीमित थे। हमारा फालुन दाफा साधना द्वारा क्या विकसित करता है? हमारी साधना पद्धति विश्व के निरन्तर विकास के नियमों पर आधारित है, और यह विश्व की उच्चतम प्रकृति के आदर्श, ज़न-शान-रेन द्वारा दिग्दर्शित है। हम इतने विराट विषय की साधना करते हैं जो विश्व की साधना के समकक्ष हैं।

हमारे फालुन दाफा का एक और अत्यन्त अनुपम, अति विशिष्ट लक्षण हैं जो किसी भी दूसरी अभ्यास पद्धति से भिन्न हैं। वर्तमान में, समाज में प्रचलित सभी चीगोंग अभ्यास पद्धतियां दान की साधना या दान अभ्यास के पथ पर आधारित हैं। चीगोंग अभ्यास जिनमें दान की साधना की जाती है, उसमें साधारण लोगों के बीच रहते हुए गोंग खोलने की अवस्था और ज्ञान प्राप्ति तक पहुंचना बहुत कठिन होता है। हमारा फालुन दाफा दान की साधना नहीं करता। हमारी अभ्यास पद्धति उदर के निचले हिस्से में एक फालुन का संवर्धन करती है। कक्षा में मैं स्वयं इसे अभ्यासियों के लिए स्थापित करता हूँ। जब मैं फालुन दाफा सिखा रहा होता हूँ, हम क्रम से इसे सभी के लिए स्थापित करते हैं। कुछ लोग इसका अनुभव कर सकते हैं जबकि कुछ नहीं, अधिकतर लोग इसे अनुभव कर सकते हैं। यह इसलिए क्योंकि लोगों की शारीरिक अवस्थाऐं भिन्न होती हैं। हम फालुन की साधना करते हैं न कि दान की। फालुन विश्व का एक सूक्ष्म स्वरुप है जिसमें विश्व के सभी सामर्थ्य समाहित हैं, और यह स्वचालित कार्य कर सकता है व आर्वतन कर सकता है। यह आपके उदर के निचले भाग में निरन्तर आर्वतन करता रहेगा। एक बार इसके आपके शरीर में स्थापित किये जाने पर, यह सालों साल नहीं रुकेगा और इसी प्रकार घूमता रहेगा। घड़ी की दिशा में घूमते हुए, यह स्वचालित तरीके से विश्व से शक्ति सोख सकता है। इसके अलावा, आपके शरीर के प्रत्येक भाग के रुपान्तरण के लिए आवश्यक शक्ति की पूर्ति के लिए यह स्वयं शक्ति को रुपान्तरित कर सकता है। साथ ही, घड़ी की विपरीत दिशा में घूमते हुए यह शक्ति को निष्कासित करता है, जिससे अवांछनीय तत्व आपके शरीर से बाहर निकल जाते हैं। जब यह शक्ति निष्कासित करता है, तो शक्ति बहुत दूर तक छूटती है, और इसके बाद पुन: यह नई शक्ति अन्दर ले लेता है। छोड़ी गई शक्ति आपके आस पास के लोगों के लिए लाभप्रद हो सकती है। बुद्ध विचारधारा स्वयं उद्धार तथा सभी चेतन प्राणियों का भी उद्धार सिखाती है। इसके साथ और लोग भी लाभान्वित हो सकते हैं, तथा आप अनजाने ही

दूसरे लोगों के शरीर ठीक कर सकते हैं, और उन्हें रोग मुक्त कर सकते हैं, इत्यादि। निश्चित ही, शक्ति का क्षय नहीं होता। जब फालुन घड़ी की दिशा में आर्वतन करता है, यह शक्ति को वापस समेट सकता है क्योंकि यह निरन्तर आर्वतन करता है।

कुछ लोगों को आश्चर्य हो सकता है, "फालुन निरन्तर आवर्तन क्यों करता है?" और भी लोग हैं जो मुझसे पूछते हैं, कि "यह कैसे आर्वतन कर सकता है? इसका क्या कारण है?" यह समझना सरल है कि जब शक्ति एकत्रित होती है तो दान का निर्माण हो सकता है, किन्तु यह अविश्वसनीय लगता है कि फालुन आर्वतन करता है। मैं आपको एक उदाहरण देता हूँ। विश्व गतिमान है, तथा विश्व की सभी आकाशगंगाऐं और नीहारिकाऐं भी गतिमान हैं। नौ ग्रह सूर्य के चारों ओर घूमते हैं, तथा पृथ्वी भी अपनी धुरी पर घूमती है। इसके बारे में आप सब सोचें, उन्हें कौन धकेल रहा है? उन्हें किसने बल प्रदान किया है? एक साधारण व्यक्ति की मनोवृति से आप इसे नहीं समझ सकते, क्योंकि यह इसी प्रकार की आवर्तन प्रणाली है। यही हमारे फालुन के लिए भी सत्य है, कि यह स्वयं आवर्तन करता है। व्यायाम करने के समय में वृध्दि होने से, इसने साधारण लोगों के लिए साधारण जीवन-यापन की परिस्थितियों में साधना के अभ्यास की समस्या को हल कर दिया है। इसमें कैसे वृध्दि होती है? क्योंकि यह निरन्तर आवर्तन करता है, यह लगातार विश्व से शक्ति सोखता और रुपान्तरित करता रहता है। जब आप कार्य करने जाते हैं, तब यह आपका संवर्धन कर रहा होता है। निश्चित ही, फालुन के अलावा, हम आपके शरीर में अनेक शक्ति प्रणालियां व यन्त्र भी स्थापित करेंगे जो, फालुन के साथ-साथ, स्वचालित रुप से आर्वतन करेंगे और आपका रुपान्तरण करेंगे। इसलिए, यह गोंग पूरी तरह स्वचालित रुप से लोगों का रुपान्तरण करता है। इस प्रकार, इसका अर्थ है "गोंग अभ्यासियों का संवर्धन करता है", जिसे "फा अभ्यासियों का संवर्धन करता है" भी कहते हैं। जब आप अभ्यास नहीं कर रहे होते हैं गोंग आपका संवर्धन करता है, ठीक उसी प्रकार जब आप अभ्यास कर रहे होते हैं यह तब भी आपका संवर्धन करता है। खाना खाते हुए, सोते हुए, या कार्य करते हुए आप निरन्तर गोंग द्वारा रुपान्तरित हो रहे होते हैं। आप व्यायाम किस लिए करते हैं? आप व्यायाम फालुन को सुदृढ़ करने तथा इन सभी शक्ति यन्त्रों और प्रणालियों को, जो मैने प्रदान की हैं, प्रबल करने के लिए करते हैं। जब व्यक्ति उच्च स्तरों पर साधना करता है, यह पूर्णत: *वूवेई*[36] की दशा में होनी चाहिए, तथा व्यायामों की क्रियाऐं भी यन्त्रों का अनुसरण करती हैं। मन से कोई निर्देशन नहीं होता, और न ही किसी श्वास पद्धति आदि

का प्रयोग करना चाहिए।

हम अभ्यास करने के लिए समय अथवा स्थान को महत्व नहीं देते। कुछ लोग पूछते हैं, "अभ्यास के लिए उचित समय क्या है? मध्यरात्रि, सुबह या दोपहर?" हम व्यायामों को करने के लिए समय को महत्व नहीं देते। जब आप मध्यरात्रि में अभ्यास नहीं कर रहे होते गोंग आपका संवर्धन करता है। जब आप सुबह अभ्यास नहीं कर रहे होते, गोंग आपका संवर्धन करता है। जब आप सोते हैं, गोंग आपका तब भी संवर्धन कर रहा होता है। जब आप चल रहे होते हैं, गोंग तब भी आपका संवर्धन करता है। गोंग तब भी आपका सवंर्धन करता है जब आप कार्य कर रहे होते हैं। क्या इससे आपके अभ्यास करने के समय में बहुत कमी नहीं आ जाती? आपमें से अनेक वास्तव में ताओ की प्राप्ति के लिए हृदय रखते है, जो निश्चित ही, साधना अभ्यास का प्रयोजन है। साधना अभ्यास का उच्चतम ध्येय ताओ की प्राप्ति तथा साधना को पूर्ण करना है। यद्यपि कुछ लोगों के जीवन में सीमित समय ही शेष रह गया है। उनके जीवन के अब गिने चुने वर्ष ही शेष हैं जो हो सकता है कि साधना के लिए समुचित न हों। हमारा फालुन दाफा इस समस्या को हल कर सकता है तथा अभ्यास की समयावधि को कम कर सकता है। साथ ही, यह मन और शरीर का साधना अभ्यास भी है। जब आप निरन्तर साधना करते हैं, आप लगातार अपने जीवन में वृध्दि करते रहेंगे। नियमित अभ्यास से, आपके जीवन में लगातार वृध्दि होती रहेगी। वे वृद्ध व्यक्ति जिनके जन्मजात गुण अच्छे हैं उनके पास अभ्यास के लिए समुचित समय रहेगा। यहां यद्यपि एक मानदण्ड है, कि आपके पूर्व नियोजित जीवन से अधिक बढ़ाया गया जीवन पूर्णत: आपके अभ्यास के लिए आरक्षित है। यदि आपका मन तनिक भी पथ भ्रमित होता है, तो आपके जीवन को खतरा हो जाएगा क्योंकि आपका जीवनकाल कहीं पहले ही पूर्ण हो जाना चाहिए था। आपके साथ ऐसी बाधा तब तक रहेगी जब तक आप पर-त्रिलोक-फा साधना तक नहीं पहुँच जाते। उसके पश्चात, आप एक दूसरी ही अवस्था स्तर पर होते हैं।

हमें अभ्यास के लिए कोई दिशा विशेष की ओर सम्मुख होने की आवश्यकता नहीं होती और न ही अभ्यास समाप्त करने के लिए विशेष तरीकों की आवश्यकता होती है। चूंकि फालुन निरन्तर आवर्तन करता है, इसे रोका नहीं जा सकता। यदि फोन की घण्टी बजे या द्वार पर कोई दस्तक दे, आप अभ्यास को समाप्त किए बिना ही सीधे इस कार्य को कर सकते हैं। जब आप कुछ करने के लिए रुकते हैं, फालुन तुरन्त घड़ी

की दिशा में घूमेगा और आपके शरीर के बाहर निष्कासित शक्ति को वापस ले लेगा। जो लोग जान बूझ कर ची को बंधित करते हैं और अपने सर में उड़ेल लेते हैं, आप कैसे भी इसे बंधित करें, यह तब भी निकल जाऐगी। फालुन एक प्रज्ञावान सत्ता है, तथा इन कार्यों को स्वयं करना जानता है। हमें दिशाओं की भी आवश्यकता नहीं है, क्योंकि संपूर्ण विश्व गतिशील है। आकाशगंगा गतिशील है, तथा नौ ग्रह सूर्य की परिक्रमा कर रहे हैं। पृथ्वी भी अपनी धुरी पर घूर्णन कर रही है। हम विश्व के इस महान नियम के अनुरुप साधना करते हैं। पूर्व, दक्षिण, पश्चिम, या उत्तर कहां हैं? इनमें से कुछ भी नहीं है। किसी भी दिशा में अभ्यास करना सभी दिशाओं की ओर अभ्यास करना है, तथा किसी भी दिशा में अभ्यास करना पूर्व, दक्षिण, पश्चिम तथा उत्तर की ओर एक साथ अभ्यास करने के समान है। हमारा फालुन अभ्यासियों को भटकने से बचाऐगा। यह आपको कैसे बचाता है? यदि आप सच्चे अभ्यासी हैं, तो हमारा फालुन आपकी रक्षा करेगा। मैं विश्व में स्थिर हूँ। यदि कोई आपको हानि पहुंचा सकता है, तो उसे मुझे भी हानि पहुँचाने योग्य होना होगा। सरल शब्दों में, वह व्यक्ति इस विश्व को हानि पहुँचा सकेगा। जो मैने कहा है वह बहुत अविश्वसनीय लग सकता है। आप इसे बाद में समझेंगे जब आप आगे पढ़ेंगे। इसके अतिरिक्त और भी वस्तुएं हैं जो मेरे द्वारा बताये जाने के लिए अत्यन्त प्रगाढ़ हैं। हम ऊँचे स्तरों के फा की, सरल से प्रगाढ़ तक, क्रमबद्ध व्याख्या करेंगे। यह तब कार्य नहीं करेगा यदि आपका शिनशिंग पवित्र नहीं है। यदि आप किसी वस्तु की इच्छा रखते हैं, तो आप कठिनाई में पड़ सकते हैं। मुझे पता चला है कि कई अनुभवी अभ्यासियों के फालुन विकृत हो गए हैं। क्यो? आपने अपने अभ्यास के साथ दूसरी वस्तुओं का सम्मिश्रण किया है, और आपने दूसरे लोगों की वस्तुओं को स्वीकार लिया है। फालुन ने तब आपकी रक्षा क्यों नहीं की? यदि यह आपको दिया गया है तो यह आपका है, तथा यह आपके मन द्वारा संचालित होता है। यह इस विश्व का नियम है कि आपको किसी वस्तु के लिए इच्छा प्रयास है तो उसमें किसी को हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए। यदि आप साधना अभ्यास नहीं करना चाहते, कोई आपके साथ जबरदस्ती नहीं कर सकता अन्यथा वह वैसा ही होगा जैसे कोई अनुचित कार्य करना। कौन जबरदस्ती आपका हृदय परिवर्तन कर सकता है? आपको स्वयं अपने को अनुशासित करना होगा। सभी विचारधाराओं में से सर्वोतम चुनने का अर्थ है प्रत्येक से वस्तुओं को स्वीकारना। यदि आप रोग के निवारण के लिए आज एक चीगोंग पद्धति का अभ्यास करते हैं और कल किसी और का, तो क्या आपका रोग

ठीक हो जाता है? नहीं। आप केवल इसे विलम्बित कर सकते हैं। ऊँचे स्तरों पर अभ्यास के लिए आवश्यक है कि व्यक्ति एक विचारधारा पर ध्यान दे और उस पर स्थिर रहे। यदि आप एक अभ्यास अपनाते हैं, आप जब तक उस पथ पर पूर्णतया ज्ञानप्राप्ति न कर लें आपको अपने हृदय से इसकी ओर समर्पित होना होगा। उसके बाद ही आप दूसरी विचारधारा का साधना अभ्यास कर सकते हैं, और वह एक भिन्न प्रणाली होगी। क्योंकि एक सच्ची शिक्षाओं की प्रणाली बहुत सुदूर काल से हस्तांतरित हो रही होती है, यह रुपान्तरण की एक अत्यन्त जटिल प्रक्रिया से गुजर चुकी होती है। कुछ लोग इस अनुसार चलते हैं कि अभ्यास करने पर उन्हें कैसा अनुभव होता है। आपके अनुभव का कितना महत्व है? यह कुछ नहीं है। वास्तविक रुपान्तरण प्रक्रिया दूसरे आयाम में फलित होती है तथा अत्यन्त जटिल और पेचीदा होती है। उसमें तनिक भी गलती नहीं हो सकती। यह ठीक एक सुनिश्चित यन्त्र की तरह है जिसमें जैसे ही आप कोई बाहरी पुर्जा लगाऐं तो वह कार्य नही करेगा। आपके शरीर का प्रत्येक आयाम में परिवर्तन में हो रहा है; यह अत्यन्त सूक्ष्म है; और इसमें तनिक भी गलती नहीं हो सकती। मैं आपको पहले भी बता चुका हूँ कि साधना व्यक्ति के अपने प्रयत्नों पर निर्भर करती है, जबकि गोंग का रुपान्तरण व्यक्ति के गुरु द्वारा किया जाता है। यदि आप लापरवाही से दूसरे लोगों की वस्तुएं लेते हैं और उन्हें अपने अभ्यास में मिला लेते हैं, तो बाहरी संदेश इस विचारधारा के अभ्यास की वस्तुओं में व्यवधान डालेंगे, और आप भटक जाऐंगे। इसके अलावा, यह साधारण मानव समाज में प्रत्यक्ष होगा तथा साधारण व्यक्तियों की समस्याओं का रुप धारण करेगा। यह आपके इच्छा प्रयास के कारण होता है, तथा दूसरे इसमें मदद नहीं कर सकते। यह आपके ज्ञानोदय के गुण से संबंधित विषय है। साथ ही, जो आप मिला लेते हैं वह आपके गोंग को विकृत कर देगा, और आप उसके पश्चात साधना अभ्यास नहीं कर सकते। यह समस्या आऐगी। मैं यह नहीं कह रहा हूँ कि प्रत्येक के लिए फालुन दाफा का अध्ययन करना आवश्यक है। यदि आप फालुन दाफा का अध्ययन नहीं करते हैं तथा किसी और चीगोंग पद्धतियों से सच्ची शिक्षाऐं प्राप्त कर चुके हैं, मैं उसे भी स्वीकृत करुंगा। हांलाकि, मैं बताना चाहूँगा, कि ऊँचे स्तरों की ओर वास्तविक साधना अभ्यास के लिए, व्यक्ति को एक अभ्यास के साथ एकाग्रचित होना चाहिए। एक बात जो मैं और सामने लाना चाहूँगा : वर्तमान में, मेरे समान कोई और व्यक्ति लोगों को ऊँचे स्तरों की ओर वास्तविक शिक्षा नहीं दे रहा है। भविष्य में आप जानेंगे कि मैने आपके लिए क्या किया है। इस प्रकार, मुझे विश्वास है

कि आपका ज्ञानोदय का गुण बहुत निम्न नहीं है। बहुत से लोग ऊँचे स्तरों की ओर साधना करना चाहते हैं। अब यह आपके ठीक सामने उपलब्ध किया जा रहा है, और हो सकता है आप अभी भी इससे अनभिज्ञ हों। आप एक गुरु की खोज में हर जगह जा चुके हैं और बहुत सा धन व्यय कर चुके हैं, तब भी आपको कुछ प्राप्त नहीं हुआ। आज, यह आपके द्वार पर उपलब्ध किया जा रहा है, और हो सकता है कि आपने इसे नहीं जाना है ! यह विषय इस पर निर्भर करता है कि आपको यह ज्ञानवर्धन हो सकता है तथा क्या आपको बचाया जा सकता है।

---

1. *फा* – नियम, विधान या सिद्धांत।
2. *चीगोंग* —पारंपरिक चीनी व्यायाम, जिसमें ची या प्राण शक्ति की साधना की जाती है।
3. दाफा — "महान सिद्धांत या महान मार्ग", नियम।
4. "दस दिशाओं का जगत"— बुद्ध विचारधारा में जगत की अवधारणा।
5. *ची* — चीनी संस्कृति में इसे प्राण शक्ति माना जाता है। गोंग की तुलना में यह एक निम्न प्रकार की शक्ति है।
6. त्रिलोक-फा — बुद्धमत के अनुसार जीव को संसार के जन्म मरण के क्रम से गुजरना ही होगा जब तक वह साधना अभ्यास में पर-त्रिलोक-फा स्तर अथवा तीन लोकों के पार न पहुंच जाए।
7. *गोंग* — 1. साधना शक्ति 2. अभ्यास जो ऐसी शक्ति विकसित करता है।
8. शाक्यमुनी — गौतम बुद्ध, सिद्धार्थ।
9. धर्म — धम्म, शाक्यमुनी बुद्ध की शिक्षाऐं।
10. "बैल के सींग में खोदना" — एक चीनी मुहावरा, एक बंद रास्ते में जाना।
11. तथागत — बुद्ध विचारधारा में फलपदवि प्राप्त ज्ञानप्राप्त व्यक्ति, जिसका स्तर बोधिसत्व और अरहत के ऊपर होता है।
12. वज्र सूत्र — बुद्धमत का एक पौराणिक धर्मशास्त्र।
13. मूल आत्मा — यह मुख्य आत्मा (*जु युआनशन*) और सह आत्मा (*फू युआनशन*) में विभाजित है। चीनी संस्कृति में माना जाता है कि शरीर में कई चेतनाएं वास करती हैं, जो कुछ विशेष कार्यों को संचालित करती हैं (जैसे माना जाता है यकृत की अपनी चेतना है जो इसके कार्य को संचालित करती है)।
14. धर्म विनाश काल — शाक्यमुनी बुद्ध के अनुसार धर्म विनाशकाल उनके पांच सौ वर्ष बाद आरम्भ होगा, और उनका धर्म उसके बाद मनुष्यों का उद्धार नहीं कर सकेगा।
15. पंच तत्व — धातु, लकड़ी, जल, अग्नि और पृथ्वी।

16. फल पदवि — बुद्ध विचारधारा में एक व्यक्ति की उपलब्धि का स्तर। उदाहरण के लिए अरहत, बोधिसत्व, तथागत आदि।
17. द — "नैतिकता", एक बहुमूल्य श्वेत पदार्थ।
18. लेय फंग — चीन में 1960 के दशक के नैतिक प्रदर्शक।
19. *कल्प* — दो अरब वर्ष की अवधि। यहां इसका उपयोग संख्या के लिए किया गया है।
20. ताई ची — ताओ विचारधारा का प्रतीक चिन्ह जो पश्चिम में यिन-यैंग चिन्ह के नाम से प्रसिद्ध है।
21. ह तु लुओ श्यु — पूर्व ऐतिहासिक आकृतियां जो प्राचीन चीन में प्रकट हुईं और माना जाता है कि वे प्रकृति के परिवर्तत के क्रम को उजागर करती हैं।
22. परिवर्तनों की पुस्तक — दिव्य विषयों की एक प्राचीन पुस्तक, झाऊ राजवंश (1100 बी.सी. - 221 बी.सी.) के समय से।
23. आठ त्रिआकृतियां — परिवर्तनों की पुस्तक से, एक पूर्व ऐतिहासिक आकृति जो माना जाता है कि प्रकृति के परिवर्तन के क्रम को उजागर करती है।
24. फो तुओ — चीनी भाषा में बुद्ध के लिए साहित्यिक शब्द।
25. फु तु — चीनी भाषा में बुद्ध के लिए साहित्यिक शब्द।
26. महान सांस्कृतिक आंदोलन — एक वामपंथी राजनीतिक अभियान जिसमें पांरपरिक आदर्शों और संस्कृति की निंदा हुई (1966-1976)।
27. अरहत — बुद्ध विचारधारा में फलपदवि प्राप्त ज्ञानप्राप्त प्राणी जो त्रिलोक से बाहर है।
28. तान जिंग, ताओ जांग — साधना अभ्यास की चीनी साहित्यिक कृतियां।
29. *शिनशिंग* – मन या हृदय की प्रकृति, नैतिक चरित्र।
30. बोधिसत्व — बुद्ध विचारधारा में फलपदवि प्राप्त एक ज्ञानप्राप्त प्राणि जो अरहत से उच्च किन्तु एक तथागत से निम्न है।
31. दिव्य नेत्र — इसे तीसरा नेत्र भी कहा जाता है।
32. *दान* — साधक के शरीर में उपस्थित शक्ति पुंज, जिसे दूसरे आयामों से एकत्रित किया जाता है।
33. "जमा की हुई औषधिक जड़ीबूटियों ..." — आन्तरिक प्रक्रिया के लिए एक ताओ कथन।
34. अन्तिम महाविनाशकाल — माना जाता है कि विश्व के निरन्तर विकास की तीन अवस्थाऐं हैं (आंरभिक, माध्यमिक, अन्तिम) और अब अन्तिम महाविनाशकाल की अन्तिम अवधि है।
35. लाओ ज़ — ताओ विचारधारा में संस्थापक और ताओ ते चिंग के लेखक, माना जाता है कि वे चीन में पांचवी या चौथी शताब्दी ई.पू. में रहे व शिक्षाऐं दीं।
36. *वूवेई* — र्निविचार, बिन उद्देश्य।

उपदेश दो

दिव्य नेत्र संबंधित विषय

कई चीगोंग गुरु दिव्य नेत्र के विषय पर चर्चा कर चुके हैं। फा की यद्यपि विभिन्न स्तरों पर विभिन्न अभिव्यक्तियां हैं। एक अभ्यासी जिसकी साधना एक विशिष्ट स्तर तक पहुंची है वह केवल उसी स्तर तक की अभिव्यक्तियों को देख सकता है। वह उस स्तर से आगे के सत्य को देख पाने में असमर्थ होता है, और न ही उस पर विश्वास करेगा। इस प्रकार वह जो अपने स्तर पर देखता है केवल उसी को सत्य समझता है। जब तक उसकी साधना एक ऊँचे स्तर पर नहीं पहुंच जाती; वह समझता है कि उन वस्तुओं का अस्तित्व नहीं है और विश्वास योग्य नहीं हैं; इसका निर्धारण उसके स्तर द्वारा होता है, तथा उसका मन उत्थान नहीं कर पाता। दूसरे शब्दों में, दिव्य नेत्र संबंधित विषय पर कुछ लोग एक प्रकार से व्याख्या करते हैं तो कुछ दूसरे प्रकार से। परिणामस्वरुप, उन्होंने इस विषय को उलझा दिया है, तथा अन्त में कोई भी इसे स्पष्ट रुप से समझा नहीं पाता। दिव्य नेत्र, वास्तव में, एक ऐसा विषय है जिसे स्पष्ट रुप से निम्न स्तर पर नहीं समझाया जा सकता। अतीत में, दिव्य नेत्र की संरचना को अत्यन्त गुप्त माना जाता था, तथा साधारण व्यक्तियों को इसे जानने की मनाही थी। इसलिए संपूर्ण इतिहासकाल में किसी ने इसकी चर्चा नहीं की। किन्तु यहां हम इसकी चर्चा प्राचीन काल के सिद्धांतों के आधार पर नहीं करेंगे। हम इसे समझाने के लिए आधुनिक विज्ञान और सरलतम आधुनिक भाषा का प्रयोग करेंगे, और इसके मूलभूत विषयों पर प्रकाश डालेंगे।

दिव्य नेत्र जिसकी हम चर्चा कर रहे हैं, वास्तव में, दोनों भौहों के बीच कुछ ऊपर स्थित है, तथा यह पिनियल ग्रन्थि से जुड़ा है। यही मुख्य नाड़ी है। मानव शरीर में कई अतिरिक्त नेत्र होते हैं। ताओ विचारधारा का कथन है कि प्रत्येक छिद्र एक नेत्र है। ताओ विचारधारा के अनुसार शरीर में एक एक्यूपंक्चर बिंदु एक छिद्र कहलाता है जबकि चीनी चिकित्सा विज्ञान में यह एक एक्यूपंक्चर बिंदु कहलाता है। बुद्ध विचारधारा का मत है कि प्रत्येक रोम छिद्र एक नेत्र है। इसलिए कुछ लोग कानों द्वारा पढ़ सकते हैं, तथा कुछ हाथों द्वारा अथवा सर के पीछे से देख सकते हैं, कुछ पैर अथवा

उदर द्वारा देख सकते हैं। यह सब संभव है।

दिव्य नेत्र के बारे में बताते हुए, हम पहले इन दो भौतिक मानव नेत्रों की बात करेंगे। वर्तमान में कुछ लोग सोचते हैं कि ये नेत्र इस विश्व में कोई भी पदार्थ अथवा वस्तु देख सकते हैं। इसलिए कुछ लोगों ने यही हठी धारणा अपना ली है कि व्यक्ति जो कुछ नेत्रों द्वारा देख सकता है, केवल वही वास्तविक तथा निश्चित है। जो वे नही देख सकते उस पर वे विश्वास नहीं करते। अतीत में, यह माना जाता था कि इस प्रकार के लोगों का ज्ञानोदय का गुण निम्न है। यदि देखा नहीं तो विश्वास नहीं। यह बहुत कुछ तर्कसंगत लग सकता है। किन्तु कुछ ऊँचे स्तर के दृष्टिकोण से देखें तो, यह तर्कसंगत नहीं है। प्रत्येक काल-अवकाश पदार्थ से निर्मित है। वास्तव में विभिन्न काल-अवकाशों की विभिन्न भौतिक संरचनाएं होती हैं, तथा विभिन्न जीवनों के अनेक साकार रूप होते हैं।

मैं आपको एक उदाहरण देता हुँ। बुद्धमत में, यह कहा जाता है कि मानव समुदाय में घटित प्रत्येक कार्य-कलाप मिथ्या है तथा अवास्तविक है। वे मिथ्या कैसे हो सकते हैं? ठीक यहां वास्तविक तथा ठोस भौतिक वस्तुएं विद्यमान हैं, तो कौन कहेगा कि वे असत्य हैं? एक भौतिक वस्तु के अस्तित्व का रूप इसी प्रकार दिखाई पड़ता है, किन्तु यह वास्तव में, जिस प्रकार है वह इस प्रकार नहीं है। हमारे नेत्र, यद्यपि, भौतिक वस्तुओं को हमारे भौतिक आयाम में उस अवस्था में स्थिर करने में सक्षम होते हैं जिसे अब हम देख सकते हैं। वस्तुएं वास्तव में इस अवस्था में नहीं हैं, तथा वे हमारे आयाम में भी इस अवस्था में नहीं हैं। उदाहरण के लिए एक व्यक्ति सूक्ष्मदर्शी द्वारा कैसा दिखाई पड़ता है? संपूर्ण शरीर बिखरे हुए, सूक्ष्म अणुओं का बना है, ठीक उसी प्रकार जैसे रेत के कण जो गतिमान हैं। इलेक्ट्रॉन नाभिक की परिक्रमा करते हैं, तथा संपूर्ण शरीर कंपायमान तथा गतिमान है। शरीर की सतह न तो चिकनी है और न ही एकसार। विश्व में विद्यमान कोई भी पदार्थ जैसे स्टील, लौहा और पत्थर एक समान हैं तथा उनके अन्दर, उनके सभी आण्विक तत्व गतिमान हैं। आप उनकी संपूर्ण सरंचना नहीं देख सकते, तथा वे वास्तव में स्थिर नहीं हैं। यह मेज भी कंपन कर रही है, किन्तु आपके नेत्र सत्य नहीं देख सकते। ये दो नेत्र व्यक्ति को इस प्रकार झूठा दृश्य दिखा सकते हैं।

ऐसा नहीं है कि हम वस्तुओं को सूक्ष्म स्तर पर नहीं देख सकते, या लोगों के पास यह योग्यता नहीं है। लोगों में यह योग्यता जन्मजात होती है, तथा वे एक निश्चित सूक्ष्म स्तर पर वस्तुओं को देख सकते हैं। चूंकि इस भौतिक आयाम में हमारे पास ये दो नेत्र हैं, लोग झूठा दृश्य ग्रहण करते हैं तथा वस्तुओं को देख पाने में असमर्थ होते हैं। इसलिए, विगत में यह कहा जाता था कि यदि लोग उस पर विश्वास नहीं करते जो वे नहीं देख पाते, ऐसे लोगों को साधक समुदाय द्वारा निम्न ज्ञानोदय के गुण वाला, साधारण लोगों की मोहमाया में भटका हुआ, तथा साधारण लोगों के बीच दिग्भ्रमित माना जाता था। यह कथन प्राचीन काल से धर्मो में कहा गया है। वास्तव में, हमने भी इसे बहुत कुछ तर्कसंगत माना है।

ये दो नेत्र हमारे इस भौतिक आयाम में वस्तुओं को इस अवस्था में स्थिर कर सकते हैं। इसके अलावा इनकी कोई और विशेष योग्यता नहीं है। जब व्यक्ति किसी वस्तु को देखता है, तो प्रतिबिंब सीधे उसके नेत्र में नहीं बनता। नेत्र कैमरे के लेंस की तरह होते हैं जो केवल एक उपकरण की भांति प्रयोग में आते हैं। दूर की वस्तुऐं देखने पर, लेंस का विस्तार होता है, हमारे नेत्र भी इसी प्रकार कार्य करते हैं। अधेंरे में देखने पर, पुतलियों में फैलाव होता है। जब कैमरा अन्धकार में चित्र लेता है, इसका एपरर्चर भी फैल जाता है। अन्यथा अपर्याप्त प्रकाश के कारण संपूर्ण चित्र गहरे रंग का होगा। जब कोई व्यक्ति बाहर अधिक प्रकाश में जाऐ, तो उसकी पुतलियां तुरन्त संकुचित हो जायेंगी। अन्यथा उसके नेत्र प्रकाश से चुंधिया जायेंगे और वह वस्तुओं को स्पष्ट नहीं देख सकेगा। कैमरा भी इसी नियम से कार्य करता है, और एपरर्चर को भी संकुचित होना आवश्यक होता है। यह केवल वस्तु के प्रतिबिंब का चित्र ले सकता है, और यह केवल एक उपकरण है। जब हम वास्तव में वस्तुओं को, किसी व्यक्ति को, या किसी वस्तु के अस्तित्व के रूप को देखते है, तो प्रतिबिंब मस्तिष्क में बनते हैं। यानि, जो हम नेत्रों द्वारा देखते हैं वह ऑप्टिक नर्व द्वारा मस्तिष्क के पिछले भाग में पिनियल ग्रंथि को भेज दिया जाता है, और तब यह उस भाग में चित्र की भांति परावर्तित होता है। कहने का अर्थ है कि वास्तविक परावर्तित चित्र मस्तिष्क की पिनियल ग्रन्थि में दिखाई देते हैं। आधुनिक चिकित्सा विज्ञान भी इसे स्वीकार करता है।

जिसे हम दिव्य नेत्र का खुलना कहते हैं उसमें मानवीय आप्टिक नर्व के प्रयोग के बिना ही व्यक्ति की भौहों के बीच से एक मार्ग खुल जाता है जिससे पिनियल ग्रन्थि

सीधे बाहर देख सकती है। इसे दिव्य नेत्र का खुलना कहते हैं। कुछ लोग सोचेंगे : "यह सत्य नहीं हो सकता। आखिरकार, ये नेत्र अभी भी उपकरण की भांति प्रयोग हो सकते हैं, ओर वे वस्तुओं का प्रतिबिंब ग्रहण कर सकते हैं, जो नेत्रों के बिना असंभव है।" आधुनिक शल्य चिकित्सा में पाया गया है कि पिनियल ग्रन्थि का अग्रभाग एक मानवीय नेत्र की संपूर्ण संरचना जैसा है। चूंकि यह व्यक्ति के कपाल में विकसित होती है, इसलिए इसे नेत्रों का पदचिन्ह भी कहा जाता है। यह नेत्रों का पदचिन्ह है अथवा नहीं, हमारे साधक समुदाय में ऐसा नहीं माना जाता। आधुनिक चिकित्सा, जबकि, पहले से मान चुकी है कि मानव मस्तिष्क के बीच में एक नेत्र स्थित है। जो मार्ग हम खोलते है वह सीधे इसी स्थान पर लक्ष्य बनाता है और यह आधुनिक चिकित्सा विज्ञान की समझ से पूरी तरह सहमत पाया गया है। यह नेत्र हमारे भौतिक नेत्रों की तरह झूठा प्रतिबिंब नहीं बनाता, क्योंकि यह पदार्थ की प्रकृति और पदार्थ के मूलरुप दोनों को देखता है। इसलिए ऊँचे स्तर के दिव्य नेत्र वाला व्यक्ति हमारे इस भौतिक आयाम के पार दूसरे काल-अवकाशों में देख सकता है, तथा वह वे दृश्य देख सकता है जो साधारण लोग नहीं देख सकते। निम्नस्तर के दिव्य नेत्र वाले व्यक्ति के पास छेदक दृष्टि हो सकती है जिससे वह दीवार के पार और मानव शरीर के पार देख सकता है। इसमें यही दिव्य सिद्धि होती है।

बुद्ध विचारधारा दृष्टि के पांच स्तरों के बारे में बताता है : भौतिक दृष्टि, दिव्य दृष्टि, विवेक दृष्टि, फा दृष्टि तथा बुद्ध दृष्टि। दिव्य नेत्र के ये पांच मुख्य स्तर हैं, तथा प्रत्येक उच्च, मध्य और निम्न स्तरों में विभाजित है। ताओ विचारधारा फा दृष्टि के नौ गुणा नौ अथवा इक्यासी स्तरों के बारे में बताता है। हम यहां सभी के लिए दिव्य नेत्र खोल रहे हैं, किन्तु हम इसे दिव्य दृष्टि या उससे नीचे के स्तर पर नहीं खोलते। क्यों? यद्यपि आप यहां बैठे हैं और आपने साधना का अभ्यास प्रारंभ किया है, परन्तु, आप अभी एक साधारण व्यक्ति के स्तर से आरंभ कर रहे हैं जिसमें साधारण लोगों के बहुत से मोहभाव नहीं छूटे हैं। यदि आपका दिव्य नेत्र दिव्य दृष्टि से नीचे के स्तर पर खोल दिया जाता है, तो आपके पास वह होगा जिसे साधारण लोग दिव्य सिद्धियाँ मानते हैं, क्योंकि आप दीवार के पार वस्तुओं को देख सकेंगे और मानव शरीर के पार देख सकेंगे। यदि हम यह दिव्य सिद्धि सर्वत्र उपलब्ध करा दें और यदि सभी के दिव्य नेत्र इस स्तर पर खोल दिये जाएं, इससे साधारण मानव समाज में गहन व्यवधान उत्पन्न हो

जायेगा और साधारण मानव समाज की दशा तितर-बितर हो जाएगी : राजकीय गोपनीय दस्तावेज खतरे में पड़ जायेंगे; यह वैसे ही होगा कि लोग कपड़े पहने हैं या नहीं; और आप किसी भी घर में लोगों को बाहर से देख सकेंगे, सड़क पर चहल कदमी करते हुए आप लॉटरी के टिकट के सभी शीर्ष ईनाम पा लेंगे। इसकी अनुमति नहीं दी जा सकती! इसके बारे में आप सभी सोचें : यदि सभी के दिव्य नेत्र दिव्य दृष्टि स्तर पर खोल दिए जायें तो क्या इसे तब भी मानव समाज कहा जायेगा? मानव समाज की दशा में गहन व्यवधान उत्पन्न करना पूर्णतया निषेध है। यदि मैं वास्तव में आपका दिव्य नेत्र उस स्तर पर खोलता हूँ, तो आप तुरन्त एक चीगोंग गुरू बन सकते हैं। कुछ लोग पहले से ही चीगोंग गुरु बनने के स्वप्न देखते थे। यदि उनके दिव्य नेत्र आकस्मिक खोल दिऐ जाऐं, वे रोगियों का उपचार कर सकेंगे। उस स्थिति में क्या मैं आपको दुष्ट मार्ग की ओर अग्रसर नहीं कर रहा हूँ? तब, मैं आपका दिव्य नेत्र किस स्तर पर खोलता हूँ? मै आपका दिव्य नेत्र सीधे विवेक दृष्टि के स्तर पर खोलूंगा। यदि इसे और ऊँचे स्तर पर खोला जाए, तो आपका शिनशिंग पर्याप्त नहीं होगा। यदि इसे किसी निम्न स्तर पर खोला जाऐ, तो इससे साधारण मानव समाज की दशा में व्यवधान उत्पन्न होगा। विवेक दृष्टि से आपमें दीवार के पार अथवा मानव शरीर के पार देखने की योग्यता नहीं आती, किन्तु आप दूसरे आयामों के दृश्यों को देख सकते हैं। इससे क्या फायदे होंगे? इससे अभ्यास में आपका विश्वास बढ़ सकता है। जब आप वास्तव में कुछ देखते हैं जो साधारण लोग नहीं देख सकते, आप सोचेंगे कि वास्तव में उसका अस्तित्व है। कोई अन्तर नहीं पड़ता यदि आप अभी दृश्य स्पष्टता से देख पाते हैं या नहीं, आपका दिव्य नेत्र इस स्तर पर खोला जायेगा, और यह आपके अभ्यास के लिए अच्छा है। एक सच्चा दाफा अभ्यासी इस पुस्तक को पढ़ कर भी समान लाभ प्राप्त कर सकता है, यदि वह शिनशिंग सुधारने में अपने साथ कठोर रहता है।

व्यक्ति के दिव्य नेत्र के स्तर का निर्धारण कैसे होता है? यह इस प्रकार नहीं है कि जैसे ही आपका दिव्य नेत्र खोला जाता है आप सब कुछ देख सकेंगे- ऐसा नहीं है। इसमें स्तरों का वर्गीकरण भी होता है। तो, स्तरों का निर्धारण कैसे होता है? इसमें तीन कारक हैं। पहला यह कि व्यक्ति के दिव्य नेत्र में अन्दर से बाहर की ओर जाता हुआ शक्ति क्षेत्र होना चाहिए और इसे हम ची सत्व कहते हैं। इसकी क्या उपयोगिता है? यह एक टेलीविजन की स्क्रीन की तरह है : फोसफोर के बिना, यदि टेलीविजन को चलाया

जाये तो यह केवल एक प्रकाश का बल्ब ही है। इसमें केवल प्रकाश होगा, किन्तु दृश्य नहीं। फोसफोर के कारण ही दृश्य प्रतिबिंबित होते हैं। यद्यपि, यह उदाहरण पूर्णतया उपयुक्त नहीं है क्योंकि हम वस्तुओं को प्रत्यक्ष देखते है जबकि टेलीविजन वस्तुओं को स्क्रीन पर प्रतिबिंबित करके दिखाता है। इसे लगभग इस प्रकार समझा जा सकता है। यह थोड़ा सा ची सत्व अत्यन्त अनमोल है, क्योंकि यह एक सूक्ष्म तत्व का बना है जो द से परिष्कृत किया गया है। साधारणत:, प्रत्येक व्यक्ति का ची सत्व भिन्न होता है। लगभग दस हजार में दो व्यक्ति समान स्तर पर होते हैं।

दिव्य नेत्र हमारे विश्व के फा की प्रत्यक्ष अभिव्यक्ति है। यह दिव्य है तथा इसका व्यक्ति के शिनशिंग से घनिष्ट संबंध है। यदि किसी व्यक्ति का शिनशिंग स्तर निम्न है तो उसका स्तर भी निम्न है। शिनशिंग स्तर निम्न होने के कारण इस व्यक्ति के अधिकांश ची सत्व का क्षय हो चुका होता है। यदि किसी व्यक्ति का शिनशिंग स्तर ऊँचा है और साधारण मानव समाज में बचपन से व्यस्क होने तक उसने प्रसिद्धि, लाभ, एक दूसरे के बीच संघर्ष, स्वार्थ तथा अनेकों मानवीय भावनाओं और इच्छाओं की ओर कम ध्यान दिया है, उसका ची सत्व अपेक्षाकृत अधिक संरक्षित होगा। इसलिए उसके दिव्य नेत्र खुलने के बाद वह वस्तुओं को अधिक स्पष्ट देख सकता है। छ: वर्ष से कम उम्र का बच्चा दिव्य नेत्र खुलने के बाद वस्तुओं को बहुत स्पष्ट देख सकता है। उसका दिव्य नेत्र खोलना सरल भी है। यदि मैं एक शब्द कहूँ, यह खुल जायेगा।

साधारण मानव समाज के कलुषित प्रवाह या दूषित वातावरण के कारण, जिन वस्तुओं को लोग उचित समझते हैं, वास्तव में, अक्सर अनुचित होती हैं। क्या सभी एक अच्छे जीवन की कामना नहीं करते? अच्छे जीवन की इच्छा से हो सकता है दूसरों के हितों का उल्लघन हो, स्वयं की स्वार्थी इच्छाओं को बढ़ावा मिले; दूसरों के लाभों में रुकावट हो, या दूसरों को डराने धमकाने और हानि पहुंचाने की प्रवृति बढ़े। व्यक्ति निजी-लाभ के लिए साधारण लोगों के बीच स्पर्धा और संघर्ष करेगा। क्या यह विश्व की प्रकृति के विपरीत जाना नहीं है? इस प्रकार जिसे लोग उचित समझते हैं आवश्यक नहीं कि उचित हो। बच्चों को शिक्षा देते हुए, व्यस्क अक्सर सिखाते हैं, "तुम्हें चतुर बनना चाहिए," जिससे भविष्य में वह साधारण लोगों के समाज में अपना स्थान बना सके। हमारे विश्व के दृष्टिकोण से "चतुर होना" पहले से ही अनुचित है, क्योंकि हम प्रकृति के क्रम के अनुरुप चलने तथा निजी-लाभ पर कम ध्यान देने पर बल देते हैं। चतुर होने पर

वह निजी-लाभ पर अधिक ध्यान देने लगता है। "जो भी तुम्हें धमकाये, उसके शिक्षक के पास जाओ और उसके माता-पिता का पता करो।" "यदि तुम जमीन पर पड़ा हुआ पैसा देखो तो उठा लो।" बच्चों को इसी प्रकार सिखाया जाता है। बचपन से बड़े होने तक जैसे-जैसे वह और सीखता है, धीरे-धीरे वह साधारण मानव समाज में और स्वार्थी होता जायेगा। वह दूसरों का लाभ उठायेगा और द का क्षय करेगा।

यह पदार्थ, द, क्षय होने पर भी लुप्त नहीं होता। यह दूसरे व्यक्ति को हस्तान्तरित हो जाता है। किन्तु यह ची सत्व नष्ट हो सकता है। यदि कोई व्यक्ति बचपन से बड़े होने तक कपटी रहा है और उसकी स्वहित और लाभ पाने की इच्छा बहुत प्रबल रही है, इस व्यक्ति का दिव्य नेत्र खुलने के बाद साधारणत: कार्य नहीं करेगा, या वस्तुओं को स्पष्ट नहीं देख पायेगा। यद्यपि इसका यह अर्थ नहीं है कि यह इसके बाद कार्य करेगा ही नहीं। क्यों ? क्योंकि साधना अभ्यास के क्रम के दौरान हम अपनी मूल, वास्तविक प्रकृति की ओर लौटने का प्रयत्न करते हैं और दृढ़ अभ्यास द्वारा हम निरन्तर इसकी पूर्ति तथा पुन: प्राप्ति कर सकेंगे। इसलिए शिनशिंग पर ध्यान देना आवश्यक है। हम परिपूर्ण विकास तथा परिपूर्ण सुधार पर बल देते हैं। यदि शिनशिंग में सुधार होता है, बाकी सब स्वयं सुधर जायेगा। यदि शिनशिंग में सुधार नहीं होता है, उस थोड़े से ची सत्व की पूर्ति भी नहीं हो सकेगी। यही नियम है।

दूसरा कारण है कि जब व्यक्ति स्वयं अपने आप साधना अभ्यास करता है, यदि उसका ज्ञानोदय का गुण उत्तम है तो उसका दिव्य नेत्र खुल सकता है। अक्सर, कुछ लोग जिस पल उनका दिव्य नेत्र खुलता है, भयभीत हो जाते हैं। वे क्यों भयभीत हो जाते हैं? यह इसलिए क्योंकि लोग अक्सर मध्य रात्रि में चीगोंग का अभ्यास करते हैं, जब रात्रि अधंकारमय और शांत होती है। जैसे वह व्यक्ति अभ्यास करता है, अचानक वह एक बड़ा नेत्र अपनी आंखो के सम्मुख देख सकता है, जो उसे तुरन्त भयभीत कर देगा। यह भय असाधारण रुप से बड़ा होता है, और वह उसके बाद चीगोंग का अभ्यास करने की हिम्मत नहीं जुटा सकेगा। कितना डरावना! एक पलक झपकता हुआ विशाल नेत्र आपको देख रहा है, और यह पूर्णतया स्पष्ट है। इस कारण, कुछ लोग इसे राक्षस का नेत्र कहते हैं, तो कुछ बुद्ध का नेत्र, इत्यादि। वास्तव में, यह आपका अपना नेत्र है। निश्चित ही, साधना अपने प्रयत्न पर निर्भर करती है, जबकि गोंग का रुपान्तरण व्यक्ति के गुरु द्वारा किया जाता है। गोंग के रुपान्तरण की संपूर्ण प्रक्रिया बहुत जटिल होती है,

और दूसरे आयामों में फलित होती है। शरीर में परिवर्तन केवल दूसरे एक आयाम में नहीं होता, बल्कि सभी विभिन्न आयामों में होता है। क्या आप यह स्वयं कर सकते हैं? आप नहीं कर सकते। ये वस्तुऐं गुरु द्वारा व्यवस्थित की जाती हैं और गुरु द्वारा पूर्ण की जाती हैं। इसलिये, यह कहा जाता है कि साधना व्यक्ति के अपने प्रयत्नों पर निर्भर करती है, जबकि गोंग का रुपान्तरण उसके गुरु द्वारा किया जाता है। आपकी केवल ऐसी इच्छा हो सकती है और इसके बारे में इस प्रकार सोच सकते हैं, किन्तु इन कार्यों को गुरु ही वास्तव में करते हैं।

कुछ लोग दिव्य नेत्र स्वयं अपने अभ्यास द्वारा खोलते हैं। हम आपके उस नेत्र के बारे में कह रहे हैं, किन्तु आप इसे स्वयं विकसित करने में असमर्थ हैं। कुछ लोगों के गुरु होते हैं जो, यह पता लगने पर कि उनके दिव्य नेत्र खुल गये हैं, उनके लिये एक रुपान्तरित कर देंगे। इसे यथार्थ नेत्र कहा जाता है। यद्यपि, कुछ लोगों के गुरु नहीं होते, किन्तु ऐसा गुरु हो सकता है जो समीप से गुजर रहा हो। बुद्ध विचारधारा का कथन है : "बुद्ध सर्वव्यापी हैं।" वे इतने अधिक हैं कि वे सब ओर हैं। कुछ लोग यह भी कहते हैं : "व्यक्ति के सर से तीन फुट ऊपर भी आध्यात्मिक प्राणी हैं," जिसका अर्थ यह है कि वे अनगिनत हैं। यदि एक समीप से गुजरता हुआ गुरु यह देखता है कि आपने बहुत अच्छा अभ्यास किया है जिससे दिव्य नेत्र खुल गया है तथा आपको एक नेत्र की आवश्यकता है, वह एक आपके लिए रुपान्तरित कर देगा, जिसे आपकी अपनी साधना का फल माना जा सकता है। लोगों को मुक्ति प्रदान करने में मूल्य, पारितोषिक अथवा प्रसिद्धि की कोई शर्त या विचार नहीं होता। वे इस प्रकार साधारण लोगों के नायकों से कहीं अधिक श्रेष्ठ हैं। वे इसे पूरी तरह अपने करुणाभाववश करते हैं।

जब आपका दिव्य नेत्र खोला जाता है, एक परिस्थिति उत्पन्न होगी : आपकी आंखें प्रकाश से चौंधिया जायेंगी और जलन अनुभव होगी। वास्तव में आपकी आंखें चकाचौंध नहीं हुई हैं। बल्कि, यह आपकी पिनियल ग्रंथि है जिसमें जलन होती है, जबकि आपको लगता है कि आपकी आंखों में जलन हो रही है। यह इसलिए होता है क्योंकि आपने इस नेत्र को अभी प्राप्त नहीं किया है। जब आपको यह नेत्र उपलब्ध हो जाता है, तब आपकी आंखों में जलन नहीं होगी। हमारे कई अभ्यासी इस नेत्र का अनुभव कर सकेंगे अथवा देख सकेंगे। क्योंकि इसमें विश्व के समान प्रकृति का समावेश है, इसलिए यह बहुत ही पवित्र और साथ ही जिज्ञासु होता है। यह अन्दर की ओर

देखता है कि आपका दिव्य नेत्र खुल चुका है और यह वस्तुओं को देख सकता है अथवा नहीं। यह अन्दर की ओर आपको भी देखता है। तब तक आपका दिव्य नेत्र खुल चुका होता है। जब यह आपको देखता है, आप इसे अचानक देखकर चौंक जायेंगे। वास्तव में, यह आपका अपना नेत्र है। अब से, जब आप वस्तुओं को देखेंगे, आप इस नेत्र द्वारा देखेंगे। यदि आपका दिव्य नेत्र खुला भी हो, आप इस नेत्र के बिना वस्तुओं को बिल्कुल नहीं देख पायेंगे।

तीसरा कारण वे भिन्नताऐं हैं जो विभिन्न आयामों में साकार होती है जब व्यक्ति अलग-अलग स्तरों का भेदन करता है। यही विषय है जो वास्तव में व्यक्ति का स्तर निर्धारित करता है। वस्तुओं को देखने के लिए मुख्य नाड़ी के अलावा, कई सह नाड़ियां भी होती हैं। बुद्ध विचारधारा का मानना है कि प्रत्येक रोमछिद्र एक नेत्र है, जबकि ताओ विचारधारा के अनुसार शरीर का प्रत्येक छिद्रमार्ग एक नेत्र है। यानि, सभी एक्यूपंक्चर बिंदु नेत्र हैं। यद्यपि, जो कुछ उन्होंने कहा है वह शरीर में फा के रुपान्तरणों का एक रूप ही है; व्यक्ति शरीर के किसी भी भाग से वस्तुओं को देख सकता है।

स्तर जिसके बारे में हम बात कर रहे हैं वह इससे भिन्न है। मुख्य नाड़ी के अलावा, विभिन्न भागों में कई मुख्य सह-नाड़ियां भी होती है, जैसे दोनो भौहों के ऊपर, पलकों के ऊपर और नीचे, और *शानगन* [1] बिंदु पर। वे व्यक्ति के स्तरों के भेदन के विषय को निर्धारित करते हैं। निश्चित ही, एक साधारण अभ्यासी यदि शरीर के अलग अलग भागों से वस्तुओं को देख सके, तो वह पहले ही एक बहुत ऊँचे स्तर पर पहुँच चुका है। कुछ अपनी भौतिक आंखों द्वारा भी दृश्य देख पाते हैं। वे भी इन नेत्रों का संवर्धन करने में सफल रहे हैं जो विभिन्न प्रकार की दिव्य सिद्धियों से सज्जित हैं। यदि इस नेत्र का उचित प्रकार से प्रयोग नहीं किया जाता है, तो व्यक्ति दूसरी वस्तु को न देख कर सदैव एक ही वस्तु देखेगा। किन्तु, इससे भी काम नहीं बनेगा। इस प्रकार, कुछ लोग अक्सर एक ओर एक नेत्र से देखते हैं तथा दूसरी ओर दूसरे नेत्र से। किन्तु इस दायें नेत्र के नीचे कोई सह नाड़ी नहीं है क्योंकि यह सीधे फा से संबंधित है। लोग दायें नेत्र का प्रयोग बुरे कार्यों को करने में करते हैं; इसलिए दायें नेत्र के नीचे कोई सह नाड़ी नहीं होती। यह विभिन्न मुख्य सह नाड़ियों के संदर्भ में है जो व्यक्ति की त्रिलोक-फा साधना में विकसित होती हैं।

एक अत्यन्त ऊँचे स्तर पर पहुँचने के पश्चात तथा पर-त्रिलोक-फा साधना के बाद, एक नेत्र विकसित होगा जो एक युग्म नेत्र जैसा लगता है। मुख्य रुप से, चेहरे के ऊपरी भाग में एक वृहत नेत्र विकसित होगा जिसमें बहुत से लघु नेत्र होंगे। कुछ महान ज्ञान प्राप्त व्यक्ति जो बहुत ऊँचे स्तरों पर हैं इतने नेत्र विकसित कर लेते हैं कि वे उनके पूरे चेहरे पर होते हैं। सभी नेत्र, वस्तुओं को इस वृहत नेत्र द्वारा देखते हैं, तथा वे वह सब देख सकते हैं जो वे चाहें। वर्तमान में, जन्तु विशेषज्ञ तथा कीट विशेषज्ञ मक्खियों पर शोध करते हैं, एक मक्खी की आंख बहुत बड़ी होती है सूक्ष्मदर्शी से देखने पर यह ज्ञात होता है कि इसके अन्दर बहुत सी छोटी आंखें होती हैं, तथा इसे युग्म आंख कहा जाता है। अभ्यासियों के एक अत्यन्त ऊँचे स्तर पर पहुँचने पर, यह स्थिति आ सकती है। किन्तु इसे संभव करने के लिए व्यक्ति का स्तर तथागत स्तर से भी कई गुणा ऊँचा होना चाहिए। हालांकि एक साधारण व्यक्ति इसे नहीं देख सकता। औसत स्तर पर भी लोग इसके अस्तित्व को नहीं देख सकते, और क्योंकि यह दूसरे आयाम में होता है वे केवल यह देख सकते हैं कि यह व्यक्ति दूसरे लोगों की भांति साधारण ही हैं। यह स्तरों के भेदन का विवरण है। कहने का अर्थ है, यह विषय इस बात से संबंधित है कि आप विभिन्न आयामों तक पहुँच सकते हैं अथवा नहीं।

मैने मूल रुप से दिव्य नेत्र की रचना सभी को बता दी है। हम आपका दिव्य नेत्र एक बाह्य शक्ति द्वारा खोलते हैं, जिससे यह अपेक्षाकृत शीघ्रता और सुगमता से हो जाता है। जब मैं दिव्य नेत्र के बारे में बता रहा था, आप सभी अनुभव कर सकते थे कि आपका माथा संकुचन कर रहा है; इसकी पेशियां ऐसी महसूस हो रही थीं जैसे एक साथ अन्दर की ओर भेदन कर रहीं हों। यह इस प्रकार था, क्या नहीं? यह इसी प्रकार था। जब तक आप अपना मन यहां फालुन दाफा को सीखने में लगाऐंगे, आप सभी इसे अनुभव करेंगे; बाहय शक्ति जब भेदन करती है बहुत तीव्रता से आती है। मैंने विशिष्ट शक्ति छोड़ी है जो दिव्य नेत्र को खोलती है। साथ ही, आपके दिव्य नेत्र के उपचार के लिए मैने फालुन भी भेजे हैं। जब मैं दिव्य नेत्र के बारे में बात कर रहा था, मैं सभी के दिव्य नेत्र खोल रहा था, जब तक वे फालुन दाफा में साधना अभ्यास करते हैं। किन्तु यह आवश्यक नहीं कि हर कोई वस्तुओं को स्पष्टता से देख सकेगा, और न ही यह आवश्यक है हर कोई वस्तुओं को देख सके। इसका संबंध सीधे स्वयं आप से है।

चिन्ता न करें, कोई फर्क नहीं पड़ता यदि आप इससे वस्तुओं को नहीं देख पाते। इसका संवर्धन करने में अपना समय लीजिए। जैसे-जैसे आप निरन्तर अपने स्तर को उठाएंगे, आप धीरे-धीरे वस्तुओं को देख पायेंगे, और आपकी अंधकारमय दृष्टि और स्पष्ट होती जायेगी। जब तक आप साधना करते रहेंगे और साधना अभ्यास के लिए मन बना लेते हैं, आप वह सब प्राप्त कर पायेंगे जो आपने खोया है।

दिव्य नेत्र को स्वयं खोल पाना अपेक्षाकृत कठिन है। मैं अब स्वयं दिव्य नेत्र खोलने के विभिन्न तरीकों के बारे में बताता हूँ। उदाहरण के लिए, ध्यान मुद्रा में बैठ कर जब आप अपने माथे और दिव्य नेत्र पर ध्यान केन्द्रित करते हैं, आप में से कुछ यह अनुभव करते हैं कि माथे के अन्दर अंधकारमय है, और वहां कुछ नहीं है। जैसे समय बीतता है आप पायेंगे कि धीरे-धीरे माथे के अंदर यह कुछ श्वेत होने लगता है। कुछ अवधि तक साधना अभ्यास के बाद, आप पायेंगे कि धीरे-धीरे माथे में उज्जवल होने लगता है, और फिर यह लाल हो जाता है। इस समय, यह फूलों के खिलने की भांति दिखाई पड़ेगा जैसे टेलीविजन अथवा फिल्म में फूल पल भर में खिल जाते हैं। इस प्रकार के दृश्य दिखाई पड़ेंगे। पहले लाल रंग दिखाई पड़ेगा, और फिर यह तुरन्त केन्द्र में एकत्रित होकर निरन्तर घूमेगा। यदि आप इसे स्वयं अन्त तक घुमाना चाहें, हो सकता है आठ से दस वर्ष भी कम पड़ें, क्योंकि संपूर्ण दिव्य नेत्र अवरुद्ध है।

कुछ लोगों के दिव्य नेत्र अवरुद्ध नहीं होते, और इसमें एक विवर मार्ग होता है। किन्तु इसमें वहां कोई शक्ति नहीं होती, क्योंकि वे चीगोंग का अभ्यास नहीं करते। इस प्रकार, जब वे चीगोंग का अभ्यास करते हैं, एक काले पदार्थ की गेंद उनकी आंखों के आगे अचानक प्रकट होगी। कुछ समय अभ्यास करने के पश्चात, यह क्रमश: सफेद तथा उज्जवल हो जायेगी। अन्त में, यह और उज्जवल होती जायेगी तथा आंखें बहुत कुछ चौंधियाती हुई महसूस होगीं । इसलिए, कछ लोग कहते हैं, "मैने सूर्य देखा," या "मैंने चांद देखा।" वास्तव में उन्होंने न तो सूर्य देखा और न ही चांद। तब उन्होंने क्या देखा? यह उनका विवर मार्ग था। कुछ लोग अपने स्तरों को शीघ्रता से पार करते हैं। नेत्र स्थापित कर दिये जाने के पश्चात, वे वस्तुओं को तभी से देखना आरम्भ कर सकते हैं। दूसरों के लिए, यह बहुत कुछ कठिन होता है। जब वे चीगोंग का अभ्यास करते हैं, उन्हे प्रतीत होगा जैसे वे इस विवर मार्ग, जो एक सुरंग अथवा कुंऐ की तरह है, में से बाहर की ओर भाग रहे हों। यहां तक कि उनकी निद्रा में भी उन्हे प्रतीत होगा, जैसे बाहर की

ओर भाग रहे हों। कुछ को ऐसा लगेगा जैसे घोड़े की सवारी कर रहे हों; कुछ लोगों को लगेगा जैसे उड़ रहे हों; कुछ को लगेगा जैसे दौड़ रहे हों; और कुछ महसूस करेंगे जैसे कार में तेजी से आगे जा रहे हों। क्योंकि दिव्य नेत्र को स्वयं खोलना बहुत कठिन है, उन्हे हमेशा ऐसा लगेगा कि वे अन्त तक नहीं पहुँच सकते। ताओ विचारधारा का मानना है कि मानव शरीर एक लघु विश्व है। यदि यह एक लघु विश्व है, तो सोचें, कि माथे से पिनियल ग्रंथि की दूरी एक लाख आठ हजार *ली* [2] से अधिक है। इस प्रकार व्यक्ति को हमेशा यह प्रतीत होगा जैसे आगे की ओर भाग रहा हो और अन्त की ओर न पहुँच पा रहा हो।

ताओ विचारधारा द्वारा मानव शरीर को लघु विश्व मानना बहुत कुछ तर्क संगत है। इसका यह अर्थ नहीं है कि इसकी संरचना तथा बनावट एक विश्व के समरुप है, और न ही इसका इशारा हमारे भौतिक आयाम के शरीर की वर्तमान संरचना से है। हम पूछते हैं, "आधुनिक विज्ञान की समझ के अनुसार, कोशिकाओं से बने भौतिक शरीर की अवस्था और अधिक सूक्ष्म स्तर पर कैसी दिखाई पड़ती है?" इसमें विभिन्न अणुओं की संरचनाऐं हैं। अणुओं से सूक्ष्म परमाणु, प्रोटोन, नाभिक, इलेक्ट्रोन और क्वार्क हैं। अब पाये गए सूक्ष्मतम कण न्यूट्रिनो हैं। तो, सूक्ष्मतम कण क्या है? इसका अध्ययन करना बहुत कठिन है। अपने अंतिम वर्षों में, शाक्यमुनि ने यह वाक्य कहा था : "यह इतना वृहत है कि इसकी कोई बाहय सीमा नहीं है, तथा यह इतना सूक्ष्म है कि इसकी कोई आन्तरिक सीमा नहीं है।" इसका क्या अर्थ है? तथागत के स्तर पर, विश्व इतना वृहत है कि इसकी सीमा अबोध है, साथ ही इतना सूक्ष्म है कि पदार्थ के सूक्ष्मतम कणों का बोध नहीं किया जा सकता है। परिणामस्वरुप, उन्होने कहा : "यह इतना वृहत है कि इसकी कोई बाहय सीमा नहीं है, और इतना सूक्ष्म कि इसकी कोई आन्तरिक सीमा नहीं है।"

शाक्यमुनि ने तीन हजार संसारों के सिद्धांत के बारे में भी कहा। उन्होंने कहा कि, हमारे विश्व और हमारी आकाशगंगा में तीन हजार ग्रह है जहां ऐसे प्राणी वास करते हैं जिनके भौतिक शरीर हमारी मानव जाति के जैसे ही हैं। उन्होने यह भी कहा कि ऐसे तीन हजार संसार एक रेत के कण में हैं। एक रेत का कण इस प्रकार एक संसार के जैसा ही है, जिसमें हमारे जैसे बुध्दिवान प्राणी हैं, ग्रह, पर्वत और नदियां हैं। यह अविश्वस्नीय लगता है! यदि ऐसा है तो आप सब सोचें : क्या उन तीन हजार संसारों में रेत है? और

क्या उन रेत के किसी कण में और तीन हजार संसार हैं? तब, क्या उन तीन हजार संसारों में रेत है? तब, क्या उन रेत के कणों में से किसी में और तीन हजार संसार हैं? इस प्रकार, तथागत के स्तर पर, इसका अन्त नहीं देखा जा सकता।

यही बात मानव आण्विक कोषिकाओं के लिए सत्य है। लोग पूछते हैं कि विश्व कितना बड़ा है। मैं आपको बताना चाहूँगा कि इस विश्व की भी अपनी सीमा है। किन्तु, तथागत के स्तर पर भी यह असीमित और अनंत रुप से वृहत लगता है। किन्तु, मानव शरीर का आन्तरिक भाग इस विश्व जितना ही बड़ा है, अणुओं से लेकर सूक्ष्म स्तर के सूक्ष्म कणों तक, यह बहुत अविश्वस्नीय लग सकता है। जब कोई मानव अथवा जीव की रचना की जाती है, उसके विशिष्ट जीवन तत्व और आवश्यक गुण की रचना पहले से अत्यन्त सूक्ष्म स्तर पर हो चुकी होती है। इस प्रकार, इस विषय के ज्ञान में, हमारा आधुनिक विज्ञान कहीं पीछे है। हमसे अधिक बुध्दिवान उन प्राणियों की तुलना में जो संपूर्ण विश्व में विभिन्न ग्रहों पर वास करते हैं, हमारी मानव जाति का वैज्ञानिक स्तर बहुत निम्न है। हम उन दूसरे आयामों तक भी नहीं पहुँच सकते जिनका अस्तित्व साथ ही साथ उसी स्थान पर है, जबकि दूसरे ग्रहों की उड़न तश्तरियां सीधे दूसरे आयामों में प्रवेश कर सकती हैं। उस काल-अवकाश की धारणा बिल्कुल भिन्न है। इस प्रकार वे जब चाहे आ-जा सकती हैं और इतनी तीव्र गति से जिसे मानव मस्तिष्क स्वीकार नहीं कर सकता।

दिव्य नेत्र के बारे में बात करते हुए, मैं इस विषय पर चर्चा कर चुका हूँ जब आप ऐसा महसूस करते हैं जैसे किसी विवर मार्ग में से बाहर की ओर ढकेले जा रहे हों, आपको प्रतीत होता है जैसे यह असीमित और अनन्त हो। कुछ लोग दूसरी स्थिति देख सकते हैं जहां उन्हे यह नहीं लगता कि वे किसी विवर में से भागे जा रहे हों, बल्कि एक असीमित और अनन्त राह पर आगे की ओर बढ़े जा रहे हों। बाहर की ओर बढ़ते हुए, वहां दोनो ओर पर्वत, नदियां और शहर हैं। यह और भी अधिक अविश्वस्नीय लग सकता है। मुझे याद है कि एक चीगोंग गुरु ने इसी प्रकार से कहा था : "मानव शरीर के प्रत्येक रोमछिद्र में एक शहर है, जिसमें रेलगाड़ियां तथा कारें दौड़ती हैं।" इसे सुनने पर, दूसरे लोग अचंभित रह गए और उन्हे यह अविश्वस्नीय लगा। आप जानते हैं कि पदार्थ के सूक्ष्म कणों में अणु, परमाणु, तथा प्रोटोन होते हैं। इसमें आगे जांच करते हुए, यदि आप प्रत्येक स्तर पर एक बिंदु के स्थान पर उसका आयाम देख सकें, और अणुओं का

आयाम, परमाणुओं का आयाम, प्रोटोन का आयाम तथा नाभिक का आयाम देख सकें, तो आप दूसरे आयामों में अस्तित्व की रचनाओं को देखेगें। मानव शरीर और सभी पदार्थ, विश्वक अंतरिक्ष के आयाम स्तरों के साथ अस्तित्व में हैं। जब हमारा आधुनिक भौतिक विज्ञान पदार्थ के सूक्ष्म कणों पर शोध करता है, यह सूक्ष्म कण का अध्ययन केवल इसके विभाजन अथवा विखंडन द्वारा करता है। यह इसके तत्वों का अध्ययन नाभिकीय विखंडन द्वारा करता है। यदि ऐसा कोई उपकरण होता जिससे हम उस स्तर को विस्तारित कर पाते और देख पाते जिस पर सभी परमाणु या अणु तत्व अपने पूर्ण रुप में प्रकट हों, या यदि इस दृश्य को देखा जा सकता, तो आप इस आयाम से आगे पहुँच जाते और दूसरे आयामों के दृश्यों को देख पाते। मानव शरीर का संबंध बाहरी आयामों से है, और उन सभी के अस्तित्व के ऐसे रूप होते हैं।

जब व्यक्ति स्वयं दिव्य नेत्र को खोलता है तो कुछ और विभिन्न परिस्थितियां होती हैं। हमने मुख्यत: कुछ सबसे साधारण घटनाओं के बारे में बताया है। कुछ लोग यह भी पाते हैं कि उनका दिव्य नेत्र घूम रहा है। जो ताओ विचारधारा में अभ्यास करते हैं वे अक्सर अपने दिव्य नेत्र में कुछ घूमता हुआ देखते हैं। तब ताइजी कवच के एक चटक के साथ खुलने पर, व्यक्ति को दृश्य दिखाई देंगे; किन्तु, इसका यह अर्थ नहीं है कि आपके सर में एक ताइजी है। आपके गुरु ने आरंभ में ही आपके लिए एक वस्तुओं का संग्रह स्थापित किया था जिनमें से एक ताइजी था। उन्होने आपके दिव्य नेत्र को बंधित रखा था। जब आपका दिव्य नेत्र खोला जाता है, यह चटक कर खुल जाता है। गुरु ने जानबूझ कर इसे इसी प्रकार व्यवस्थित किया था, और यह मूल रुप से आपके सर की वस्तु नहीं है।

तब भी कुछ लोग दिव्य नेत्र को खोलने की इच्छा रखते हैं। जितना वे इसके लिए अभ्यास करते हैं, उतना इसे खोलना कठिन होता है। इसका क्या कारण है? उन्हे स्वयं इसकी समझ नहीं है। यह मुख्यत: इसलिए है कि दिव्य नेत्र की कामना नहीं की जा सकती; जितनी अधिक व्यक्ति की इच्छा होती है, उतना ही कम उसे मिलता है। जब कोई व्यक्ति इसे उद्दंडपूर्वक चाहता है, तो न केवल यह नहीं खुलेगा, बल्कि उसके दिव्य नेत्र से एक मटमैले पदार्थ का स्राव होगा। यह उसके दिव्य नेत्र को ढक लेगा। जैसे समय बीतेगा, यह एक बहुत बडा पुंज बना लेगा। जितना अधिक यह निकल कर बहेगा, उतना ही यह संचित होता जायेगा। दिव्य नेत्र का खुलना जितना अधिक कठिन

होगा, उतना ही अधिक वह इच्छा प्रयास करेगा, तथा उतना ही अधिक यह पदार्थ निकलेगा। परिणामस्वरुप, यह उसके शरीर को इस सीमा तक ढक लेगा कि एक बहुत मोटी परत वाला एक बडा पुंज बना लेगा। यदि इस व्यक्ति का दिव्य नेत्र वास्तव में खोल दिया जाये, तो भी वह कुछ देख नहीं पायेगा क्योंकि यह उसके अपने मोहभाव द्वारा बंद है। केवल यदि वह इसके बारे में भविष्य में न सोचे और इस मोहभाव को पूरी तरह छोड़ दे, तभी यह धीरे धीरे लुप्त होगा। किन्तु इसे हटाने के लिए साधना अभ्यास का एक बहुत कठिनाई भरा और लंबा समय लगेगा। यह पूरी तरह अनावश्यक है। कुछ लोग यह नहीं जानते। यद्यपि गुरु उन्हे बताते हैं कि वे इसके पीछे न जाएं या इच्छा प्रयास न करें, वे इस पर विश्वास नहीं करते। वे इसकी कामना करते रहते हैं, और अन्त में, परिणाम बिल्कुल विपरीत होता है।

दूरदृष्टि की दिव्य सिद्धि

एक दिव्य सिद्धि जो दिव्य नेत्र से सीधे संबंधित है वह दूरदृष्टि है। कुछ लोग दावा करते हैं : "यहां बैठे हुए मैं बीजिंग और अमेरिका के दृश्यों को देख सकता हूँ साथ ही पृथ्वी के दूसरे छोर पर देख सकता हूँ।" कुछ लोग इसे नहीं समझ पाते और न ही इसे वैज्ञानिक तौर पर समझाया जा सकता है। यह कैसे संभव है? कुछ लोग इसे अपने अपने तरीके से समझाते हैं, किन्तु कुछ भी अर्थपूर्ण नहीं लगता। उन्हें आश्चर्य होता है कि कोई व्यक्ति इतना सामर्थ्यवान कैसे हो सकता है। किन्तु यह इस प्रकार नहीं है। एक अभ्यासी जो त्रिलोक-फा के स्तर पर होता है, के पास यह योग्यता नहीं होती। दूरदृष्टि तथा कई और दिव्य सिद्धियों सहित जो वह देखता है, वे एक विशिष्ट आयाम में कार्य करती हैं। अधिक से अधिक वे इस भौतिक आयाम से बाहर नहीं है जिसमें हमारे मानव समुदाय का अस्तित्व है। साधारणत: वे व्यक्ति के अपने आयाम क्षेत्र के बाहर भी नहीं हैं।

एक विशिष्ट आयाम में, मानव शरीर का एक प्रभाव क्षेत्र होता है जो द के प्रभाव क्षेत्र से भिन्न है। वे समान आयाम में नहीं होते, किन्तु उनका आकार एक जैसा होता है। यह प्रभाव क्षेत्र विश्व से परस्पर संबंधित होता है। जो कुछ वहां विश्व में व्याप्त है वह परस्पर यहां परावर्तित होता है। यहां सभी कुछ परावर्तित किया जा सकता है। यह एक प्रकार का प्रतिबिंब होता है। किन्तु यह वास्तविक नहीं होता। उदाहरण के लिए इस

पृथ्वी पर अमेरिका और वाशिंगटन हैं। व्यक्ति के प्रभाव क्षेत्र के अंदर, अमेरिका और वाशिंगटन परावर्तित होते हैं। किन्तु वे परावर्तित दृश्य होते हैं। परावर्तित दृश्यों का हालांकि भौतिक अस्तित्व भी होता है, और वे इसी प्रकार परावर्तित होते हैं जिस प्रकार वहां बदलाव होते हैं। इस प्रकार, जिसे लोग दूरदृष्टि की दिव्य सिद्धि कहते हैं वह स्वयं अपने प्रभाव क्षेत्र की वस्तुओं को देख पाने की योग्यता है। जब व्यक्ति पर-त्रिलोक-फा साधना स्तर पर अभ्यास करता है, वह वस्तुओं को इस प्रकार नहीं देखता। वह वस्तुओं को प्रत्यक्ष देखेगा, और वह बुद्ध फा की अलौकिक शक्ति कहलाती है। यह महा शक्तिपूर्ण होती है।

त्रिलोक-फा साधना के अंतर्गत दूरदृष्टि की दिव्य सिद्धि किस प्रकार कार्य करती है? मैं यह सभी को समझाने जा रहा हूँ। उस आयाम क्षेत्र में, व्यक्ति के मस्तक में एक दर्पण होता है। वे लोग जो अभ्यास नहीं करते उनका दर्पण उनके सम्मुख होता है, किन्तु अभ्यासी का दर्पण घूम जाता है। जब व्यक्ति की दूरदृष्टि की सिद्धि प्रकट होने वाली होती है, यह अपनी धूरी पर आगे-पीछे घूमने लगता है। ज्ञातव्य है कि फिल्म में चित्रों को निरंतर गति से दिखाने के लिए चौबीस फ्रेम प्रति सेकण्ड दिखाऐ जाते हैं। यदि चौबीस फ्रेम प्रति सेकण्ड से कम दिखाऐ जाऐं तो फिल्म रुकी-रुकी दिखाई देगी। दर्पण के घूमने की गति चौबीस फ्रेम प्रति सेकण्ड से अधिक होती है तथा यह जो ग्रहण करता है उसे परावर्तित करता है और पलट कर आपको दर्शाता है। दोबारा पलटने पर प्रतिबिंब मिटा दिया जाता है। यह परावर्तित करता है और पलटता है, और तब प्रतिबिम्ब को मिटा देता है। आगे पीछे घूमना निरंतर चलता रहता है। इस प्रकार, जो आप देखते हैं वह गतिशील होता है। यह आपको वह देखने देता है जो आपके अपने आयाम क्षेत्र के अन्दर परावर्तित होता है, तथा यह वृहत विश्व से समतुल्य होता है।

तब, कोई अपने शरीर के पीछे कैसे देख सकता है? इतने छोटे दर्पण से शरीर के सब ओर की वस्तुओं को कैसे देखा जा सकता है? आप जानते हैं कि जब व्यक्ति का दिव्य नेत्र दिव्य दृष्टि से आगे खोला जाता है और विवेक दृष्टि तक पहुंचने वाला होता है, यह हमारे आयाम को पार करने वाला होता है। इस अवस्था में जब स्तर विच्छेदन होने वाला होता है, दिव्य नेत्र में एक बदलाव अनुभव होगा। जब यह भौतिक वस्तुओं की ओर देखता है, वे सब लुप्त हो चुकी होती हैं। लोग और दीवारें सब लुप्त हो चुके हैं- सभी कुछ लुप्त हो गया है। यहां किसी भौतिक वस्तु का अस्तित्व नहीं रहता। अर्थात्,

जब आप ध्यान से देखते हैं, आपको दिखाई पड़ता है कि इस विशिष्ट आयाम में लोगों का अस्तित्व नहीं है, वहां आपके आयाम क्षेत्र के अन्दर केवल एक दर्पण खड़ा है। किन्तु आपके आयाम क्षेत्र में यह दर्पण आपके संपूर्ण आयाम क्षेत्र जितना बड़ा है। इस प्रकार, जब यह आगे और पीछे घूमता है, यह सर्वत्र सभी कुछ परावर्तित करता है। आपके आयाम क्षेत्र के अन्दर यह आपको सब कुछ दिखा सकता है, केवल यह उसके अनुरूप होना चाहिए जो विश्व में है। इसी को हम दूरदृष्टि की दिव्य सिद्धि कहते हैं।

जब वे लोग जो मानव शरीर विज्ञान का अध्ययन करते हैं इस दिव्य सिद्धि का परिक्षण करते हैं, वे इसे सरलता से नकार देते हैं। नकारने का कारण इस प्रकार है। उदाहरण के लिए, जब किसी व्यक्ति से बीजिंग में उसके संबंधी के बारे में पूछा जाता है, "संबंधी घर में क्या कर रहा है?" जब संबंधी का नाम व विवरण दिये जाते हैं, व्यक्ति उसे देख सकता है। वह बताएगा कि इमारत कैसी दिखती है, दरवाजे से कैसे प्रवेश किया जाये, और कमरे में प्रवेश करने के पश्चात साज-सज्जा कैसी है। जो कुछ उसने बताया सब ठीक है। संबंधी क्या कर रही है? वह बतायेगा की संबंधी कुछ लिख रही है। जांच करने के लिए, वे उसके संबंधी को फोन करेंगे और पूछेंगे, "इस समय आप क्या कर रही हैं?" "मैं खाना खा रही हूँ।" जो उसने देखा क्या यह उससे असहमत नहीं है? विगत में, इस दिव्य सिद्धि को मान्यता न देने का यही कारण था। यद्यपि जो वातावरण उसने देखा वह गलत नहीं था। क्योंकि हमारा स्थान व समय जिसे हम "काल-अवकाश" कहते हैं उस आयाम के काल-अवकाश से भिन्न है जहां दिव्य सिद्धि का अस्तित्व है, दोनों ओर समय की अवधारणाएं भिन्न हैं। पहले वह कुछ लिख रही थी, और अब वह खाना खा रही है; इसमें यह समय अन्तराल है। परिणामस्वरुप, यदि वे जो मानव शरीर का अध्ययन करते हैं निष्कर्ष द्वारा परिकल्पना करते हैं तथा आधुनिक विज्ञान और रुढ़ीगत सिद्धांतों के आधार पर शोध करते हैं, तो आने वाले दस हजार वर्षों तक भी उनके प्रयत्न निराशाजनक ही रहेंगे, क्योंकि यह विषय साधारण मनुष्य की परिधि से पहले ही बाहर है। इसलिए मानवजाति को अपनी मानसिकता बदलनी आवश्यक है और इस प्रकार वस्तुओं को समझना छोड़ना होगा।

पूर्व-ज्ञान व अतीत-ज्ञान की दिव्य सिद्धि

दिव्य नेत्र से सीधे संबंधित दूसरी दिव्य सिद्धि है पूर्व-ज्ञान व अतीत-ज्ञान। आज संसार में छ: प्रकार की दिव्य सिद्धियाँ सर्वमान्य हैं जिनमें दिव्य नेत्र, दूर दृष्टि, पूर्व-ज्ञान व अतीत-ज्ञान सम्मिलित हैं। पूर्व-ज्ञान और अतीत-ज्ञान क्या है? यह दूसरे व्यक्ति के भविष्य तथा भूतकाल को बताने की सिद्धि है। यदि सिद्धि प्रबल है तो व्यक्ति समुदाय के उत्थान व पतन के बारे में बता सकता है। और उच्च सिद्धि से, वह समस्त विश्व के परिवर्तनों के सिध्दांत को देख सकता है। इसे पूर्व-ज्ञान व अतीत-ज्ञान की दिव्य सिद्धि कहते हैं। क्योंकि पदार्थ गतिमान है और एक विशिष्ट नियम का पालन करता है, एक विशेष आयाम में, समस्त पदार्थ की दूसरे अनेक आयामों की अवस्थाऐं होती हैं। उदाहरण के लिए, जब मनुष्य का शरीर गति करता है, तो शरीर की कोशिकाऐं भी गतिमान होती हैं, तथा सूक्ष्म स्तर पर सभी तत्व जैसे सभी प्रोटोन, इलेक्ट्रोन तथा अत्यन्त सूक्ष्म कण भी गति करते हैं। यद्यपि इनके अपने स्वतंत्र अस्तित्व के रुप होते हैं, तथा दूसरे आयामों के शरीरों की अवस्थाओं में भी परिवर्तन आता है।

क्या हम बता नहीं चुके हैं कि पदार्थ विलुप्त नहीं होता? एक विशिष्ट आयाम में, जो कुछ एक व्यक्ति ने किया है या जो कुछ अपने हाथ को हिलाकर करता है सब पदार्थ का अस्तित्व है, और जो कुछ वह करता है वह एक छवि और एक संदेश छोड़ जाएगा। दूसरे आयाम में यह विलुप्त नहीं होता और वहां सदा के लिए स्थायी रहता है। एक दिव्य सिद्धि प्राप्त व्यक्ति अतीत में स्थित छवियों को देखकर जान सकता है कि क्या हुआ होगा। जब भविष्य में आपके पास पूर्व-ज्ञान और अतीत-ज्ञान की दिव्य सिद्धियाँ आएंगी, मेरे आज के व्याख्यान का स्वरूप तब भी आपके देखने के लिए रहेगा। यह अभी भी वहां साथ-साथ अस्तित्व में है। एक विशिष्ट आयाम में जहां समय की अवधारणा नहीं होती, जब एक व्यक्ति का जन्म होता है, उसका पूरा जीवनकाल वहां पहले से ही अस्तित्व में होता है। कुछ लोगों के, वहां एक से अधिक जीवनकाल भी अस्तित्व में होते हैं।

कुछ लोग आश्चर्य करेंगे, "क्या इसका अर्थ है कि स्वयं को बदलने के लिए, हमारे व्यक्तिगत प्रयत्न व्यर्थ हैं?" वे इसे स्वीकार नहीं कर पाते। वास्तव में, व्यक्तिगत प्रयत्न किसी व्यक्ति के जीवन में थोड़ा परिवर्तन ही ला सकते हैं। व्यक्तिगत प्रयत्नों से

कुछ छोटी वस्तुओं में थोड़ा सा बदलाव लाया जा सकता है, किन्तु यह आपके बदलाव के लिए प्रयासों के कारण ही है, कि आप कर्म प्राप्त कर सकते हैं। अन्यथा, बुरे कर्म करने का विषय ही अस्तित्व में नहीं रहता, और न ही अच्छे कार्य या बुरे कार्य का विषय होता। जब कोई व्यक्ति, इसी प्रकार कार्य करने पर जोर देता है, वह औरों का लाभ उठाएगा और बुरे कार्य करेगा। इसलिए, साधना अभ्यास की सदैव आवश्यकता रही है कि व्यक्ति प्रकृति के क्रम का अनुसरण करे, क्योंकि अपने प्रयासों द्वारा आप दूसरों को हानि पहुंचाएंगे। यदि आपके जीवन में आरम्भ से कुछ नहीं है और आप वह प्राप्त करते हैं जो समाज में किसी और व्यक्ति का होना चाहिए था, तो आप उस व्यक्ति के ऋणी हो जाएंगे।

जहां तक बड़ी घटनाओं की बात है, एक साधारण व्यक्ति उनमें जरा भी परिवर्तन नहीं कर सकता। ऐसा करने का केवल एक ही मार्ग है। वह यह यदि यह व्यक्ति केवल बुरे कार्य करे, केवल बुरे कार्य, वह अपना जीवन बदल सकता है। यद्यपि जो उसके साथ होगा वह है उसका पूर्ण विनाश। एक ऊँचे स्तर से, हम देखते हैं जब किसी व्यक्ति की मृत्यु होती है उसकी मूल आत्मा विलुप्त नहीं होती। मूल आत्मा विलुप्त क्यों नहीं होती? वास्तव में, हमने देखा है कि व्यक्ति की मृत्यु के पश्चात, शवगृह में उसका शव और कुछ नहीं केवल हमारे आयाम में मानव कोशिकाओं से बना शरीर है। इस आयाम में, आंतरिक अंगों के विभिन्न कोशिकातंतु और पूरे मानव शरीर की सभी कोशिकाऐं छूट कर बिखर जाती हैं, जबकि दूसरे आयामों में अणुओं, परमाणुओं, प्रोटोन, आदि, से भी सूक्ष्म कणों से बने शरीर बिलकुल मृत नहीं होते। उनका अस्तित्व दूसरे आयामों में बना रहता है और वे सूक्ष्म आयामों में जीवित रहते हैं। जो व्यक्ति सभी प्रकार के बुरे कार्य करता है जो उसे प्राप्त होगा वह है उसकी समस्त कोशिकाओं का विघटन, जिसे बुद्धमत में शरीर और आत्मा का विनाश कहा जाता है।

अपना जीवन बदलने के लिए एक और मार्ग है, और केवल यही मार्ग है : वह यह कि वह व्यक्ति अब से साधना अभ्यास का मार्ग अपना ले। यदि कोई व्यक्ति साधना अभ्यास का मार्ग अपनाता है तो उसका जीवन क्यों बदला जा सकता है? कौन आसानी से इस प्रकार का बदलाव ला सकता है? जैसे ही यह व्यक्ति साधना अभ्यास के मार्ग को अपनाने के बारे में सोचता है, और जैसे ही यह विचार आता है, यह सोने की भांति प्रकाशवान होता है, और दसों दिशाओं में विश्व को हिला देता है। बुद्ध

विचारधारा का विश्व के बारे में दस दिशाओं वाले जगत का सिध्दांत है। एक ऊँचे स्तर के प्राणी के दृष्टिकोण से, एक व्यक्ति के जीवन का प्रयोजन केवल मानव होना नहीं हैं। यह प्राणी सोचता है कि व्यक्ति के जीवन का जन्म विश्व के अंतरिक्ष में हुआ है और यह विश्व के समान गुण से आत्मसात है; जीवन परोपकारी है और ज़न-शान-रेन पदार्थ से बना है। किन्तु एक जीवन सामाजिक संबंध भी स्थापित करता है। समुदाय में सामाजिक क्रियाकलापों के दौरान, कुछ जीवन भ्रष्ट हो जाते हैं और एक निम्न स्तर पर गिर जाते हैं। जब वे उस स्तर पर भी स्थायी नहीं रह पाते और फिर से बुरे हो जाते हैं, तो वे और भी निचले स्तर पर गिर जाते हैं। वे इस प्रकार निरन्तर गिरते रहते हैं, जब तक अंत में वे इस साधारण मानव स्तर पर नहीं पहुंच जाते।

इस स्तर पर, इन लोगों को नष्ट और समाप्त हो जाना चाहिए था। किन्तु उन महान ज्ञानप्राप्त व्यक्तियों ने अपनी महान परोपकारी करुणावश, विशेष रूप से हमारे मानव समुदाय के लोक का निर्माण किया। इस आयाम के लोक में, व्यक्ति को यह अतिरिक्त मानव भौतिक शरीर और ये अतिरिक्त आंखें दी गई हैं जो केवल इस भौतिक आयाम में वस्तुओं को देख सकती हैं। यानि व्यक्ति मायाजाल में खो जाता है और विश्व का सत्य देखने में असमर्थ होता है, जिसे और सभी आयामों में देखा जा सकता है। इस मायाजाल में और इन परिस्थितियों में, व्यक्ति को इस प्रकार का अवसर प्रदान किया जाता है। चूंकि व्यक्ति माया में घिरा है, यह बहुत दु:खदायी भी है। इस शरीर के साथ उसे पीड़ा भी भोगनी होती है। यदि कोई व्यक्ति इस आयाम से अपने मूल की ओर वापस जाना चाहता है, तो ताओ विचारधारा का कहना है कि अपनी मूल प्रकृति की ओर वापस जाने के लिए उसे साधना करना आवश्यक है। यदि उसका हृदय साधना अभ्यास के लिए कहता है, तो यह उसका बुद्ध स्वभाव है जो जागृत हो गया है। इस हृदय को सर्वाधिक मूल्यवान माना जाता है तथा लोग उसकी मदद करते हैं। इस प्रकार की कठिन परिस्थितियों में, यह व्यक्ति अभी भी भ्रमित नहीं हुआ है और वापस लौटना चाहता है। परिणामस्वरूप, लोग उसकी मदद करेंगे और बिना शर्त सहयोग देंगे- वे उसकी किसी भी प्रकार मदद करेंगे। हम इस प्रकार का कार्य एक अभ्यासी के लिए क्यों कर पाते हैं किन्तु साधारण व्यक्ति के लिए नहीं? यही कारण है।

जहां तक एक साधारण व्यक्ति का प्रश्न है जो रोग का उपचार करना चाहता है, हम उसकी किसी प्रकार मदद नहीं कर सकते। एक साधारण व्यक्ति, केवल एक

साधारण व्यक्ति ही है। एक साधारण व्यक्ति को साधारण मानव समुदाय की स्थिति के अनुरूप होना चाहिए। कई लोग कहते हैं कि बुद्ध सभी प्राणियों का उद्धार करते हैं और बुद्ध विचारधारा सभी प्राणियों का उद्धार सिखाती है। मैं आपको बताना चाहूँगा कि आप सभी बुद्धमत के शास्त्र देख सकते हैं, और उनमें कहीं भी यह नहीं कहा गया है कि साधारण लोगों का उपचार करना समस्त प्राणियों का उद्धार करना है। यह गत वर्षों के वे पाखण्डी चीगोंग गुरु हैं जिन्होंने इन विषय को उलझा दिया है। वे सच्चे चीगोंग गुरु, जिन्होंने मार्ग प्रशस्त किया था, उन्होंने आपको दूसरों के रोग उपचार के लिए बिल्कुल नहीं कहा था। उन्होंने आपको केवल स्वयं अभ्यास करने, रोग निवारण, और स्वस्थ रहने के लिए कहा था। आप एक साधारण व्यक्ति हैं। आप रोगों का उपचार केवल दो दिन इसका अध्ययन करके कैसे कर सकते हैं? क्या यह औरों को धोखा देना नहीं है? क्या इससे आपके मोहभाव को बढ़ावा नहीं मिलता? यह साधारण लोगों के बीच प्रसिद्धि, निजी-लाभ के पीछे भागना, और कुछ अति-मानवीय दिखाने जैसा है! इसकी बिल्कुल मनाही है। इसलिए, जितना अधिक लोग किसी वस्तु का इच्छा प्रयास करते हैं, उतना कम वे उसे प्राप्त करते हैं। आपको ऐसा करने की अनुमति नहीं है, और न ही आपको इतनी सुगमता से साधारण मानव समाज की परिस्थिति में विघ्न डालने की अनुमति है।

इस विश्व में एक ऐसा नियम है कि जब आप अपनी मूल, सत्य प्रकृति की ओर लौटना चाहते हैं, दूसरे आपकी मदद करेंगे। वे सोचते हैं कि एक मनुष्य जीवन को वहीं लौटना चाहिए, जहां से वह आया है न कि साधारण लोगों के बीच में रहना चाहिए। यदि किसी व्यक्ति को कोई बीमारी न होने दी जाए और वह आरामदायक जीवन-यापन कर सके, तो उसे अमरत्व प्राप्त करने की भी इच्छा नहीं होगी- यदि उसे पूछा जाए तो भी। कितना ही अच्छा होता यदि किसी को कोई बीमारी अथवा कठिनाई न सहनी पड़ती और वह सब प्राप्त कर पाता जो वह चाहता ! यह जगत वास्तव में देवलोक कहलाता। किन्तु आप इस स्तर पर इसीलिए गिरे क्योंकि आप भ्रष्ट हो गए थे, इसलिए आप आरामदेह नहीं हो सकते। व्यक्ति मायाजाल में सरलता से बुरे कार्य कर सकता है, और बुद्धमत में इसे कर्मफल भुगतान कहा जाता है। इसलिए, जब कुछ लोगों पर कुछ कठिनाईयां अथवा अभाग्य आते हैं, वे अपने कर्म का भुगतान अपने कर्मफल के अनुसार करते हैं। बुद्धमत का यह भी मानना है कि बुद्ध सर्वव्यापी हैं। यदि कोई बुद्ध

एक बार अपना हाथ हिला दे, मनुष्य जाति के सारे रोग दूर हो जाएंगे : ऐसा होना बिल्कुल संभव है। जब इतने बुद्ध सब ओर हैं, फिर किसी ने यह क्यों नहीं किया? यह इसलिए क्योंकि व्यक्ति ने अतीत में बुरे कार्य किए थे जिससे वह इन कठिनाइयों को भोग रहा है। यदि आपने उसके रोग का उपचार कर दिया, तो वह विश्व के नियम की अवहेलना होगी, क्योंकि तब व्यक्ति बुरे कार्य कर सकता है और बिना भुगतान किए भी किसी का ऋणी रह सकता है। इसकी अनुमति नहीं है। इस प्रकार, हर कोई साधारण मानव समुदाय की स्थिति को संरक्षित रखता है, और कोई इसमें विघ्न नहीं डालना चाहता। साधना अभ्यास एक अकेला मार्ग है जिससे आप रोगमुक्त अवस्था सुगमता से पा सकते हैं और सच्चे रूप में मुक्त होने का ध्येय पा सकते हैं! लोगों द्वारा एक सच्चे मार्ग का अभ्यास करने पर ही सभी जीवों का सच्चा उद्धार हो सकता है।

बहुत से चीगोंग गुरु रोगों को क्यों ठीक कर पाते हैं? वे रोग निवारण के बारे में बात क्यों करते हैं? कुछ लोगों ने इन प्रश्नों के बारे में सोचा होगा। इनमें से अधिकतर चीगोंग गुरु उचित पद्धतियों से नहीं हैं। इसकी अनुमति तब है जब अपने साधनाक्रम के दौरान, एक सच्चा चीगोंग गुरु समस्त प्राणियों को दु:ख में पाता है और अपने करुणा और सहानुभूति से किसी की मदद करता है। वह रोगों का निवारण नहीं कर सकता, हालांकि वह केवल उन्हें अस्थायी रूप से दबा अथवा आगे के लिए विलंबित कर सकता है। वे आपको अभी नहीं होंगे किन्तु बाद में होंगे, क्योंकि उसने आपके रोग को विलंबित कर दिया है। वह उन्हें कहीं और या आपके संबंधियों के शरीरों पर स्थानांतरित कर देगा। वह आपके लिए पूरी तरह से कर्म हटाने में वास्तव में असमर्थ है। उसे यह किसी साधारण व्यक्ति के लिए करने की अनुमति नहीं है, किन्तु केवल अभ्यासियों के लिए कर सकता है। यही नियम है।

बुद्ध विचारधारा में "सभी प्राणियों के उद्धार" का अर्थ है कि आपको साधारण लोगों की सर्वाधिक दुर्दायी स्थिति से निकाल कर ऊँचे स्तरों पर लाना। तब आप दु:ख नहीं भोगेंगे, और मुक्त हो जायेंगे- इसका यह अर्थ है। क्या शाक्यमुनि ने "निर्वाण के दूसरे ओर" की बात नहीं की थी? समस्त प्राणियों के उद्धार का वास्तविक अर्थ यह है। यदि आप साधारण लोगों के बीच आरामदायक जीवन-यापन करते हैं, आपके पास बहुत सा धन है, और यदि आपका बिस्तर धन से भरा हो और आपको कोई दु:ख नहीं है, आपको अमरत्व भी प्रदान किया जाए तो भी आपको उसकी इच्छा नहीं होगी। एक

अभ्यासी होने के कारण, आपके जीवन का क्रम बदला जा सकता है। केवल साधना अभ्यास द्वारा आपका जीवन बदला जा सकता है।

जिस प्रकार पूर्व-ज्ञान और अतीत-ज्ञान की दिव्य सिद्धि काम करती है वह उसी प्रकार है जैसे व्यक्ति के माथे पर एक छोटा टेलीविजन का पर्दा लगा हो। कुछ लोगों का यह माथे पर होता है; कुछ लोगों का माथे के पास। कुछ लोगों का माथे के अंदर होता है। कुछ लोग अपनी आंखें बंद करके दृश्यों को देख पाते हैं। यदि सिद्धि प्रबल है, तो व्यक्ति आंखें खोल कर भी दृश्यों को देख सकता है। दूसरे, यद्यपि, उन्हें नहीं देख सकते, क्योंकि वे व्यक्ति के आयाम क्षेत्र के दायरे में आते हैं। दूसरे शब्दों में, जब यह दिव्य सिद्धि विकसित होती है, तो साथ ही एक दूसरी भी होनी चाहिये जो दूसरे आयाम के दृश्यों को दर्शाने में वाहक का कार्य करती है। परिणामस्वरूप, इसे इस दिव्य नेत्र द्वारा देखा जा सकता है। इससे किसी व्यक्ति का भविष्य या अतीत बहुत सटीक देखा जा सकता है। ज्योतिषविद्या भले ही कितना सही काम करे, यह छोटी-छोटी घटनाओं और उनके विवरण को नहीं बता सकती। यह व्यक्ति, हालांकि, वर्ष के समय सहित वस्तुओं को बहुत स्पष्टता से देख सकता है। परिवर्तनों के सभी विवरणों को देखा जा सकता है क्योंकि जो व्यक्ति देखता है वह विभिन्न आयामों से लोगों और वस्तुओं का वास्तविक प्रतिबिम्ब होता है।

जब तक आप सब फालुन दाफा का अभ्यास करते हैं, सभी का दिव्य नेत्र खोला जाएगा। किन्तु दिव्य सिद्धियाँ जिनका हमने बाद में वर्णन किया है, प्रदान नहीं की जाएंगी। आपके स्तर में निरंतर विकास होने पर, पूर्व-ज्ञान और अतीत-ज्ञान की सिद्धियाँ स्वाभाविक रूप से प्रकट होंगी। आपके भविष्य के साधना अभ्यास में इस प्रकार होगा, और जब यह सिद्धि प्रकट होगी आप जान पाऐंगे कि क्या हो रहा है। इसलिए, हमने फा के ये नियम सिखा दिये हैं।

पंच तत्वों और त्रिलोक को पार करना

"पंच तत्वों और त्रिलोक को पार करने" का क्या अर्थ है? इस विषय को उठाना बहुत नाजुक है। इससे पहले कई चीगोंग गुरु इस विषय पर बोल चुके हैं, और उन्हें उन लोगों के प्रश्नों से जो चीगोंग में विश्वास नहीं करते, चुप हो जाना पड़ा। "जो

चीगोंग का अभ्यास करते हैं आप में से कितने पंच तत्वों के पार जा चुके हैं किन्तु त्रिलोक में नहीं है?" कुछ लोग चीगोंग गुरु नहीं हैं, और वे स्वयं को चीगोंग गुरु होने का स्वांग करते हैं। यदि वे इसके बारे में स्पष्ट नहीं हैं, उन्हें चुप हो जाना चाहिए। किन्तु, वे फिर भी इसके बारे में बात करने की हिम्मत करते हैं, और तब और लोग उन्हें निरूत्तर कर देते हैं। इससे साधक समुदाय को क्षति पहुंची है, जिससे बहुत हड़कंप मचा है। कुछ लोग चीगोंग पर प्रहार करने के लिए इसे अवसर की तरह प्रयोग करते हैं। पंच तत्वों और त्रिलोक के पार जाना साधक समुदाय में एक कहावत है। इसका मूल स्थान धर्म से है और यह धर्म से आई है। इसलिए, हम उस समय की परिस्थितियों और ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर विचार किये बिना इस विषय पर चर्चा नहीं कर सकते।

पंच तत्वों के पार जाना क्या है? प्राचीन चीनी भौतिक शास्त्र और आधुनिक भौतिक विज्ञान दोनों ही पांच तत्वों के चीनी सिध्दांत को सही मानते हैं। यह सही है कि धातु, लकड़ी, जल, अग्नि और पृथ्वी के पांच तत्वों से हमारा समस्त विश्व निर्मित है। इस प्रकार, हम पांच तत्वों के सिध्दांत के बारे में बात करते हैं। यदि किसी व्यक्ति को कहा जाए कि वह पंच तत्वों को पार कर चुका है, तो आधुनिक भाषा में इसका अर्थ है कि वह हमारे भौतिक विश्व के बाहर जा चुका है। यह बहुत अविश्वसनीय जान पड़ता है। इस विषय के बारे में आप सब सोचें : एक चीगोंग गुरु के पास गोंग होता है। मैं एक प्रयोग में भाग ले चुका हूँ, तथा कई और चीगोंग गुरु भी अपनी शक्ति मापने के लिए इस प्रयोग में भाग ले चुके हैं। गोंग में विद्यमान भौतिक तत्वों का आज के कई उपकरणों द्वारा पता लगाया जा सकता है। कहने का अर्थ है, जब तक ऐसा कोई उपकरण है, चीगोंग गुरु द्वारा निष्कासित तत्वों और उसके गोंग के अस्तित्व का पता लगाया जा सकता है। आधुनिक उपकरण इन्फ्रारेड किरणों, अल्ट्रावायोलेट किरणों, अल्ट्रासोनिक तरंगों, इन्फ्रासोनिक तरंगों, विद्युत, चुम्बकीय शक्ति, गामा किरणों, अणुओं और न्यूट्रोन का पता लगा सकते हैं। एक चीगोंग गुरु के पास ये सभी पदार्थ होते हैं, और चीगोंग गुरुओं द्वारा निष्कासित कुछ और पदार्थ होते हैं जिनका पता नहीं लगाया जा सकता क्योंकि ऐसा कोई उपकरण अभी है ही नहीं। जब तक ऐसा कोई उपकरण है, सभी कुछ पता लगाया जा सकता है। चीगोंग गुरुओं द्वारा निष्कासित पदार्थ बहुत घने होते हैं।

चुम्बकीय क्षेत्र के विशिष्ट प्रभाव में, एक चीगोंग गुरु एक शक्तिशाली और सुन्दर औरा उत्पन्न कर सकता है। गोंग क्षमता जितनी अधिक होती है, उत्पन्न शक्ति का क्षेत्र उतना ही बड़ा होता है। एक साधारण व्यक्ति का भी एक औरा होता है, किन्तु यह बहुत कम और निर्बल होता है। भौतिकि की उच्च ऊर्जा शोध में, लोग मानते हैं कि ऊर्जा न्यूट्रोन और परमाणु जैसे कणों से बनी है। कई चीगोंग गुरु, जिनमें कई सुप्रसिद्ध गुरु सम्मिलित हैं, परीक्षण में भाग ले चुके हैं। मैं भी परीक्षण में भाग ले चुका हूँ, और उत्पन्न हुई गामा किरणों और थर्मल न्यूट्रोन का विकिरण स्तर साधारण पदार्थ से अस्सी से एक सौ सत्तर गुणा अधिक पाया गया। इस बिंदु पर, परीक्षण उपकरण की सूचक सूई अपनी सीमा तक पहुंच गई, और इसकी सूई अधिकतम बिंदु पर रूक गई। अन्त में, उपकरण यह पता नहीं लगा सका कि मेरे पास और कितनी अधिक ऊर्जा है। यह बिल्कुल अविश्वसनीय है कि किसी व्यक्ति के पास इतने शक्तिशाली न्यूट्रोन हैं! कोई व्यक्ति कैसे इतने शक्तिशाली न्यूट्रोन उत्पन्न कर सकता है? इससे यह भी सिद्ध होता है कि चीगोंग गुरुओं के पास वास्तव में गोंग और शक्ति होती है। इसे वैज्ञानिक तथा तकनीकि समुदाय द्वारा सत्यापित किया गया है।

पांच तत्वों से पार जाने के लिए, एक शरीर और मन के साधना अभ्यास की आवश्यकता होती है। यदि यह अभ्यास शरीर और मन का नहीं है और व्यक्ति के स्तर के लिए केवल गोंग का सुधार करता है न कि शरीर का संवर्धन, तो इसका इस विषय से कोई संबंध नहीं है और इसमें पांच तत्वों से पार जाने की आवश्यकता नहीं होती। एक शरीर और मन का साधना अभ्यास ऊर्जा का शरीर की प्रत्येक कोशिका में संचय करता है। एक साधारण अभ्यासी या वे जिन्होंने अभी गोंग विकसित करना आरंभ किया है वे बहुत स्थूल ऊर्जा उत्पन्न करते हैं जो अनियमित और कम घनत्व की होती है। इसलिए यह कम प्रबल होती है। जैसे व्यक्ति का स्तर बढ़ता है, यह पूर्णतया संभव है कि उसकी ऊर्जा का घनत्व एक साधारण पानी के अणु से सौ गुणा, एक हजार गुणा, या दस करोड़ गुणा अधिक हो। किसी का स्तर जितना ऊँचा होगा उसकी ऊर्जा उतनी ही घनी, सूक्ष्म और प्रबल होगी। इस परिस्थिति में, ऊर्जा का संचय शरीर की प्रत्येक कोशिकाओं में होता है। यह ऊर्जा न केवल इस भौतिक आयाम के शरीर की प्रत्येक कोशिका में संचित होती है, बल्कि दूसरे आयामों में सभी शरीरों के अणुओं, परमाणुओं, प्रोटोन और इलेक्ट्रोन में भर जाती है, जब तक यह अत्यन्त सूक्ष्म

कोशिकाओं तक न पहुंच जाऐ। जैसे-जैसे समय बीतता है, व्यक्ति का संपूर्ण शरीर इस प्रकार के उच्च शक्ति पदार्थ से भर जायेगा।

यह उच्च शक्ति तत्व प्रज्ञावान होता है, और बहुत समर्थ होता है। एक बार बढ़ने पर और सघन होने पर, यह मानव शरीर की सभी कोशिकाओं में भर जाता है और मानव भौतिक कोशिकाओं को निष्क्रिय कर देता है- जो सबसे असमर्थ कोशिकाऐं होती हैं। एक बार कोशिकाऐं निष्क्रिय हो जाती हैं, उनमें उपापचय प्रक्रिया नहीं होती। अन्त में, मानव भौतिक कोशिकाऐं पूर्णतया प्रतिस्थापित कर दी जाती हैं। नि:संदेह, यह कहना मेरे लिए सरल है। साधना में इस बिंदु तक आना एक निरन्तर और धीमी प्रक्रिया होती है। जब आपकी साधना इस बिंदु पर आती है, उच्च शक्ति तत्व आपके शरीर की सभी कोशिकाओं को प्रतिस्थापित कर देगा। इसके बारे में सोचें : क्या आपका शरीर अब भी पंच तत्वों का बना है? क्या यह अभी भी हमारे इस आयाम का पदार्थ है? यह पहले से ही दूसरे आयामों से एकत्रित उच्च शक्ति तत्वों से बना है। द तत्व भी ऐसा पदार्थ है जो दूसरे आयाम में होता है। यह हमारे आयाम के इस समय क्षेत्र से बंधित नहीं होता।

आधुनिक विज्ञान का मानना है कि समय का अपना एक प्रभाव क्षेत्र होता है। यदि कोई वस्तु इस समय-क्षेत्र के विस्तार में नहीं आती, तो यह उस समय द्वारा बंधित नहीं होती। दूसरे आयामों में, काल-अवकाश की धारणा हमारे यहां से भिन्न होती हैं। तो यहां का समय दूसरे आयामों के पदार्थ को कैसे नियंत्रित कर सकता है? यह कदापि ऐसा नहीं कर सकता। इसके बारे में सब सोचें : क्या आप तब पंच तत्वों को पार नहीं कर चुके होंगे? तो क्या तब भी आपका शरीर एक साधारण मानव शरीर होगा? यह ऐसा बिल्कुल नहीं होगा, किन्तु साधारण व्यक्ति यह नहीं बता सकते कि यह भिन्न है। यद्यपि व्यक्ति का शरीर इस सीमा तक परिवर्तित हो चुका है, यह साधना अभ्यास का अन्त नहीं है। व्यक्ति के लिए साधना में ऊँचे स्तरों की ओर स्तर विच्छेदन करते रहना आवश्यक है। इसलिए, व्यक्ति को साधारण लोगों के बीच साधना करना आवश्यक है; यदि लोग इस व्यक्ति को न देख पायें तो यह नहीं चलेगा।

इसके बाद क्या होगा? यद्यपि साधना के क्रम के दौरान इस व्यक्ति की अणु स्तर की सभी कोशिकाऐं उच्च स्तर पदार्थ से प्रतिस्थापित कर दी जाती हैं, परमाणुओं के संयोजन का अपना क्रम होता है, तथा अणु संयोजन तथा परमाणु संरचनाओं में

बदलाव नहीं आएगा। कोशिकाओं के अणु संयोजन इस प्रकार रहते हैं कि जब आप इन्हें छूते हैं वे कोमल अनुभव होते हैं। हड्डियों के अणु संयोजनों का घनत्व अधिक होता है इसलिए हड्डियाँ कठोर अनुभव होती हैं। रक्त के अणु संयोजनों का घनत्व बहुत विरल होता है इसलिए यह तरल होता है। एक साधारण व्यक्ति बाह्य रूप से आपके अंदर हुए बदलावों को नहीं देख सकता, क्योंकि आपकी कोशिकाओं के अणुओं की मूल संरचना और संयोजन पहले जैसा रहता है; उनकी संरचना नहीं बदलती। हालांकि अंदर की शक्ति में परिवर्तन हो गया है। इस प्रकार, अब के बाद यह व्यक्ति स्वाभाविक रूप से बूढ़ा नहीं होगा, और उसकी कोशिकाऐं मृत नहीं होंगी। तदनुसार, वह निरन्तर युवा बना रहेगा। साधना अभ्यास के क्रम के दौरान व्यक्ति युवा दिखेगा, और अन्त में उसी प्रकार रहेगा।

नि:संदेह, उसकी हड्डियाँ अभी भी टूट सकती हैं यदि कोई कार उसके शरीर से टकरा जाऐ। उसका रक्त अब भी बहेगा यदि कहीं चाकू से कट जाऐ, क्योंकि उसके अणुओं के संयोजन नहीं बदले हैं। केवल इतना हुआ है कि कोशिकाऐं प्राकृतिक रूप से मृत नहीं होंगी या प्राकृतिक रूप से बूढ़ी नहीं होंगी। उपापचयन प्रक्रिया बंद हो जायेगी। इसी को हम "पंच तत्वों से पार जाना" कहते हैं। इसमें क्या अंधविश्वास है? इसे वैज्ञानिक सिद्धांतों द्वारा भी समझाया जा सकता है। कुछ लोग इसे समझाने में असमर्थ रहते हैं, इसलिए लापरवाही से बात करते हैं। इसलिए दूसरे लोग कहते हैं कि वे अंधविश्वास फैला रहे हैं। चूंकि यह कथन धर्म से आया है, यह वाक्य हमारे आधुनिक चीगोंग ने नहीं पैदा किया है।

"त्रिलोक को पार करने" का क्या अर्थ है? पिछले दिन मैंने बताया था कि गोंग को बढ़ाने की कुंजी हमारे शिनशिंग का संवर्धन करने में और विश्व की प्रकृति से आत्मसात होने में है। विश्व की प्रकृति तब आपको बाधा नहीं डालेगी। जब आप शिनशिंग में सुधार करते हैं, द तत्व गोंग में परिवर्तित हो जाता है जो निरन्तर ऊपर की ओर ऊँचे स्तर की ओर बढ़ता रहता है, जिससे एक गोंग स्तम्भ बन जाता है। यह गोंग स्तम्भ जितना ऊँचा होता है, आपके शक्ति स्तर की ऊँचाई भी उतनी ही होगी। एक कहावत है : "महान फा असीमित है।" इसका संवर्धन करना पूर्णतया आपके हृदय पर निर्भर करता है। आपका साधना स्तर कितनी ऊँचाई तक पहुंच सकता है, यह पूरी तरह आपकी सहनशीलता और आपके कठिनाई सहने के सामर्थ्य पर निर्भर करता है। यदि

आप अपना श्वेत पदार्थ उपयोग कर चुके हैं, कठिनाइयां सहन करने के द्वारा आपका काला पदार्थ श्वेत पदार्थ में परिवर्तित हो सकता है। यदि यह अब भी समुचित नहीं है, आप अपने मित्रों या संबंधियों के पाप वहन कर सकते हैं जो साधना अभ्यास नहीं करते, और आप तब भी गोंग बढ़ा सकते हैं। इसके लिए आवश्यक है कि व्यक्ति साधना अभ्यास में बहुत ऊँचे स्तर तक पहुँचा हुआ हो। एक साधारण अभ्यासी को संबंधियों के पाप वहन करने के बारे में नहीं सोचना चाहिए। उतने अधिक कर्म के साथ, एक साधारण व्यक्ति साधना में सफल नहीं हो सकता। मैं यहां विभिन्न स्तरों के नियमों की बात कर रहा हूँ।

तीन लोक जिनका धर्मों में उल्लेख है, उनका संबंध स्वर्ग के नौ स्तरों या स्वर्ग के तैंतीस स्तरों - स्वर्ग, पृथ्वी और पाताल, से है जिसमें त्रिलोक के समस्त प्राणी सम्मिलित हैं। उनका मत है कि स्वर्ग के तैंतीस स्तरों में समस्त प्राणियों को संसार के जन्म-मरण के क्रम से गुजरना पड़ता है। "संसार" का अर्थ है कि प्राणी इस जन्म में मनुष्य है, और वह दूसरे जन्म में एक पशु बन सकता है। बुद्धमत में कहा गया है कि : "व्यक्ति को इस जन्म के सीमित समय का सदुपयोग करना चाहिये। यदि आप अभी साधना अभ्यास नहीं करते हैं, तो कब करेंगे?" यह इसलिए क्योंकि पशुओं को साधना अभ्यास की मनाही है, और न ही वे फा को सुनेंगे। यदि वे साधना करते भी हैं, उन्हें साधना में उचित फल[3] की प्राप्ति नहीं होगी। यदि उनका गोंग स्तर बढ़ता है तो देवलोक उन्हें मार देगा। हो सकता है आपको मनुष्य शरीर कई सौ वर्षों तक न मिल पाये; या आपको यह एक हजार वर्ष में मिले। एक बार मनुष्य शरीर मिलने के बाद, आप यह भी नहीं जानते कि इसकी देख-रेख कैसे की जाये। यदि आपका पुनर्जन्म एक चट्टान में होता है, हो सकता है आप दस हजार वर्ष में भी बाहर न आ सकें। यदि वह चट्टान टूट या ध्वस्त नहीं हो जाती, आप कभी नहीं निकल सकेंगे। एक मनुष्य शरीर प्राप्त करना कितना कठिन है! यदि कोई व्यक्ति वास्तव में दाफा प्राप्त कर सके, तो यह व्यक्ति बहुत भाग्यवान है। मनुष्य शरीर को प्राप्त करना कठिन है- इसका यह अर्थ है।

साधना अभ्यास में हमारा संबंध स्तरों के विषय से होता है, और यह पूर्णतया व्यक्ति के अपने साधना अभ्यास पर निर्भर करता है। यदि आप त्रिलोक को पार करना चाहते हैं और यदि आपका गोंग स्तम्भ एक बहुत ऊँचे स्तर तक संवर्धित किया हुआ

है, तो क्या आप त्रिलोक को पार नहीं कर गये? जब व्यक्ति की मूल आत्मा ध्यान मुद्रा में बैठते समय शरीर को छोड़ देती है, यह तुरन्त किसी बहुत ऊँचे स्तर पर पहुंच सकती है। एक अभ्यासी ने अपनी अनुभव डायरी में लिखा है, "गुरुजी, मैं स्वर्ग के कई स्तरों तक पहुंच चुका हूँ और मैंने कई दृश्य देखे हैं।" मैंने उसे कहा कि वह और ऊपर बढ़े। उसने कहा, "मैं यह नहीं कर सकता। मेरा ऊपर जाने का साहस नहीं होता, मैं और ऊपर बढ़ने में असमर्थ हूँ।" क्यों? यह इसलिए क्योंकि उसका गोंग स्तम्भ केवल उतना ही ऊँचा था, और वह वहां तक अपने गोंग स्तम्भ के ऊपर बैठ कर पहुंचा था। इसी को साधना की फल पदवी कहा जाता है जिसका बुद्धमत में उल्लेख है, और उसकी साधना उस पदवी तक पहुंची थी। एक अभ्यासी के लिए, हालांकि, यह उसकी फल पदवी का चरमोत्कर्ष नहीं है। वह अभी भी निरन्तर ऊपर की ओर बढ़ रहा है और निरन्तर अपने में सुधार कर रहा है। यदि आपका गोंग स्तम्भ त्रिलोक की सीमा के पार चला जाये, तो क्या आप त्रिलोक के पार नहीं हो जाते? हमने यह खोज से पता लगाया है कि धर्मों मे वर्णित त्रिलोक हमारे नौ मुख्य गृहों की सीमा क्षेत्र में ही आते हैं। कुछ लोग दस मुख्य गृहों की बात करते हैं। मैं कहूँगा कि यह शायद सत्य नहीं है। मैंने पाया है कि अतीत के कुछ चीगोंग गुरुओं के बहुत ऊँचे गोंग स्तम्भ थे जो आकाशगंगा से भी आगे निकल गये थे; वे त्रिलोक से कहीं आगे निकल गये थे। अभी मैंने त्रिलोक के पार जाने के बारे में बताया। यह वास्तव में स्तरों का विषय है।

इच्छा प्रयास का विषय

हमारे साधना स्थल पर कई लोग इच्छा की प्रवृत्ति से आते हैं। कुछ लोग दिव्य सिद्धियाँ प्राप्त करना चाहते हैं; कुछ लोग कुछ सिध्दांत सुनना चाहते हैं; कुछ लोग रोगों का निवारण चाहते हैं; कुछ लोग फालुन भी प्राप्त करना चाहते हैं। सभी प्रकार की मनोस्थिति के लोग आते हैं। साथ ही, कुछ और कहते हैं : "मेरे परिवार से अमुक व्यक्ति व्याख्यान सुनने नहीं आ सका, मैं कुछ मेहनताना दे दूंगा, और आप कृपया उसे फालुन दे दें।" हमें इस फालुन को बनाने में कई पीढ़ियां, एक बहुत लम्बा समय और अत्यधिक वर्ष लगे हैं। आप इस फालुन को कुछ दर्जन *युआन* [4] से कैसे खरीद सकते हैं? यह आप सभी को बिना शर्त कैसे दिया जा सकता है? यह इसलिए क्योंकि आप

अभ्यासी बनना चाहते हैं। कितना भी धन हो वह इस हृदय को नहीं खरीद सकता। केवल जब आपके बुद्ध-स्वभाव का उदभव होता है तभी हम ऐसा कर सकते हैं।

आपको इच्छा प्रयास की प्रवृत्ति है। क्या आप यहां केवल इसी के लिए आए हैं? दूसरे आयाम में मेरा *फा-शरीर* [5] आपके मन में सभी कुछ जानता है। क्योंकि दो काल-अवकाशों की धारणायें भिन्न हैं, दूसरे आयाम में आपके विचारों का बनना एक अत्यन्त धीमी प्रक्रिया के रूप में दिखता है। आपके सोचने के पहले ही यह सब कुछ जान जायेगा। इसलिए, आपको अपने सभी अनुचित विचार त्याग देने चाहिए। बुद्ध विचारधारा पूर्व निर्धारित संबंध में विश्वास करती है। यहां सभी पूर्व निर्धारित संबंध के कारण ही आए हैं। यदि आप इसे प्राप्त करते हैं, शायद आपको यह प्राप्त होना था। आपको इसलिए इसे बिना किसी इच्छाभाव के अमूल्य धरोहर मानना चाहिये।

अतीत की धार्मिक साधना पद्धति में, बुद्ध विचारधारा में शून्यवाद की आवश्यकता होती थी। व्यक्ति को किसी भी वस्तु के बारे में नहीं सोचना चाहिये और शून्यता के द्वार में प्रवेश करना चाहिये। ताओ विचारधारा रिक्तवाद की शिक्षा देती थी, जैसे व्यक्ति को कुछ नहीं चाहना चाहिये, और न ही किसी वस्तु की इच्छा रखनी चाहिये। एक अभ्यासी विश्वास करता है कि उसे गोंग प्राप्ति पर ध्यान दिये बिना, केवल अभ्यास पर ध्यान केन्द्रित करना चाहिए। साधना और अभ्यास में व्यक्ति को मनो-विचार से मुक्त अवस्था में होना चाहिए। जब तक आप शिनशिंग के संवर्धन में केन्द्रित रहते हैं, आप अपने स्तर में प्रगति पाते रहेंगे और निश्चित ही वे वस्तुऐं प्राप्त करेंगे जिनके आप योग्य हैं। यदि आप किसी वस्तु को नहीं छोड़ सकते, तो क्या यह मोहभाव नहीं है? हमने यहां इतना उच्च स्तर का फा एक साथ ही सिखाया है, और आपके शिनशिंग की आवश्यकता भी, नि:संदेह, उच्च स्तर की है। इसलिए, व्यक्ति को फा सीखने के लिए इच्छा भाव के साथ नहीं आना चाहिये।

सभी की ओर उत्तरदायी होने के लिए, हम आपका उचित मार्ग की ओर मार्गदर्शन कर रहे हैं, और यह आवश्यक है कि हम आपको यह फा पूर्णरूप से समझाऐं। जब कोई व्यक्ति दिव्य नेत्र की इच्छा रखता है, यह स्वयं ही अवरुद्ध हो जायेगा और बंद हो जायेगा। इसके अलावा, मैं सभी को बता रहा हूँ कि त्रिलोक-फा साधना अभ्यास में व्यक्ति जो सभी दिव्य सिद्धियाँ विकसित करता है, वे इस भौतिक शरीर की मूल, जन्मजात योग्यताऐं हैं। वे केवल हमारे इस आयाम में कार्य कर सकती हैं

और साधारण लोगों को प्रभावित कर सकती हैं। आप इन छोटी युक्तियों के पीछे क्यों जाना चाहते हैं? आप इसकी या उसकी इच्छा रखते हैं, किन्तु एक बार त्रिलोक फा से आगे जाने पर वे दूसरे आयामों में कार्य नहीं करतीं। पर-त्रिलोक-फा साधना के समय तक, इन सभी दिव्य सिद्धियों को छोड़ना आवश्यक होता है और इन्हें एक बहुत गहरे आयाम में परिरक्षित करने के लिए दबा दिया जाता है। भविष्य में, वे आपके साधना अभ्यास के रिकॉर्ड का काम करेंगी, उनका केवल यही मामूली उपयोग है।

पर-त्रिलोक-फा में पहुँचने के पश्चात, व्यक्ति को साधना पुन: आरंभ करनी आवश्यक होती है। जैसा मैंने अभी बताया, उसका शरीर पंच तत्वों को पार कर चुका होता है। यह एक बुद्ध-शरीर है। क्या इस प्रकार के शरीर को बुद्ध शरीर कहना उचित नहीं होगा? इस बुद्ध शरीर के लिए आवश्यक है कि यह साधना शुरूआत से पुन: आरंभ करे तथा दिव्य सिद्धियाँ भी पुन: विकसित करे। "दिव्य सिद्धियों" के स्थान पर अब उन्हें "बुद्ध फा की अलौकिक शक्तियाँ" कहा जाता है। वे असीमित रूप से शक्तिशाली होती हैं तथा विभिन्न आयामों में कार्य कर सकती हैं, वे वास्तव में प्रभावी होती हैं। आपकी दिव्य सिद्धियों की इच्छा का क्या उपयोग है? आपमें से जो भी दिव्य सिद्धियाँ प्राप्त करने के पीछे पड़े हैं, क्या आप उन्हें प्रयोग करने तथा साधारण लोगों के बीच दिखाने के बारे में नहीं सोचते? अन्यथा, आप उन्हें क्यों चाहेंगे? वे अदृश्य तथा अस्पर्श हैं। यहां तक कि सजाने के लिए भी, व्यक्ति कोई ऐसी वस्तु चाहता है जो अच्छी दिखे। यह निश्चित है कि जाने अनजाने आपको उन्हें प्रयोग करने की इच्छा है। उनकी किसी साधारण मानवीय कौशल की तरह इच्छा नहीं रखी जा सकती। वे पूर्णतया दिव्य हैं, तथा आपको उनके सार्वजनिक प्रदर्शन की मनाही है। प्रदर्शन करना स्वयं में एक बहुत प्रबल मोहभाव है तथा एक बुरा मोहभाव जिसे एक अभ्यासी को त्यागना आवश्यक है। यदि आप उनसे धन-संपत्ति अर्जित करना चाहते हैं, या उनसे साधारण लोगों के बीच अपने लक्ष्य प्राप्त करना चाहते हैं, तो इसकी मनाही है। यह उच्च स्तर की वस्तुओं के प्रयोग द्वारा साधारण मानव समाज में विघ्न डालने और अवमानना करने जैसा है। वैसा विचार और भी बुरा है। इसलिए, उनका अकारण प्रयोग निषेध है।

साधारणत:, दिव्य सिद्धियाँ दो वर्ग के लोगों में विकसित होने की अधिक संभावना होती है : बच्चे तथा बुजुर्ग। विशेषकर, वृद्ध महिलाऐं अक्सर साधारण लोगों

के बीच बिना अधिक मोहभावों के अच्छा शिनशिंग रख पाती हैं। उनकी दिव्य सिद्धियाँ विकसित हो जाने के पश्चात, वे बिना प्रदर्शन की चाह रखते हुए सरलता से अपने पर नियंत्रण रख पाती हैं। युवाओं के लिए दिव्य सिद्धियाँ विकसित करना कठिन क्यों होता है? विशेष रूप से, एक नवयुवक साधारण मानव समाज में कुछ लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए प्रयत्नशील रहता है! एक बार दिव्य सिद्धियाँ प्राप्त हो जाने पर, वह उन्हें अपने लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए प्रयोग करेगा। उन्हें अपने लक्ष्यों की प्राप्ति के साधन के रूप में प्रयोग करने की सख्त मनाही है, इसलिए वह दिव्य सिद्धियाँ विकसित नहीं कर पाता।

साधना अभ्यास का विषय बच्चों का खेल नहीं है, और न ही यह कोई साधारण लोगों की तकनीक है- यह एक बहुत गंभीर विषय है। आप साधना अभ्यास करना चाहते हैं या आप साधना अभ्यास कर पाते हैं, पूरी तरह इस पर निर्भर करता है कि आपके शिनशिंग में किस प्रकार सुधार हुआ है। यह बहुत बुरा होगा यदि कोई वास्तव में दिव्य सिद्धियाँ इच्छा भाव द्वारा प्राप्त कर सके। आप पायेंगे कि वह साधना के बारे में परवाह नहीं करता अथवा इस विषय पर सोचता भी नहीं। क्योंकि उसका शिनशिंग साधारण लोगों के स्तर पर है तथा उसकी दिव्य सिद्धियाँ इच्छा भाव द्वारा आई हैं, वह हर प्रकार के दुष्कर्म कर सकता है। बैंक में बहुत सा धन है और वह उसमें से कुछ निकाल सकता है। सड़कों पर कई प्रकार की लॉटरी टिकटों की बिक्री होती है, और वह पहला पुरस्कार प्राप्त कर लेगा। इस प्रकार की घटनाऐं क्यों नहीं होतीं? कुछ चींगोंग गुरु कहते हैं : "नैतिकता के अभाव में, व्यक्ति दिव्य सिद्धियाँ विकसित होने पर सरलता से बुरे कार्य कर सकता है।" मैं कहता हूँ कि यह एक गलत कथन है- यह इस प्रकार है ही नहीं। यदि आप नैतिकता का आदर नहीं करते या अपने शिनशिंग का संवर्धन नहीं करते, तो आप कोई दिव्य सिद्धि विकसित ही नहीं कर पायेंगे। अच्छे शिनशिंग के साथ कुछ लोग अपने स्तर पर दिव्य सिद्धियाँ विकसित करते हैं, बाद में, वे स्वयं पर ठीक से नियंत्रण नहीं रख पाते और वे कार्य भी करते हैं जो उन्हें नहीं करने चाहिए। यह स्थिति भी होती है। हालांकि एक बार व्यक्ति कुछ बुरा कार्य करता है, उसकी दिव्य सिद्धियाँ क्षीण अथवा समाप्त हो जायेंगी। एक बार लुप्त हो जाने पर, वे सदा के लिए समाप्त हो जाती हैं। इसके अलावा, बुरी बात यह है कि वे व्यक्ति में मोहभाव उत्पन्न करती हैं।

एक चीगोंग गुरु दावा करता है कि यदि कोई व्यक्ति उसकी पद्धति तीन या पाँच दिन के लिए सीखे, तो वह रोगों को ठीक कर सकेगा। यह एक विज्ञापन की तरह है, और उसे एक चीगोंग व्यापारी कहना चाहिए। आप इसके बारे में सोचें: एक साधारण व्यक्ति होते हुए, आप कैसे दूसरे व्यक्ति का रोग केवल अपनी कुछ ची निष्कासित करके दूर कर सकते हैं? एक साधारण व्यक्ति के शरीर के अंदर भी ची होती है, जैसे आपके पास है। आपने अभी अभ्यास आरंभ किया है, और केवल यह है कि आपका लाओगोंग बिंदु खुला है, जिससे आप ची ग्रहण और निष्कासित कर सकते हैं। जब आप दूसरे लोगों के रोगों का उपचार करते हैं, उनके शरीर में भी ची विद्यमान है। शायद उनकी ची आपका रोग ठीक कर दे! किस प्रकार एक व्यक्ति की ची दूसरे व्यक्ति की ची पर काबू कर सकती है? ची किसी भी प्रकार रोग ठीक नहीं कर सकती। इसके अतिरिक्त, जब आप किसी रोगी का उपचार करते हैं, आप और आपका रोगी एक प्रभाव क्षेत्र बना लेते हैं जिसके द्वारा रोगी की रोगग्रस्त ची सारी आपके शरीर में आ जाऐगी। अब यह आपके पास भी उतनी ही है जितनी आपके रोगी के शरीर में, यद्यपि यह रोगी के शरीर में आधारित है। अधिक मात्रा में रोगग्रस्त ची आपको भी रोगग्रस्त बना सकती है। एक बार आपके सोचने पर कि आप रोग उपचार कर सकते हैं, आप रोगियों को देखने का अभ्यास आरंभ कर देंगे। आप लोगों के अनुरोध को मना नहीं कर पायेंगे और एक मोह उत्पन्न कर लेंगे। कितना आनंददायी लगता है औरों के रोगों का उपचार कर पाना! वे ठीक कैसे हो पाते हैं? आपने कभी इसके बारे में नहीं सोचा? पाखण्डी चीगोंग गुरुओं के शरीर प्रेतों या पशुओं से ग्रसित होते हैं। आपको उन पर विश्वास दिलाने के लिए, वे आपको अपने संदेशों में से कुछ दे देते हैं, जो आपके द्वारा तीन, पांच, आठ या दस रोगियों के उपचार के बाद खर्च हो जाते हैं। इसमें शक्ति खर्च होती है, और उसके पश्चात यह थोड़ी सी शक्ति समाप्त हो जायेगी। आपके पास अपना गोंग नहीं है, तो आप इसे संभवत: कहाँ से प्राप्त कर सकते हैं? चीगोंग गुरुओं की भांति, हमने कई दर्जन वर्षों तक चीगोंग का अभ्यास किया है। विगत में साधना अभ्यास करना बहुत कठिन था। साधना का अभ्यास बहुत कठिन होता है यदि कोई एक उचित मार्ग का अनुसरण करने के स्थान पर कोई भटका हुआ मार्ग या लघु मार्ग अपना ले।

यद्यपि आपको लगता है कि कुछ महान चीगोंग गुरु बहुत विख्यात हैं, उन्होंने उस थोड़े से गोंग को विकसित करने के लिए दशकों तक साधना का अभ्यास किया

होता है। आपने कभी साधना का अभ्यास नहीं किया। एक चीगोंग कक्षा में जाने से आपके पास गोंग कैसे आ सकता है? यह कैसे संभव है? उसके बाद आपको मोहभाव उत्पन्न हो जायेगा। एक बार मोहभाव उत्पन्न होने पर, यदि आप किसी रोग को ठीक नहीं कर पाते तो आप चिंतित हो जायेंगे। अपनी ख्याति बचाने के लिए, रोग उपचार करते समय व्यक्ति के मन में क्या होता है? "मुझे कृपया यह रोग ले लेने दो जिससे यह रोगी ठीक हो जाऐ।" यह करूणाभाव से नहीं है, क्योंकि उसके प्रसिद्धि और निजी-लाभ से मोह जरा भी कम नहीं हुए हैं। यह व्यक्ति इस करूणाभाव को जरा भी उत्पन्न नहीं कर सकता। उसे अपनी प्रसिद्धि के खोने का भय है। अपनी प्रसिद्धि को बनाए रखने के लिए वह इस रोग को भी अपनाने के लिए तैयार है। प्रसिद्धि से कितना अधिक मोह है! एक बार ऐसी इच्छा करने पर, वह रोग उसके शरीर पर तुरंत स्थानांतर हो जाएगा- यह वास्तव में होगा। वह रोग के साथ घर जाऐगा जबकि रोगी ठीक हो जायेगा। रोगी का उपचार करने के बाद, वह घर में पीड़ित होगा। वह सोचता है कि उसने रोग का निवारण कर दिया है। जब लोग उसे चीगोंग गुरु कहते हैं, वह बहुत प्रसन्न और आनंदविभोर हो जाता है। क्या यह एक मोहभाव नहीं है? जब वह किसी रोग को ठीक नहीं कर पाता, वह अपना सर झुका लेता है और निराश महसूस करता है। क्या यह उसके प्रसिद्धि और स्वार्थ के मोहभाव से जनित नहीं है? इसके अतिरिक्त, उसके रोगियों की समस्त रोगग्रस्त ची उसके शरीर पर आ जाती है। यद्यपि उन पाखण्डी चीगोंग गुरुओं ने उसे सिखाया है कि इसे शरीर से कैसे हटाया जाए, मैं बता रहा हूँ वह इसे जरा भी शरीर से नहीं हटा सकता, तनिक भी नहीं, क्योंकि उसके अपने पास अच्छी ची और बुरी ची में भेद करने की योग्यता नहीं है। जैसे समय बीतता जाता है, उसका शरीर अंदर से पूरी तरह काला हो जायेगा, और यह कर्म है।

जब आप वास्तव में साधना अभ्यास करना चाहते हैं, तो यह अत्यन्त दुष्कर कार्य है। आप इसके बारे में क्या करेंगे? आपको कर्म को श्वेत पदार्थ में परिवर्तित करने के लिए कितना पीड़ित होना पड़ेगा? यह अत्यन्त कठिन है। विशेष रूप से, जितना अच्छा व्यक्ति का जन्मजात गुण होता है, उतना ही सरल इस विषय का सामना करना। कुछ लोग सदैव रोग उपचार करने के लिए तत्पर रहते हैं। यदि आपकी कोई इच्छा है, एक पशु इसे देख लेगा और आपको ग्रसित करने आ जायेगा। क्या आप रोगों का उपचार नहीं करना चाहते? यह आपको ऐसा करने में मदद करेगा। किन्तु यह रोग

उपचार में आपकी मदद बिना कारण नहीं करेगा। कोई हानि नहीं, तो कोई लाभ नहीं। यह बहुत खतरनाक होता है, और आप इसे निमंत्रित कर बैठेंगे। आप कैसे अपना साधना अभ्यास जारी रखेंगे? यह समाप्त हो जाएगा।

अच्छे जन्मजात गुणों वाले कुछ लोग अपने जन्मजात गुण दूसरों के साथ कर्म के लिए बदल लेते हैं। वह व्यक्ति रोगग्रस्त है और उसके पास बहुत अधिक कर्म है। यदि आप किसी ऐसे रोगी का उपचार करते हैं जिसे एक गंभीर रोग है, उपचार के बाद घर में आप बहुत असुविधाजनक महसूस करेंगे। विगत में, रोगी का उपचार करने के पश्चात बहुत से लोग इस प्रकार अनुभव करते थे : रोगी स्वस्थ हो रहा है, किन्तु आप घर में बीमार पड़े हैं। जैसे समय बीतता है, और अधिक कर्म आप पर स्थानांतरित होता है; आप औरों को कर्म के बदले में द देते हैं। कोई हानि नहीं, तो कोई लाभ नहीं। यद्यपि जो आप प्राप्त करते हैं वह रोग है, कर्म का द से भुगतान करना आवश्यक है। इस विश्व का यह नियम है कि जब तक आप ही इसे चाहते हैं तो कोई आपको नहीं रोकेगा, और न ही कोई यह कहेगा कि आप अच्छे हैं। विश्व का एक विशिष्ट नियम है, जो है कि जिस किसी के पास अधिक कर्म है वह एक बुरा व्यक्ति होता है। आप अपना जन्मजात गुण दूसरे व्यक्ति को कर्म के बदले में दे रहे हैं। अधिक कर्म के साथ, आप कैसे साधना अभ्यास कर सकेंगे? आपका जन्मजात गुण उस व्यक्ति द्वारा पूरी तरह नष्ट हो जायेगा। क्या यह भयावह नहीं है? उस व्यक्ति का रोग समाप्त हो गया; वह अब ठीक अनुभव करता है, किन्तु आप घर में पीड़ित हो रहे हैं। यदि आप एक-दो कैंसर के रोगियों को ठीक कर दें, तो उनका स्थान आपको लेना होगा। क्या यह खतरनाक नहीं है? यह केवल इसी प्रकार है, और बहुत से लोग सत्य नहीं जानते।

इस बात से प्रभावित न हों कि कुछ पाखण्डी चीगोंग गुरु कितने प्रसिद्ध हैं। यह आवश्यक नहीं है कि एक सुप्रसिद्ध व्यक्ति वस्तुओं को अच्छी तरह जानता हो। साधारण लोग क्या जानते हैं? एक बार वस्तुओं को बढ़ा-चढ़ा कर बताने पर, वे स्वीकार कर लेते हैं। यद्यपि आप उन्हें अभी वे वस्तुऐं करते हुए पाते हैं, वे न केवल औरों को हानि पहुंचा रहे हैं, बल्कि स्वयं को भी। एक या दो वर्षों में आप देखेंगे कि उनके साथ क्या होता है। साधना अभ्यास का इस प्रकार अनादर नहीं किया जा सकता। साधना अभ्यास रोग का निवारण कर सकता है, किन्तु इसका उपयोग रोग के निवारण के लिए नहीं किया जा सकता। यह साधारण लोगों की तकनीक नहीं है बल्कि दिव्य है।

आपके द्वारा इसको अकारण बर्बाद करने की बिल्कुल मनाही है। आजकल कुछ पाखण्डी चीगोंग गुरुओं ने स्थिति को उलझा दिया है, और चीगोंग को प्रसिद्धि और धन अर्जित करने का जरिया बना लिया है। वे पंथ हैं जो अपना दुष्ट प्रभाव बढ़ा रहे हैं, और वे उन सच्चे चीगोंग गुरुओं से कई गुणा अधिक हैं। साधारण लोग सभी इस प्रकार की बातें बोलते हैं और करते हैं, और आप उन पर विश्वास कर लेते हैं? आप सोचते हैं कि चीगोंग इसी प्रकार होता है, किन्तु यह नहीं है। जो मैं कह रहा हूँ सच्चा नियम है।

जब साधारण लोगों के बीच विभिन्न सामाजिक संबंध फलित होते हैं, व्यक्ति निजी-लाभ के लिए बुरे कार्य कर बैठता है और दूसरों का ऋणि हो जाता है। ऋण भुगतान के लिए व्यक्ति को दु:ख भोगना आवश्यक है। मान लीजिए कि आप जानबूझ कर किसी रोग का उपचार करते हैं। आपको वास्तव में किसी रोग के निवारण की अनुमति कैसे दी जा सकती है? बुद्ध सर्वव्यापी हैं। जब वे इतने अधिक हैं, तो वे ऐसा कुछ क्यों नहीं करते? कितना ही अदभुत हो यदि कोई बुद्ध पूरी मनुष्य जाति को आरामदेह बना दे! वे ऐसा क्यों नहीं करते? व्यक्ति को अपने कर्म का भुगतान स्वयं करना आवश्यक है, और कोई भी इस नियम का उल्लंघन करने का साहस नहीं करता। साधना अभ्यास के क्रम के दौरान, एक अभ्यासी कभी-कभी किसी व्यक्ति की मदद करूणावश कर सकता है; हालांकि, इससे केवल रोग विलम्बित होगा। यदि आप अभी पीड़ा नहीं भोगते, आप बाद में पीड़ा भोगेंगे। साथ ही, वह इसे रूपान्तरित कर सकता है जिससे रोग के स्थान पर आपको धन की हानि या कोई कठिनाई होगी। यह इस प्रकार हो सकता है। किसी व्यक्ति के सभी कर्मों को वास्तव में एक साथ हटाना केवल अभ्यासियों के लिए किया जा सकता है, और साधारण लोगों के लिए नहीं। मैं यहां केवल अपनी पद्धति के नियम नहीं सिखा रहा हूँ। मैं संपूर्ण विश्व के नियम सिखा रहा हूँ, और मैं साधकों के समुदाय में वास्तविक तथ्यों की चर्चा कर रहा हूँ।

यहां, हम आपको रोगों का उपचार करना नहीं सिखाते। हम आपको महान मार्ग की ओर अग्रसर कर रहे हैं, जो उचित मार्ग है, और हम आपका उत्थान कर रहे हैं। इस प्रकार, मेरे व्याख्यानों में मैं सदैव कहूँगा कि फालुन दाफा अभ्यासियों के लिए रोग उपचार करने की अनुमति नहीं है। यदि आप रोग का उपचार करते हैं, तो आप फालुन दाफा के अभ्यासी नहीं है। क्योंकि हम आपको एक उचित मार्ग की ओर अग्रसर कर रहे हैं, त्रिलोक-फा साधना अभ्यास के दौरान आपके शरीर का निरन्तर शुद्धिकरण

किया जाएगा जब तक यह उच्च-शक्ति पदार्थ द्वारा पूरी तरह रूपांतरित नहीं हो जाता। यदि आप अब भी अपने शरीर में उन काले पदार्थों को एकत्रित करते हैं तो आप साधना अभ्यास कैसे कर सकते हैं? वे वस्तुऐं कर्म है! आप साधना अभ्यास करने में असमर्थ हो जायेंगे। बहुत अधिक कर्म होने से, आप इसे सहन नहीं कर पायेंगे। यदि आप बहुत अधिक दु:ख भोगते हैं, तो आप साधना अभ्यास नहीं कर पायेंगे। यही कारण है। मैंने आज यह दाफा सार्वजनिक कर दिया है, और हो सकता है आप अभी भी नहीं जानते कि मैंने क्या सिखाया है। क्योंकि इस दाफा को सार्वजनिक किया जा सकता है, इसकी रक्षा करने के भी उपाय हैं। यदि आप दूसरों के रोग का उपचार करते हैं, मेरे फा-शरीर आपके शरीर से साधना के लिए दी गई सभी वस्तुऐं वापस ले लेंगे। हम आपको इतनी मूल्यवान निधि को सहज ही प्रसिद्धि और निजी-लाभ के लिए बर्बाद नहीं करने देंगे। यदि आप फा की आवश्यकताओं का पालन नही करते, तो आप फालुन दाफा के अभ्यासी नहीं हैं। क्योंकि आप एक साधारण व्यक्ति बने रहना चाहते हैं, आपके शरीर को साधारण लोगों के स्तर पर वापस व्यवस्थित कर दिया जायेगा और बुरी वस्तुऐं आपको लौटा दी जायेंगी।

कल के व्याख्यान के बाद, आप में से अनेक ने अनुभव किया कि आपका पूरा शरीर हल्का हो गया है। तब भी, बहुत थोड़े से लोग जिन्हें गंभीर रोग थे, बचे रह गये और उन्हें कल असुविधाजनक लगने लगा। जब मैंने कल आपके शरीर से बुरी वस्तुऐं निकाल दीं, आप में से अधिकांश को यह अनुभव हुआ जैसे आपका पूरा शरीर हल्का और बहुत आरामदेह हो गया हो। तब भी, हमारे विश्व में "हानि नहीं, तो लाभ नहीं" का नियम है। हम आपके लिए सभी कुछ नहीं हटा सकते। इसकी सर्वथा मनाही है कि आप कुछ भी दु:ख न सहें। इसका अर्थ है, हमने आपके रोगों और आपके बुरे स्वास्थ्य के मूल कारणों को हटा दिया है। किन्तु आप पर अभी भी रोग का प्रभाव क्षेत्र है। एक व्यक्ति जिसका दिव्य नेत्र एक बहुत निम्न स्तर पर खुला हुआ होता है वह आपके शरीर में काली ची और गंदली रोगपूर्ण ची के पुंज देख सकता है, जो काली ची के अधिक घनत्व वाले पुंज हैं। एक बार इसके विलय हो जाने पर, यह आपके पूरे शरीर पर फैल जाता है।

आज से, कुछ लोगों को अपने पूरे शरीर में सर्दी लगेगी जैसे उन्हें तेज जुकाम हो गया हो, और उनकी हड्डियों में भी दर्द हो सकता है। आप में से अधिकांश को

कहीं न कहीं असुविधाजनक लगेगा। आपके पैरों में दर्द हो सकता है या आपका सर भारी लग सकता है। आपके शरीर के रोगग्रस्त भाग में, जो आप सोचते थे कि चीगोंग व्यायाम या किसी चीगोंग गुरु द्वारा पहले ठीक हो चुका था, दोबारा रोग उभर कर आयेगा। यह इसलिए क्योंकि उस चीगोंग गुरु ने आपके लिए रोग को ठीक नहीं किया था- उसने केवल उसे विलम्बित किया था। यह अभी भी वहां था और उस समय नहीं तो बाद में उभर कर आता। हमें इसको जड़ से खोद निकाल कर पूरी तरह समाप्त करना आवश्यक है। इससे, आपको लग सकता है कि आपके रोग वापस आ गये हैं। यह आपके कर्म को मूल रूप से हटाने के लिए है। इस प्रकार, आप को प्रतिक्रियायें होंगी। कुछ लोगों को कहीं भी शारीरिक प्रतिक्रियायें हो सकती हैं। कुछ लोग किसी न किसी प्रकार से असुविधाजनक महसूस कर सकते हैं क्योंकि विभिन्न प्रकार के दर्द उभर कर आएंगे। यह सब साधारण है। मैं सभी को बता रहा हूँ कि आपको भले ही कितना भी असुविधाजनक लगे, आप इस कक्षा में अवश्य ही आते रहें। एक बार आप इस कक्षा में आ जाएंगे, आपके सभी लक्षण समाप्त हो जाएंगे और कोई खतरा नहीं रहेगा। एक बात सभी को बतानी है : भले ही आपको "रोग" से कितनी ही पीड़ा क्यों न हो, मुझे आशा है कि आप आते रहेंगे, क्योंकि फा को प्राप्त करना कठिन होता है। जब आपको बहुत पीड़ा महसूस होती है, तो यह दर्शाता है कि एक तीव्र बिंदु तक पहुंचने के बाद यह परिस्थिति बदल जायेगी। आपके पूरे शरीर का शुद्धिकरण किया जायेगा और इसे पूरी तरह शुद्ध किया जाना आवश्यक है। आपके रोग के कारण को हटा दिया गया है, और जो बचा है वह यह थोड़ी सी काली ची है जो अपने आप बाहर निकलेगी जिससे कुछ पीड़ा और कुछ दर्द होगा। आपके लिए इसकी मनाही है कि आपको जरा भी पीड़ा न हो।

साधारण मानव समाज में, आप दूसरों के साथ प्रसिद्धि और निजी-लाभ के लिए प्रतिस्पर्धा करते हैं। आप ठीक से सो नहीं पाते या खा नहीं पाते, और आपका शरीर बहुत बुरे आकार में है। जब आपके शरीर को दूसरे आयाम से देखा जाता है, हड्डियां पूरी तरह काली दिखाई पड़ती हैं। इस शरीर के साथ, जब इसका एक ही बार में शुद्धिकरण किया जाता है तो आपके लिए यह असंभव है कि कोई प्रतिक्रिया न हो। इस प्रकार, आपको प्रतिक्रिया होंगी। कुछ लोगों को उल्टी होगी और शौच होगा। विभिन्न स्थानों के कई अभ्यासियों ने इस विषय को अपने अनुभव वर्णन में पहले

बताया है, "आचार्यजी, आपकी कक्षा से निकल कर घर जाने के मार्ग में मैं शौचालय ही ढूंढता रहा।" यह इसलिए क्योंकि आपके सभी आंतरिक अंगों का शुद्धिकरण करना आवश्यक है। कुछ लोग सो जाते हैं और जैसे ही मेरा व्याख्यान समाप्त होता है वे जाग जाते हैं। ऐसा क्यों है? यह इसलिए क्योंकि उनके मस्तिष्क में रोग होते हैं जिनका उपचार किया जाना होता है। यदि व्यक्ति के मस्तिष्क का उपचार किया जाता है तो वह इसे सहन नहीं कर पायेगा। इसलिए, उसे बेहोशी या अचेतन की अवस्था में लाना आवश्यक है। तब भी, कुछ लोगों को मुझे सुनने में कोई समस्या नहीं होती। हालांकि वे गहन निद्रा में होते हैं, वे सभी कुछ सुनते रहते हैं और उनसे एक भी शब्द नहीं छूटता। बाद में उनमें बहुत स्फूर्ति आ जाती है, और यदि वे दो दिन तक भी बिना नींद के रहें उन्हें निद्रा महसूस नहीं होगी। अलग-अलग लक्षण हैं जिन सभी को व्यवस्थित करना आवश्यक होता है। आपके पूरे शरीर का शुद्धिकरण किया जायेगा।

यदि आप फालुन दाफा के सच्चे अभ्यासी हैं, और जब आप अपने मोहभाव छोड़ पाते हैं, आप में से सभी को तब से प्रतिक्रियायें होंगी। जो अपने मोहभाव नहीं छोड़ पाते कह सकते हैं कि उन्होंने वे छोड़ दिये हैं, किन्तु वास्तव में उन्होंने अभी नहीं छोड़े हैं। इसलिए, इसे प्राप्त करना बहुत कठिन है। ऐसे भी लोग हैं जो मेरे व्याख्यानों का भावार्थ बाद में समझते हैं। वे अपने मोहभाव को छोड़ना आरंभ करते हैं और उनके शरीरों का शुद्धिकरण होता है। जब और लोगों के शरीर हल्के महसूस होते हैं, इन लोगों के रोगों का उपचार होना आरंभ होता है और उन्हें असुविधाजनक लगता है। हर कक्षा में ऐसे लोग होते हैं जो निम्न ज्ञानोदय के गुण के साथ पीछे रह जाते हैं। इसलिए, जो भी कुछ आपके साथ होता है सब साधारण है। यह परिस्थिति हमेशा हुई है जब मैंने दूसरे स्थानों में कक्षायें ली थीं। कुछ लोग बहुत पीड़ा में थे और अपने स्थान से हिल भी नहीं पा रहे थे, और मेरी प्रतीक्षा कर रहे थे कि मैं मंच से उतर कर उनका उपचार करूं। मैंने ऐसा नहीं किया। यदि आप यह परीक्षा भी उत्तीर्ण नहीं कर सकते, तो आप भविष्य में साधना अभ्यास कैसे करेंगे जब आपके सामने और भी बड़ी कठिनाइयां आएंगी? क्या आप इतनी छोटी सी कठिनाई भी पार नहीं कर सकते? सभी इसे पार कर सकते हैं। इसलिए, कोई भी मेरे पास रोग उपचार के लिए न आये, और न ही मैं रोग का उपचार करूंगा। जैसे ही आप "रोग" शब्द बोलेंगे, मैं नहीं सुनना चाहूँगा।

मनुष्यों को बचाना बहुत कठिन होता है। हर कक्षा में हमेशा पांच से दस प्रतिशत लोग होते हैं जो औरों के साथ नहीं चल पाते। यह असंभव है कि हर कोई ताओ प्राप्त कर ले। वे भी जो अपना साधना अभ्यास कायम रख पाते हैं, यह देखा जाना शेष है कि आप सफल हो पाते हैं और साधना अभ्यास में निश्चयी हैं। सभी के लिए एक बुद्ध बनना असंभव है। सच्चे दाफा अभ्यासी इस पुस्तक को पढ़ने से भी वैसे ही अनुभव से गुजरेंगे, और वे भी वह सब प्राप्त कर पायेंगे जिसके वे योग्य हैं।

---

1. शानगन — दोनों भौंहों के बीच स्थित एक्यूपंक्चर बिंदु।
2. ली — दूरी लिए एक चीनी इकाई (0.5 कि.मी.), चीनी भाषा में "एक लाख आठ हजार ली" एक बहुत बडी दूरी को बताने के लिए रुपक प्रयुक्त होता है।
3. उचित फल — बुद्ध विचारधारा में फल पदवी की प्राप्ति।
4. युआन — चीनी मुद्रा (लगभग 0.12 अमरीकी डॉलर के बराबर)।
5. फा-शरीर (फाशन) — "सिद्धांत शरीर"; गोंग और फा से बना शरीर।

उपदेश तीन

मैं सभी अभ्यासियों को अपना शिष्य मानता हूँ

क्या हर कोई जानता है कि मैं क्या कर रहा हूँ? मैं सभी अभ्यासियों को, जिन में वे भी शामिल हैं जो स्वयं पढ़ कर वास्तव में साधना अभ्यास कर पाते हैं, अपना शिष्य मानता हूँ। साधना को ऊँचे स्तरों पर सिखाने के लिए, यदि मैं आपको इस प्रकार नहीं मानता तो इसका कोई अर्थ नहीं होगा। अन्यथा, यह वैसा ही होगा जैसे गैर जिम्मेदार होना और परेशानी पैदा करना। हमने आपको इतना कुछ दिया है और आपको इतने सारे नियमों को जानने दिया है जिनकी जानकारी साधारण लोगों को नहीं होनी चाहिए। आपको बहुत सी वस्तुएँ प्रदान करने के अलावा, मैंने आपको यह दाफा सिखाया है। कुछ अन्य विषयों के साथ ही, आपका शरीर शुद्ध कर दिया गया है। इस प्रकार, आपको शिष्य न मानना निश्चित ही मेरे लिए अस्वीकार्य होगा। साधारण लोगों के लिए सहज ही इतने दिव्य रहस्यों को उजागर करने की अनुमति नहीं है। लेकिन यहाँ एक बात स्पष्ट करनी आवश्यक है। आज समय बदल गया है। हम दण्डवत् प्रणाम करने या झुकने के संस्कारों का अभ्यास नहीं करते। उस प्रकार की औपचारिकता की कोई उपयोगिता नहीं है, और धर्म की भांति लगती है। हम इसका अभ्यास नहीं करते। आपके दण्डवत् प्रणाम करने और गुरु की पूजा करने की क्या उपयोगिता है यदि घर से बाहर पाँव रखते ही, आप अपना व्यवहार हमेशा की तरह रखते हैं और मनमानी करते हैं, साधारण लोगों के बीच निजी-लाभ और प्रसिद्धि के लिए स्पर्धा करते हैं। आप मेरी छत्रछाया में फालुन दाफा की प्रतिष्ठा को भी धूल में मिला सकते हैं।

सच्चा साधना अभ्यास पूरी तरह आपके हृदय पर निर्भर करता है। जब तक आप साधना करते रहते हैं और साधना अभ्यास में स्थिर और संकल्पित बने रहते हैं, हम आपको शिष्य मानेंगे। मेरे लिए ऐसा न मानना असंभव होगा। किन्तु कुछ ऐसे लोग हैं जो शायद स्वयं को सच्चे रूप से अभ्यासी न मानें और साधना अभ्यास में नियमित न रहें। कुछ लोगों के लिए यह असंभव है। किन्तु कई लोग वास्तव में साधना करते

रहेंगे। जब तक आप यह करते रहेंगे, हम आपको शिष्य मानेंगे।

क्या आपको फालुन दाफा शिष्य माना जा सकता है यदि आप केवल इन कुछ व्यायामों का हर रोज अभ्यास करते हैं? यह आवश्यक नहीं है। यह इसलिए क्योंकि सच्चे साधना अभ्यास के लिए शिनशिंग आदर्श की आवश्यकताओं जिन्हें हमने स्थापित किया है का पालन करना आवश्यक है, और आपको वास्तव में अपना शिनशिंग बढ़ाना होगा - तभी यह सच्चा साधना अभ्यास है। यदि आप बिना शिनशिंग में सुधार किए और बिना प्रभावशाली शक्ति के जो सभी कुछ सुदृढ़ करती है, केवल व्यायामों का अभ्यास करते हैं तो इसे साधना अभ्यास नहीं कहा जा सकता; और न ही हम आपको फालुन दाफा शिष्य मान सकते हैं। यदि आप हमारे फालुन दाफा की आवश्यकताओं का पालन किए बिना इसी प्रकार चलते रहे और साधारण लोगों के बीच अपने शिनशिंग में सुधार किए बिना हमेशा की तरह आचरण करते रहे, आप कुछ न कुछ परेशानियों में पड़ते रहेंगे यद्यपि आप व्यायामों का अभ्यास करते हैं। आप यहां तक भी कह सकते हैं कि यह फालुन दाफा का अभ्यास है जिसने आपको भटकाया है। यह सभी संभव है। इसलिए, आपको वास्तव में हमारे शिनशिंग की आवश्यकताओं का पालन करना आवश्यक है- केवल तभी आप एक सच्चे अभ्यासी कहलायेंगे। मैंने यह सबको स्पष्ट कर दिया है। इस प्रकार मेरे पास कृपया गुरु की पूजा की औपचारिकता के लिए न आयें। जब तक आप वास्तव में साधना करते रहेंगे, मैं आपको इसी प्रकार मानूँगा। मेरे फा-शरीर इतने अधिक है कि वे अनगिनत हैं। इन अभ्यासियों के अतिरिक्त, चाहे कितने भी और लोग हों, मैं तब भी उनकी देखभाल कर सकता हूँ।

बुद्ध विचारधारा चीगोंग और बुद्धमत

बुद्ध विचारधारा चीगोंग बुद्ध धर्म नहीं है। मैं सभी को यह विषय स्पष्ट करना चाहूँगा। वास्तव में, ताओ विचारधारा चीगोंग भी ताओ धर्म नहीं है। आप में से कुछ इन विषयों से हमेशा उलझन में रहते हैं। कुछ लोग मठों के भिक्षु हैं, और कुछ घरों में रहने वाले बुद्ध उपासक हैं। वे सोचते हैं कि वे बुद्ध धर्म के बारे में कुछ अधिक जानते हैं, इसलिए वे हमारे अभ्यासियों के बीच उत्साह से बुद्धमत फैलाते हैं। मैं आपको बताना चाहूँगा कि आपको ऐसा नहीं करना चाहिए क्योंकि यह एक भिन्न साधना

विचारधारा से है। धर्म का धार्मिक स्वरूप होता है। हम यहाँ हमारी विचारधारा का साधना वाला भाग सिखा रहे हैं। उन भिक्षुओं और भिक्षुणियों को छोड़ कर जो फालुन दाफा शिष्य हैं, और सभी को धार्मिक स्वरूप धारण नहीं करना चाहिए। इसलिए, धर्म विनाश काल में हमारी विचारधारा बुद्धमत नहीं है।

बुद्धमत का धर्म बुद्ध फा का केवल एक संक्षिप्त भाग है। आज भी अनेक प्रकार के महान उच्च स्तर के फा अस्तित्व में है। विभिन्न स्तरों में भी विभिन्न फा हैं। शाक्यमुनि ने कहा था कि चौरासी हजार साधना मार्ग होते हैं। बुद्धमत में केवल कुछ ही साधना मार्ग सम्मिलित हैं। इसमें केवल त्येनताई, ह्वेयान, ज़ेन बुद्धमत, शुद्धावास, तंत्र विद्या, आदि हैं। वे सब मिलाकर कुछ ही हैं! इसलिए बुद्धमत संपूर्ण बुद्ध फा का प्रतिनिधित्व नहीं कर सकता, और बुद्ध फा का केवल एक संक्षिप्त भाग है। हमारा फालुन दाफा भी बुद्ध विचारधारा के चौरासी हजार साधना मार्गों में से एक है, और इसका मूल बुद्धमत और धर्म विनाश काल के बुद्धमत से कोई संबंध नहीं है; न ही इसका आधुनिक धर्मों से संबंध है।

बुद्धमत की स्थापना प्राचीन भारत में शाक्यमुनि ने पच्चीस सौ वर्ष पूर्व की थी। जब शाक्यमुनि गोंग खुलने की अवस्था तक पहुंचे और उन्हें ज्ञान प्राप्त हुआ, उन्हें वह सब याद आ गया जिसकी उन्होंने साधना की थी और लोगों को बचाने के लिए उसे सार्वजनिक किया। उस विचारधारा से चाहे कितने ही हजारों कोश धर्मग्रन्थ आए हों, यह वास्तव में केवल तीन शब्दों से बना है। इस विचारधारा की विशेषताएं हैं : "शील, समाधि, प्रज्ञा।" शील साधारण लोगों की इच्छाओं को छोड़ने के लिए और आपके निजी-लाभ के इच्छाभाव को त्यागने के लिए, सभी कुछ जो सांसारिक है को त्यागने के लिए हैं, इत्यादि। इस प्रकार व्यक्ति का मन रिक्त हो जायेगा और इसमें कोई विचार शेष नहीं रहेगा, और यह शांत हो सकता है। ये एक दूसरे के पूरक हैं। शांत अवस्था प्राप्त कर लेने के बाद, व्यक्ति वास्तविक साधना के लिए ध्यान में बैठ सकता है और साधना में आगे बढ़ने के लिए शांत अवस्था पर निर्भर हो सकता है। यह उस विचारधारा में वास्तविक साधना अभ्यास का भाग है। इसमें व्यायाम आवश्यक नहीं हैं, और न ही यह व्यक्ति के मूल शरीर[1] में बदलाव लाता है। व्यक्ति केवल गोंग की साधना करता है जो उसके स्तर की ऊँचाई निर्धारित करता है। इस प्रकार, वह केवल अपने शिनशिंग की साधना करता है। वह अपने शरीर की साधना नहीं करता, इसलिए वह गोंग के

रूपान्तरण की परवाह नहीं करता। इस बीच, ध्यान द्वारा वह अचेतन अवस्था में रहने की योग्यता को सुदृढ़ करता है, और वह ध्यान में दु:ख भोगने और कर्म को हटाने के लिए बैठता है। 'प्रज्ञा' का अर्थ है वह महान विवेक के साथ ज्ञान प्राप्त करता है, और विश्व का सत्य और साथ ही विश्व के विभिन्न आयामों का सत्य भी देख सकता है। सभी दिव्य शक्तियां प्रकट होती हैं। प्रज्ञा के उदय और ज्ञानोदय को गोंग का खुलना भी कहा जाता है।

जब शाक्यमुनि ने इस साधना मार्ग की स्थापना की थी, उस समय भारत में आठ धर्म प्रचलित थे। उस समय ब्राह्मण धर्म की जड़ें बहुत गहरी थीं। अपने पूरे जीवन काल में, शाक्यमुनि दूसरे धर्मों के साथ शास्त्रार्थ करते रहे। क्योंकि जो शाक्यमुनि ने सिखाया वह उचित मार्ग था, उनके सिखाने के समय में बुद्धधर्म जो उन्होंने सिखाया और अधिक प्रसिद्ध होता गया जबकि दूसरे धर्म और क्षीण होते गये। यहां तक कि गहरी जड़ों वाला ब्राह्मण धर्म भी समापन के कगार पर था। शाक्यमुनि के निर्वाण[2] के बाद, हालांकि, दूसरे धर्म, खास तौर पर ब्राह्मण धर्म, दोबारा प्रसिद्ध हो गये। किन्तु बुद्धमत की क्या स्थिति हुई? कुछ भिक्षु गोंग खुलने की अवस्था तक पहुँचे और उन्हें विभिन्न स्तरों पर ज्ञान प्राप्त हुआ, किन्तु उनके ज्ञान प्राप्ति का स्तर बहुत निम्न था। शाक्यमुनि तथागत स्तर पर पहुँचे थे, किन्तु बहुत से भिक्षु इस स्तर पर नहीं पहुँचे।

बुद्ध फा के विभिन्न स्तरों पर विभिन्न स्वरूप हैं। हालांकि, जितना ऊँचा स्तर होता है, उतना ही यह सत्य के समीप होता है। जितना निम्न स्तर होता है, उतना ही यह सत्य से दूर होता है। वे भिक्षु गोंग के खुलने की अवस्था पर पहुँचे और उन्हें निम्न स्तरों पर ज्ञान प्राप्त हुआ। जो शाक्यमुनि ने कहा उसका अर्थ निकालने के लिए, उन्होंने विश्व के उस स्वरूप को बताया जो उन्होंने अपने स्तरों पर देखा और जो स्थितियां और नियम वे समझे। यानि, कुछ भिक्षुओं ने शाक्यमुनि के धर्म को एक प्रकार या दूसरे प्रकार समझाया। शाक्यमुनि के मूल शब्दों को प्रयोग करने के स्थान पर, कुछ भिक्षुओं ने वे शिक्षायें भी दीं जो वे शाक्यमुनि के शब्दों से समझे; इससे बुद्ध धर्म इतना विकृत हो गया कि उसका स्वरूप बदल गया, और यह वह धर्म नहीं रह गया जो शाक्यमुनि ने सिखाया था। अन्त में, इस कारण बुद्ध धर्म भारत से विलुप्त हो गया। यह इतिहास का एक गंभीर पाठ है। इसके पश्चात, बुद्धमत भारत में नहीं रहा। अपने विलुप्त होने से पहले, बुद्धमत कई बदलावों से गुजरा। इसने अंतत: कुछ बातें ब्राहमण धर्म से ग्रहण कीं और

आज का भारतीय धर्म हिन्दुमत बन गया। इसमें किसी बुद्ध की उपासना नहीं की जाती। इसमें किसी और की उपासना की जाती है, और शाक्यमुनि में विश्वास नहीं किया जाता। यह स्थिति है।

अपने विकासक्रम के दौरान, बुद्धमत में कई बड़े बदलाव हुए। एक शाक्यमुनि के देहांत के कुछ समय पश्चात ही हुआ। कुछ लोगों ने शाक्यमुनि द्वारा सिखाये ऊँचे स्तर के नियमों के आधार पर महायान की स्थापना की। उनका विश्वास था कि जो धर्म शाक्यमुनि ने जनता को सिखाया था वह साधारण लोगों द्वारा स्वयं मोक्ष पाने और अरहत स्तर प्राप्ति के लिए था। वह धर्म सभी प्राणियों को मोक्ष प्रदान नहीं करा सकता था इसलिए उसे हीनयान कहा गया। दक्षिण-पूर्व एशिया के भिक्षु शाक्यमुनि के समय के मूल साधना मार्ग का अनुसरण करते आ रहे हैं। चीन में, हम इसे 'हीनयान' बुद्धमत कहते हैं। जबकि, वे स्वयं को इस प्रकार नहीं समझते। उनका विश्वास है कि उन्होंने शाक्यमुनि के मूल संस्कारों को ग्रहण किया है। यह वास्तव में इसी प्रकार है, क्योंकि उन्होंने शाक्यमुनि के समय के साधना-मार्ग को ग्रहण किया है।

इसके बाद बदला हुआ महायान चीन में आरंभ किया गया, इसकी जड़ें हमारे देश में मजबूत हुईं, और यह चीन में सिखाये जाने वाला आज का बुद्धमत बन गया। वास्तव में, शाक्यमुनि के समय के बुद्धमत से इसका पूरा स्वरूप बदल गया है। सभी कुछ बदल गया है, वेशभूषा से लेकर संपूर्ण ज्ञानोदय की अवस्थायें और साधना अभ्यास का पूरा क्रम। मूल बुद्धमत में, केवल शाक्यमुनि की इसके संस्थापक के रूप में उपासना की जाती थी। अब, हालांकि बुद्धमत में कई बुद्ध और महान बोधिसत्व हैं। इसके अतिरिक्त, अनेकों बुद्ध में विश्वास किया जाता है। कई तथागतों की उपासना की जाती है, और बुद्धमत एक ऐसा धर्म बन गया जिसमें अनेकों बुद्ध, जिसमें बुद्ध अमिताभ, भैषज्यगुरु, महावैरोचन तथागत, आदि की उपासना की जाती है। इसमें अनेक महान बोधिसत्व भी हैं। इस प्रकार, संपूर्ण बुद्धमत उससे बिल्कुल भिन्न हो गया जिसकी शाक्यमुनि ने अपने समय में स्थापना की थी।

उसी समयावधि में, एक और बदलाव हुआ जब बोधिसत्व नागार्जुन ने एक गुप्त साधना अभ्यास सिखाया। यह भारत से आया था और इसका चीन में परिचय अफगानिस्तान और बाद में शिनज्यांग[3] के मार्ग से हुआ। यह तांग राजवंश[4] के दौरान हुआ, इसलिए इसे तांग तंत्रविद्या कहा गया। कनफ्यूशन मत के प्रभाव के कारण, चीन

के नैतिक गुण साधारणत: दूसरे देशों से भिन्न थे। इस गुप्त अभ्यास में पुरुष और स्त्री की युग्म साधना की जाती थी, और उस समय समाज इसे स्वीकार नहीं कर सका। इसलिए यह उस समय समाप्त हो गया जब तांग राजवंश में ह्वेचांग के समय बुद्धमत का दमन किया गया, और इस प्रकार तांग तंत्रविद्या चीन से विलुप्त हो गयी। अब जापान में एक पूर्वी तंत्रविद्या है जो उस समय चीन से आयी थी; हालांकि यह, शक्तिपात की प्रक्रिया से नहीं गुजरी। तंत्र के अनुसार, यदि कोई *शक्तिपात* [5] के बिना तंत्रविद्या सीखता है, तो यही माना जाता है कि वह धर्म को चुरा रहा है, और यह नहीं माना जाता कि उसे व्यक्तिगत रूप से शिक्षा प्राप्त हुई है। एक और साधना मार्ग, जिसे भारत और नेपाल द्वारा तिब्बत में परिचित किया गया, उसे "तिब्बत तंत्रविद्या" कहा गया, और यह आज तक चला आ रहा है। मूल रूप से, बुद्धमत की यह स्थिति है। मैने अभी बहुत संक्षेप में इसके विकास और बदलाव के क्रम को बताया। बुद्धमत के संपूर्ण विकासक्रम के दौरान, कुछ पद्धतियाँ विकसित हुई जैसे- बोधिधर्म द्वारा स्थापित ज़ेन बुद्धमत, शुद्धावास बुद्धमत, और ह्वेयान बुद्धमत। उन सभी की स्थापना शाक्यमुनि के कथनों की समझ पर हुई थी जो उन्होंने उस समय कहे थे। ये सभी बदले हुये बुद्धमत से संबंधित हैं। बुद्धमत में इस प्रकार के दस से अधिक साधना मार्ग हैं, और सभी ने धर्म का रूप अपना लिया है, इसलिए वे सब बुद्धमत से संबंधित हैं।

जहां तक इस शताब्दी में स्थापित धर्मों का संबंध है, न केवल इस शताब्दी बल्कि अनेकों धर्म जिनकी विश्व के विभिन्न भागों में पिछली कई शताब्दियों में स्थापना हुई है, उनमें से अधिकतर पाखण्डी हैं। सभी महान ज्ञान प्राप्त व्यक्तियों के अपने दिव्यलोक होते हैं जहां वे मनुष्यों को बचाते हैं। तथागत बुद्ध जैसे शाक्यमुनि, बुद्ध-अमिताभ और महावैरोचन तथागत के लोगों को बचाने के लिए अपने दिव्यलोक हैं। हमारी आकाशगंगा में, सौ से अधिक ऐसे दिव्यलोक हैं। हमारे फालुन दाफा का भी एक फालुन दिव्यलोक है।

जहां तक मोक्ष का प्रश्न है, वे पाखण्डी पद्धतियाँ अपने अनुयायियों को कहां ले जा सकती हैं? वे लोगों को मुक्ति प्रदान नहीं कर सकतीं, क्योंकि जो वे सिखाती हैं फा नहीं है। निश्चित ही, कुछ लोगों ने जब पहली बार पंथों की स्थापित की, वे वैसे असुर नहीं बनना चाहते थे जो पारम्परिक धर्मों का अनादर करते हैं। वे गोंग के खुलने की अवस्था पर पहुँचे और उन्हें विभिन्न स्तरों पर ज्ञान प्राप्त हुआ। उन्होंने कुछ सिद्धांत

देखे, किन्तु वे उन ज्ञानप्राप्त व्यक्तियों से कहीं दूर थे जो लोगों को मुक्ति प्रदान कर सकते हैं। वे बहुत निम्न स्तरों पर थे, और उन्हें कुछ नियमों का ज्ञान हुआ। उन्होंने जाना कि साधारण लोगों के बीच कुछ वस्तुऐं गलत हैं, और वे लोगों को यह भी बताते थे कि कैसे अच्छे कार्य करें। आरम्भ में, वे दूसरे धर्मों के विरुद्ध नहीं थे। किन्तु लोग अन्ततः उन पर यह सोच कर विश्वास करने लगे कि जो उन्होंने कहा वह उचित है; इसके बाद लोग उन पर और अधिक विश्वास करते गये। परिणामस्वरूप, लोग धर्म के स्थान पर उनकी ओर अधिक श्रद्धालु हो गये। प्रसिद्धि और निजी-लाभ का मोहभाव विकसित होने पर, वे लोगों को कहते कि वे उन्हें कुछ पदवी से विभूषित करें। उसके बाद वे नये धर्मों की स्थापना करते थे। मैं आप को बता रहा हूँ कि वे सभी दुष्ट धर्म हैं। हालांकि वे लोगों को हानि नहीं पहुँचाते, वे फिर भी दुष्ट पद्धतियां हैं क्योंकि वे लोगों के पारम्परिक धर्मों के विश्वास में बाधा डालते हैं। पारम्परिक धर्म लोगों को मुक्ति प्रदान कर सकते हैं, किन्तु वे नहीं। जैसे-जैसे समय बीतता है, वे बुरे कार्य करने में भी नहीं घबराते। हाल ही में, ऐसी कई पद्धतियां चीन में भी आरम्भ हुई हैं। ग्वानयिन[6] नामक पंथ उनमें से एक है। इसलिए, सावधान रहें। यह कहा जाता है कि एक पूर्वी एशिया के देश में दो हजार से भी अधिक पद्धतियाँ प्रचलित हैं। दक्षिण-पूर्वी एशिया के देशों और कुछ पश्चिमी देशों में सभी प्रकार की विश्वास पद्धतियाँ प्रचलित हैं। एक देश में खुले रूप से एक असुर उपासना की पद्धति है। ये सभी वस्तुएं वे असुर हैं जो धर्म विनाश काल में सामने आ गये हैं। धर्म विनाश काल केवल बुद्धमत से ही संबंधित नहीं है, बल्कि एक अत्यन्त ऊँचे आयाम के नीचे अनेकों आयामों के भ्रष्ट होने से भी संबंधित है। "धर्म-विनाश" केवल बुद्धमत को ही इंगित नहीं करता "इसका यह भी अर्थ है कि मानव समाज में नैतिकता बनाये रखने के लिए कोई आध्यात्मिक दायित्व शेष नहीं रह गया है।

केवल एक साधना मार्ग का अभ्यास करना

हम सिखाते हैं कि व्यक्ति को केवल एक ही साधना मार्ग का अभ्यास करना चाहिए। आप जिस प्रकार भी साधना अभ्यास करते हैं, आपको दूसरी वस्तुएं डाल कर अपनी साधना बर्बाद नहीं करनी चाहिए। कुछ बुद्धमत के अनुयायी बुद्धमत और हमारे फालुन दाफा दोनों का अभ्यास करते हैं। मैं बता रहा हूँ कि अंत में आपको कुछ नहीं

मिलेगा क्योंकि कोई भी आपको कुछ नहीं देगा। क्योंकि हम सभी बुद्ध विचारधारा से संबंधित हैं, यहाँ एक शिनशिंग का विषय है और, इसके साथ ही, एक ही पद्धति में प्रवीणता प्राप्त करने का विषय है। आपके पास एक ही शरीर है। आपका शरीर किस विचारधारा के गोंग को विकसित करेगा? इसका रूपांतरण किस प्रकार होगा? आप कहां जाना चाहते हैं? आप वहीं जायेंगे जहां आपका साधना मार्ग आपको ले जाता है। यदि आप शुद्धावास बुद्धमत में साधना करते हैं तो आप बुद्ध अमिताभ के सुखावती दिव्यलोक में जायेंगे। यदि आप साधना में भैषज्यगुरु का अनुसरण करते हैं तो आप आभावान दिव्यलोक में जायेंगे। सब धर्मों में यही कहा गया है, और इसे कहा जाता है "कोई दूसरा साधना मार्ग नहीं।"

जिस पद्धति के बारे में हम यहाँ बात कर रहे हैं वह वास्तव में शक्ति रूपांतरण की पूरी प्रणाली से संबंधित है, और इसमें अपनी साधना अभ्यास की पद्धति का अनुसरण किया जाता है। तब, आप क्या कहेंगे कि आप कहां जाना चाहते हैं? यदि आप एक ही समय में दो नावों पर सवार होते हैं, तो आप कुछ प्राप्त नहीं कर सकते। न केवल चीगोंग पद्धति को मठों की बुद्धमत पद्धतियों से मिलाया जा सकता है, बल्कि साधना पद्धतियां, चीगोंग पद्धतियां या धर्मों के बीच भी वस्तुओं को नहीं मिलाया जा सकता। साधना में, यहां तक कि एक धर्म में भी, अनेकों उपवर्गों को नहीं मिलाया जा सकता। व्यक्ति को केवल एक ही साधना मार्ग अपनाना चाहिए। यदि आप शुद्धावास बुद्धमत में साधना करते हैं, तो आपको केवल शुद्धावास बुद्धमत की साधना करनी चाहिए। यदि आप तंत्रविद्या में साधना करते हैं, तो आपको केवल तंत्र की साधना करनी चाहिए। यदि आप ज़ेन बुद्धमत में साधना करते हैं तो आपको केवल ज़ेन बुद्धमत की साधना करनी चाहिए। यदि आप एक ही समय में दो नावों पर सवार होते हैं और यहाँ-वहाँ सब का अभ्यास करते हैं, तो आप कुछ प्राप्त नहीं कर सकते। कहने का अर्थ है, बुद्धमत में भी यह आवश्यक है कि आप दूसरी पद्धति का अभ्यास न करें, और आपको साधना पद्धतियों को मिलाने की अनुमति नहीं है। बुद्धमत में भी गोंग और साधना दोनों का अभ्यास होता है। व्यक्ति के गोंग के रूपांतरण की प्रक्रिया उस साधना मार्ग में साधना अभ्यास और रूपांतरण की प्रक्रिया के अनुसार होती है। इसके साथ ही दूसरे आयामों में गोंग के उत्पन्न होने की एक प्रक्रिया होती है, और यह एक अत्यन्त जटिल और पेचीदा प्रक्रिया है जिसे साधना में सहज ही दूसरी वस्तुओं के साथ नहीं

मिलाया जा सकता।

यह जान कर कि हम बुद्ध विचारधारा के चीगोंग का अभ्यास करते हैं, कुछ बुद्धमत के अनुयायी हमारे अभ्यासियों को मठों में दीक्षा के लिए ले जाते हैं। मैं यहां बैठे आप सब लोगों को बताना चाहूँगा कि किसी को ऐसा कुछ नहीं करना चाहिए। आप हमारे दाफा और बुद्धमत की शिक्षाओं दोनों का अनादर कर रहे हैं। उसी समय, आप अभ्यासियों के मार्ग में बाधा डाल रहे हैं, जिससे वे कुछ प्राप्त करने लायक नहीं रह जायेंगे। इसकी अनुमति नहीं है। साधना अभ्यास एक गंभीर विषय है। व्यक्ति को एक ही अभ्यास में एकाग्र होना चाहिए। हालांकि यह भाग जो हम साधारण लोगों के बीच सिखाते हैं धर्म नहीं है, साधना अभ्यास में इसका लक्ष्य वही है। दोनों ही गोंग के खुलने की अवस्था को प्राप्त करने, ज्ञानप्राप्ति, और साधना के पूर्ण होने का प्रयास करते हैं।

शाक्यमुनि ने कहा था कि धर्म-विनाश के समय मठों के भिक्षुओं के लिए भी स्वयं को बचाना कठिन होगा, उन घरों में रहने वाले बुद्धमत उपासकों की बात छोड़ दीजिये जिनकी देखरेख कोई नहीं करता। हालांकि आपके एक "गुरु" हैं, किन्तु वह तथाकथित गुरु भी एक अभ्यासी है। यदि गुरु वास्तव में साधना अभ्यास नहीं करता तो यह व्यर्थ होगा। हृदय के संवर्धन के बिना कोई भी इसमें सफल नहीं हो सकता। दीक्षा साधारण लोगों की औपचारिकता मात्र है। क्या दीक्षा के बाद आप बुद्ध विचारधारा के शिष्य बन जाते हैं? तब क्या बुद्ध आपकी देखरेख करेंगे? ऐसा कुछ नहीं है। यदि आप रोज इतना दण्डवत प्रणाम करें कि आपके माथे से रक्त निकलने लगे, या आप ढेरों अगरबत्तियां भी जलायें, तो भी यह व्यर्थ है। इसमें सफल होने के लिए आपको सच्चे रूप से अपने हृदय का संवर्धन करना आवश्यक है। धर्म-विनाश के समय तक, विश्व महान बदलावों से गुजर चुका है। यहाँ तक की धार्मिक उपासना स्थल भी पवित्र नहीं रह गये हैं। दिव्य सिद्धियों वाले लोग भी (जिनमें भिक्षु भी शामिल हैं) इस स्थिति को जान चुके हैं। वर्तमान में, जगत में मैं अकेला व्यक्ति हूँ जो जनसाधारण में एक उचित मार्ग सिखा रहा है। मैंने जो किया है वह पहले कभी नहीं हुआ। धर्म-विनाश के समय में मैंने इसका द्वार अधिकाधिक खोल दिया है। वास्तव में, इस प्रकार का अवसर एक हजार वर्ष या दस हजार वर्षों में भी नहीं आता। किन्तु यह कि किसी को बचाया जा सकता है- दूसरे शब्दों में, कि कोई साधना अभ्यास कर सकता है- पूरी तरह उस व्यक्ति

पर निर्भर करता है। जो मैं आपको बता रहा हूँ वह व्यापक विश्व का एक नियम है।

मैं यह नहीं कह रहा हूँ कि आपको मेरा फालुन दाफा सीखना चाहिए। जो मैंने कहा वह एक नियम है। यदि आप साधना अभ्यास करना चाहते हैं, यह आवश्यक है कि आप केवल एक साधना मार्ग का अभ्यास करें। अन्यथा, आप साधना अभ्यास कर ही नहीं सकते। निश्चित ही, यदि आप साधना अभ्यास नहीं करना चाहते, हम आपको अकेला छोड़ देंगे। यह फा केवल उन सच्चे अभ्यासियों को ही सिखाया जाता है। इसलिए आपको केवल एक पद्धति में एकाग्रचित होना आवश्यक है, और दूसरी पद्धतियों की धारणाओं को भी नहीं मिलाना चाहिए। मैं यहां मानसिक क्रियाऐं नहीं सिखाता; हमारे फालुन दाफा में कोई मानसिक क्रियायें नहीं होतीं। इस प्रकार, किसी को इसमें कोई विचार नहीं मिलाना चाहिए। इसे मन में अवश्य रखें : यहां कोई मानसिक क्रिया नहीं होती। बुद्ध विचारधारा में शून्यता की आवश्यकता होती है, और ताओ विचारधारा में रिक्तता की।

एक अवसर पर मैंने अपने मन को चार या पाँच अत्यन्त उच्च स्तरों के ज्ञानप्राप्त व्यक्तियों और महान ताओ के साथ जोड़ा। उनके स्तरों की बात की जाये, उनके स्तर इतने ऊँचे थे कि साधारण लोग उसे बिल्कुल अविश्वसनीय मानेंगे। वे जानना चाहते थे कि मेरे मन में क्या है। मैंने इतने वर्षों तक साधना का अभ्यास किया है। दूसरे लोगों के लिए यह बिल्कुल असंभव है कि वे मेरा मन पढ़ सकें, और दूसरे लोगों की दिव्य सिद्धियाँ मुझ तक बिल्कुल नहीं पहुंच सकतीं। कोई भी मुझे समझ या जान नहीं सकता कि मेरे मन में क्या है। वे जानना चाहते थे कि मैं क्या सोच रहा हूँ। इसलिए, मेरी अनुमति से उन्होंने मेरे मन को उनके साथ कुछ समय के लिए जोड़ा। जुड़ने के बाद, मेरे लिए यह कुछ असहनीय था क्योंकि चाहे मेरा स्तर कितना ही ऊँचा या निम्न है, मैं साधारण लोगों के बीच में और कुछ उद्देश्यपूर्ण कर रहा हूँ- यानि, लोगों को बचाना- और मेरा हृदय लोगों को बचाने के लिए समर्पित है। किन्तु उनके मन कितने शांत थे? उनके मन इतने शांत थे कि यह भयावह के बिंदु तक था। एक व्यक्ति के लिए इतनी शांत अवस्था तक पहुंचना संभव है। किन्तु चार या पाँच लोगों का उतनी शांत अवस्था में वहाँ बैठना, यह एक शांत पानी के तलाब जैसा था जिसमें कुछ नहीं था। मैं व्यर्थ में उन्हें अनुभव करने का प्रयास करता रहा। उन कुछ दिनों में, मुझे मानसिक तौर पर बहुत असुविधाजनक लगा और एक अनूठा अनुभव लगा। साधारण लोग इसे किसी भी

प्रकार सोच या अनुभव नहीं कर सकते; यह पूरी तरह मोह से मुक्त और रिक्त था।

साधना के बहुत उच्च स्तरों पर किसी भी प्रकार की मानसिक क्रिया का प्रयोग नहीं किया जाता। यह इसलिए कि जब आप साधारण लोगों के आधार बनने के स्तर पर थे, वह आधारभूत प्रणाली पहले से ही बना ली गई थी। उच्च स्तर साधना में पहुँचने के बाद, हमारी साधना प्रणाली स्वचालित कार्य करती है, और साधना अभ्यास पूर्णत: स्वचालित होता है। जब तक आप अपने शिनशिंग में विकास करते रहते हैं, आपका गोंग बढ़ता रहता है। आपको व्यायाम करने की भी आवश्यकता नहीं होती। हमारे व्यायाम स्वचालित प्रणालियों को सुदृढ़ करने के लिए हैं। ध्यान में शांत बैठना क्यों आवश्यक होता है? व्यक्ति पूरी तरह वूवेई अवस्था में होता है। आप जानते होंगे कि ताओ विचारधारा में कई प्रकार के व्यायाम, मानसिक क्रियायें, या मन द्वारा संचालन सिखाया जाता है। मैं आपको बताना चाहूँगा कि जैसे ही ताओ विचारधारा ची स्तर से आगे पहुंचती है, इसमें कुछ नहीं होता और वह किसी प्रकार की मानसिक क्रिया का प्रयोग नहीं करती। इसलिए, कुछ लोग जो दूसरे चीगोंग का अभ्यास कर चुके हैं श्वास पद्धतियों, मानसिक क्रियाओं, आदि को नहीं छोड़ पाते। मैं उन्हें कॉलेज की वस्तुएँ सिखा रहा हूँ, और वे मुझसे हमेशा प्राथमिक स्कूल के शिष्यों की वस्तुऐं पूछते हैं, जैसे- मानसिक क्रियाओं का किस प्रकार प्रयोग और संचालन किया जाये। वे पहले से ही उस प्रकार से अभ्यस्त हैं। वे सोचते हैं कि चीगोंग उसी तरह है, जबकि वास्तव में, यह नहीं है।

दिव्य सिद्धियाँ और गोंग सामर्थ्य

आप में से कई चीगोंग की नामवली से स्पष्ट नहीं है, और कुछ लोग हमेशा ही इससे उलझन में रहते हैं। वे दिव्य सिद्धियों को गोंग सामर्थ्य मानते हैं, और इसके विपरीत भी। जो गोंग हमें शिनशिंग की साधना और विश्व की प्रकृति से आत्मसात होने से प्राप्त होता है हमारे द से उत्पन्न होता है। यह व्यक्ति के स्तर की ऊँचाई, गोंग सामर्थ्य के बल, और साधना की फल पदवी को निर्धारित करता है। यह सबसे निर्णायक गोंग होता है। साधना के क्रम के दौरान, एक व्यक्ति के लिए किस प्रकार की स्थिति उत्पन्न होगी। व्यक्ति में कुछ असाधारण और अलौकिक क्षमताएँ, जिन्हें संक्षेप में हम दिव्य

सिद्धियाँ कहते हैं, विकसित हो सकती हैं। वह गोंग जो व्यक्ति के स्तर में सुधार लाता है, जैसा मैंने अभी कहा, उसे गोंग सामर्थ्य कहते हैं। जितना ऊँचा व्यक्ति का स्तर होता है, उतना ही अधिक उसका गोंग सामर्थ्य होता है और उतनी ही प्रबल उसकी दिव्य सिद्धियाँ होती हैं।

दिव्य सिद्धियाँ व्यक्ति के साधना क्रम में केवल अतिरिक्त-उत्पाद होती हैं; वे न तो व्यक्ति के स्तर और न ही उसके स्तर की ऊँचाई, और न ही उसके गोंग सामर्थ्य की शक्ति को दर्शाती हैं। कुछ लोगों में ये अधिक विकसित होती हैं तो कुछ लोगों में कम। इसके अतिरिक्त, दिव्य सिद्धियाँ कुछ ऐसी वस्तुएं नहीं हैं जिनकी साधना के मुख्य उद्देश्य की तरह इच्छा रखी जाये। केवल जब व्यक्ति वास्तव में साधना अभ्यास के लिए संकल्पित होता है तभी वह उन्हें विकसित कर सकता है; हालांकि, उन्हें साधना का मुख्य उद्देश्य नहीं माना जा सकता। आप उन्हें किसलिए विकसित करते हैं? क्या आप उन्हें साधारण लोगों के बीच प्रयोग करना चाहते हैं? आपके लिए उनका जानबूझ कर साधारण लोगों के बीच प्रयोग की सख्त मनाही है। इस प्रकार, जितनी अधिक आप उनकी इच्छा रखते हैं, उतना ही कम आप उन्हें प्राप्त करेंगे। यह इसलिए क्योंकि आप में इच्छाभाव है। इच्छा स्वयं में एक मोहभाव है। साधना अभ्यास में, मोहभावों को ही हटाने की आवश्यकता होती है।

कई लोग, दिव्य सिद्धियों के बिना ही साधना के बहुत उँचे स्तर पर पहुंच जाते हैं। गुरु ने उन्हें बंधित कर दिया होता है क्योंकि ऐसी स्थिति न हो कि वे स्वयं को ठीक से नहीं संभाल पायें और बुरा कार्य कर बैठें। इसलिए, उन्हें अपनी अलौकिक सिद्धियों के प्रयोग की अनुमति नहीं होती। इस प्रकार के बहुत से लोग हैं। दिव्य सिद्धियाँ व्यक्ति के मन द्वारा निर्देशित होती हैं। हो सकता है व्यक्ति सोते समय स्वयं पर नियंत्रण न रख पाये। स्वप्न में हो सकता है कि वह अगली सुबह तक धरती और आकाश को उलट-पलट कर दे, और इसकी अनुमति नहीं है। क्योंकि साधना अभ्यास साधारण लोगों के बीच किया जाता है, जिनकी महान दिव्य सिद्धियाँ होती है उन्हें अक्सर उनके प्रयोग की अनुमति नहीं होती। उनमें से अधिकतर बंधित रहती हैं, किन्तु यह आवश्यक नहीं है। ऐसे बहुत से लोग हैं जो साधना अभ्यास बहुत अच्छी तरह कर पाते हैं और स्वयं को अच्छी तरह संचालित कर पाते हैं। उन्हें कुछ दिव्य सिद्धियों को रखने की अनुमति होती है। जहां तक इन लोगों की बात है, यदि आप उन्हें दिव्य सिद्धियों के प्रदर्शन के

लिए कहें, वे निश्चित ही ऐसा नहीं करेंगे; वे स्वयं पर नियंत्रण रख पाते हैं।

विपरीत साधना और गोंग ऋण

कुछ लोगों ने चीगोंग का कभी अभ्यास नहीं किया, या हो सकता है उन्होंने कुछ वस्तुऐं किसी चीगोंग कक्षा में सीखी हों। किन्तु वे रोग निवारण और स्वस्थ रहने के लिए हैं, और वे साधना अभ्यास के लिए नहीं हैं। दूसरे शब्दों में, इन लोगों ने कभी भी सच्ची शिक्षा प्राप्त नहीं की, किन्तु अचानक एक रात उन्हें गोंग प्राप्त हो जाता है। हम चर्चा करेंगे कि यह गोंग कहां से आता है। इसके कई प्रकार हैं।

इनमें से एक विपरीत साधना से संबंधित है। विपरीत साधना क्या होती है? कुछ लोग अपेक्षाकृत वृद्ध होते हैं और वे साधना करना चाहते हैं। उनके लिए आरंभ से साधना करने के लिए बहुत देरी हो चुकी है। जब चीगोंग अपने प्रसिद्धि के शिखर पर था, वे भी साधना करना चाहते थे। वे जानते थे कि चीगोंग अभ्यास दूसरे लोगों के लिए लाभप्रद हो सकता है, और साथ ही साथ वे स्वयं में भी सुधार ला सकते थे। उनकी यह इच्छा थी और वे स्वयं में सुधार लाना और साधना करना चाहते थे। हालांकि, कुछ वर्ष पहले जब चीगोंग प्रसिद्ध था, सभी चीगोंग गुरु चीगोंग को बढ़ावा दे रहे थे, और किसी ने भी वास्तव में उच्च स्तरों की वस्तुएँ नहीं सिखायीं। आज तक भी जहाँ तक चीगोंग को वास्तव में सार्वजनिक रूप से उच्च स्तरों पर सिखाने का प्रश्न है, मैं अकेला व्यक्ति हूँ जो ऐसा कर रहा है। कोई दूसरा व्यक्ति ऐसा नहीं कर रहा है। विपरीत साधना में सभी लोग पचास वर्ष से अधिक के थे, जो अपेक्षाकृत वृद्ध उम्र है। उनके जन्मजात गुण बहुत अच्छे थे और उनके शरीरों में बहुत अच्छी वस्तुऐं थीं। उनमें से अधिकतर उन गुरुओं के शिष्य अथवा उत्तराधिकारी बनने योग्य थे। किन्तु ये लोग वृद्धावस्था में थे। यदि वे साधना अभ्यास करना चाहते थे, तो इसे कहना सरल है किन्तु करना कठिन। उन्हें एक गुरु कहां से मिलता? किन्तु जैसे ही वे साधना करना चाहते थे और उनके हृदय में यह विचार आते ही, यह सोने की भांति प्रकाशवान होता और दस दिशाओं वाले जगत को हिला देता। लोग अक्सर बुद्ध-स्वभाव की बात करते हैं, और यह बुद्ध-स्वभाव था जिसका उद्भव हो गया था।

ऊँचे स्तर के दृष्टिकोण से, व्यक्ति का जीवन मानव बने रहने के लिए नहीं है। क्योंकि व्यक्ति के जीवन की रचना विश्व के अंतरिक्ष में हुई है, यह विश्व की प्रकृति ज़न-शान-रेन से आत्मसात होता है। इसकी प्रकृति करूणामयी और परोपकारी होती है। तत्पश्चात, जब जीवों की संख्या बढ़ जाती है, एक सामाजिक संबंध स्थापित हो जाता है। परिणामस्वरूप, कुछ लोग स्वार्थी या बुरे हो जाते हैं और बहुत ऊँचे स्तरों पर नहीं रह सकते। उनके लिए एक निम्न स्तर पर गिरना आवश्यक हो जाता है जहां वे फिर से बुरे बन जाते हैं, तब उन्हें और नीचे अगले स्तर पर गिरना होता है। यह इस प्रकार चलता रहता है जब तक अंत में वे इस साधारण मानव स्तर पर नहीं आ जाते। इस स्तर में गिरने पर, उनका पूर्ण विनाश हो जाना चाहिए। किन्तु, अपने परोपकारी और करुणा स्वभाववश, उन महान ज्ञान प्राप्त व्यक्तियों ने मानव जाति को इस सर्वाधिक दु:खदायी वातावरण में एक और अवसर दिया; उन्होंने इस प्रकार एक ऐसे आयाम की रचना की।

दूसरे आयामों में, लोगों के इस प्रकार के शरीर नहीं होते। वे उड़ सकते हैं और बड़े या छोटे हो सकते हैं। किन्तु इस आयाम में लोगों को इस प्रकार का शरीर दिया गया है, हमारा भौतिक शरीर। इस शरीर से, व्यक्ति को सर्दी, गर्मी, थकान, या भूख से सामना करना कठिन हो जाता है। किसी भी प्रकार से, यह पीड़ा भोगना है। जब आप बीमार होते हैं, आप पीड़ा भोगते हैं। व्यक्ति को जन्म, वृद्धावस्था, रोग, और मृत्यु से गुजरना पड़ता है जिससे वह पीड़ा द्वारा अपने कर्म ऋण का भुगतान कर सके। आपको एक और अवसर यह देखने के लिए प्रदान किया गया है कि आप अपने मूल की ओर लौट पाते हैं या नहीं। इसलिए, मनुष्य एक भ्रमजाल में गिर गये हैं। आपके यहां नीचे गिरने के बाद, आपके लिए इन दो आंखों की रचना की गयी है जिससे आप दूसरे आयामों और पदार्थ के सत्य को नहीं देख सकते। यदि आप मूल स्थान पर लौट सकें, तो सबसे कड़वी पीड़ा भी सर्वाधिक मूल्यवान होगी। भ्रमजाल के बीच साधना के अभ्यास और वस्तुओं के प्रति ज्ञानोदय द्वारा अपने मूल स्थान की ओर लौटने में यहाँ अनेकों कठिनाइयाँ हैं; इसलिए व्यक्ति शीघ्रता से इसे कर सकता है। यदि आप और बुरे हो जाते हैं, आपका जीवन समाप्त कर दिया जायेगा। इसलिए, दूसरे जीवों के दृष्टिकोण से, व्यक्ति का जीवन मनुष्य बने रहने के लिए नहीं है। यह व्यक्ति की मूल, सच्ची प्रकृति की ओर लौटने के लिए है। एक साधारण व्यक्ति इसे नहीं समझ सकता। एक साधारण

व्यक्ति साधारण मानव समाज में केवल एक साधारण व्यक्ति है, एक ऐसा व्यक्ति जो स्वयं को आगे बढ़ाने और अच्छे रहन-सहन के बारे में सोचता है। वह जितने सुख से रहता है, उतना ही स्वार्थी बन जाता है; जितना अधिक वह पाना चाहता है, उतना ही वह विश्व की प्रकृति से दूर हो जाता है। फिर वह विनाश की ओर अग्रसर हो जाता है।

एक ऊँचे स्तर से देखने पर, जबकि आप सोचते हैं कि आप आगे की ओर बढ़ रहे हैं, आप वास्तव में पीछे की ओर लौट रहे हैं। मनुष्यजाति सोचती है कि यह विज्ञान में विकास कर रही है और आगे बढ़ रही है; वास्तव में, यह केवल विश्व के सिध्दांत का अनुसरण कर रही है। ज़ांग गुओलाओ जो ताओ के आठ देवों में से एक थे, अपने गधे पर विपरीत दिशा में सवारी करते थे। बहुत ही कम लोग जानते हैं कि वे अपने गधे पर विपरीत दिशा में सवारी क्यों करते थे? उन्होंने जाना कि आगे की ओर बढ़ने का अर्थ है पीछे की ओर लौटना, इसलिए वे गधे पर विपरीत दिशा में सवार होते थे। इसलिए, जैसे ही लोग साधना अभ्यास करना चाहते हैं, महान ज्ञानप्राप्त व्यक्ति इस हृदय को बहुत मूल्यवान समझते हैं और बिना शर्त मदद देते हैं। यह इसी प्रकार है जैसे आज यहां अभ्यासी बैठे हैं। यदि आप साधना अभ्यास करना चाहते हैं, मैं आपकी बिना शर्त मदद कर सकता हूँ। किन्तु यह तब नहीं किया जा सकता यदि आप रोगों का निवारण करना चाहते हैं और साधारण लोगों की तरह यहाँ-वहाँ कुछ प्राप्त करना चाहते हैं, तब मैं आपकी मदद करने में असमर्थ रहूँगा। ऐसा क्यों है? यह इसलिए क्योंकि आप एक साधारण व्यक्ति बने रहना चाहते हैं, और साधारण व्यक्ति को जन्म, वृद्धावस्था, रोग, और मृत्यु से गुजरना पड़ता है- यह इसी प्रकार होता है। सभी वस्तुओं का कर्म संबंध होता है जिसमें व्यवधान नहीं डाला जा सकता। आपके जीवन में आरंभ में साधना अभ्यास सम्मिलित नहीं था, किन्तु अब आप साधना अभ्यास करना चाहते हैं। इस प्रकार, आपका भविष्य जीवन पुन:व्यवस्थित करना आवश्यक है, और इसलिए आपके लिए आपके शरीर को व्यवस्थित करने की अनुमति है।

जैसे ही व्यक्ति साधना अभ्यास करना चाहता है और यह इच्छा उत्पन्न होती है, महान ज्ञानप्राप्त व्यक्ति इसे देख लेते हैं और बहुत मूल्यवान मानते हैं। किन्तु वे उसकी मदद किस प्रकार कर सकते हैं? इस जगत में वह एक गुरु को कहां खोजेगा? इसके अतिरिक्त, उसकी उम्र पचास से अधिक है। महान ज्ञानप्राप्त व्यक्ति इस व्यक्ति को नहीं सिखा सकते। यह इसलिए क्योंकि यदि वे स्वयं को प्रकट करते हैं और उसे फा और

व्यायाम सिखाते हैं, यह दिव्य रहस्यों को उजागर करना होगा; उन्हें स्वयं भी नीचे गिरना होगा। लोग इस भ्रमजाल में गिरते हैं क्योंकि उन्होंने बुरे कार्य किये हैं, और इसलिए उनके लिए साधना अभ्यास करना और लगातार भ्रमजाल में ज्ञानोदय करते जाना आवश्यक है। इसलिए, महान ज्ञानप्राप्त व्यक्ति उसे नहीं सिखा सकते। यदि वास्तविक जीवन में लोगों की आँखों के सामने एक बुद्ध प्रकट हो जाये और उन्हें फा और व्यायाम दोनों सिखाये, तो वे लोग भी जिनके पाप क्षमा योग्य नहीं हैं सीखने आ जायेंगे। हर कोई इस पर विश्वास कर लेगा। तब, लोगों के लिए ज्ञानोदय के लिए क्या रह जायेगा? तब ज्ञानोदय का विषय ही नहीं रहेगा। क्योंकि लोग भ्रमजाल में अपने ही कारण गिरे हैं, उनका विनाश हो जाना चाहिए। आपको भ्रमजाल से अपने मूल स्थान की ओर लौटने का एक और अवसर प्रदान किया जा रहा है। यदि आप अपने मूल स्थान पर लौट सके, आप इसे पूर्ण कर लेंगे। यदि आप इसे नहीं कर सके, आप संसार के चक्र में चलते रहेंगे और विनाश को प्राप्त होंगे।

व्यक्ति अपना मार्ग स्वयं बनाता है। क्या होता है यदि कोई व्यक्ति साधना करना चाहता है? उन्होंने एक मार्ग निकाला। उस समय चीगोंग बहुत प्रचलित था, और यह विश्व के वातावरण में बदलाव भी था। इस विश्व के वातावरण के साथ सहयोग के लिए, ज्ञानप्राप्त व्यक्ति इस व्यक्ति को उसके शिनशिंग स्तर के अनुसार एक लचीली वाहिका द्वारा गोंग की पूर्ति करते थे। एक पानी के नल की तरह यदि इसे चला दिया जाता था तो शक्ति प्रवाहित होने लगती थी। यदि वह गोंग निष्कासित करना चाहता था, तो गोंग आने लगता था। वह स्वयं गोंग नहीं छोड़ सकता था, क्योंकि उसके पास अपना कोई गोंग नहीं था। यह इसी प्रकार था। इसे "विपरीत साधना" कहा जाता है और इसमें व्यक्ति ऊँचे स्तर से निम्न स्तर की ओर वापस साधना पूर्ण करता है।

हम साधारणत: साधना अभ्यास निम्न स्तर से ऊँचे स्तर की ओर करते हैं जब तक गोंग खुल न जाये या साधना पूर्ण न हो जाये। यह विपरीत साधना उन वृद्ध लोगों के लिए थी जिनके पास निम्न स्तर से ऊँचे स्तर की ओर साधना अभ्यास के लिए समुचित समय नहीं था। इसलिए, यह शीघ्र होता यदि वे ऊँचे स्तर से निम्न स्तर की ओर अभ्यास करते। इस परिस्थिति को उस समय प्रचलन में लाया गया। इस प्रकार के व्यक्ति का बहुत ऊँचे स्तर का शिनशिंग होना आवश्यक था, और उसे शक्ति उसके शिनशिंग स्तर के अनुसार दी जाती थी। इसके क्या प्रयोजन थे? एक था उस समय के विश्व के

वातावरण के साथ सहयोग करना। जब यह व्यक्ति अच्छे कार्य कर रहा था, तो वह उसी समय कठिनाईयां सहन कर सकता था। यह इसलिए क्योंकि साधारण लोगों के बीच, साधारण लोगों के विभिन्न मोहभाव उसके साथ व्यवधान ला सकते थे। जब वह किसी रोगी का रोग ठीक कर देता था, तो रोगी कई बार कृतज्ञ नहीं होता था। जब उसने रोगी का उपचार किया, हो सकता है उसने रोगी के शरीर से बहुत सी बुरी वस्तुऐं हटा दी हों। हालांकि उसने रोगी को उस अवस्था तक ठीक कर दिया था, किन्तु उस समय हो सकता है कोई स्पष्ट बदलाव न हुए हों। रोगी, हालांकि, अपने मन में प्रसन्न नहीं हुआ। कृतज्ञ होने के स्थान पर, हो सकता है उसने उस पर धोखे का आरोप लगाया हो। इन समस्याओं के साथ, इस वातावरण में वह मानसिक कठिनाइयों से गुजर रहा था। उसको शक्ति देने का प्रयोजन उसे साधना अभ्यास करने में समर्थ बनाना और उसमें सुधार लाना था। अच्छे कार्य करने के साथ, वह अपनी दिव्य सिद्धियाँ भी विकसित कर सकता था और अपना गोंग उत्पन्न कर सकता था; हालांकि, कुछ लोग इस नियम को नहीं जानते थे। क्या मैंने नहीं बताया कि कोई भी इस व्यक्ति को फा नहीं सिखा सकता था? यदि वह इसे समझ सकता, तो वह इसे प्राप्त कर सकता था। यह एक ज्ञानोदय का विषय था। यदि वह इसे नहीं समझ सकता था, तो कुछ नहीं किया जा सकता था।

जब कुछ लोगों ने शक्ति प्राप्त की, तब एक रात सोते समय अचानक उन्हें बहुत गरमाहट अनुभव हुई और वे चादर भी नहीं ओढ़ सके। जब वे अगली सुबह उठे, उन्होंने जहां कहीं हाथ रखा उन्हें एक बिजली का झटका सा लगा। वे जान गये थे कि उन्हें शक्ति प्राप्त हुई है। यदि किसी को शरीर में दर्द था, तो वे अपने हाथों से उस समस्या को ठीक कर सकते थे, और इसके बहुत अच्छे परिणाम मिलते थे। तब वे जान गये थे कि उनके पास शक्ति है। वे चीगोंग गुरु बन गये और उन्होंने नाम पट्टियाँ भी लगवा दीं। वे स्वयं को चीगोंग गुरु कहलवाने लगे और उन्होंने अपने अभ्यास स्थापित कर दिये। आरम्भ में ये लोग बहुत अच्छे थे। जब वह दूसरे लोगों के रोगों का निवारण करता, वे उसे धन या कुछ उपहार भेंट करते थे- जिन सब को वह अस्वीकार कर देता था और लेने से मना करता था। किन्तु वह साधारण लोगों के भ्रष्ट वातावरण से स्वयं को दूर नहीं रख सका। क्योंकि ये विपरीत साधना के लोग कभी सच्ची शिनशिंग साधना से नहीं गुजरे थे, उनके लिए अपने शिनशिंग को संभाल पाना बहुत कठिन था। धीरे-धीरे, वह छोटे उपहार स्वीकारने लगा। बाद में, वह बड़े उपहार भी स्वीकारने लगा। उसके बाद,

यदि उपहार कम होते थे वह नाराज भी हो जाता। अन्त में, वह कहता, "आप मुझे इतनी वस्तुएँ क्यों देते हैं? मुझे धन दीजिए!" यदि उसे कम धन दिया जाता तो वह प्रसन्न नहीं होता था। दूसरे लोगों द्वारा झूठी प्रशंसा सुनकर कि वह कितना सामर्थ्यवान है, वह उचित विचारधारा के चीगोंग गुरुओं का भी आदर नहीं करता था। यदि कोई उसे कुछ बुरा कह देता, तो वह नाराज हो जाता था। इस व्यक्ति के प्रसिद्धि और निजी-लाभ के मोहभाव पूरी तरह विकसित हो चुके थे। वह स्वयं को औरों से अच्छा और असाधारण समझता था। वह गलती से यह सोचता था कि उसे शक्ति चीगोंग गुरु बनने और बहुत सा धन एकत्रित करने के लिए दी गई है, जबकि वास्तव में यह उसे साधना अभ्यास के लिए दी गई थी। एक बार प्रसिद्धि और लाभ के लिए मोहभाव उत्पन्न हो जाने पर, उस व्यक्ति का शिनशिंग स्तर वास्तव में गिर चुका था।

मैं बता चुका हूँ कि व्यक्ति का गोंग स्तर उसके शिनशिंग स्तर के बराबर ऊँचा होता है। जब उसका शिनशिंग स्तर गिर जाता है, तब उसे उतना गोंग उपलब्ध नहीं कराया जायेगा क्योंकि यह उसके शिनशिंग स्तर के अनुसार दिया जाना चाहिए। जितना अधिक व्यक्ति में प्रसिद्धि और निजी-लाभ के लिए मोहभाव होगा, उतना ही वह साधारण लोगों के बीच निम्न स्तर पर गिर जायेगा। उसका गोंग भी उसी के अनुसार कम हो जायेगा। अन्त में, जब वह पूरी तरह धरातल पर गिर चुका होता है, तब उसे कोई गोंग नहीं दिया जायेगा। इस व्यक्ति के पास कोई गोंग नहीं होगा। कुछ वर्ष पूर्व इस प्रकार के कई लोग थे, जिनमें से अधिकांश पचास वर्ष से अधिक उम्र की महिलायें थीं। यद्यपि आपने किसी वृद्ध महिला को चीगोंग का अभ्यास करते हुए देखा होगा, उसने कभी सच्ची शिक्षा प्राप्त नहीं की थी। हो सकता है उसने किसी चीगोंग कक्षा में स्वस्थ रहने और रोग निवारण के लिए कुछ व्यायाम सीखे हों। एक दिन, उसे अचानक गोंग प्राप्त हो जाता है। एक बार उसका शिनशिंग कम हो जाने पर या उसके प्रसिद्धि और निजी-लाभ के प्रति मोहभाव उत्पन्न हो जाने पर, उसका स्तर गिर जायेगा। तब उसके लिए कुछ शेष नहीं बचेगा, और उसका गोंग भी लुप्त हो जायेगा। आजकल ऐसे बहुत से विपरीत साधना वाले लोग हैं जिनके स्तर गिर चुके हैं। उनमें से केवल कुछ ही अभी सक्रिय हैं। ऐसा क्यों? वह महिला यह नहीं जानती थी कि वह उसे साधना अभ्यास के लिए दिया गया है, और उसने गलती से सोचा कि यह उसे धन अर्जित करने, प्रसिद्धि पाने, और एक चीगोंग गुरु बनने के लिए दिया गया है। वास्तव में, यह उसके साधना

अभ्यास के लिए था।

"गोंग ऋण पर लेना" क्या है? इसमें किसी उम्र की सीमा नहीं होती, किन्तु केवल एक आवश्यकता है : व्यक्ति का शिनशिंग बहुत अच्छा होना चाहिए। यह व्यक्ति जानता है कि चीगोंग द्वारा साधना अभ्यास किया जा सकता है, और वह भी साधना अभ्यास करना चाहता है। उसका भी साधना अभ्यास के लिए हृदय है, किन्तु वह एक गुरु कहां से पायेगा? कुछ वर्ष पूर्व, वास्तव में कुछ सच्चे चीगोंग गुरु थे जो चीगोंग सिखाते थे। हालांकि, जो उन्होंने सिखाया वह पूरी तरह रोग निवारण और स्वस्थ रहने के लिए था। किसी ने भी ऊँचे स्तर का चीगोंग नहीं सिखाया, और न ही उन्होंने ऐसा किया।

गोंग ऋण लेने के बारे में कहा जाये, तो मैं एक और विषय बताना चाहूँगा। मुख्य आत्मा *(ज़ू युआनशन)* के अलावा, व्यक्ति की सह आत्मा *(फु युआनशन)* भी होती है। कुछ लोगों की एक, दो, तीन, चार, या पाँच सह आत्माएँ भी होती हैं। यह आवश्यक नहीं कि व्यक्ति की सह आत्मा का लिंग भी वही हो जो उस व्यक्ति का है। कुछ नर हैं और कुछ मादा। वे सभी भिन्न होते हैं। वास्तव में, यह आवश्यक नहीं कि मुख्य आत्मा का लिंग भी वही हो जो भौतिक शरीर का है, क्योंकि हमने पाया है वर्तमान में कई पुरुषों की मादा मूल-आत्मा होती है, जबकि कई महिलाओं की नर मूल-आत्मा होती है। यह पूरी तरह विश्व के वातावरण से मेल खाता है जैसा ताओ विचारधारा ने इसका वर्णन किया है, कि जैसे *यिन* और *यैंग* विपरीत कर दिये जायें, यिन बढ़ाव में और यैंग गिरावट में।

व्यक्ति की सह आत्मा साधारणत: उसकी मुख्य आत्मा से ऊँचे स्तर से आती है। विशेषकर कुछ लोगों के लिए, उनकी सह आत्मा बहुत ऊँचे स्तर से आई है। सह आत्मा ग्रसित करने वाली आत्मा नहीं होती, क्योंकि इसका जन्म आपके साथ ही आपकी माता के गर्भ से हुआ है। इसका भी वही नाम होता है जो आपका है, क्योंकि यह आपके ही शरीर का भाग है। साधारणतः, जब लोग कुछ सोचते हैं या कुछ करते हैं, तो निर्णय लेना मुख्य आत्मा पर निर्भर करता है। सह आत्मा मुख्य रूप से अपना भरसक प्रयत्न करती है कि व्यक्ति की मुख्य आत्मा बुरे कार्य न करे। हालांकि, जब मुख्य आत्मा बहुत हठी होती है, तब सह आत्मा मदद करने में असमर्थ होती है। सह आत्मा साधारण मानव समाज में मूर्ख नहीं बनती जबकि मुख्य आत्मा सरलता से

धोखा खा जाती है।

कुछ सह आत्मायें बहुत ऊँचे स्तरों से आती हैं और साधना में उचित फल की प्राप्ति की सीमा पर होती हैं। सह आत्मा साधना करना चाहती है, किन्तु यह इसके बारे में कुछ नहीं कर सकती यदि मुख्य आत्मा इसे नहीं करना चाहती। जब चीगोंग बहुत प्रचलित था, एक दिन मुख्य आत्मा भी चीगोंग का अभ्यास करना चाहती थी। ऊँचे स्तरों की ओर साधना का विचार निश्चित ही बहुत पवित्र और सरल था; उसमें प्रसिद्धि और निजी-लाभ जैसी वस्तुओं की कामना नहीं थी। सह आत्मा, हालांकि, बहुत प्रसन्न थी, "मैं साधना अभ्यास करना चाहती हूँ, किन्तु मैं निर्णय नहीं लेती। अब तुम साधना अभ्यास करना चाहती हो, और यही तो मैं चाहती हूँ।" किन्तु उस व्यक्ति को गुरु कहाँ से मिलेगा? सह आत्मा बहुत समर्थ थी और वह शरीर को छोड़ कर उस ज्ञानप्राप्त व्यक्ति को खोजने निकल पड़ी जिसे वह अपने पिछले जीवन में जानती थी। क्योंकि कुछ सह आत्माऐं बहुत ऊँचे स्तरों से आती हैं, वे शरीर छोड़ सकती हैं। वहाँ ऊपर पहुँचने पर, उसने साधना करने और गोंग का ऋण लेने के लिए अपनी इच्छायें व्यक्त कीं। महान ज्ञानप्राप्त व्यक्तियों को यह बहुत अच्छा लगता, और निश्चित ही उसकी साधना में मदद करते। इस प्रकार, सह आत्मा कुछ गोंग ऋण पर ले आई। साधारणत:, यह गोंग एक चमकती हुई शक्ति है जो एक प्रवाहिका के द्वारा दिया जाता था। कुछ ऋण पर ली हुई शक्ति कुछ रूपों में भी आती है, और साधारणत: इसमें दिव्य सिद्धियाँ भी रहती हैं।

इस प्रकार, इस व्यक्ति के पास दिव्य सिद्धियाँ भी हो सकती थीं। यह व्यक्ति भी जैसा अभी मैंने वर्णन किया, एक रात सोते समय बहुत गरमाहट अनुभव करता। जब वह अगली सुबह उठता तो उसके पास शक्ति होती। जहाँ कहीं वह अपना हाथ रखता उसे बिजली का झटका लगता। वह दूसरों के रोगों का निवारण कर पाता, और वह जान गया था कि उसे शक्ति प्राप्त हुई है। यह शक्ति कहां से आई? वह इसके बारे में अस्पष्ट था। उसे केवल एक धुंधला सा विचार था यह विश्व के अंतरिक्ष से आई है। किन्तु वह निश्चित रूप से नहीं जानता था कि यह कहाँ से आई है। सह आत्मा उसे यह नहीं बताती थी, क्योंकि यह सह आत्मा थी जो साधना करती थी। वह केवल यह जानता था कि उसे शक्ति प्राप्त हुई है।

जिन लोगों को शक्ति ऋण पर प्राप्त हुई उनकी अक्सर उम्र की सीमा नहीं थी, और उनमें से अधिकतर अपेक्षाकृत युवा लोग थे। इसलिए कुछ वर्ष पूर्व बीस, तीस या चालीस साल के कुछ युवा लोग भी थे जो जनता में आये। उनमें से कुछ वृद्ध लोग भी थे। एक युवा व्यक्ति के लिए अपने आप को अच्छी तरह संभालना अधिक कठिन था। हो सकता है आपने पाया हो कि यह व्यक्ति अक्सर बहुत अच्छा था, और जब साधारण मानव समाज में उसके पास बहुत सी सिद्धियाँ नहीं थी, तब उसे प्रसिद्धि और निजी-लाभ की तनिक भी इच्छा नहीं थी। एक बार सुप्रसिद्ध हो जाने पर, प्रसिद्धि और लाभ सरलता से व्यवधान डालने लगे। वह सोचता था कि जीवन में उसे और भी आगे जाना है, और वह अभी भी साधारण लोगों के कुछ लक्ष्य प्राप्त करने के लिए भरसक प्रयत्न करता। इसलिए एक बार उसे दिव्य सिद्धियाँ और कुछ सिद्धियाँ विकसित हो जाने पर, उनका प्रयोग साधारण मानव समाज में उसके निजी लक्ष्यों को पाने के लिए किया जा सकता था। तब ये कार्य नहीं करतीं और उनके इस प्रकार प्रयोग की मनाही थी। जितना अधिक वह उनका प्रयोग करता, उतनी ही उसकी शक्ति कम होती जाती। अन्त में उसके पास कुछ शेष नहीं बचता। ऐसे और भी अधिक लोग हैं जिनके स्तर इस प्रकार गिरे। मैंने पाया है कि अब उनमें से कोई नहीं बचा है।

जिन दो स्थितियों की अभी मैंने ऊपर चर्चा की दोनों में शक्ति का प्रयोग होता था जो अपेक्षाकृत अच्छे शिनशिंग के लोगों द्वारा प्राप्त की गई थी। ये शक्ति उनके अपने साधना अभ्यास द्वारा उत्पन्न नहीं हुई थी। यह महान ज्ञानप्राप्त व्यक्तियों से आई थी, और इस प्रकार शक्ति स्वयं में अच्छी थी।

प्रेत या पशु द्वारा ग्रसित होना

आपमें से कई लोगों ने साधक समाज में भेड़िये, नेवले, प्रेत, और सांपों जैसे पशुओं से ग्रसित होने की बातें सुनी होंगी। यह सब क्या है? कुछ लोग चींगोंग के अभ्यास द्वारा दिव्य सिद्धियाँ विकसित करने की बात करते हैं। वास्तव में दिव्य सिद्धियाँ विकसित नहीं की जातीं; बल्कि, वे मनुष्य की जन्मजात योग्यताएँ होती हैं। केवल यह है कि मानव समुदाय के विकास के साथ-साथ, लोग भौतिक जगत की दृश्यमान

वस्तुओं पर अधिक केन्द्रित होते हैं, जिससे वे हमारे आधुनिक औजारों पर अधिक निर्भर हो जाते हैं। परिणामस्वरूप, हमारी मानवीय जन्मजात योग्यताएँ और क्षीण हो जाती हैं। अन्त में, वे पूरी तरह लुप्त हो जाती हैं।

दिव्य सिद्धियाँ प्राप्त करने के लिए, व्यक्ति को उन्हें साधना अभ्यास द्वारा विकसित करना चाहिए और अपनी मूल, सच्ची प्रकृति की ओर लौटना चाहिए। किन्तु एक पशु का मन इतना परिष्कृत नहीं होता, इसलिए वह अपनी मूल प्रवृत्ति द्वारा विश्व की प्रकृति के साथ जुड़ जाता है। कुछ लोग कहते हैं कि पशु साधना अभ्यास कर सकते हैं, या भेड़िये जानते हैं कि शक्तिपुंज कैसे विकसित किया जाये, या यह कि सांप जानते हैं कैसे साधना अभ्यास किया जाये, इत्यादि। ऐसा नहीं है कि वे पशु जानते हैं कि साधना अभ्यास कैसे किया जाये। आरम्भ में वे बिल्कुल नहीं जानते कि साधना क्या होती है। उनके पास केवल मूल प्रवृत्ति होती है। तब, कुछ विशेष अवस्थाओं और परिस्थितियों में, कुछ समय बीतने पर इसका कुछ प्रभाव हो सकता है। वे कुछ शक्ति प्राप्त कर सकते हैं और कुछ दिव्य सिद्धियाँ विकसित कर सकते हैं।

इस प्रकार, किसी पशु के पास कुछ सिद्धियाँ हो सकती हैं। विगत में, हम कहते कि उस पशु ने शक्ति अर्जित कर ली है और उसे सिद्धियाँ प्राप्त हो गयी हैं । साधारण लोगों की दृष्टि में, पशु इतने प्रबल होते हैं कि वे सरलता से लोगों को नियंत्रित कर सकते हैं। वास्तव में मैं कहता हूँ कि वे प्रबल नहीं होते और वे एक सच्चे अभ्यासी के सामने कुछ नहीं हैं। हालांकि आपको एक ऐसा मिल सकता है जिसने करीब एक हजार वर्ष तक साधना अभ्यास किया हो, उसे कुचलने के लिए एक छोटी अंगुली भी बहुत होगी। हमने कहा था कि पशुओं में यह मूल प्रवृत्ति होती है, और उनके पास कुछ सिद्धियाँ हो सकती हैं। किन्तु हमारे विश्व का एक नियम है : पशुओं को साधना में सफल होने की अनुमति नहीं है। इसलिए, आप सभी प्राचीन पुस्तकों में पढ़ सकते हैं कि सैकड़ों वर्षों में एक बार, पशु किसी बड़ी दुर्घटना या छोटे प्रलय में मर जाते हैं। कुछ समयावधि में, पशु कुछ शक्ति विकसित कर लेते हैं और उनका मरना या उन पर बिजली गिरना, आदि आवश्यक होता है। उन्हें साधना अभ्यास की मनाही होती है क्योंकि उनके पास मानव जन्मजात प्रकृति नहीं होती; वे मनुष्यों की तरह साधना अभ्यास नहीं कर सकते क्योंकि उनके पास मनुष्य गुण नहीं होते। यदि वे साधना में सफल होते हैं, तो वे अवश्य ही असुर बन जायेंगे। उन्हें इस प्रकार साधना में सफल होने

की अनुमति नहीं होती। अन्यथा, वे देवलोक द्वारा मार दिये जायेंगे। वे भी यह जानते हैं। किन्तु जैसा मैंने कहा, मानव समुदाय आज एक बड़े गिरावट की ओर अग्रसर हैं और कुछ लोग सभी प्रकार के पाप कर रहे हैं। इस अवस्था में, क्या मानव समुदाय खतरे में नहीं हैं?

वस्तुओं का सीमा तक पहुँचने के बाद लौटना आवश्यक है! हमने पाया है कि पूर्व-ऐतिहासिक समय में जब कभी मानव समुदाय क्रमवार विनाश से गुजरा, यह हमेशा तभी हुआ जब मनुष्य जाति नैतिक रूप से अत्यन्त भ्रष्ट हो गई थी। अब, मनुष्यों के वास का आयाम और साथ ही कई और आयाम एक बहुत खतरनाक स्थिति में हैं। ऐसा ही इस स्तर पर कई और आयामों के लिए सत्य है; ग्रसित करने वाले प्रेत या पशु भी शीघ्रता से बच निकलाना चाहते हैं और ऊँचे स्तरों की ओर बढ़ना चाहते हैं। वे सोचते हैं कि ऊँचे स्तरों की ओर चढ़ने से वे बच सकते हैं। किन्तु यह इतना सरल कैसे हो सकता है? साधना करने के लिए, मानव शरीर होना आवश्यक है। इस प्रकार, यह एक कारण है कि कुछ चीगोंग अभ्यासी क्यों प्रेत या पशु से ग्रसित हो गये हैं।

कुछ लोग आश्चर्य करते हैं, "जब यहाँ इतने महान ज्ञानप्राप्त व्यक्ति हैं या उच्च स्तर के गुरु हैं, तो वे इसकी देख-रेख क्यों नहीं करते?" हमारे विश्व का एक और नियम है : यदि आप किसी की इच्छा या चाह रखते हैं, तो दूसरे इसमें व्यवधान नहीं डालना चाहेंगे। यहाँ, हम सभी को उचित मार्ग का अनुसरण करना सिखाते हैं, और उसी समय फा को पूरी तरह समझाते हैं जिससे आप स्वयं ज्ञानप्राप्त कर सकें। यदि आप इसे सीखना चाहते हैं तो यह आपका अपना सरोकार है। गुरु आपको प्रवेश मार्ग में ले जाते हैं, और साधना करना आपके अपने ऊपर निर्भर करता है। कोई भी आपको साधना अभ्यास के लिए बाध्य नहीं करेगा। यदि आप साधना अभ्यास करते हैं तो यह आपका अपना सरोकार है। दूसरे शब्दों में, आपके साथ कोई व्यवधान नहीं डालेगा कि आप कौन सा मार्ग चुनते हैं, आप क्या चाहते हैं, आप क्या पाना चाहते हैं। हम केवल लोगों को सलाह दे सकते हैं कि वे अच्छे बनें।

हालांकि आप पाते हैं कि कुछ लोग चीगोंग का अभ्यास करते हैं, उनकी शक्ति वास्तव में ग्रसित प्रेत या पशु से प्राप्त की गई होती है। कोई व्यक्ति प्रेत या पशु द्वारा ग्रसित कैसे होता है? पूरे देश में कितने चीगोंग अभ्यासियों के शरीरों के पीछे ग्रसित प्रेत या पशु हैं। यदि मैं संख्या बता दूं, तो कई लोग चीगोंग का अभ्यास करने से डर जायेंगे।

यह संख्या भयावह रूप से बड़ी है! तो, ऐसी स्थिति क्यों है? ये वस्तुऐं साधारण मानव समुदाय के लिए कठिनाइयां पैदा कर रही हैं। यह इतनी गंभीर घटना क्यों बनती जा रही है? यह लोगों के अपने द्वारा पैदा की गई है क्योंकि मनुष्य जाति का पतन हो रहा है और असुर हर ओर हैं। विशेष रूप से, वे सभी पाखण्डी गुरु अपने शरीरों पर प्रेतों या पशुओं द्वारा ग्रसित हैं, और यही वे अपनी शिक्षा में प्रवाहित करते हैं। पूरे मानव इतिहास काल में, पशुओं द्वारा मनुष्यों को ग्रसित करने की मनाही थी। जब उन्होंने यह किया, उन्हें मार दिया गया! जिस किसी ने यह देखा उसने ऐसा नहीं होने दिया। हालांकि, हमारे आज के समाज में कुछ लोग उनकी मदद के लिए पूजा करते हैं, उन्हें चाहते हैं, और उनकी उपासना करते हैं। कुछ लोग सोचते होंगे, "मैने विशिष्ट रूप से तो इसे नहीं मांगा था!" आपने इसे मांगा तो नहीं, किन्तु आप दिव्य सिद्धियाँ खोज रहे थे। क्या एक उचित साधना अभ्यास से संबंधित एक महान ज्ञानप्राप्त व्यक्ति उन्हें आपको देगा? इच्छा प्रयास एक साधारण लोगों का मोहभाव है, और इस मोहभाव को छोड़ना आवश्यक है। तो उन्हें आपको कौन देगा? केवल दूसरे आयामों के असुर और विभिन्न पशु ही उन्हें आपको दे सकते हैं। क्या यह आपके द्वारा प्रेत या पशु को निमंत्रण देने जैसा नहीं है? तब वे आ जायेंगे।

कितने लोग चीगोंग का अभ्यास एक पवित्र मन के साथ करते हैं? चीगोंग अभ्यास में आवश्यक है कि व्यक्ति नैतिकता को मान दे, अच्छे कार्य करे, और दयालु बने। उसे इस प्रकार का बर्ताव सभी कार्यों में और सभी परिस्थितियों में करना चाहिए। चीगोंग का उद्यान या घर में अभ्यास करते समय, कितने लोग इस प्रकार सोचते हैं? कोई नहीं जानता कि कुछ लोग किस प्रकार के चीगोंग का अभ्यास करते हैं। अभ्यास करते समय और शरीर को झुमाते हुए, कोई बड़बड़ाता है, "ओह, मेरी पुत्रवधु मेरा सम्मान नहीं करती। मेरी सास इतनी बुरी है!" कुछ लोग सभी वस्तुओं पर टिप्पणी करते हैं- अपने कार्यस्थल से लेकर देश की स्थिति तक ऐसा कुछ नहीं है जिसके बारे में वे बात नहीं करेंगे, और यदि कुछ उनके विचारों के साथ मेल नहीं खाता तो वे बहुत नाराज हो जायेंगे। क्या आप उसे चीगोंग अभ्यास कहेंगे? इसके अतिरिक्त, यह व्यक्ति जब खड़े हो कर व्यायाम करता है तब उसकी टांगें थकान से कांप रही होती हैं। किन्तु उसका मन शांत नहीं होता : "आजकल वस्तुऐं इतनी मंहगी हैं और दाम बढ़ते जा रहे हैं। कार्यस्थल मेरा वेतन नहीं दे सकता। मैं चीगोंग के अभ्यास द्वारा कुछ दिव्य सिद्धियाँ

विकसित क्यों नहीं कर लेता? यदि मैं दिव्य सिद्धियाँ विकसित कर लेता हूँ तो मैं भी चीगोंग गुरु बन जाऊँगा और धन अर्जित करूँगा। मैं रोगियों को देख पाऊंगा और धन कमाऊंगा।" जब वह देखता है कि और लोग दिव्य सिद्धियाँ विकसित कर चुके हैं, वह और भी चिंतित हो जाता है। वह दिव्य सिद्धियों के पीछे पड़ जाता है, और दिव्य नेत्र तथा रोग निवारण की सिद्धि की इच्छा रखता है। आप सभी यह सोचें : यह ज़न-शान-रेन से कितना दूर है, जो हमारे विश्व की प्रकृति है! यह पूरी तरह विपरीत दिशा में जाता है। गंभीर रूप से कहा जाये तो, यह व्यक्ति दुष्ट साधना का अभ्यास कर रहा है! हालांकि, वह इसे अनजाने में कर रहा है। जितना अधिक वह इसके बारे में सोचता है, उतना ही बुरा उसका मन बनता जाता है। इस व्यक्ति को फा प्राप्त नहीं हुआ है और वह नैतिकता का मान रखना नहीं जानता। तब वह सोचता है कि वह केवल व्यायाम करके शक्ति विकसित कर सकता है और इच्छा प्रयास करने से वह सब प्राप्त कर सकता है जो वह चाहता है। यह व्यक्ति यही सोचता है।

यह व्यक्ति के दुर्भावों के कारण ही है कि वह अपने ऊपर बुरी वस्तुओं को निमंत्रण दे बैठता है। हालांकि, एक पशु इसे देख सकता है : "यह व्यक्ति चीगोंग अभ्यास द्वारा धन अर्जित करना चाहता है। दूसरा व्यक्ति प्रसिद्ध होना चाहता है और दिव्य सिद्धियाँ प्राप्त करना चाहता है। उसका शरीर बुरा नहीं है और उसमें कई अच्छी वस्तुऐं भी हैं। किन्तु उसका मन बहुत बुरा है, और वह दिव्य सिद्धियों की इच्छा रखता है! उसका कोई गुरु हो सकता है, किन्तु उसका कोई गुरु है भी, मुझे कोई डर नहीं।" पशु जानता है कि एक उचित साधना अभ्यास का गुरु उसे दिव्य सिद्धियाँ नहीं देगा, यह देख कर कि वह उनके इस तरह पीछे पड़ा है। जितना अधिक वह उन्हें चाहता है, उतना ही कम उसका गुरु उसे देगा, क्योंकि यही मोह भाव है जिसे हटाना आवश्यक है। जितना अधिक वह इस प्रकार सोचता है, उतनी ही कम दिव्य सिद्धियाँ उसे प्राप्त होती हैं, और उतना ही कम उसे इसका ज्ञानोदय होगा। जितना वह उनके पीछे पड़ेगा, उतना ही बुरा उसका मन बन जायेगा। अन्त में, यह देख कर कि यह व्यक्ति निराशाजनक है, उसका गुरु दु:ख के साथ उसे छोड़ देगा और उसके बाद उसकी देख-रेख नहीं करेगा। कुछ लोगों के गुरु नहीं होते और हो सकता है कोई गुजरता हुआ गुरु उनकी देख-रेख करता हो, क्योंकि विभिन्न आयामों में अनेकों महान ज्ञानप्राप्त व्यक्ति हैं। एक महान ज्ञानप्राप्त व्यक्ति उस व्यक्ति को देख कर एक दिन के लिए उस पर दृष्टि रख सकता है। तब यह

जानने के बाद कि वह उतना अच्छा नहीं है वह ज्ञानप्राप्त व्यक्ति उसे छोड़ देगा। अगले दिन दूसरा महान ज्ञानप्राप्त व्यक्ति जो वहां से गुजर रहा हो, जब वह जानेगा कि वह उतना अच्छा नहीं है वह भी उसे छोड़ देगा।

पशु यह जानता है कि यदि उसका कोई गुरु है या कोई गुजरता हुआ गुरु है, उसका गुरु उसे वह नहीं देगा जिसके वह पीछे पड़ा है। क्योंकि पशु उन आयामों को नहीं देख पाते जहां महान ज्ञानप्राप्त व्यक्ति रहते हैं, वे डरते नहीं हैं, और वे इस त्रुटि का लाभ उठाते हैं। हमारे विश्व का एक नियम है कि साधारणत: जिस किसी के लिए कोई इच्छा प्रयास रखता है या अपने लिए चाहता है उसमें दूसरे लोग व्यवधान नहीं डालते। पशु इस त्रुटि का लाभ उठाते हैं, "यदि वह कुछ चाहता है, मैं उसे दूंगा। मेरे लिए उसकी मदद करना अनुचित नहीं है, क्या यह है?" पशु यह दे देगा। आरम्भ में, पशु उसे ग्रसित करने का साहस नहीं कर पाता, और वह उसे कुछ शक्ति परखने के लिए देता है। इसे सफल होते हुए देख कर पशु इसे संगीत की झलकी दिखाने की तरह प्रयोग करता है, "क्योंकि वह इसे चाहता है, मैं उसके शरीर पर ही आ जाता हूँ। इस प्रकार मैं उसे और वस्तुएं दे पाऊँगा और यह सरलता से कर पाऊँगा। क्या वह दिव्य नेत्र नहीं चाहता? मैं उसे सब कुछ दूंगा।" यह उसे तब ग्रसित कर लेता है।

जबकि इस व्यक्ति का इच्छाओं भरा मन उन वस्तुओं के बारे में सोच रहा होता है, उसका दिव्य नेत्र खुल जाता है और वह कुछ छोटी दिव्य सिद्धियों के साथ शक्ति भी निष्कासित करने लग जाता है। वह बहुत उत्साहित हो जाता है और सोचता है कि उसे अंतत: वह मिल ही गया जो वह अभ्यास द्वारा खोज रहा था। वास्तव में उसे अभ्यास द्वारा कुछ प्राप्त नहीं हुआ है। वह सोचता है कि वह मानव शरीर के आर-पार देख सकता है और पता लगा सकता है कि किसी के शरीर में रोग कहां पर है। वास्तव में, उसका दिव्य नेत्र बिल्कुल भी नहीं खुला है; यह वह पशु है जो उसके मन को नियंत्रित कर रहा है। पशु अपनी आंखें उसके मस्तिष्क से जोड़ कर वह दिखाता है जो वह स्वयं देखता है, इस प्रकार उसे लगता है कि उसका दिव्य नेत्र खुल गया है। "गोंग को निष्कासित करना है? आगे बढ़ो।" जब वह शक्ति छोड़ने के लिए अपना हाथ आगे बढ़ाता है, वह पशु भी उसके पीछे से अपना पंजा बढ़ा देता है। जैसे वह शक्ति छोड़ता है, उस सर्प के मुख से निकली दो नोकों वाली जीभ रोगी के बीमार या सूजन वाले भाग को चाट लेती है। ऐसी बहुत सी घटनायें हैं, और वे सब लोग अपनी ही इच्छा प्रयास

की प्रवृत्ति से प्रेत या पशु द्वारा ग्रसित हुए।

क्योंकि यह व्यक्ति किसी वस्तु के पीछे पड़ा है- जैसे धन और प्रसिद्धि- उसे इस प्रकार दिव्य सिद्धियाँ प्राप्त हो गई हैं। वह रोगों का निवारण कर सकता है, और उसका दिव्य नेत्र दृश्यों को देख भी सकता है। इससे वह बहुत प्रसन्न हो जाता है। पशु यह देख पाता है, "क्या तुम धन नहीं प्राप्त करना चाहते? बहुत अच्छा, मैं तुम्हें धन दिलवाऊँगा।" किसी साधारण व्यक्ति के मन को नियंत्रित करना बहुत सरल है। पशु कई लोगों को, बहुत से लोगों को, उपचार के लिए आने देता है। जबकि वह यहां रोग उपचार कर रहा है, पशु वहां समाचार पत्रों के संवाददाताओं द्वारा उसका प्रचार होने देता है। यह इन वस्तुओं को करने के लिए साधारण लोगों को नियंत्रित करता है। यदि कोई रोगी उसे समुचित धन नहीं देता, तो यह नहीं चलेगा; पशु रोगी के लिए सर दर्द उत्पन्न कर देगा। जैसे भी हो, उसे बहुत सा धन देना आवश्यक है। उसने प्रसिद्धि और धन दोनों प्राप्त कर लिये हैं, क्योंकि धन अर्जित हो गया है और प्रसिद्धि प्राप्त हो गई है। वह एक चीगोंग गुरु भी बन गया है। साधारणत:, इस प्रकार का व्यक्ति शिनशिंग को मान नहीं देता और कुछ भी कहने का साहस करता है। वह स्वयं को देवों के समकक्ष मानता है, और यह घोषणा करने का भी साहस कर देता है कि वह देवी माता[7] या महान त्रिलोकापति[8] का अवतार है। वह स्वयं को एक बुद्ध कहने से भी नहीं चूकता क्योंकि वह वास्तव में शिनशिंग साधना से नहीं गुजरा है, वह अपने अभ्यास में दिव्य सिद्धियों की चाह रखता है। परिणामस्वरूप, वह स्वयं प्रेत या पशु द्वारा ग्रसित हो जाता है।

कुछ लोग सोचते हैं, "इसमें क्या बुराई है? जब तक इसमें धन और समृध्दि आते रहते हैं यह अच्छा ही है, और इसमें प्रसिद्धि भी प्राप्त होती है।" कई लोग इस प्रकार सोचते हैं। मैं सब को बताना चाहूँगा कि पशु का वास्तव में अपना उददेश्य है, और यह आपको कुछ भी अकारण ही नहीं देगा। इस विश्व का एक नियम है : "कुछ त्याग नहीं किया तो कुछ प्राप्त भी नहीं होगा।" इससे क्या प्राप्त होता है? क्या मैंने अभी इस विषय पर प्रकाश नहीं डाला? यह आपके शरीर का सत्व पाना चाहता है जिससे यह एक मानव रूप धारण कर सके, और यह मानव सत्व किसी व्यक्ति के शरीर से एकत्रित करता है। एक मानव शरीर के पास केवल यही एक भाग सत्व है। यदि व्यक्ति साधना अभ्यास करना चाहता है, तो उसके पास केवल यही एक भाग है। यदि वह इसे

भी पशु को ले लेने देगा, तो आपको साधना अभ्यास के बारे में भूल जाना चाहिए। आप साधना अभ्यास कैसे करेंगे? आपके पास कुछ शेष नहीं बचेगा और आप बिल्कुल भी साधना अभ्यास नहीं कर सकते। कुछ लोग कह सकते हैं : "मैं साधना अभ्यास भी नहीं करना चाहता, और मैं केवल धन अर्जित करना चाहता हूँ। जब तक मेरे पास धन है, तब तक सब ठीक है। किसे परवाह है?" मैं आपको बताना चाहूँगा कि आप धन अर्जित करना चाहते हैं, किन्तु आप इस प्रकार नहीं सोचेंगे यदि इसका कारण बता दूं। क्यों? यदि यह आपके शरीर को जल्दी ही छोड़ देता है, आपके हाथ-पैर बहुत दुर्बल अनुभव होंगे। इसके बाद, आप अपने शेष जीवन में इसी प्रकार रहेंगे क्योंकि इसने आपका बहुत सा सत्व ले लिया है। यदि यह आपके शरीर को देरी से छोड़ता है, तो आप निर्जीव हो जायेंगे और आपको अपना शेष जीवन बिस्तर में पड़े हुए एक-एक सांस गिनते हुए गुजारना पड़ेगा। हालांकि आपके पास धन है, क्या आप इसे खर्च कर सकते हैं? हालांकि आपके पास प्रसिद्धि है, क्या आप इसका सुख उठा सकते हैं? क्या यह भयावह नहीं है?

इस प्रकार की घटनाएं आज के अभ्यासियों में विशेष रूप से प्रकाश में आती हैं, और वे बहुतायत में हैं। एक पशु न केवल किसी व्यक्ति को ग्रसित कर सकता है, बल्कि उसकी मूल-आत्मा को मार कर उसके *नीवान* महल में रह सकता है। हालांकि यह व्यक्ति मनुष्य जैसा दिखाई देता है, किन्तु वह है नहीं। आजकल ऐसी घटनाएं भी हो सकती हैं। यह इसलिए क्योंकि मानव नैतिक आदर्श बदल गये हैं। जब कोई कुछ बुरा कार्य करता है, यदि आप उसे बताएं कि वह एक बुरा कार्य कर रहा है तो वह विश्वास नहीं करेगा। वह सोचता है कि धन अर्जित करना, धन की चाह रखना, या समृद्ध होना सही और उचित है। इसलिए, वह दूसरों को हानि या परेशानी पहुंचायेगा। धन अर्जित करने के लिए, वह कुछ भी पाप करेगा और कुछ भी करने का साहस करेगा। बिना कुछ त्याग किये, पशु को कुछ प्राप्ति नहीं होगी। यह किस प्रकार आपको कुछ बिना शर्त दे देगा? यह आपके शरीर की वस्तुओं को पाना चाहता है। निश्चित ही, हम कह चुके हैं कि व्यक्ति इस कठिनाई में तभी पड़ता है जब उसके अपने आदर्श और मन उचित या पवित्र नहीं हैं।

हम फालुन दाफा सिखा रहे हैं। हमारी पद्धति में साधना के अभ्यास के लिए, आपको तब तक कोई परेशानी नहीं होगी जब तक आप अपने शिनशिंग को ठीक से

संभालते हैं, क्योंकि एक पवित्र मन सौ बुराईयों को दबा सकता है। यदि आप अपने शिनशिंग को ठीक से नहीं रख पाते और इस या उस वस्तु के पीछे जाते रहते हैं, तब आप अपने को परेशानी में फंसा ही लेंगे। कुछ लोग वह छोड़ ही नहीं सकते जो वे पहले अभ्यास करते थे। हम लोगों को केवल एक ही साधना मार्ग का अभ्यास करने की सलाह देते हैं क्योंकि व्यक्ति को सच्चे साधना अभ्यास में एकाग्रचित होना चाहिए। हालांकि कुछ चीगोंग गुरुओं ने पुस्तकें भी लिखी हैं, मैं आपको बता रहा हूँ कि उन पुस्तकों में सभी प्रकार की वस्तुएं समाहित हैं और वे वही हैं जिसका वे अभ्यास करते हैं : वे हैं सर्प, भेड़िये, और नेवले। जब आप उन पुस्तकों को पढ़ते हैं, तो ये वस्तुएं शब्दों से बाहर आती हैं। मैं कह चुका हूँ कि पाखण्डी चीगोंग गुरु सच्चे गुरुओं से कई गुणा अधिक हैं, और आप उनमें भेद करने में असमर्थ हैं। इसलिए, यह आवश्यक है कि आप स्वयं को ठीक से संभाले। मैं यहां यह नहीं कह रहा हूँ कि आपको फालुन दाफा का ही अभ्यास करना चाहिए; आप जिसे चाहें उस पद्धति का अभ्यास कर सकते हैं। किन्तु अतीत में एक कहावत थी : "व्यक्ति को एक पवित्र मार्ग एक हजार वर्ष में भी प्राप्त नहीं होगा जबकि किसी जंगली भेड़िये का अभ्यास किसी भी दिन मिल जायेगा।" इस प्रकार, यह आवश्यक है कि व्यक्ति स्वयं को ठीक से संभाले और एक पवित्र मार्ग में वास्तव में साधना अभ्यास करे। इसे साधना में किसी भी और वस्तु के साथ नहीं मिलाये, किसी मनो-विचार के साथ भी नहीं। कुछ लोगों के फालुन विकृत हो जाते हैं। वे विकृत क्यों हो जाते हैं? वे कहते हैं कि उन्होंने दूसरे चीगोंग का अभ्यास नहीं किया है। हालांकि, जब कभी वे अभ्यास कर रहे होते हैं, मन ही मन वे अपने पिछले अभ्यासों से वस्तुऐं मिलाते रहते हैं। क्या उन वस्तुओं को अभ्यास में नहीं लाया जा रहा है? प्रेत या पशु द्वारा ग्रसित करने के विषय पर, हमें इतना ही कहना है।

विश्वक भाषा

"विश्वक भाषा" क्या है? इसका संदर्भ उससे है जब एक व्यक्ति अचानक ही कोई अनजान भाषा बोलने लगता है। वह कुछ बड़बड़ाता है जिसे वह स्वयं भी नहीं समझ सकता। टेलीपैथी की सिद्धि वाला व्यक्ति इसका साधारण विचार पकड़ सकता है किन्तु निश्चित रूप से नहीं बता सकता कि यह व्यक्ति किस बारे में बात कर रहा है। कुछ

लोग कई विभिन्न भाषाऐं भी बोल पाते हैं। कुछ लोग इसे बहुत विलक्षण मानते हैं और इसे योग्यता या दिव्य सिद्धि का दर्जा देते हैं। न तो यह कोई दिव्य सिद्धि है और न ही किसी अभ्यासी की योग्यता; और न ही यह किसी का स्तर दर्शा सकती है। तब, यह सब क्या है? इसका अर्थ है कि आप का मन किसी बाहरी परजीव द्वारा नियंत्रित किया जा रहा है। किन्तु आप अब भी इसे बहुत अच्छा मानते हैं और इसे चाहते हैं, क्योंकि आप इससे प्रसन्न हैं। आप जितने अधिक प्रसन्न होते हैं, उतना ही अच्छी तरह यह आपको नियंत्रित करती है। एक सच्चे अभ्यासी की भांति, आप कैसे इसे स्वयं को नियंत्रित करने दे सकते हैं? इसके अतिरिक्त, यह एक बहुत निम्न स्तर से आती है। सच्चे अभ्यासी होने के कारण, हमें इन परेशानियों को निमंत्रण नहीं देना चाहिए।

समस्त पदार्थ की आत्मा होने के कारण, मनुष्य सबसे अधिक मूल्यवान है। आप कैसे इन वस्तुओं द्वारा नियंत्रित हो सकते हैं? कितने दु:ख की बात है कि आप अपने शरीर को भी छोड़ देते हैं! इनमें से कुछ वस्तुऐं मानव शरीरों से जुड़ जाती हैं। कुछ जुड़ती नहीं हैं, किन्तु लोगों से कुछ दूरी पर रहती हैं। किन्तु वे आपको नियंत्रित कर रही होती हैं। जब आप बात करना चाहते हैं, वे आपको बात करने और बड़बड़ाने देंगी। यह भाषा किसी और व्यक्ति को भी हस्तांतरित की जा सकती है यदि वह व्यक्ति भी इसे सीखना चाहे। यदि वह व्यक्ति इसे परखने का साहस दिखाता है, तो वह भी इसे बोल सकता है। वास्तव में, वे वस्तुऐं समूहों में भी आती हैं। यदि आप इसे बोलना चाहते हैं, तो एक आप के ऊपर आ जायेगी और आपको इसे बोलने देगी।

ऐसी स्थिति क्यों हो पाती है? जैसा मैंने कहा है वे अपने स्तरों को सुधारना चाहती हैं। किन्तु वहाँ पर कोई कठिनाइयां नहीं हैं, इसलिए वे साधना अभ्यास नहीं कर सकतीं और स्वयं में सुधार नहीं ला सकतीं। उन्होंने एक युक्ति निकाली। वे अच्छे कार्य करके लोगों की मदद करना चाहती हैं, किन्तु वे नहीं जानतीं कि कैसे करें। किन्तु वे जानती हैं कि वे जो शक्ति छोड़ती हैं उससे समय भर के लिए किसी रोगी की बीमारी में कुछ आराम हो सकता है या उसकी पीड़ा कुछ कम हो सकती है, हालांकि यह रोग को ठीक नहीं कर सकती। इस प्रकार वे जानती हैं कि यह किसी व्यक्ति के मुंह से शक्ति छोड़ कर किया जा सकता है। यही है जो होता है। कुछ लोग इसे देवलोक की भाषा कहते हैं, और कुछ ऐसे हैं जो इसे बुद्ध की भाषा कहते हैं। यह बुद्ध का निरादर करना है। मैं इसे व्यर्थ मानता हूँ!

जैसे ज्ञातव्य है कि एक बुद्ध अकारण ही अपना मुख खोल कर बात नहीं करते। यदि वे अपना मुख खोलें और हमारे आयाम में बात करें, तो इससे मानव समुदाय के लिए भूकंप भी उत्पन्न हो सकता है। इतनी ऊँची ध्वनि के साथ, इसकी अनुमति कैसे हो सकती है? कुछ लोग कहते हैं, "मेरे दिव्य नेत्र ने एक बुद्ध को मुझसे बात करते हुए देखा।" वे आप से बात नहीं कर रहे थे। कुछ लोगों ने मेरे फा-शरीर को भी ऐसा ही करते हुए देखा। वे भी आपसे बात नहीं कर रहे थे। जो संदेश उन्होंने दिया स्टीरियो ध्वनि में था। जब आपने इसे सुना, ऐसा लगा जैसे वे बात कर रहे थे। वे अक्सर अपने आयाम में बात करते हैं। इसके यहां प्रसारित होने के बाद, हालांकि, आप स्पष्ट रूप से नहीं सुन सकते कि वे क्या कहते हैं क्योंकि दोनों आयामों के बीच काल और अवकाश की धारणायें भिन्न हैं। हमारे आयाम का एक *शचन* [9] दो घंटे के बराबर होता है। वहां उस बड़े आयाम में, हमारा एक शचन एक वर्ष के बराबर है, और वहां के समय की तुलना में हमारा धीमा है।

अतीत में एक कहावत थी : "दिव्यलोक में यह केवल एक दिन है, किन्तु पथ्वी पर एक हजार वर्ष बीत चुके हैं।" इसका संदर्भ एकल दिव्यलोकों से है जहां काल और अवकाश की धारणाएं नहीं होतीं। कहा जाये तो, ये वे दिव्यलोक हैं जिनमें महान ज्ञानप्राप्त व्यक्ति वास करते हैं, सुखावती दिव्यलोक, आभावान दिव्यलोक, फालुन दिव्यलोक, और कमल दिव्यलोक। इसका संदर्भ उन स्थानों से है। उस बड़े आयाम में, हालांकि, समय हमारे यहां से तीव्र होता है। यदि आप इसे प्राप्त कर सकते हैं, तो आप किसी को बात करते हुए सुन सकते हैं। कुछ लोगों के पास दूरश्रव्यता की दिव्य सिद्धि होती है और उनके कान खुले होते हैं। वे किसी को बात करते हुए सुन सकते हैं, किन्तु स्पष्ट रूप से नहीं। जो कुछ भी आप सुनते हैं चिड़ियों के चहचहाने जैसा या तेजी से चलते हुए रिकार्ड प्लेयर जैसा प्रतीत होगा; आप नहीं बता सकते कि यह क्या है। निश्चित ही, कुछ लोग संगीत और बातें सुन सकते हैं। किन्तु समय का अन्तर एक दिव्य सिद्धि द्वारा समाप्त करना आवश्यक है जो एक संवाहक का कार्य करती है। तब ध्वनि आपके कानों तक पहँच सकती है, और तब आप इसे स्पष्ट सुन सकते हैं। यह इसी प्रकार है। कुछ लोग इसे बुद्ध की भाषा कहते हैं, जबकि यह बिल्कुल नहीं है।

जब दो ज्ञानप्राप्त व्यक्ति एक दूसरे से मिलते हैं, वे सब कुछ एक मुस्कुराहट से ही समझ सकते हैं। यह ध्वनि रहित टेलीपैथी द्वारा होता है, और जो सुना जाता है वह

स्टीरियो ध्वनि होती है। जब वे मुस्कुराते हैं, तो उनके विचार पहले से ही पहुंच जाते हैं। केवल यही एक तरीका नहीं है जो वे प्रयोग करते हैं, क्योंकि वे कभी-कभी दूसरे तरीके भी प्रयोग करते हैं। आप जानते हैं कि तंत्र विद्या में, तिब्बत के लामा हस्तमुद्राओं के प्रयोग के बारे में बहुत ध्यान रखते हैं। किन्तु यदि आप किसी लामा से पूछें कि हस्तमुद्राऐं क्या होती हैं, वह आपको बताएगा कि वे सर्वोच्च योग हैं। वे खासतौर पर किसलिए होती हैं? यह वह भी नहीं जानता। वास्तव में, वह महान ज्ञानप्राप्त व्यक्तियों की भाषा है। जब बहुत से लोग होते हैं, तो बड़ी हस्तमुद्राओं का प्रयोग किया जाता है; वे बहुत सुन्दर होती हैं और अनेकों बड़ी हस्तमुद्राओं से बनती हैं। जब केवल कुछ ही लोग होते हैं, तो लघु हस्तमुद्राओं का प्रयोग किया जाता है; वे भी बहुत सुन्दर होती हैं और अनेकों लघु हस्तमुद्राओं से बनी होती हैं। वे बहुत परिष्कृत और समृद्ध होती हैं, क्योंकि वे एक भाषा हैं। विगत में यह एक दिव्य रहस्य था, और अब हमने इसे उजागर कर दिया है। जो तिब्बत में प्रयोग होता है वे केवल अभ्यास मात्र के लिए कुछ मुद्राएं ही हैं, और लोगों ने उन्हें वर्गीकृत और प्रणालीबद्ध कर लिया है। वे अभ्यास में केवल एक भाषा की तरह प्रयोग होती हैं और अभ्यास के कुछ रूपों में से एक हैं। असली हस्तमुद्राएं बहुत परिष्कृत होती हैं।

गुरु ने अभ्यासियों को क्या दिया है?

मुझे देखने के बाद, कुछ लोग मेरा हाथ थाम लेते हैं और छोड़ते ही नहीं हैं। जब और लोग इन लोगों को मुझसे हाथ मिलाते हुए देखते हैं, वे भी मुझसे हाथ मिलाने लगते हैं। मैं जानता हूँ कि उनके मन में क्या है। कुछ लोग कुछ संदेश पाना चाहते हैं और मेरा हाथ नहीं छोड़ते। हम आपको बता चुके हैं कि सच्चा साधना अभ्यास आपके अपने ऊपर निर्भर करता है। हम यहां रोग निवारण और स्वास्थ्य लाभ, या अपने रोग ठीक करने के लिए आपको कुछ संदेश देने के लिए नहीं हैं; न ही हमारा उन वस्तुओं से कुछ संबंध है। आपके रोग सीधे मेरे द्वारा ठीक किये जायेंगे। जो अभ्यास स्थलों पर अभ्यास करते हैं उनके रोग मेरे फा-शरीर ठीक करेंगे। जो दाफा की पुस्तक पढ़ कर स्वयं सीखते हैं, उनके रोग भी मेरे फा-शरीर ठीक करेंगे। क्या आप सोचते हैं कि मेरे हाथों को छू कर आप अपना गोंग बढ़ा लेंगे? क्या यह परिहास जैसा नहीं है?

गोंग व्यक्ति के अपने शिनशिंग की साधना पर निर्भर करता है। यदि आप सच्चे रूप से साधना अभ्यास नहीं कर रहे हैं, तो गोंग नही बढ़ेगा; यह इसलिए क्योंकि वहां एक शिनशिंग मानक का अस्तित्व है। जब आपका गोंग बढ़ता है, ऊँचे स्तरों से यह देखा जा सकता है कि जब आपका मोहभाव, एक पदार्थ, हट जाता है, आपके सर के ऊपर एक मानक में सुधार हो जाता है। इसके अतिरिक्त, यह मानक गोंग स्तंभ के रूप में रहता है। यह मानक उतना ही ऊँचा होता है जितना आपका गोंग स्तंभ। यह उस गोंग को दर्शाता है जो आपने साधना में पाया है। यह आपके शिनशिंग स्तर की ऊँचाई को भी दर्शाता है। और लोग चाहे इसमें कितना भी और जोड़ें यह कार्य नहीं करेगा। इसमें तनिक भी नहीं जोड़ा जा सकता, क्योंकि यह वहां बिल्कुल भी नहीं रहेगा और उतर जायेगा। मैं आपको तुरंत ही "सर के ऊपर तीन पुष्प एकत्रित होने *(सान्हुआ जुडिंग)*" की अवस्था पर पहुंचा सकता हूँ। किन्तु, जैसे ही आप इस द्वार से बाहर निकलेंगे, यह गोंग उतर जायेगा क्योंकि यह आपका नहीं है, और यह आपकी साधना से नहीं है। क्योंकि आपका शिनशिंग आदर्श अभी वहां नहीं पहुंचा है, यह वहां नहीं रह सकता। जो कोई भी इसे आपके साथ जोड़ना चाहता है वह ऐसा नहीं कर पायेगा, क्योंकि यह पूरी तरह व्यक्ति की अपनी साधना और अपने मन के संवर्धन से आता है। आप केवल मजबूती से गोंग विकसित करते हुए, स्वयं में निरंतर सुधार लाते हुए, और विश्व की प्रकृति से आत्मसात होते हुए ही उत्थान कर सकते हैं। कुछ लोग मुझसे मेरे हस्ताक्षर मांगते हैं, किन्तु मैं उन्हें नहीं देना चाहता। कुछ लोग बढ़-चढ़ कर बोलते हैं कि उनके पास गुरु के हस्ताक्षर हैं। वे इसका दिखावा करना चाहते हैं या चाहते हैं कि गुरु का संदेश उनकी रक्षा करे। क्या यह एक और मोहभाव नहीं है? आपको स्वयं साधना अभ्यास करना चाहिए। आप किन संदेशों की बात कर रहे हैं? क्या आपको इन्हें उच्च स्तर साधना में मांगना चाहिए? वह क्या मायने रखता है? वे केवल रोग निवारण और स्वास्थ्य संबंधित बातें हैं।

एक अत्यन्त सूक्ष्म स्तर पर, जो गोंग आप विकसित करते हैं, उस गोंग का प्रत्येक सूक्ष्म कण, बिल्कुल आपके जैसा दिखाई पड़ता है। पर-त्रिलोक-फा में पहुंचने के बाद, आप एक बुद्ध शरीर की साधना करेंगे। वह गोंग एक बुद्ध का रूप धारण कर लेगा। यह कमल के फूल पर बैठा हुआ बहुत सुन्दर लगता है। प्रत्येक सूक्ष्म कण उसी प्रकार होता है। एक पशु का गोंग, हालांकि, छोटे भेड़ियों या सर्पों जैसा होता है। एक

बहुत सूक्ष्म स्तर पर, उनके महीन कण सब वही वस्तुऐं होती हैं। ऐसा कुछ भी होता है जिसे संदेश कहा जाता है। कुछ लोग चाय घोलते हैं और आपको पीने के लिए कहते हैं क्योंकि वे इसे गोंग मानते हैं। एक साधारण व्यक्ति अपने रोग को दबा कर और विलम्बित करके केवल अस्थायी रूप से अपने दु:खों को कम करना चाहता है। अन्ततः, एक साधारण व्यक्ति एक साधारण व्यक्ति ही है। हमारा इससे कोई संबंध नहीं है कि वह अपना शरीर किस प्रकार खराब करता है। आप अभ्यासी हैं इसलिए मैं आपको ये वस्तुऐं बता रहा हूँ। आज के बाद, आपको ये वस्तुऐं नहीं करनी चाहिऐं। कभी भी उन वस्तुओं जैसे "संदेश", या ऐसी ही कुछ और, को न मांगें। एक चीगोंग गुरु कहता है, "मैं आपको संदेश देता हूँ, और आप उन्हें देश के किसी भी भाग में प्राप्त कर सकते हैं।" आप क्या प्राप्त करते हैं? मैं आपको बता रहा हूँ कि वे वस्तुऐं अधिक उपयोग की नहीं हैं। मान भी लें कि वे अच्छी हैं, तब भी वे केवल रोग निवारण और स्वास्थ्य के लिए हैं। अभ्यासियों की भांति, हालांकि, हमारा गोंग हमारी अपनी साधना से आता है। दूसरे लोगों के संदेश हमारे स्तर में सुधार नहीं कर सकते, किन्तु केवल साधारण लोगों के रोगों का उपचार कर सकते हैं। व्यक्ति को मन उचित बनाए रखना चाहिए; कोई भी किसी दूसरे के लिए साधना नहीं कर सकता। जब आप वास्तव में स्वयं साधना करते हैं तभी आप अपने स्तर को सुधार सकते हैं। तब, मैंने आपको क्या दिया है? हर कोई जानता है कि हमारे कई अभ्यासियों ने कभी चीगोंग का अभ्यास नहीं किया है और उनके शरीर पर कई रोग हैं। यद्यपि बहुत से लोगों ने कई वर्षों तक चीगोंग का अभ्यास किया है, वे अभी भी बिना कोई गोंग प्राप्त किये हुए ची के स्तर पर ही अटके हैं। नि:संदेह, कुछ लोगों ने रोगियों का उपचार भी किया है, बिना यह जाने कि उन्होंने यह कैसे किया। जब मैंने प्रेत या पशु द्वारा ग्रसित करने के विषय की बात की थी, तब मैंने पहले ही सच्चे दाफा अभ्यासियों के शरीरों से ग्रसित करने वाले प्रेतों और पशुओं को हटा दिया था- चाहे वे जो कुछ भी थे, और मैंने उन वस्तुओं को उनके शरीरों के अंदर और बाहर दोनों से निकाल दिया था। जब वे लोग जो इस दाफा को स्वयं पढ़ कर वास्तव में साधना अभ्यास करते हैं, मैं उनके शरीरों का भी शोधन करूंगा। इसके अलावा, आपके घर के वातावरण को भी शुद्ध करना आवश्यक है। जितना जल्दी हो सके, आपको वह आत्मा प्रतिमा फेंक देनी चाहिए जिसमें किसी भेड़िये या नेवले का आपने पहले से निवास करा रखा हो। उन सब को हटा दिया गया है और अब वे वहां नहीं हैं। क्योंकि आप साधना अभ्यास करना चाहते हैं, हम आपके

लिए सबसे सुविधाजनक द्वार खोल सकते हैं, और इसलिए ये वस्तुऐं आपके लिए की जा सकती हैं। किन्तु ये केवल सच्चे अभ्यासियों के लिए की जाती हैं। नि:संदेह, कुछ लोग साधना अभ्यास नहीं करना चाहते और इस पल तक भी इसे नहीं समझ सके हैं। इसलिए, हम उनकी देख-रेख नहीं कर सकते। हम केवल सच्चे अभ्यासियों की देख-रेख करते हैं।

एक और प्रकार का व्यक्ति होता है। किसी व्यक्ति को पहले बताया गया था कि वह प्रेत या पशु द्वारा ग्रसित है। उसे भी ऐसा ही लगता था। हालांकि, उसके लिए यह हटा दिये जाने के बाद, उसका मन अब भी उसकी चिंता करता है। वह हमेशा सोचता है कि वह अवस्था अभी भी है। वह अभी भी सोचता है कि यह वहां है, और यह पहले से ही एक मोहभाव है जिसे शंका कहते हैं। जैसे समय बीतता है, हो सकता है कि यह व्यक्ति उसे अपने शरीर पर वापस ले आये। उसे यह मोहभाव त्याग देना चाहिए, क्योंकि वह ग्रसित प्रेत या पशु अब वहां नहीं हैं। कुछ लोगों को इन वस्तुओं से हमारी पिछली कक्षाओं में ही छुटकारा दिला दिया गया था। मैं पहले ही उनके लिए उन वस्तुओं को कर चुका हूँ और सभी ग्रसित किये हुए प्रेत या पशु को हटा चुका हूँ।

ताओ विचारधारा में निम्न-स्तर अभ्यास में एक आधार बनाना आवश्यक होता है। दिव्य परिधि, *दानत्येन* [10], और कुछ अन्य वस्तुऐं भी विकसित करनी आवश्यक होती हैं। यहां हम आपको फालुन, शक्ति-यंत्र *(चीजी)*, और साधना अभ्यास के लिए सभी यंत्र इत्यादि- जो दस हजार से भी अधिक हैं, उपलब्ध करेंगे। ये सभी आपको इस प्रकार दिये जायेंगे जैसे आपके शरीर में बीज रोपित किये जा रहे हों। आपके रोग हटाने के बाद, मैं वह सब करूंगा जिसकी आवश्यकता है और आपको सब दूंगा जो दिया जाना चाहिए। तब आप वास्तव में हमारी पद्धति में अन्त तक साधना अभ्यास करने में समर्थ होंगे। अन्यथा, आपको बिना कुछ दिये हुए, यह केवल रोग निवारण और स्वास्थ्य लाभ के लिए ही रह जाता है। स्पष्ट रूप से, कुछ लोग नैतिकता का मान नहीं रखते, और उनके लिए अच्छा होगा कि वे केवल शारीरिक व्यायाम करें।

यदि आप वास्तव में साधना कर रहे हैं, तो हम आपकी अवश्य ही देख-रेख करेंगे। जो स्वयं सीखने वाले अभ्यासी हैं उन्हें भी वही वस्तुऐं प्राप्त होंगी, किन्तु यह आवश्यक है कि वे सच्चे अभ्यासी हों। हम ये सब वस्तुऐं सच्चे अभ्यासियों को देते हैं। मैं कह चुका हूँ कि मैं निश्चित ही आपको अपना शिष्य मानूंगा। इसके अतिरिक्त, यह

आवश्यक है कि आप उच्च स्तर का फा पूरी तरह पढ़ें और यह जानें कि साधना अभ्यास कैसे किया जाता है। व्यायामों के पांच संग्रह आपको एक साथ सिखाये जायेंगे, और आप उन सब को सीखेंगे। आने वाले समय में, आप एक बहुत ऊँचे स्तर पर पहुंच पायेंगे- इतना ऊँचा जो आपकी कल्पना से भी परे है। जब तक आप साधना अभ्यास करते रहेंगे, आपके लिए साधना में उचित फल प्राप्त करना कोई समस्या नहीं होगी। इस फा को सिखाने में, मैंने विभिन्न स्तरों का समावेश किया है। अपने भविष्य के साधना अभ्यास में विभिन्न स्तरों पर, आप सदैव इसे आपके लिए पथ प्रदर्शक की भूमिका निभाते हुए पायेंगे।

एक अभ्यासी की भांति, अब से आपके जीवन का मार्ग बदल दिया जायेगा। मेरे फा-शरीर आपके लिए इसे पुनर्व्यवस्थित करेंगे। इसे कैसे पुनर्व्यवस्थित किया जाता है? एक व्यक्ति के जीवन में कितने वर्ष शेष बचे हैं? वह स्वयं यह नहीं जानता। किसी व्यक्ति को आधे या एक साल के बाद कोई गंभीर रोग हो सकता है, या वह कई वर्षों के लिए बीमार पड़ सकता है। कुछ लोग मस्तिष्क की नस अवरुद्ध होने से पीड़ित हो सकते हैं या कोई और रोग हो सकता है, और वे हिल भी नहीं सकते। आप किस प्रकार अपने बाकी जीवन में साधना अभ्यास कर सकते हैं? हम आपके लिए उन सब को ठीक करेंगे और इन वस्तुओं को होने से रोकेंगे। हालांकि, हम यहां समय से पहले ही स्पष्ट करना चाहेंगे कि हम ये वस्तुऐं केवल सच्चे अभ्यासियों के लिए कर सकते हैं। उनके सहज ही साधारण लोगों के लिए किए जाने की मनाही है। अन्यथा, यह ऐसा ही होगा जैसे कोई बुरा कार्य करना। साधारण लोगों के लिए जन्म, बुढ़ापा, रोग और मृत्यु जैसी सभी वस्तुओं के कार्मिक संबंध होते हैं, और उनका जानबूझ कर अनादर नहीं किया जा सकता।

हम अभ्यासियों को सर्वाधिक मूल्यवान लोग मानते हैं। इस प्रकार, हम ये वस्तुऐं केवल अभ्यासियों के लिए कर सकते हैं। हम इन्हें कैसे करते हैं? यदि किसी गुरु के पास महान नैतिक गुण हैं- यानि, यदि कोई गुरु महान गोंग सामर्थ्य का स्वामी है- यह गुरु आपका कर्म हटा सकता है। यदि किसी गुरु का शक्ति स्तर ऊँचा है, वह आपका बहुत सा कर्म हटा सकता है। यदि गुरु का शक्ति स्तर कम है, वह आपका केवल थोड़ा सा कर्म हटा सकता है। आइये एक उदाहरण का प्रयोग करें। हम आपके भविष्य जीवन के विभिन्न कर्म एक साथ जमा कर देते हैं, और उसका एक भाग या उसका आधा हटा

देते हैं। बचा हुआ आधा अभी भी किसी पर्वत से ऊँचा है, और आप इसे पार नहीं कर सकते। क्या किया जाना चाहिए? जब आपको ताओ की प्राप्ति होगी, भविष्य में बहुत से लोग लाभान्वित होंगे। इस प्रकार, बहुत से लोग आपके लिए एक भाग वहन कर लेंगे। नि:संदेह, यह उनके लिए कुछ नहीं है। अभ्यास द्वारा आप अपने शरीर में कई जीवों को भी विकसित करेंगे। आपकी मुख्य आत्मा और सह आत्मा के अलावा, कई और आपके लिए एक भाग वहन करेंगे। जिस समय तक आप कठिनाइयों से गुजरेंगे तब तक आपके लिए बहुत कम ही शेष बचेगा। हालांकि आपके लिए बहुत कम ही बचा है, यह अब भी बहुत है, और आप अभी भी इसे सहन नहीं कर सकते। तब, क्या होता है? इसे आपके साधना अभ्यास के विभिन्न चरणों के लिए अनेकों भागों में बांट दिया जाता है। उनका उपयोग आपके शिनशिंग में सुधार करने, आपके कर्म का रूपातंरण करने, और आपका गोंग बढ़ाने के लिए किया जाता है।

इसके अलावा, यदि कोई साधना अभ्यास करना चाहता है तो यह कोई सरल कार्य नहीं है। मैं कह चुका हूँ कि यह एक बहुत गंभीर विषय है। यह साधारण लोगों से कहीं आगे का विषय है और साधारण लोगों के किसी भी कार्य से अधिक कठिन है। क्या यह दिव्य नहीं है? इसलिए, आपके लिए आवश्यकता साधारण लोगों के किसी भी विषय से ऊँची है। मानव होने के कारण, हमारे पास मूल-आत्मा है, और मूल-आत्मा नष्ट नहीं होती। यदि मूल-आत्मा नष्ट नहीं होती, तो आप सब सोचें : क्या आपकी मूल-आत्मा ने आपके पिछले जन्म में सामाजिक क्रियाकलापों के दौरान बुरे कार्य नहीं किये थे? ऐसा बहुत संभव है। आपने ऐसे कार्य किये होंगे जैसे जीवों की हत्या करना, किसी का कुछ उधार लेना, किसी को धमकाना, या किसी को हानि पहुंचाना। यदि यह सच है, जब आप यहां साधना अभ्यास करेंगे, वे आपको वहां स्पष्ट रूप से देख सकते हैं। यदि आप रोग निवारण और स्वास्थ्य लाभ कर रहे हैं तो वे परवाह नहीं करते, क्योंकि वे जानते हैं कि आप केवल अपना ऋण विलम्बित कर रहे हैं। यदि आप इसका भुगतान अभी नहीं करते, आप इसका भुगतान बाद में करेंगे, और भविष्य में आपको इसका और अधिक भुगतान करना पड़ेगा। इसलिए वे परवाह नहीं करते यदि आप इसका भुगतान अभी नहीं करते।

जब आप कहते हैं कि आप साधना अभ्यास करने जा रहे हैं, वे आपको यह नहीं करने देंगे, "तुम साधना अभ्यास करना और छूट जाना चाहते हो। जब तुम गोंग

विकसित कर लोगे, हम तुम तक पहुंच या तुम्हें छू नहीं पायेंगे।" वे इसे नहीं होने देंगे, और वे आपका साधना अभ्यास रोकने के लिए सभी प्रयत्न करेंगे। इस प्रकार, आपके साथ व्यवधान डालने के लिए सभी प्रकार की विधियों का प्रयोग किया जायेगा। यहां तक कि वे आपको वास्तव में मारने के लिए भी आ जायेंगे। निश्चित ही, जब आप ध्यानावस्था में बैठे होंगे तो आपका सर नहीं काट दिया जायेगा। यह असंभव है क्योंकि यह साधारण मानव समाज की अवस्था के अनुरूप होना चाहिए। हो सकता है द्वार से बाहर निकलते ही आप किसी कार से टकरा जायें, या आप किसी भवन से गिर जायें या किसी और खतरे का सामना करें। ऐसी घटनाऐं हो सकती हैं और बहुत खतरनाक हो सकती हैं। सच्चा साधना अभ्यास उतना सरल नहीं है जितना आप सोचते हैं। क्या आप सोचते हैं यदि आप साधना अभ्यास करना चाहते हैं तो आप इसमें सफल हो जायेंगे? जैसे ही आप वास्तव में साधना अभ्यास करना चाहते हैं, उसी समय आपका जीवन खतरे में आ जायेगा और तुरंत ही इस विषय का आप से संबंध हो जायेगा। कई चीगोंग गुरु शिष्यों को ऊँचे स्तरों की ओर सिखाने का साहस नहीं कर पाते। क्यों? वे इस विषय को बिल्कुल नहीं संभाल सकते, और वे आपकी रक्षा नहीं कर सकते।

विगत में कई लोग थे जो ताओ सिखाते थे। वे केवल एक शिष्य को सिखा पाते थे, और जो कुछ वे कर सकते थे उससे एक शिष्य की देख-रेख कर सकते थे। हालांकि, जहां तक इतने बड़े पैमाने पर यह करने की बात है, एक साधारण व्यक्ति यह साहस नहीं कर सकता। किन्तु हम आपको यहां बता चुके हैं कि मैं कर सकता हूँ, क्योंकि मेरे पास अनेकों फा-शरीर हैं जो महान दिव्य शक्तियों के स्वामी हैं। वे महान दिव्य शक्तियों का प्रदर्शन कर सकते हैं- जो फा की बहुत महान शक्तियां हैं। इसके अलावा जो हम आज कर रहे हैं इतना सरल नहीं है जितना ऊपर से दिखाई पड़ता है। मैं कोई गर्म-मिजाज नहीं था जब मैं जनता में आया। मैं आपको बता सकता हूँ कि अनेकों महान ज्ञानप्राप्त व्यक्ति इस घटना को देख रहे हैं। यह अंतिम समय है जब धर्मविनाश काल में हम ऐसा पवित्र मार्ग सिखायेंगे। ऐसा करने में हम इसे भटकने भी नहीं देंगे। यदि आप साधना अभ्यास में वास्तव में उचित मार्ग का अनुसरण करें, तो कोई भी जानबूझ कर आपके साथ कुछ करने का साहस नहीं करेगा। इसके अलावा, आपको मेरे फा-शरीरों का संरक्षण रहेगा, और आप किसी भी खतरे में नहीं रहेंगे।

जो उधार बाकी है उसका भुगतान करना आवश्यक है। इसलिए, साधना अभ्यास के दौरान कुछ खतरनाक घटनायें घट सकती हैं। जब ये घटनाऐं घटती है, हालांकि, आप डरेंगे नहीं, और न ही आपको कोई असली खतरा होने दिया जायेगा। मैं आपको कुछ उदाहरण दे सकता हूँ। जब मैंने बीजिंग में एक कक्षा को पढ़ाया, एक अभ्यासी अपनी साइकिल पर सड़क पार कर रही थी। सड़क के घुमाव पर, एक बड़ी कार आई और उस अभ्यासी से टकरा गई, जो पचास वर्ष से अधिक उम्र की एक महिला थी। यह उससे अचानक ही टकराई और उसे बहुत जोर से ठोकर लगी। "बैंग" की आवाज के साथ, यह उसके सर पर टकराई, और उसका सर कार की छत से सीधा टकराया। उस समय, उस अभ्यासी के पैर साइकिल के पैडल पर ही थे। हालांकि उसका सर टकराया था, उसे कोई दर्द अनुभव नहीं हुआ। न केवल उसे कोई दर्द नहीं हुआ बल्कि उसके सर में रक्त भी नहीं निकला; न ही कोई सूजन आई। चालक बहुत अधिक डर गया था और कार से बाहर कूदा। उसने जल्दी से उसे अस्पताल चलने की सलाह दी। उसने जवाब दिया कि वह ठीक है। नि:संदेह, इस अभ्यासी का शिनशिंग स्तर बहुत ऊँचा था और वह चालक को परेशानी में नहीं डालना चाहती थी। उसने कहा कि सब कुछ ठीक है, किन्तु टकराने से कार पर एक बड़ा निशान पड़ गया था।

उस प्रकार की सभी घटनायें व्यक्ति का जीवन लेने आती हैं। किन्तु व्यक्ति को कोई खतरा नहीं होगा। पिछली बार हमने जिलिन विश्वविद्यालय में कक्षा ली, एक अभ्यासी अपनी साइकिल पर जिलिन विश्वविद्यालय के मुख्य प्रवेश द्वार से बाहर जा रहा था। जैसे ही वह सड़क के बीच में पहुंचा, अचानक ही वह दो कारों के बीच घिर गया। कारें उससे लगभग टकरा ही गई थीं, किन्तु वह बिल्कुल भी नहीं डरा। साधारणत: जब हम इस प्रकार की घटनाओं से गुजरते हैं तब हमें जरा भी डर नहीं लगता। ठीक उसी पल, कारें रूक गईं और कुछ नहीं हुआ।

बीजिंग में इस प्रकार की एक घटना घटी। सर्दियों में जल्दी ही अंधेरा छा जाता है, और लोग जल्दी ही सोने चले जाते हैं। सड़कें बहुत सुनसान थीं और कोई लोग नहीं थे। एक अभ्यासी अपनी साइकिल पर शीघ्रता से घर की ओर जा रहा था और उसके आगे केवल एक जीप चल रही थी। अचानक, उस जीप ने अपने ब्रेक लगाए। वह इससे अनजान था और अपना सर नीचे झुकाए हुए अपनी साइकिल को आगे चलाता रहा। किन्तु यह जीप अचानक ही पीछे की ओर चलने लगी, और वह बहुत तेजी से पीछे की

ओर घूमी। यदि दो शक्तियां टकराई होतीं, तो उसका जीवन समाप्त हो गया होता। ठीक जब वे टकराने वाले थे, एक शक्ति ने अचानक ही उसकी साइकिल को आधे मीटर से अधिक पीछे खींच लिया, और जीप तुरंत ही उसकी साइकिल के पहिये पर आकर रूक गई। शायद जीप चालक को पता लग गया था कि उसके पीछे कोई है। इस अभ्यासी को उस पल कोई भय नहीं लगा। वे सभी जो इन घटनाओं के सम्मुख हुए हैं जरा भी भयभीत नहीं हुए, हो सकता है कि वे बाद में हुए हों। उसके मन में पहली बात आई, "मुझे किसने पीछे खींचा? मुझे उसका धन्यवाद करना चाहिए।" जब वह पीछे मुड़ा और अपना आभार व्यक्त करने वाला था, उसने पाया कि सड़क खाली थी और वहां कोई नहीं था। वह तभी समझ गया, "यह गुरु थे जिन्होंने मुझे बचाया!"

दूसरी घटना चांगचुन[11] में घटी। एक अभ्यासी के घर के पास एक इमारत का निर्माण चल रहा था। आजकल, इमारतें बहुत ऊँची बनाई जाती हैं, और मचान लोहे के पाइपों की बनी होती हैं जिनका व्यास दो इंच और लम्बाई चार मीटर होती है। जब यह अभ्यासी अपने घर से कुछ दूर निकला, एक लोहे का पाइप उस ऊँची इमारत से लम्बवत सीधे उसके सर पर गिरा। सड़क पर सभी लोग अचंभित रह गये। उसने कहा, "मुझे किसने चपत मारी?" उसने सोचा कि किसी ने उसके सर पर चपत मारी है। उसी पल उसने अपना सर मोड़ा और देखा कि एक बड़ा फालुन उसके सर के उपर घूम रहा था। वह लोहे का पाइप उसके सर से फिसल कर जमीन में धंस गया। यदि यह वास्तव में किसी व्यक्ति के सर पर गिर गया होता- तो आप सब सोचें- यह शरीर को इस प्रकार छेद गया होता जैसे कोई चाकू किसी फल को, क्योंकि यह इतना भारी था। यह बहुत खतरनाक था!

इस प्रकार की बहुत सी घटनाऐं हैं जिसे गिना नहीं जा सकता। किन्तु इनसे कोई खतरा नहीं हुआ। हर कोई इन घटनाओं के सम्मुख नहीं होगा, किन्तु वे कुछ लोगों के सामने आऐंगी। वे आपके सामने आऐंगी या नहीं, किन्तु मैं आपको विश्वास दिला सकता हूँ कि आपको किसी प्रकार का खतरा नहीं होगा- मैं इसकी गारंटी दे सकता हूँ। कुछ अभ्यासी शिनशिंग की आवश्यकताओं को नहीं मानते, क्योंकि वे केवल व्यायामों का अभ्यास करते हैं और अपने शिनशिंग का संवर्धन नहीं करते। उन्हें अभ्यासी नहीं माना जा सकता।

जहां तक यह प्रश्न है कि गुरु ने क्या दिया है, यही हैं जिन्हें मैंने आपको दिया है। मेरे फा-शरीर आपकी रक्षा करेंगे जब तक आप अपनी रक्षा करने में समर्थ नहीं हो जाते। उस समय, आप पर-त्रिलोक-फा में साधना अभ्यास कर रहे होंगे और आपने पहले ही ताओ प्राप्त कर लिया होगा। किन्तु यह आवश्यक है कि आप स्वयं को एक सच्चा अभ्यासी माने, और तब आप इसमें सफल हो सकते हैं। एक व्यक्ति था जो सड़क पर मेरी पुस्तक अपने हाथ में लेकर चल रहा था, और चिल्ला रहा था, "मेरे पास गुरु ली की रक्षा है, इसलिए मुझे कार से टकराने का कोई डर नहीं है।" वह दाफा का अनादर करना हुआ। इस प्रकार के व्यक्ति की रक्षा नहीं की जायेगी। वास्तव में, एक सच्चा अभ्यासी इस प्रकार का कार्य नहीं करेगा।

शक्ति क्षेत्र

जब हम अभ्यास करते हैं, हमारे चारों ओर एक प्रभाव क्षेत्र होता है। यह प्रभाव क्षेत्र क्या है? कुछ लोग इसे ची का क्षेत्र, चुम्बकीय क्षेत्र या विद्युत का क्षेत्र कहते हैं, चाहे इसे जो भी क्षेत्र कहें यह अनुचित ही होगा क्योंकि इस क्षेत्र में समाहित पदार्थ अत्यन्त समृद्ध होता है। लगभग समस्त पदार्थ जो हमारे विश्व के प्रत्येक अंतरिक्ष में होता है इस गोंग में पाया जा सकता है। हमारे लिए इसे एक शक्ति क्षेत्र कहना अधिक उपयुक्त होगा, और इसलिए हम साधारणत: इसे एक शक्ति क्षेत्र कहते हैं।

तो यह क्षेत्र क्या कर सकता है? जैसे आप सब जानते हैं, इस उचित मार्ग के हमारे अभ्यासियों को यह अनुभव होता है : क्योंकि यह एक उचित मार्ग की साधना से आया है, यह परोपकारी है और विश्व की प्रकृति ज़न-शान-रेन से आत्मसात है। इसलिए, हमारे सभी अभ्यासी यहां इस क्षेत्र में बैठे हुए इसका अनुभव कर सकते हैं, उनके मन बुरे विचारों से मुक्त हैं। इसके अतिरिक्त, यहां बैठे हुए कई अभ्यासी धूम्रपान के लिए भी नहीं सोचते। वे एक निर्मल और शांत वातावरण का अनुभव करते हैं, जो बहुत आरामदेह है। यह एक उचित मार्ग के अभ्यासी द्वारा धारण शक्ति है, और इस क्षेत्र के प्रभाव में यही होता है। बाद में, इस कक्षा के पश्चात, हमारे अधिकतर अभ्यासियों के पास गोंग होगा- जो वास्तव में विकसित शक्ति है। क्योंकि जो मैं आपको सिखा रहा हूँ

वह एक उचित मार्ग की साधना से संबंधित है, आपको भी इस शिनशिंग आदर्श को स्वयं अपनाना चाहिए। जैसे आप साधना में निरंतर अभ्यास करते जायेंगे और हमारी शिनशिंग आवश्यकताओं को मानेंगे, आपकी शक्ति धीरे-धीरे और प्रबल होती जायेगी।

हम अपने और दूसरे दोनों के, और साथ ही समस्त प्राणियों के उद्धार के बारे में सिखाते हैं। इस प्रकार, फालुन जब अंदर की ओर घूमता है तो स्वयं को बचा सकता है और जब बाहर की ओर घूमता है तो औरों को बचा सकता है। बाहर की ओर घूमते हुए, यह शक्ति निष्कासित करता है और दूसरों को लाभ प्रदान करता है। इस प्रकार, आपके शक्ति प्रभाव क्षेत्र में दूसरे लोग लाभान्वित होंगे, और उन्हें बहुत आरामदेह लगेगा। भले ही आप सड़क पर चल रहे हों, कार्यस्थल में हों, या घर में हों, आपका औरों पर यह प्रभाव हो सकता है। लोगों के आपके क्षेत्र के अंदर अनजाने ही रोग ठीक हो सकते हैं क्योंकि यह क्षेत्र सभी असाधारण अवस्थाओं को ठीक कर सकता है। एक मानव शरीर को रोग नहीं होना चाहिए, और रोग होना एक असाधारण अवस्था है। यह इस असाधारण अवस्था को ठीक कर सकता है। जब एक दुष्ट-मन का व्यक्ति कुछ बुरा सोच रहा होता है, हो सकता है वह आपके क्षेत्र के प्रबल प्रभाव से अपना मन बदल ले; और तब वह बुरा कार्य न करना चाहे। हो सकता है कोई व्यक्ति किसी पर नाराज होना चाहता हो। अचानक ही, वह अपना मन बदल ले और नाराज न होना चाहे। केवल एक उचित मार्ग के साधना अभ्यास के शक्ति क्षेत्र द्वारा ही ऐसा प्रभाव उत्पन्न हो सकता है। इसलिए, विगत में बुद्धमत में एक कहावत थी : "बुद्ध-प्रकाश सब ओर प्रकाशवान होता है और सभी अनियमितताओं को ठीक करता है।" इसका यह अर्थ है।

फालुन दाफा अभ्यासियों को अभ्यास किस प्रकार फैलाना चाहिए?

इस कक्षा के बाद, हमारे कई अभ्यासी सोचते हैं यह अभ्यास बहुत अच्छा है, और वे अपने संबंधियों और मित्रों में इसे सिखाना चाहते हैं। हां, आप सभी इसे फैला सकते हैं और किसी को भी सिखा सकते हैं। किन्तु एक बात है जो हम सभी को अवश्य बतायेंगे। हमने सभी को इतनी वस्तुऐं दी हैं जिन्हें मापा या धन में नहीं आंका जा

सकता। मैं उन्हें सभी को क्यों देता हूँ? वे आपके साधना अभ्यास के लिए हैं। यदि आप साधना अभ्यास करते हैं, केवल तभी आपको ये वस्तुऐं दी जा सकती हैं। दूसरे शब्दों में, जब भविष्य में आप अभ्यास को फैलायेंगे, आप इन वस्तुओं को प्रसिद्धि और निजी-लाभ पाने के लिए उपयोग नहीं कर सकते। इस प्रकार, आप एक कक्षा आयोजित नहीं कर सकते और शुल्क एकत्र नहीं कर सकते जैसा मैं करता हूँ। क्योंकि हमें पुस्तकें और सामग्री छापनी होती हैं और अभ्यास को सिखाने के लिए सब ओर घूमना होता है, हमें खर्चों की पूर्ति करनी होती है। हमारे शुल्क पूरे देश में पहले से ही न्यूनतम हैं, किन्तु जो वस्तुऐं दी जाती हैं वे संख्या में अधिकतम हैं। हम वास्तव में लोगों को ऊँचे स्तर की ओर ला रहे हैं; हर कोई स्वयं इस बारे में जानता है। एक फालुन दाफा अभ्यासी के लिए, जब आप भविष्य में अभ्यास को फैलाते हैं, हमारी आपसे दो आवश्यकताएँ हैं।

पहली यह कि आप कोई शुल्क एकत्रित नहीं कर सकते। हमने आपको इतनी वस्तुऐं दी हैं, किन्तु वे आपके लिए धन और प्रसिद्धि अर्जित करने के लिए नहीं हैं। बल्कि ये आपको बचाने के लिए हैं और आपको साधना करने योग्य बनाने के लिए हैं। यदि आप शुल्क एकत्रित करते हैं, मेरा फा-शरीर आपको दी हुई सभी वस्तुऐं वापस ले लेगा, और आप हमारे फालुन दाफा के अभ्यासी नहीं रहेंगे। जो आप फैलाते हैं यह हमारा फालुन दाफा नहीं होगा। जब आप इसे फैलाते हैं आपको प्रसिद्धि और निजी-लाभ की इच्छा नहीं रखनी चाहिए, बल्कि औरों को स्वेच्छापूर्वक सिखाना चाहिए। सभी अभ्यासी देश भर में इसी प्रकार कर रहे हैं, और विभिन्न प्रांतों के सहायकों ने भी अपने लिए यही उदाहरण प्रस्तुत किया है। यदि आप हमारा अभ्यास सीखना चाहते हैं, आप तब तक आते रह सकते हैं जब तक आप सीखना चाहते हैं। हम आपके लिए उत्तरदायी रह सकते हैं और आपसे एक पैसा भी नहीं लेंगे।

दूसरी आवश्यकता है कि आप दाफा में व्यक्तिगत वस्तुऐं नहीं मिलाऐंगे। दूसरे शब्दों में, व्यायामों को सिखाने के दौरान, भले ही आपका दिव्य नेत्र खुला हो या नहीं, या आपने कोई दिव्य सिद्धि विकसित की हो, जो आपने देखा है आप उसका उपयोग हमारे फालुन दाफा को समझाने के लिए नहीं कर सकते। जो थोड़ा बहुत आपने अपने स्तर पर देखा है वह कुछ नहीं है और फा के वास्तविक अर्थ से कहीं दूर है जो हम सिखाते हैं। इसलिए जब आप भविष्य में अभ्यास को फैलाते हैं, आपको इस विषय पर

बहुत सावधान रहना होगा। केवल इसी प्रकार से हम निश्चित कर सकते हैं कि हमारे फालुन दाफा की मूल वस्तुऐं अपरिवर्तनीय रहें।

इसके अतिरिक्त, किसी को भी अभ्यास को उस प्रकार सिखाने की अनुमति नहीं है जैसा मैं करता हूँ, और न ही किसी को बड़े पैमाने पर व्याख्यान देकर फा को सिखाने की अनुमति है, जैसा मैं करता हूँ। आप फा को सिखाने में असमर्थ हैं। वह इसलिए क्योंकि जो मैं सिखा रहा हूँ उसके बहुत प्रगाढ़ अर्थ हैं, और इसमें बहुत कुछ उच्च स्तरों से समाहित है। आप साधना का विभिन्न स्तरों पर अभ्यास कर रहे हैं। भविष्य में आपके द्वारा विकास करने पर, आप जब दोबारा इस रिकार्डिंग को सुनेंगे आप निरंतर स्वयं में सुधार लाते रहेंगे। जैसे आप निरंतर इसे सुनेंगे, आपको हमेशा नई समझ और नये परिणाम प्राप्त होंगे। इस पुस्तक को पढ़ने से और भी ऐसा होगा। मेरी यह शिक्षा ऊँचे स्तरों की बहुत कुछ प्रगाढ़ वस्तुओं को समाहित करके सिखाई जाती है। इसलिए, आप यह फा सिखाने में असमर्थ हैं। आपको मेरे मूल शब्दों को अपना बना कर कहने की अनुमति नहीं है, अन्यथा यह शिक्षा को चुराने जैसा है। आप इसे बताने के लिए केवल मेरे मूल शब्दों का प्रयोग कर सकते हैं, यह बताते हुए कि गुरु ने इस प्रकार कहा है या इस प्रकार पुस्तक में लिखा है। आप इसे केवल इसी प्रकार कह सकते हैं। ऐसा क्यों है? क्योंकि जब आप इस प्रकार कहेंगे, यह दाफा की शक्ति को धारण करेगा। आप उन वस्तुओं को नहीं फैला सकते जिन्हें आप फालुन दाफा की तरह समझते हैं। अन्यथा, जो आप सिखाते हैं फालुन दाफा नहीं है, और जो आप करते हैं वह हमारे फालुन दाफा का अपमान करने जैसा होगा। यदि आप कुछ अपने विचारों और अपने मन के अनुसार कहते हैं, तो यह फा नहीं है और लोगों को नहीं बचा सकता; और न ही इसका कोई प्रभाव होगा। इसलिए, इस फा को कोई और नहीं सिखा सकता।

जिस प्रकार आपको इस अभ्यास को सिखाना चाहिए वह है कि आप अभ्यासियों के लिए व्यायाम स्थलों और शिक्षा स्थलों पर विडियो-टेप और ऑडियो-टेप चलायें, और इसके बाद सहायक उन्हें व्यायाम सिखा सकते हैं। आप सभागार का प्रयोग एक-दूसरे से बातचीत करने के लिए कर सकते हैं, और आप एक-दूसरे के साथ वस्तुओं पर चर्चा और आदान-प्रदान कर सकते हैं। हम चाहते हैं कि आप इस प्रकार करें। इसके साथ ही, आप एक अभ्यासी (एक शिष्य) जो फालुन दाफा सिखाता है, को

"शिक्षक" या "गुरु" नहीं कह सकते, क्योंकि दाफा में केवल एक गुरु है। सभी अभ्यासी शिष्य हैं, भले ही उन्होंने कभी भी अभ्यास आरम्भ किया हो।

जब आप अभ्यास को फैलाते हैं, कुछ लोग सोच सकते हैं, "गुरु फालुन स्थापित कर सकते हैं और किसी का शरीर व्यवस्थित कर सकते हैं, किन्तु हम ऐसा नहीं कर सकते।" इससे कोई अंतर नहीं पड़ता। मैं आपको पहले ही बता चुका हूँ कि प्रत्येक अभ्यासी के पीछे मेरा फा-शरीर है, और वह केवल एक नहीं है। इस प्रकार, मेरे फा-शरीर इन वस्तुओं की देख-रेख करेंगे। जब आप किसी व्यक्ति को अभ्यास सिखाते हैं, यदि उसका पूर्वनिर्धारित संबंध है तो उसे फालुन तभी प्राप्त हो जायेगा। यदि उसका एक अच्छा पूर्वनिर्धारित संबंध नहीं है, तो वह धीरे-धीरे कुछ समय के अभ्यास के बाद और उसके शरीर को व्यवस्थित किये जाने के बाद प्राप्त कर सकता है। मेरे फा-शरीर उसके शरीर को व्यवस्थित करने में सहयोग करेंगे। इन वस्तुओं के अलावा, मैं बता रहा हूँ यदि कोई व्यक्ति मेरी पुस्तक को पढ़ कर, मेरे विडियो टेप को देख कर, या मेरी रिकार्डिंग को सुन कर, फा और अभ्यास सीखता है, और यदि वह स्वयं को वास्तव में एक अभ्यासी मानता है, तो वह भी वे वस्तुऐं प्राप्त कर सकता है जिनके वह योग्य है।

हम अभ्यासियों को रोगियों को देखने की अनुमति नहीं देते, क्योंकि फालुन दाफा अभ्यासियों को दूसरे लोगों का रोग उपचार करने की सख्त मनाही है। हम आपको साधना में ऊपर उठने की शिक्षा दे रहे हैं, न कि आपको कोई मोहभाव उत्पन्न होने दें या अपने शरीर को बर्बाद करने दें। हमारे अभ्यास स्थल किसी भी दूसरे चीगोंग अभ्यास स्थलों से अच्छे हैं। जब तक आप हमारे अभ्यास स्थलों पर अभ्यास के लिए जाते रहते हैं, यह आपके द्वारा अपने रोग का स्वयं उपचार करने से कहीं अच्छा है। मेरे फा-शरीर एक घेरे में बैठते हैं, और अभ्यास स्थल के ऊपर एक ढाल होती है जिस पर एक बड़ा फालुन होता है। एक बड़ा फा-शरीर ढाल के ऊपर स्थल की रक्षा करता है। यह स्थल कोई साधारण स्थल नहीं है, और न ही यह किसी साधारण चीगोंग अभ्यास का स्थल है : यह साधना अभ्यास के लिए स्थल है। हमारे कई दिव्य सिद्धियों वाले अभ्यासियों ने देखा है कि यह फालुन दाफा स्थल लाल प्रकाश से घिरा होता है, और वहां सब ओर लाल होता है।

मेरा फा-शरीर किसी अभ्यासी के लिए फालुन को सीधे भी स्थापित कर सकता है, किन्तु हम किसी के मोहभाव को बढ़ावा नहीं देते। जब आप किसी व्यक्ति

को व्यायाम सिखाते हैं, वह कह सकता है, "अब मेरे पास फालुन आ गया।" आप गलत सोचते हैं कि यह आपके द्वारा स्थापित किया गया है, जबकि यह नहीं है। मैं आपको यह बता रहा हूँ जिससे आप यह मोहभाव पैदा न करें। यह सब मेरे फा-शरीर द्वारा किया जाता है। इस प्रकार हमारे फालुन दाफा अभ्यासियों को अभ्यास फैलाना चाहिए।

जो कोई भी फालुन दाफा व्यायामों को बदलने का प्रयत्न करता है वह दाफा और इस अभ्यास पद्धति का अनादर कर रहा है। कुछ लोगों ने व्यायाम निर्देशों को कविताओं में बदल लिया है, और इसकी बिल्कुल अनुमति नहीं है। एक सच्चा साधना मार्ग सदैव पूर्व ऐतिहासिक समय से हस्तांतरित होता आ रहा होता है। इसे एक सुदूर समय से संरक्षित रखा जाता है और यह सफलतापूर्वक अनेकों महान ज्ञानप्राप्त व्यक्तियों को साधना में सफलता प्रदान कर चुका होता है। कोई भी इसमें तनिक भी बदलाव करने का साहस नहीं करता। ऐसा कुछ पूरे इतिहासकाल में कभी नहीं हुआ। प्रत्येक को इस विषय के बारे में बहुत सावधान रहना चाहिए।

---

1. मूल शरीर — व्यक्ति का भौतिक शरीर और दूसरे आयामों में शरीर।
2. निर्वाण — मानव जगत से भौतिक शरीर का त्याग, बुद्ध शाक्यमुनि की विचारधारा में साधना पूर्ण करने का तरीका।
3. शिनज्यांग — उत्तर पश्चिम चीन का एक राज्य।
4. तांग राजवंश — चीनी इतिहास के सबसे समृद्ध काल में से एक।
5. शक्तिपात — व्यक्ति के सर के ऊपर शक्ति उड़ेलना।
6. ग्वानयिन पंथ — बोधिसत्व अवलोकितेश्वर के नाम पर बना एक पंथ।
7. देवी माता — चीनी साहित्य में तीन लोकों में सबसे उच्च स्तर की देवी।
8. त्रिलोकापति — चीनी साहित्य में तीन लोकों का संरक्षक देवता।
9. शचन — दो घण्टे के समय के लिए चीनी मानक।
10. दानत्येन — दान का शक्ति क्षेत्र, यह उदर के निचले भाग में होता है।
11. चांगचुन — जिलिन राज्य की राजधानी।

उपदेश चार

त्याग और प्राप्ति

साधकों के समुदाय में, त्याग और प्राप्ति के बीच संबंध पर अक्सर चर्चा की जाती है। साधारण लोगों के बीच भी इसकी चर्चा होती है। हमारे अभ्यासियों को त्याग और प्राप्ति को किस प्रकार लेना चाहिए? यह साधारण लोगों से भिन्न है। जो साधारण लोग चाहते हैं वह है निजी-लाभ और अच्छा और आरामदेह जीवन। हमारे अभ्यासी इस प्रकार नहीं हैं, बल्कि इसके बिल्कुल विपरीत हैं। हम वह नहीं चाहते जो साधारण लोग पाना चाहते हैं। बल्कि, जो हम प्राप्त करते हैं वह साधारण लोग नहीं पा सकते- यदि वे चाहें तो भी- सिवाय साधना अभ्यास के।

जिस त्याग की साधारणत: हम बात करते हैं वह एक संकरे अर्थ का त्याग नहीं है। जब कोई त्याग की बात करता है, तो वह कुछ धन दान में देने, जरूरतमंद लोगों की मदद करने, या राह पर किसी भिखारी को खाना खिलाने के बारे में सोचता है। वे भी कुछ देने के और त्याग करने के प्रकार हैं। किन्तु यह केवल धन और संपत्ति के विषय पर कम ध्यान देने के बारे में ही दर्शाता है। नि:संदेह, संपत्ति पर कम ध्यान देना एक प्रकार का त्याग है, और बल्कि यह एक बड़ा पहलू है। किन्तु जिस त्याग की हम बात करते हैं वह इस संकरे अर्थ में सीमित नहीं है। एक अभ्यासी होते हुए, साधना के दौरान इतने मोहभाव हैं जो त्यागने हैं, जैसे दिखावे की भावना, ईर्ष्या, प्रतियोगिता की भावना, और उत्साह की भावना। विभिन्न मोहभावों को छोड़ना आवश्यक है, क्योंकि जिस त्याग की हम चर्चा करते हैं उसका अर्थ विस्तृत है। संपूर्ण साधना क्रम के दौरान, हमें साधारण लोगों के सभी मोहभावों और विभिन्न इच्छाओं का त्याग करना है।

कोई यह आश्चर्य कर सकता है : "हम साधारण लोगों के बीच साधना अभ्यास कर रहे हैं। यदि हम सब कुछ त्याग दें, तो क्या हम सन्यासियों और सन्यासिनों जैसे नहीं हो जायेंगे? सब कुछ त्याग देना असंभव प्रतीत होता है।" हमारे अभ्यास की विचारधारा में, जो साधारण लोगों के बीच साधना अभ्यास करते हैं उनके लिए

आवश्यक है कि वे साधारण मानव समाज के बीच ही रह कर साधना अभ्यास करें, और साधारण लोगों के जैसा जितना हो सके उतना ढल जायें। आपको यह नहीं कहा जाता है कि आप कुछ भौतिक रूप से त्याग करें। इससे कोई अंतर नहीं पड़ता कि आपका पद कितना ऊँचा है या आपके पास कितनी संपत्ति है। कुंजी यह है कि क्या आप उस मोहभाव को छोड़ सकते हैं।

हमारे अभ्यास की पद्धति सीधे व्यक्ति के मन को लक्ष्य बनाती है। अहम पहलू यह है कि क्या आप निजी लाभ और एक-दूसरे के बीच मतभेदों के विषयों को हल्केपन से ले सकते हैं और उनकी कम परवाह कर सकते हैं। मठों या सुदूर पर्वतों और जंगलों में किये जाने वाले साधना अभ्यास साधारण मानव समाज से आपकी पहुंच पूरी तरह से काट देते हैं, जिससे आप साधारण लोगों के मोहभावों को छोड़ने के लिए बाध्य हो जाते हैं और आपको भौतिक लाभ नकार दिये जाते हैं जिससे आप उन्हें त्याग सकें। साधारण लोगों के बीच रहने वाला अभ्यासी इस मार्ग पर नहीं चलता। इस व्यक्ति के लिए आवश्यक है कि वह साधारण मानव वातावरण में इन वस्तुओं को हल्केपन से ले। निःसंदेह, यह बहुत कठिन है। यह हमारे अभ्यास की विचारधारा का सबसे निर्णायक पहलू भी है। इसलिए, जिस त्याग की हम बात करते हैं यह एक विस्तृत दायरे का त्याग है न कि एक संकरे दायरे का। अब आइये, अच्छे कार्य करने और कुछ धन या वस्तुऐं दान में देने के बारे में बात करें। आजकल, कुछ भिखारी जो आप सड़कों पर देखते हैं पेशेवर हैं और उनके पास आप से भी अधिक धन हो सकता है। हमें एक विस्तृत दायरे की वस्तुओं पर घ्यान देना चाहिए न कि छोटी बातों पर। साधना अभ्यास में खुलेपन और सम्मान के साथ एक विस्तृत दृष्टिकोण रखना चाहिए। हमारे त्याग करने के क्रम में, जिसका हम वास्तव में त्याग करते हैं वे बुरी वस्तुऐं हैं।

मानव अक्सर विश्वास करते हैं कि हर कोई वस्तु जिसके लिए वे प्रयासरत हैं, अच्छी है। वास्तव में, एक उच्च स्तर के दृष्टिकोण से, वे साधारण लोगों के बीच निजी-लाभ की उन इच्छाओं की तुष्टि के लिए हैं। धर्मों में यह कहा गया है चाहे आपके पास कितना भी अधिक धन हो या आप कितने भी ऊँचे पद पर हों, ये केवल कुछ दशकों के लिए ही रहते हैं। कोई इन्हें न तो जन्म के साथ ला सकता है या न ही मृत्यु के बाद ले जा सकता है। गोंग इतना मूल्यवान क्यों होता है? सही रूप से इसलिए क्योंकि यह सीधे आपकी मूल आत्मा के शरीर पर उत्पन्न होता है और जन्म के समय लाया जा सकता

है और मृत्यु के बाद ले जाया जा सकता है। इसके अतिरिक्त, यह साधना में सीधे आपकी फल-पदवी को निर्धारित करता है, और इसलिए इसको साधना द्वारा विकसित करना कठिन होता है। दूसरे शब्दों में, जिनका आप त्याग करते हैं वे बुरी वस्तुऐं हैं। इस प्रकार, आप अपनी मूल, सच्ची प्रकृति की ओर लौट सकते हैं। तो आप क्या प्राप्त करते हैं? आपके स्तर का सुधार; जिससे अन्तत: आप उचित फल प्राप्त करते हैं और साधना पूर्ण करते हैं, जिससे आधारभूत विषय हल हो जाता है। निश्चित ही, आपके लिए तुरंत ही सभी प्रकार की साधारण लोगों की इच्छाओं को छोड़ना और एक सच्चे अभ्यासी के आदर्श पर पहुंचना सरल नहीं होगा, क्योंकि यह करने के लिए समय लगता है। जब आप मुझे कहते हुए सुनते हैं कि इसमें समय लगता है, आप कह सकते हैं कि गुरुजी ने हमें बताया है कि हम समय लें, और इसलिए आप ऐसा करने में समय लेंगे। इसकी अनुमति नहीं है! आपको अपने साथ सख्त होना चाहिए, हालांकि हम आपको क्रमबद्ध सुधार करने देते हैं। यदि आप यह सब एक साथ आज ही कर पाये, तो आप आज एक बुद्ध होंगे। इस प्रकार, यह वास्तविक नहीं है। आप इसे क्रमबद्ध प्राप्त कर सकेंगे।

जिसका हम त्याग करते हैं वह वास्तव में बुरी वस्तु है। यह क्या है? यह कर्म है, और यह विभिन्न मानव मोहभावों के साथ ही साथ चलता है। उदाहरण के लिए, साधारण लोगों के पास सभी प्रकार के बुरे विचार होते हैं। निजी-लाभ के लिए वे अनेक बुरे कार्य करते हैं और इस काले पदार्थ, कर्म को प्राप्त कर लेते हैं। इसका संबंध सीधे हमारे मन से है। इस बुरी वस्तु को हटाने के लिए, आपको पहले अपने मन को बदलना पड़ेगा।

कर्म का रूपांतरण

श्वेत पदार्थ और काले पदार्थ के बीच में एक रूपांतरण की प्रक्रिया होती है। एक-दूसरे के बीच कोई मतभेद हो जाने के बाद, यह रूपांतरण की प्रक्रिया घटित होती है। जब व्यक्ति एक अच्छा कार्य करता है, तो उसे श्वेत पदार्थ, द की प्राप्ति होती है। जब व्यक्ति कोई बुरा कार्य करता है, उसे काले पदार्थ, कर्म की प्राप्ति होती है। इसमें एक वंशानुगत हस्तांतरण की प्रक्रिया भी है। कोई पूछ सकता है, "क्या यह इसलिए है

क्योंकि उसने अपने जीवन के आरंभ में बुरे कार्य किये थे?" यह आवश्यक नहीं कि यह इसी प्रकार हो क्योंकि यह कर्म केवल एक जीवनकाल में एकत्रित नहीं हुआ है। साधकों के समुदाय में माना जाता है कि मूल-आत्मा की मृत्यु नहीं होती। यदि मूल-आत्मा की मृत्यु नहीं होती, व्यक्ति ने इस जीवन से पहले सामाजिक कार्यकलाप किये होंगे। इसलिए हो सकता है उस पर किसी का कुछ उधार हो, उसने किसी को परेशान किया हो, या कुछ और बुरे कार्य किये हों जैसे किसी को मारना, जिनसे यह कर्म उत्पन्न होता है। ये वस्तुऐं दूसरे आयाम में जमा होती जाती हैं, और व्यक्ति उन्हें सदा ढोता रहता है; ऐसा ही श्वेत पदार्थ के लिए भी सत्य है। केवल यही एक स्रोत नहीं है, क्योंकि एक और परिस्थिति भी होती है। परिवार में वंशानुगत रूप से पूर्वज भी बाद के वंशों के लिए कर्म एकत्रित करके छोड़ सकते हैं। विगत में, वयोवृद्ध कहा करते थे : "व्यक्ति को द एकत्रित करना चाहिए, और व्यक्ति के पूर्वजों ने द एकत्रित किया है। यह व्यक्ति द को लुटा रहा है और द बर्बाद कर रहा है।" यह बहुत उचित कहा गया था। आजकल, साधारण लोग इस कहावत पर ध्यान नहीं देते। यदि आप उन युवाओं को द की हानि करने और द नष्ट करने के बारे में बताएं, वे इसे जरा भी हृदय से नहीं लेंगे। देखा जाए तो, इसका अर्थ वास्तव में बहुत प्रगाढ़ है। यह केवल आधुनिक लोगों का विचारात्मक और आध्यात्मिक आदर्श मात्र नहीं है, बल्कि इसका एक वास्तविक भौतिक अस्तित्व भी है। हमारे मानव शरीर में दोनो प्रकार के पदार्थ होते हैं।

किसी ने पूछा, "क्या ऐसा है यदि किसी व्यक्ति के पास बहुत अधिक काला पदार्थ है तो वह ऊँचे स्तरों की ओर अभ्यास नहीं कर पायेगा?" ऐसा कहा जा सकता है, क्योंकि बहुत अधिक काले पदार्थ के होने से, व्यक्ति के ज्ञानोदय के गुण पर प्रभाव पड़ता है। क्योंकि यह व्यक्ति के शरीर के चारों ओर एक प्रभाव क्षेत्र बना लेता है और व्यक्ति को ठीक बीच में घेर लेता है, जिससे वह विश्व की प्रकृति ज़न-शान-रेन से कट जाता है। इस प्रकार, इस व्यक्ति का ज्ञानोदय का गुण निम्न हो सकता है। जब लोग साधना अभ्यास और चीगोंग के बारे में बात करते हैं तो यह व्यक्ति इन सब को अंधविश्वास मानता है, और उन पर बिल्कुल भी विश्वास नहीं करता। वह उन्हें उपहासपूर्ण मानता है। यह अक्सर इस प्रकार होता है, किन्तु सदैव नहीं। क्या ऐसा है कि इस व्यक्ति के लिए साधना अभ्यास करना बहुत कठिन है और वह उच्च स्तर का गोंग प्राप्त नहीं कर पायेगा? ऐसा नहीं है। हम कह चुके हैं कि दाफा असीमित है, और साधना

अभ्यास करना पूरी तरह आपके हृदय पर निर्भर करता है। गुरु आपको प्रवेश द्वार में से ले जाते हैं, और यह आपके अपने ऊपर निर्भर करता है कि आप साधना अभ्यास करें। यह पूरी तरह इस पर निर्भर करता है कि आप किस प्रकार, स्वयं साधना अभ्यास करते हैं। आप साधना अभ्यास कर पाते हैं यह पूरी तरह इस पर निर्भर करता है कि आप कितना सहन कर पाते हैं, बलिदान कर पाते हैं, और पीड़ा सहन कर पाते हैं। यदि आप अपना मन समर्पित कर दें, तो कठिनाइयां आपको नहीं रोक सकतीं। मैं कहूँगा कि कोई समस्या नहीं है।

एक व्यक्ति जिसके पास बहुत सा काला पदार्थ है उसे उस व्यक्ति की तुलना में अधिक बलिदान करना पड़ेगा जिसके पास बहुत सा श्वेत पदार्थ है। क्योंकि श्वेत पदार्थ का सीधे विश्व की प्रकृति ज़न-शान-रेन के साथ समावेश होता है, जब तक व्यक्ति मतभेदों के बीच अपना शिनशिंग बढ़ाता रहता है, उसका गोंग बढ़ता रहता है। यह इतना सरल है। व्यक्ति जिसके पास बहुत सा द है उसका ज्ञानोदय का गुण अच्छा होता है। वह शारीरिक और मानसिक कठिनाइयों को सहन कर सकता है। यदि यह व्यक्ति शारीरिक कठिनाइयों को अधिक झेलता है और मानसिक को कम, उसका गोंग तब भी बढ़ता है। यह उस व्यक्ति के साथ नहीं होता जिसका काला पदार्थ बहुत अधिक है, क्योंकि उसे पहले इस प्रक्रिया से गुजरना आवश्यक होता है : उसे काले पदार्थ को श्वेत पदार्थ में परिवर्तित करना होता है। यह प्रक्रिया भी बहुत दु:खदायी है। इसलिए, व्यक्ति जिसका ज्ञानोदय का गुण निम्न होता है उसे अक्सर अधिक कठिनाइयां झेलनी पड़ती हैं। बहुत अधिक कर्म और निम्न ज्ञानोदय के गुण के कारण, उस व्यक्ति के लिए साधना करना अधिक कठिन होता है।

उदाहरण के लिए, इस स्थिति को देखें। आइये देखें कि यह व्यक्ति किस प्रकार साधना करता है। बैठ कर ध्यान मुद्रा करने के लिए यह आवश्यक है कि दोनों पैर एक-दूसरे के ऊपर लम्बे समय तक रखे जायें। इस मुद्रा में बैठने के बाद पैरों में दर्द होने लगता है और पैर सुन्न हो जाते हैं। जैसे समय बीतता है, व्यक्ति को बहुत असुविधाजनक लगेगा और उसके बाद वह बेचैन होने लगेगा। शारीरिक और मानसिक पीड़ा से शरीर और मन दोनों बहुत बेचैन हो सकते हैं। कुछ लोग इस प्रकार बैठे हुए, पैरों में दर्द सहन नहीं कर पाते और पैरों को नीचे करके इसे छोड़ देना चाहते हैं। कुछ लोग कुछ देर अधिक बैठते ही इसे और सहन नहीं कर पाते। जैसे ही पैरों को नीचे रख

दिया जाता है, व्यक्ति का अभ्यास व्यर्थ जाता है। जैसे ही पैरों में दर्द होता है, वह पैरों को खोल कर हिला-डुला कर दोबारा मुद्रा में बैठ जाता है। हमने पाया है कि इससे कुछ भी लाभ नहीं होता। यह इसलिए क्योंकि हमने देखा है कि जब पैरों में दर्द होता है, तब काला पदार्थ पैरों की ओर चला जाता है। यह काला पदार्थ कर्म है जिसे पीड़ा झेलने द्वारा हटाया जा सकता है; इसे द में परिवर्तित किया जा सकता है। जैसे ही दर्द अनुभव होता है, कर्म का निष्कासन आरंभ हो जाता है। जितना कर्म निकलता है, उतना ही अधिक दर्द पैरों में अनुभव होता है। इसलिए, पैरों में दर्द अकारण ही नहीं आता। अक्सर, बैठ कर ध्यान मुद्रा करने में दर्द रूक-रूक कर अनुभव होता है। एक दर्द के बहुत दु:खदायी पल के बाद, यह समाप्त हो जाता है और कुछ राहत मिलती है। जल्द ही दर्द फिर से आरंभ हो जाता है। यह अक्सर इस प्रकार होता है।

जैसे कर्म टुकड़ों-टुकड़ों में निष्कासित होता है, एक भाग के निकल जाने के बाद कुछ अच्छा लगता है। जल्द ही दूसरा भाग आ जाता है, और पैरों में दोबारा दर्द अनुभव होने लगता है। काले पदार्थ के निकल जाने पर, यह विलुप्त नहीं होता, क्योंकि यह पदार्थ नष्ट नहीं होता। निष्कासित हो जाने पर, यह सीधे श्वेत पदार्थ में परिवर्तित हो जाता है, जो द है। इसे इस प्रकार परिवर्तित क्यों किया जा सकता है? यह इसलिए, क्योंकि इस व्यक्ति ने दु:ख भोगा है, बलिदान किया है, और कठिनाइयों को सहन किया है। हम कह चुके हैं कि द की प्राप्ति कठिनाइयों को सहन करने और झेलने से होती है, या अच्छे कार्यों को करने से होती है। इसलिए, बैठने वाली ध्यान मुद्रा में यह स्थिति आएगी। कुछ लोगों के पैरों में जैसे ही दर्द आरंभ होता है वे तुरंत ही उन्हें नीचे रख लेते हैं, और वे पैरों को हिला-डुला कर दोबारा ध्यान मुद्रा में बैठते हैं। इससे कुछ भी प्राप्त नहीं होगा। जब खड़े होकर व्यायाम किया जाता है, चक्र-धारण करने के व्यायाम में हाथों में थकान हो सकती है। जब व्यक्ति इसे और सहन नहीं कर पाता और हाथों को नीचे कर लेता है, तब वह कुछ प्राप्त नहीं करता। वह थोड़ा दर्द क्या मायने रखता है? मैं कहूँगा यदि कोई व्यक्ति हाथों को इसी प्रकार ऊपर रखकर साधना में सफल हो सके तो यह बहुत ही सरल होगा। यही है जो होगा जब लोग बैठने वाली ध्यान मुद्रा का अभ्यास करते हैं।

हमारी अभ्यास पद्धति मूल रूप से इसी प्रकार आगे नहीं बढ़ती, हालांकि इसका एक भाग अवश्य ही इस बारे में भूमिका अदा करता है। अधिकांश स्थितियों में,

व्यक्ति कर्म का रूपांतरण एक-दूसरे के बीच शिनशिंग मतभेदों द्वारा करता है, और यहीं पर इसकी अभिव्यक्ति होती है। जब कोई किसी मतभेद में होता है, तो एक-दूसरे के बीच संघर्ष शारीरिक दु:खों को भी पार कर जाते हैं। मैं कहूँगा कि शारीरिक दु:ख सहन करने में सबसे सरल होते हैं, क्योंकि उन पर दांतों को जोर से भींच कर भी पार पाया जा सकता है। जब एक-दूसरे के बीच मतभेद होता है, तो मन को नियंत्रण में रखना सबसे कठिन होता है।

उदाहरण के लिए, कार्यस्थल पहुंचने पर, जब कोई व्यक्ति दो लोगों को अपनी बुरी तरह निंदा करते हुए सुनता है तो वह बहुत क्रोधित हो जाता है। हालांकि, हमने कहा है कि एक अभ्यासी होते हुए व्यक्ति को प्रहार और अपमान मिलने पर भी वापस नहीं लड़ना चाहिए, बल्कि अपना व्यवहार एक ऊँचे आदर्श के साथ रखना चाहिए। इस प्रकार, वह सोचता है कि गुरुजी ने कहा है कि अभ्यासी होते हुए हमें औरों के समान नहीं होना चाहिए और अपना व्यवहार और अच्छा रखना चाहिए। वह उन लोगों के साथ झगड़ा नहीं करेगा। किन्तु साधारणत: जब कोई समस्या आती है, यदि यह किसी व्यक्ति को मानसिक तौर पर परेशान नहीं करती, तो इसके कोई मायने नहीं है या यह व्यर्थ है और उसमें कोई सुधार नहीं ला सकती। इस प्रकार, उसका मन उसको भुला नहीं पाता और उससे परेशान होता रहता है। ऐसा हो सकता है कि उसका मन उस पर अटक गया है। वह हमेशा मुड़ कर उन दो लोगों के चेहरों को देखना चाहता है। उन्हें देखने पर, उसे दो दुष्ट दिखने वाले चेहरे एक आवेगपूर्ण वार्तालाप में दिखाई पड़ते हैं। वह उसे सहन नहीं कर पाता और बहुत बेचैन हो जाता है। वह उसी समय उनसे झगड़ा भी कर सकता है। जब एक-दूसरे के बीच मतभेद होता है, तो अपने मन को नियंत्रण में रखना बहुत कठिन होता है। मैं कहूँगा कि यदि सभी समस्याओं का हल बैठने वाली ध्यान मुद्रा में ही निकल जाये तो यह सरल होगा, यह हमेशा इस प्रकार नहीं होगा।

इसी प्रकार, अपने भविष्य के साधना अभ्यास में आप सभी प्रकार की कठिनाइयों से गुजरेंगे। इन कठिनाइयों के बिना आप साधना अभ्यास कैसे कर सकते हैं? यदि सभी एक-दूसरे से अच्छे बने रहें और कोई भी स्वार्थ के मतभेद या मानव मन की रूकावटें न हो, तो केवल आपके वहां बैठे रहने से आपके शिनशिंग में बढ़त कैसे हो सकती है? ऐसा असंभव है। व्यक्ति को वास्तविक अभ्यास द्वारा स्वयं को सच्चे रूप से दृढ़ करना और उन्नत करना आवश्यक है। कोई पूछता है, "हमें साधना अभ्यास में

हमेशा कठिनाइयां क्यों आती हैं? ये समस्यायें साधारण लोगों की समस्याओं से बहुत भिन्न नहीं होतीं।" यह इसलिए क्योंकि आप साधना साधारण लोगों के बीच कर रहे हैं। आपको अचानक ही आपका सर जमीन की ओर करके उल्टा नहीं लटका दिया जायेगा, जिससे आप हवा में लटक कर दु:ख भोगें- यह इस प्रकार नहीं होगा। सभी कुछ रोजमर्रा की परिस्थिति के समान ही होगा, जैसे आज आपको कोई परेशान कर सकता है, कोई आपको क्रुद्ध कर सकता है, कोई आपके साथ बुरा बर्ताव कर सकता है, या कोई अचानक आपसे बिना सम्मान के बोल सकता है। यह सब यह देखने के लिए है कि आप इन परिस्थितियों में कैसे बर्ताव करते हैं।

ये समस्याएं आपके सामने क्यों आती हैं? वे सभी आपके अपने कर्म द्वारा उत्पन्न होती हैं। हमने पहले ही आपके लिए इनके बहुत से भागों को हटा दिया है, और आपके लिए यह छोटा सा अंश छोड़ा है जिसे विभिन्न स्तरों पर कठिनाइयों में बांट दिया है, जिससे आपके शिनशिंग में उन्नती हो सके, आपका मन दृढ़ हो सके, और आपके विभिन्न मोहभाव दूर हो सकें। ये सभी आपकी अपनी कठिनाइयां हैं जिनका हम आपके शिनशिंग में सुधार के लिए उपयोग करते हैं, और आप इन पर पार पा सकेंगे। जब तक आप अपने शिनशिंग को उठाते रहेंगे, आप इन पर पार पा सकते हैं। जब तक आप स्वयं ही ऐसा न करना चाहें तो यह नहीं होगा, अन्यथा, यदि आप उन पर पार पाना चाहें तो आप सफल हो सकते हैं। इसलिए अब से आगे जब आप किसी से मतभेद का सामना करते हैं तो आपको इसे एक अकारण हुई घटना नहीं मान लेना चाहिए। यह इसलिए क्योंकि जब कोई मतभेद होता है, तो यह अचानक होगा। किन्तु यह अकारण नहीं है- यह आपके शिनशिंग में सुधार करने के लिए है। जब तक आप स्वयं को एक अभ्यासी मानते हैं, आप इसे उचित प्रकार से संभाल सकते हैं।

नि:संदेह, आपको किसी कठिनाई या मतभेद की समय से पहले ही जानकारी नहीं दी जायेगी। यदि आपको सब कुछ बता दिया जाये तो आप साधना अभ्यास कैसे कर सकते हैं? इसकी कोई उपयोगिता नहीं रहेगी। वे अक्सर अचानक ही होते हैं जिससे वे व्यक्ति के शिनशिंग को जांच सकें और उसके शिनशिंग में वास्तव में सुधार कर सकें। केवल तभी यह देखा जा सकता है कि व्यक्ति अपने शिनशिंग को बनाये रख पाता है या नहीं। इसलिए, जब कोई मतभेद होता है, यह अकारण ही नहीं होता। यह विषय साधना अभ्यास के पूरे क्रम के दौरान और कर्म के रूपांतरण में आता रहेगा। भले ही

साधारण व्यक्ति कुछ भी सोचे, यह शारीरिक दु:ख की तुलना में कहीं अधिक कठिन है। आप केवल व्यायामों को कुछ देर अधिक करके गोंग कैसे बढ़ा सकते हैं जब आपके हाथ उठाये रखने से दर्द कर रहे हों और आपके पैर खड़े रहने से थके जा रहे हों? आप गोंग को केवल कुछ घंटे अधिक व्यायाम करके कैसे बढ़ा सकते हैं? उसका उपयोग केवल व्यक्ति के मूल-शरीर को रूपांतरित करने के लिए होता है, किन्तु तब भी इसे शक्ति द्वारा दृढ़ किया जाना आवश्यक है। यह व्यक्ति के स्तर के सुधार में मदद नहीं करता। मानसिक रूप से कठिनाइयों पर पार पाना ही व्यक्ति के स्तर में वास्तविक सुधार की कुंजी है। यदि कोई केवल शारीरिक परेशानी द्वारा सुधार ला पाता, तो मैं कहूँगा कि चीनी किसान सबसे अधिक परेशानी सहन करते हैं। तब, क्या उन सब को चीगोंग गुरु नहीं बन जाना चाहिए? भले ही आप शारीरिक रूप से कितनी ही परेशानी उठाते हों, किन्तु आप उतनी परेशानी नहीं उठा सकते जितनी वे उठाते हैं, जो हर रोज खेतों में तपते सूर्य के नीचे कड़ा और मेहनतभरा काम करते हैं। यह उतना सरल विषय नहीं है। इसलिए हम कह चुके हैं कि स्वयं में वास्तविक सुधार लाने के लिए, व्यक्ति को सच्चे रूप से अपने मन को उठाना चाहिये। केवल तभी व्यक्ति सच्चे रूप से अपना उत्थान कर सकता है।

कर्म परिवर्तन की प्रक्रिया के दौरान, स्वयं को नियंत्रण में रखने के लिए आपको सदैव एक परोपकारी हृदय और दयापूर्ण मन बनाये रखना होगा- न कि साधारण लोगों की तरह जो परिस्थिति को उलझा देते हैं। यदि आप अचानक ही किसी समस्या के सम्मुख हो जायें, तो आप इसे ठीक से संभाल सकेंगे। जब आप सदैव परोपकार और करूणा का हृदय बनाये रखते हैं, यदि कोई समस्या अचानक ही उठ खड़ी हो, तब आपके पास मतभेद को कम करने और सोचने के लिए समय या स्थान रहेगा। यदि आप हमेशा दूसरों के साथ प्रतिद्वन्द करने और लड़ाई-झगड़े के बारे में सोचते हैं, तो मैं कहूँगा कि जब कभी कोई समस्या होगी आप दूसरों के साथ झगड़ा कर बैठेंगे- यह निश्चित है। इस प्रकार, जब आप किसी मतभेद का सामना करते हैं, मैं कहूँगा कि यह आपके काले पदार्थ को श्वेत पदार्थ में परिवर्तित करने के लिए है।

जब हमारी मनुष्यजाति आज इस सीमा तक विकसित हो गई है, लगभग हर कोई कर्म के ऊपर कर्म लेकर पैदा हुआ है, और हर किसी के शरीर पर बहुत अधिक कर्म है। इसलिए, कर्म के रूपांतरण में यह परिस्थिति अक्सर होती है : जब आपका गोंग

बढ़ता है और आपके शिनशिंग में सुधार होता है, तब आपका कर्म निकलता जाता है और रूपांतरित होता जाता है। जब व्यक्ति के सामने कोई मतभेद आता है, यह एक-दूसरे के बीच शिनशिंग समस्या के रूप में व्यक्त हो सकता है। यदि आप इसे सहन कर सकते हैं, आपका कर्म निकल जायेगा, आपके शिनशिंग में सुधार होगा, और साथ ही आपका गोंग भी बढ़ जायेगा। ये सभी एक साथ ही आयेंगे। विगत में लोगों के पास आरंभ से ही बहुत सा द और अच्छा शिनशिंग होता था। जब तक वे कुछ कठिनाइयां सहन करते थे, वे अपने गोंग को बढ़ा सकते थे। आज लोग उस तरह नहीं हैं। जैसे ही वे पीड़ित होते हैं, वे साधना अभ्यास नहीं करना चाहते। इसके अतिरिक्त, उनका ज्ञानोदय कम हो गया है, जिससे उनके लिए साधना अभ्यास करना कठिन हो गया है।

साधना अभ्यास में, दो परिस्थितियां हो सकती हैं जब आप किसी मतभेद का सामना करते हैं या जब दूसरे आपके साथ दुर्व्यवहार करते हैं। एक यह कि हो सकता है आपने अपने पिछले जन्म में इस व्यक्ति के साथ दुर्व्यवहार किया हो। आप अपने हृदय में सोचते हैं यह अनुचित है, "यह व्यक्ति मेरे साथ इस प्रकार व्यवहार कैसे कर सकता है?" तब आपने इस व्यक्ति के साथ अतीत में इस प्रकार व्यवहार क्यों किया था? आप कह सकते हैं कि आप उस समय वास्तव में यह नहीं जानते थे, और इस जीवन का दूसरे जीवन से कोई संबंध नहीं है। इससे बात नहीं बनेगी। एक और विषय है। मतभेदों में, कर्म के रूपांतरण का विषय जुड़ा रहता है। इसलिए मतभेदों का सामना करते समय हमें क्षमावान होना चाहिए न कि साधारण लोगों की तरह पेश आना चाहिए। यह कार्यस्थलों या दूसरे काम के वातावरणों पर भी लागू होना चाहिए। यह निजी व्यवसाय वाले लोगों के लिए भी सत्य है, क्योंकि उनके भी सामाजिक क्रियाकलाप होते हैं। यह असंभव है कि समाज के साथ मेलजोल न हो, कम से कम पड़ोसियों से तो संपर्क होता ही है।

सामाजिक क्रियाकलापों में व्यक्ति के सामने सभी प्रकार के मतभेद आयेंगे। उनके लिए जो साधारण लोगों के बीच साधना अभ्यास करते हैं, इससे कोई अंतर नहीं पड़ता कि आप किस प्रकार के व्यवसाय में हैं। भले ही आपके पास कितना भी धन हो, आपका पद कितना भी ऊँचा हो, या आप किसी भी प्रकार की निजी संस्था या कंपनी चलाते हों, इससे कोई अंतर नहीं पड़ता, क्योंकि आपको उचित प्रकार से व्यवसाय करना चाहिए और एक पवित्र मन बनाये रखना चाहिए। मानव समाज में सभी

व्यवसायों का अस्तित्व होना चाहिए। यह मानव हृदय है जो भ्रष्ट होता है, न कि उसका व्यवसाय। पुराने समय में एक कहावत थी : "दस में से नौ व्यापारी धोखेबाज होते हैं।" इस कहावत को साधारण लोगों ने बनाया था। मैं कहूँगा कि यह मानव हृदय पर निर्भर करता है। जब तक आपका हृदय पवित्र है और आप उचित प्रकार से व्यवसाय करते हैं, यदि आप अधिक प्रयत्न करते हैं तो आप और धन कमाने के पात्र हो जाते हैं। यह इसलिए क्योंकि जो प्रयत्न आपने साधारण लोगों के बीच लगाये हैं उसका आपको पारितोषिक मिलता है। कोई त्याग नहीं, तो कोई प्राप्ति नहीं। आपने इसके लिए मेहनत की है। कोई चाहे किसी भी सामाजिक स्तर पर हो एक अच्छा व्यक्ति बना रह सकता है। विभिन्न सामाजिक वर्गों के लोगों के लिए विभिन्न मतभेद होते हैं। उच्च वर्ग के समाज में उच्च वर्ग के मतभेद होते हैं, जो सभी उचित प्रकार से निपटाये जा सकते हैं। किसी भी समाजिक वर्ग में, कोई एक अच्छा व्यक्ति बना रह सकता है और विभिन्न इच्छाओं और मोहभावों की कम परवाह कर सकता है। व्यक्ति विभिन्न स्तरों पर अच्छा बना रह सकता है, और वह अपने सामाजिक स्तर पर साधना अभ्यास कर सकता है।

आजकल, इस देश में सार्वजनिक कंपनी हो या दूसरे संस्थान, एक-दूसरे के बीच मतभेद बहुत विचित्र हो गये हैं। दूसरे देशों में और पूरे इतिहासकाल में, यह परिस्थिति पहले कभी नहीं हुई। परिणामस्वरूप, निजी-लाभ के लिए मतभेद विशेषरूप से तीव्र दिखाई पड़ते हैं। लोग मानसिक खेल खेलते हैं और थोड़े से निजी-लाभ के लिए संघर्ष करते हैं; उनके जो विचार होते हैं और जो चालें वे चलते हैं बहुत द्वेषपूर्ण होती हैं। अच्छा व्यक्ति बनना भी कठिन है। उदाहरण के लिए, आप अपने कार्यस्थल पर आते हैं और पाते हैं कि वातावरण ठीक नहीं है। बाद में, कोई आपको बताता है कि अमुक व्यक्ति ने आपकी निन्दा की है और आपकी शिकायत अफसर को कर दी है, जिससे आपकी स्थिति खराब हो गई है। दूसरे सभी आपको विचित्र नज़रों से घूर कर देखते हैं। एक साधारण व्यक्ति इसे कैसे सहन कर सकता है? कोई इसे कैसे झेल सकता है? "यदि कोई मेरे लिए परेशानी खड़ी करता है, मैं भी वैसा ही करूंगा। यदि उसके साथ सहयोगी हैं, तो मेरे साथ भी हैं। चलो झगड़ा करें।" यदि आप साधारण लोगों के बीच यह करते हैं, वे कहेंगे कि आप एक मजबूत व्यक्ति हैं। हालांकि, एक अभ्यासी के लिए यह बिल्कुल अशोभनीय है। यदि आप एक साधारण व्यक्ति की तरह झगड़ा और संघर्ष

करते हैं, तो आप एक साधारण व्यक्ति हैं। यदि आप उससे भी अधिक करते हैं, तो आप उस साधारण व्यक्ति से भी अधिक बुरे हैं।

हमें इस विषय से किस प्रकार निपटना चाहिए? इस मतभेद में सामने पड़ जाने पर, हमें सबसे पहले मन को शांत रखना चाहिए, और हमें उस व्यक्ति की तरह बर्ताव नहीं करना चाहिए। नि:संदेह, हम विषय को दयाभाव से समझा सकते हैं, और इसमें कोई समस्या नहीं है यदि हम विषय को समझा कर स्पष्ट करें। किन्तु आपको इससे बहुत मोहभाव नहीं होना चाहिए। यदि हम इन समस्याओं का सामना करते हैं, हमें औरों की तरह संघर्ष और झगड़ा नहीं करना चाहिए। यदि आप वह करते हैं जो उस व्यक्ति ने किया, तो क्या आप एक साधारण व्यक्ति नहीं हैं? न केवल आपको उसकी तरह संघर्ष और झगड़ा नहीं करना चाहिए, बल्कि आपको अपने हृदय में उस व्यक्ति के लिए कोई द्वेषभाव भी नहीं होना चाहिए। वास्तव में, आपको उस व्यक्ति से घृणा नहीं करनी चाहिए। यदि आप उस व्यक्ति से घृणा करते हैं, तो क्या आप क्रुद्ध नहीं होते? आपने सहनशीलता का पालन नहीं किया। हम ज़न-शान-रेन का अभ्यास करते हैं, और कहा जाए तो आपके पास और भी कम करूणा है। इसलिए आपको उसकी तरह नहीं होना चाहिए या उससे क्रुद्ध नहीं होना चाहिए, भले ही उसने आपको इस बुरी परिस्थिति में डाल दिया जिसमें आप अपना सर भी नहीं उठा सकते। उससे क्रुद्ध न होकर, आपको अपने हृदय में उसे धन्यवाद देना चाहिए और सच्चाई से उसका धन्यवाद करना चाहिए। एक साधारण व्यक्ति इस प्रकार सोच सकता है : "क्या यह आह क्यू[1] बनने जैसा नहीं है?" मैं आपको बता रहा हूँ कि यह ऐसा नहीं है।

आप सब यह सोचें : आप अभ्यासी हैं। क्या आपके लिए यह आवश्यक नहीं कि आपका आदर्श बहुत ऊँचा होना चाहिए? साधारण लोगों के नियम आप पर लागू नहीं होने चाहिए, क्या यह सही है? एक अभ्यासी होते हुए, जो आप प्राप्त करते हैं क्या वह ऊँचे स्तरों का नहीं है? इस प्रकार, यह आवश्यक है कि आप उच्च स्तर के नियमों का पालन करें। यदि आप वह करते हैं जो उस व्यक्ति ने किया, तो क्या आप उसी के समान नहीं हैं? तब, आपको उसका धन्यवाद क्यों करना चाहिए? इसके बारे में सोचें : आप क्या प्राप्त करेंगे? इस विश्व में, एक नियम है जो कहता है : "यदि कोई त्याग नहीं, तो कोई प्राप्ति नहीं।" कुछ प्राप्त करने के लिए, त्याग करना आवश्यक है। उस व्यक्ति ने आपको साधारण लोगों के बीच एक बुरी परिस्थिति में डाल दिया, और वह उस वर्ग से

है जिसने आपकी हानि द्वारा लाभ प्राप्त किया है। वह आपको जितनी बुरी परिस्थिति में डालता है उसका प्रभाव उतना ही अधिक होता है, उतना ही अधिक आप सहन करते हैं और उतना ही द उसे खोना पड़ेगा। यह सारा द आपको दे दिया जायेगा। जबकि आप वह सब सहन कर रहे हैं, आप इसकी कम परवाह करें और इसे मन में गंभीरता से न लें।

इस विश्व में, एक और भी नियम है : यदि आपने बहुत कठिनाई सही है, आपके शरीर का कर्म रूपांतरित कर दिया जायेगा। क्योंकि आपने कठिनाई सही है, जितना भी आपने सहन किया है वह सब उसी के बराबर द में रूपांतरित कर दिया जायेगा। क्या यह द नहीं है जो अभ्यासी चाहते है? आपको दो तरह से लाभ होगा, क्योंकि आपका कर्म भी हटा दिया गया है। यदि उस व्यक्ति ने आपके लिए यह परिस्थिति उत्पन्न नहीं की होती, तो आप अपने शिनशिंग में सुधार कैसे कर पाते? यदि आप और मैं दोनो एक दूसरे के लिए अच्छे बने रहते हैं और शांत रहते हैं, तो गोंग को बढ़ा पाना कैसे सभंव हो सकता है? क्योंकि उस व्यक्ति ने आपके लिए इस मतभेद को पैदा किया जिससे शिनशिंग में सुधार करने का अवसर मिला, और आप इसका उपयोग स्वयं अपने शिनशिंग को उठाने में कर सकते हैं। क्या इस प्रकार आपका शिनशिंग नहीं बढ़ जाता? आपको तीन तरह से लाभ प्राप्त हुआ है। आप एक अभ्यासी हैं। शिनशिंग में सुधार से, क्या आपका गोंग भी नहीं बढ़ेगा? आपने एक ही बार में चार तरह से लाभ प्राप्त किया है। आपको उस व्यक्ति को धन्यवाद क्यों नहीं देना चाहिए? आपको सच्चाई से तहे दिल से उसे धन्यवाद देना चाहिए- यह वास्तव में ऐसा है।

नि:संदेह, उस व्यक्ति का विचार उचित नहीं था, अन्यथा उसने आपको द नहीं दिया होता। किन्तु उसने वास्तव में आपके शिनशिंग को बढ़ाने के लिए परिस्थिति उत्पन्न की। दूसरे शब्दों में, हमें शिनशिंग की साधना पर ध्यान देना चाहिए। जिस समय शिनशिंग की साधना की जाती है, उसी समय कर्म हटता है और द में परिवर्तित हो जाता है जिससे आप एक ऊँचे स्तर की ओर उठ सकते हैं; ये सब साथ-साथ होता है। उच्च स्तर के दृष्टिकोण से, ये सब नियम बदल जाते हैं। एक साधारण व्यक्ति इसे नहीं समझेगा। जब आप इन नियमों को ऊँचे स्तरों से देखते हैं, तो सब कुछ भिन्न होता है। साधारण लोगों के बीच आप इन नियमों को सही पा सकते हैं, किन्तु वे वास्तव में सही नहीं हैं। केवल वह जो ऊँचे स्तरों से देखा जाता है वास्तव में सही होता है। यह अक्सर इसी प्रकार होता है।

मैंने सभी को नियम विस्तार से समझा दिये हैं, और मुझे आशा है कि भविष्य के साधना अभ्यास में हर कोई एक अभ्यासी की भांति आचरण करेगा और वास्तव में साधना अभ्यास करेगा, क्योंकि यहां पर नियम समझा दिये गये हैं। शायद कुछ लोग, क्योंकि वे साधारण लोगों के बीच रहते हैं, अब भी सोचते हैं कि वास्तविक भौतिक लाभ के सामने, साधारण व्यक्ति बने रहना व्यावहारिक है। साधारण लोगों के प्रवाह के बीच वे अभी भी अपना आचरण उच्च आदर्श के साथ नहीं रख पाते। वास्तव में, साधारण लोगों के बीच अच्छा व्यक्ति बनने के लिए ऐसे नायक हैं जो पथप्रदर्शक की भूमिका निभाते हैं, किन्तु वे साधारण लोगों के बीच नायक हैं। यदि आप एक अभ्यासी बनना चाहते हैं, तो यह पूरी तरह आपके हृदय की साधना और आपके अपने ज्ञानोदय पर निर्भर करता है क्योंकि इसमें कोई पथप्रदर्शक नहीं है। सौभाग्य से, आज हमने इस दाफा को सार्वजनिक कर दिया है। विगत में, यदि आप साधना अभ्यास करना चाहते थे, आपको सिखाने वाला कोई नहीं था। इस प्रकार, आप दाफा का अनुसरण कर सकते हैं और शायद आप बेहतर करेंगे। आप साधना अभ्यास कर पाते हैं या इसमें सफल हो पाते हैं और आप किस स्तर पर पहुंचते हैं यह आपके अपने ऊपर निर्भर करता है।

नि:संदेह, जिस प्रकार कर्म का रूपांतरण होता है वह पूरी तरह वैसे ही नहीं होता जैसे मैंने वर्णन किया; यह दूसरे स्थानों में भी व्यक्त हो सकता है। यह समाज या घर में हो सकता है। राह पर चलते हुए या दूसरे सामाजिक वातावरण में, व्यक्ति के सामने कुछ कठिनाई आ सकती है। आपके उन सभी मोहभावों को छुड़वाया जायेगा जिन्हें साधारण लोगों के बीच नहीं छोड़ा जा सकता। जब तक वे आपके पास हैं, उन सभी मोहभावों को विभिन्न वातावरणों में छोड़ना आवश्यक है। आपको ठोकर लगने दी जायेगी, जिससे आपको ताओ का ज्ञानोदय हो सके। इस प्रकार व्यक्ति साधना अभ्यास से गुजरता है।

विशिष्ट रूप से एक और स्थिति आती है। साधना अभ्यास के दौरान आप में से कई पायेंगे कि चीगोंग का अभ्यास करते समय, आपके पति या पत्नी अक्सर बहुत अप्रसन्न हो जायेंगे। जैसे ही आप व्यायाम आरंभ करते हैं, आपके पति या पत्नी आप पर क्रुद्ध होंगे। यदि आप कुछ और करते हैं, तो वे परवाह नहीं करेंगे। भले ही आप *माहजोंग* खेलते हुए कितना ही समय बरबाद कर दें, आपके पति या पत्नी अप्रसन्न तो

होंगे किन्तु उतना नहीं जितना तब यदि आप चीगोंग का अभ्यास करें। आपका चीगोंग अभ्यास आपके पति या पत्नी के साथ कोई विघ्न नहीं डालता, और कितनी ही अच्छी बात है कि आप शरीर को व्यायाम द्वारा स्वस्थ रख रहे हैं, और आप अपने पति या पत्नी को परेशान भी नहीं कर रहे। किन्तु जैसे ही आप चीगोंग का अभ्यास आरंभ करते हैं, आपका पति या पत्नी वस्तुओं को आस-पास फेंकना आरंभ कर देंगे और झगड़ा शुरू कर देंगे। कुछ दंपत्ति चीगोंग अभ्यास के मतभेदों को लेकर तलाक तक पहुंच जाते हैं। बहुत से लोगों ने यह नहीं सोचा कि ऐसी स्थिति क्यों आती है। यदि आप अपने पति या पत्नी से बाद में पूछें : "यदि मैं चीगोंग का अभ्यास करता हूँ तो तुम्हें इतना क्रोध क्यों आ जाता है?" वे इसे नहीं समझा पाते और वास्तव में उन्हें कोई कारण समझ नहीं आता। "सच में, मुझे उस समय इतना गुस्सा क्यों आ गया था?" वास्तव में, क्या हो रहा है? जब व्यक्ति चीगोंग का अभ्यास करता है, उसका कर्म अवश्य ही रूपांतरित होता है। आपको हानि के बिना लाभ की प्राप्ति नहीं होगी, और जिसकी आपको हानि होती हैं वे बुरी वस्तुऐं हैं। आपको त्याग करना ही चाहिए।

हो सकता है जैसे ही आप द्वार से अंदर आऐं, आपका पति या पत्नी आप पर सीधा क्रोध का प्रहार करे। यदि आप इसे सहन कर पाते हैं, आपके आज के चीगोंग अभ्यास का प्रयत्न व्यर्थ नहीं गया। कुछ लोग जानते हैं कि चीगोंग अभ्यास में व्यक्ति को द का मान रखना चाहिए। इसलिए, इस व्यक्ति का आचरण अपनी पत्नी के साथ अक्सर बहुत अच्छा होता है। वह सोचता है, "अक्सर, यदि मैं "एक" कहता हूँ तो वह "दो" नहीं कहती। आज वह मुझ पर हुक्म चला रही है।" वह अपने व्यवहार पर नियंत्रण नहीं रख पाता और झगड़ा शुरू कर देता है। इससे आज का अभ्यास व्यर्थ जाता है। क्योंकि वहां कर्म था, वह उसे हटाने में उसकी मदद कर रही थी। किन्तु वह इसे स्वीकार नहीं कर पाया और उसके साथ झगड़ा शुरू कर दिया। इस प्रकार कर्म को नहीं हटाया जा सका। इस प्रकार की कई परिस्थितियां होती हैं और हमारे कई अभ्यासियों ने उन्हें अनुभव किया है, किन्तु उन्होंने यह नहीं सोचा कि वे इस प्रकार क्यों थीं। आपकी पत्नी कोई परवाह नहीं करती यदि आपको कुछ और करना होता। चीगोंग अभ्यास वास्तव में एक अच्छी वस्तु होनी चाहिए किन्तु वह हमेशा आपमें कमियां निकालती है। वास्तव में, आपकी पत्नी आपके कर्म हटाने में मदद कर रही है, हालांकि वह स्वयं यह नहीं जानती। वह आपसे केवल बनावटी रूप से झगड़ा नहीं कर रही है और हृदय में

अच्छी भावना रख रही है- ऐसा नहीं है। यह उसके हृदय की तह से वास्तविक क्रोध है, क्योंकि जो कोई कर्म को प्राप्त करता है वह बेचैन अनुभव करता है। यह निश्चित ही इस प्रकार है।

शिनशिंग को बढ़ाना

क्योंकि विगत में कई लोग अच्छे शिनशिंग का आचरण नहीं रख पाते थे, इससे कई समस्यायें होती थीं। जब उनका अभ्यास एक विशिष्ट स्तर पर पहुंच जाता था, वे और आगे विकास नहीं कर पाते थे। कुछ लोगों का आरंभ से ही शिनशिंग स्तर ऊँचा होता है। अभ्यास के साथ उनका दिव्य नेत्र जल्द ही खुल जाता है और वे किसी विशिष्ट स्तर तक पहुंच पाते हैं। क्योंकि इस व्यक्ति का जन्मजात गुण अपेक्षाकृत अच्छा है और उसका शिनशिंग स्तर ऊँचा है, उसका गोंग तेजी से बढ़ता है। जब तक उसका गोंग उसके शिनशिंग स्तर तक पहुंचता है, तब गोंग भी उस स्तर तक बढ़ जाता है। यदि वह निरंतर गोंग को बढ़ाते रहना चाहता है, तो मतभेद भी बहुत गंभीर होते जायेंगे, क्योंकि इसके लिए यह आवश्यक है कि वह अपने शिनशिंग को बढ़ाता रहे। यह विशेष रूप से एक अच्छे जन्मजात गुण वाले व्यक्ति के लिए सत्य है। वह सोचता है कि उसका गोंग बहुत अच्छी तरह बढ़ता जा रहा था और अभ्यास भी बहुत अच्छा चल रहा था। अचानक ही इतनी समस्याऐं क्यों आ गई हैं? कुछ ठीक नहीं हो रहा। लोग उससे ठीक बर्ताव नहीं करते, और उसका अफसर भी उसकी तरफदारी नहीं करता। यहां तक कि घर का वातावरण भी बहुत तनावपूर्ण हो गया है। अचानक ही इतनी सारी समस्याऐं क्यों आ गई हैं। हो सकता है कि इस व्यक्ति को स्वयं समझ न आये कि ऐसा क्यों हो रहा है। अपने अच्छे जन्मजात गुण के कारण, वह एक विशिष्ट स्तर तक पहुंच चुका है जिससे यह स्थिति पैदा होती है। किन्तु यह किसी अभ्यासी के लिए साधना पूर्ण करने के लिए अन्तिम मानदण्ड कैसे हो सकता है? यह साधना अभ्यास के अंत से अभी कहीं दूर है! आपको स्वयं में निरंतर सुधार करते जाना चाहिए। आपके उस थोड़े से जन्मजात गुण के कारण आप इस अवस्था पर पहुंचे हैं। और आगे उठने के लिए, आदर्श को भी साथ ही बढ़ाना आवश्यक है।

कोई कह सकता है, "मैं कुछ और धन कमाऊँगा जिससे मेरे परिवार की अच्छी देख-रेख हो सके और मुझे किसी बारे में चिंता न करनी पड़े। इसके बाद, मैं साधना करूंगा।" मैं कहूँगा कि यह आपका इच्छा से भरा विचार है। आप औरों के जीवन में विघ्न डालने में असमर्थ हैं, और न ही आप औरों के भाग्य को नियंत्रित कर सकते हैं, जिसमें आपकी पत्नी, बेटे, बेटियां, माता-पिता, और भाई शामिल हैं। क्या आप उन वस्तुओं का निर्णय कर सकते हैं? आप व्यायामों को चैन के साथ और आरामपूर्वक कैसे कर सकते हैं? ऐसी स्थिति कैसे हो सकती है? यही है जो आप साधारण लोगों के दृष्टिकोण से सोचते हैं।

साधना अभ्यास को कठिनाइयों के बीच किया जाना आवश्यक है जिससे यह पता लगाया जा सके कि आप विभिन्न प्रकार की मानव भावुकताओं और इच्छाओं को छोड़ सकते हैं और उनके बारे में कम परवाह कर सकते हैं। यदि आपका इन वस्तुओं से मोहभाव बना रहता है, आप साधना में सफल नहीं हो सकेंगे। हर वस्तु का अपना कर्म संबंध होता है। मानव प्राणी मानव क्यों बने रहते हैं? यह इसलिए क्योंकि मानव प्राणियों में भावुकता होती है। वे केवल इस भावुकता के लिए जीते हैं। परिवारजनों के बीच दुलार, एक स्त्री और पुरुष के बीच प्यार, माता-पिता के लिए प्यार, भावनाएं, दोस्ती, दोस्ती के लिए कुछ करना, तथा और सब कुछ, सभी इस भावुकता से संबंधित हैं। कोई व्यक्ति कुछ करना पसंद करता है या नहीं, प्रसन्न है या अप्रसन्न, किसी वस्तु से प्यार करता है या घृणा, और संपूर्ण मानव समाज में सभी कुछ इस भावुकता से आता है। यदि इस भावुकता को नहीं हटाया जाता, तो आप साधना अभ्यास करने में असमर्थ रहेंगे। यदि आप इस भावुकता से मुक्त हैं, आप पर कोई प्रभाव नहीं डाल सकता। एक साधारण व्यक्ति का मन आपको नहीं हिला पायेगा। इसके स्थान पर जो आता है वह है करूणा, जो कहीं अधिक उदार है। नि:संदेह, तुरंत ही इस भावुकता का परित्याग करना सरल नहीं है। साधना अभ्यास एक लम्बी प्रक्रिया है और अपने मोहभावों को धीरे-धीरे छोड़ते जाने की प्रक्रिया है। फिर भी, आपको अपने साथ सख्त होना चाहिए।

एक अभ्यासी होने पर, मतभेद अचानक ही आपके सामने आ जायेंगे। आपको क्या करना चाहिए? आपको सदैव करूणा और दयाभाव का हृदय बनाये रखना चाहिए। तब, जब आपके सामने कोई समस्या आती है, आप अच्छा कर सकेंगे क्योंकि

यह आपको संघर्ष को कम करने के लिए स्थान देता है। आपको सदैव औरों के लिए करूणामय और दयालु रहना चाहिए, और कुछ भी करते समय औरों का ध्यान रखना चाहिए। जब कभी आपके सामने कोई समस्या आती है, आपको पहले यह ध्यान देना चाहिए कि और लोग इस विषय को सह सकते हैं या इससे किसी को दु:ख तो नहीं पहुंचेगा। ऐसा करने पर, कोई समस्याऐं उत्पन्न नहीं होंगी। इसलिए साधना अभ्यास में आपको अपने लिए ऊँचे और अधिक ऊँचे आदर्श का पालन करना चाहिए।

कुछ लोग अक्सर इन बातों को नहीं समझ पाते। जब किसी का दिव्य नेत्र खुलता है और वह एक बुद्ध को देखता है, वह घर जा कर बुद्ध की उपासना करता है, और मन में प्रार्थना करता है, "आप मेरी मदद क्यों नहीं करते? कृपया मेरे लिए इस समस्या को हल कर दीजिए।" वह बुद्ध, निश्चित ही, इस व्यक्ति के लिए कुछ नहीं करेंगे क्योंकि यह समस्या बुद्ध द्वारा उत्पन्न की गई थी, जिससे उसका शिनशिंग बढ़ सके और उसमें कठिनाई के बीच सुधार हो सके। बुद्ध आपके लिए इस समस्या की देख-रेख कैसे कर सकते हैं? वह आपके लिए समस्या को बिल्कुल भी हल नहीं करेंगे। यदि वे आपकी समस्या को हल कर देते हैं तो आप अपना गोंग कैसे बढ़ा सकते हैं और अपने शिनशिंग में कैसे सुधार कर सकते हैं? मुख्य बात यह है कि आपका गोंग बढ़े। महान ज्ञानप्राप्त व्यक्तियों के लिए, मानव बन कर जीना उद्देश्य नहीं है, और व्यक्ति का जीवन मानव बने रहने के लिए नहीं है- इसका आपके लिए उद्देश्य है कि आप अपने मूल की ओर लौटें। मानव बहुत दु:ख भोगते हैं। ज्ञानप्राप्त व्यक्ति सोचते हैं कि व्यक्ति जितना दु:ख भोगे उतना अच्छा है, जिससे वह अपने ऋण को तेजी से चुका सके। वे इस प्रकार सोचते हैं। कुछ लोग यह नहीं समझते और यदि उनकी प्रार्थना का कोई असर नहीं होता वे बुद्ध से शिकायत करना आरंभ कर देते हैं, "आप मेरी मदद क्यों नहीं करते? मैं हर रोज आपके सामने अगरबत्ती जलाता हूँ और प्रणाम करता हूँ।" इसके कारण, हो सकता है वह बुद्ध की प्रतिमा को जमीन पर फेंक दे और उसके बाद बुद्ध की निंदा करना आरंभ कर दे। इस निंदा के परिणामस्वरूप, उसका शिनशिंग गिर जायेगा, और उसका गोंग लुप्त हो जायेगा। यह व्यक्ति जानता है कि सब कुछ चला गया, इसलिए वह बुद्ध से और भी घृणा करने लगता है, यह सोच कर कि बुद्ध उसे बर्बाद कर रहे हैं। यह व्यक्ति बुद्ध के शिनशिंग को साधारण व्यक्ति के मानदण्ड से मापता है। यह कैसे चल सकता है यदि कोई व्यक्ति उच्च स्तर की वस्तुओं को साधारण लोगों के आदर्श से

देखे? इसलिए, ऐसी बहुत सी परिस्थितियां आती हैं जब लोग अपने जीवन के दु:खों को अन्यायपूर्ण मानते हैं। कई लोग इस प्रकार गिर जाते हैं।

पिछले कुछ वर्षों में, कई महान चीगोंग गुरुओं जिनमें कई सुप्रसिद्ध भी शामिल हैं, के स्तर गिर गये हैं और वे आज कुछ नहीं हैं। नि:संदेह, वे सच्चे चीगोंग गुरु इतिहास में अपना उद्देश्य पूर्ण करके पहले ही प्रस्थान कर चुके हैं। केवल कुछ ही पीछे छूटे हैं और वे साधारण लोगों के बीच भटक गये हैं, और वे अभी भी निम्न शिनशिंग स्तर के साथ सक्रिय हैं। ये लोग अपना गोंग पहले ही खो चुके हैं। कुछ चीगोंग गुरु जो पहले सुप्रसिद्ध थे आज भी समाज में सक्रिय हैं। जब उनके गुरुओं ने देखा कि वे साधारण लोगों के बीच भटक गये हैं और स्वयं को प्रसिद्धि और निजी-लाभ की चाह से मुक्त नहीं कर सके, और जब वे निराशाजनक हो गये, उनके गुरु उनकी सह-आत्माओं को ले गये। पूरा गोंग सह-आत्मा के शरीर पर विकसित हुआ था। ऐसे बहुत से विशिष्ट उदाहरण हैं।

हमारे अभ्यास की पद्धति में, इस प्रकार की परिस्थितियां बहुत कम हैं। यदि कुछ हैं भी, तो वे न के बराबर हैं। शिनशिंग में सुधार के विषय में बहुत से प्रखर उदाहरण हैं। एक अभ्यासी शाडोंग प्रांत के एक नगर में एक कपड़ा बनाने के कारखाने में काम करता था। फालुन दाफा पढ़ने के बाद, उसने अपने सहकर्मियों को भी अभ्यास सिखाया। परिणामस्वरूप, कारखाने ने एक नया रूप धारण कर लिया। वह पहले कपड़े के कारखाने से तौलिये के टुकड़े घर ले जाया करता था, और उसी प्रकार दूसरे कर्मचारी भी करते थे। दाफा के अभ्यास के बाद, वस्तुएं घर ले जाने के स्थान पर वह उन सब वस्तुओं को वापस कारखाने में ले आया जिन्हें वह पहले घर ले गया था। जब औरों ने उसे ऐसा करते देखा, तो कोई भी वस्तुओं को घर नहीं ले जाने लगा। कुछ कर्मचारियों ने वे वस्तुऐं भी कारखाने में वापस कर दीं जिन्हें वे पहले घर ले गये थे। यह स्थिति पूरे कारखाने में हुई।

नगर के दाफा निदेशालय का एक स्वयंसेवी निर्देशक कारखाने में यह देखने गया कि फालुन दाफा अभ्यासियों का अभ्यास किस प्रकार चल रहा है। कारखाने का प्रबंधक स्वयं उससे मिलने आया : "फालुन दाफा सीखने के बाद से, ये कर्मचारी काम पर जल्दी आ जाते हैं और घर भी देर से जाते हैं। वे बहुत मेहनत से काम करते हैं और दी गई कोई भी जिम्मेदारी निभाते हैं। वे निजी-लाभ के लिए संघर्ष नहीं करते। ऐसा

करने से, उन्होंने पूरे कारखाने को एक नया ही रूप दे दिया है, और कारखाने का मुनाफा भी बढ़ गया है। आपका अभ्यास कितना प्रभावकारी है। आपके गुरु कब आ रहे हैं? मैं भी उनके व्याख्यान सुनना चाहूँगा।" फालुन दाफा में हमारी साधना का मुख्य उद्देश्य लोगों को ऊँचे स्तरों की ओर ले जाना है। जबकि इसका ऐसा करने का कोई अभिप्राय नहीं है, तो भी यह समाज में आध्यात्मिक संस्कृति ला कर एक महान रचनात्मक भूमिका अदा कर सकता है। यदि हर कोई अपने अंदर झांके और यह सोचे कि अच्छा आचरण कैसे किया जाये, मैं कहूंगा कि समाज में स्थायित्व आयेगा और मानवीय नैतिक आदर्श फिर से बढ़ेंगे।

जब मैं ताइयुआन[2] में फा और अभ्यास सिखा रहा था, वहां एक पचास वर्ष की उम्र की एक महिला अभ्यासी थी। वह और उसका पति मेरे व्याख्यानों को सुनने आये थे। जब वे चल कर सड़क के बीच तक पहुंचे, एक कार वहां से बहुत तेजी से गुजरी, और पीछे लगे आईने में उस महिला के कपड़े फंस गये। महिला के कपड़े कार के साथ फंसे होने के कारण, वह दस मीटर से भी अधिक दूरी तक घिसटती चली गई और जमीन पर आ गिरी। कार बीस मीटर आगे चलने के बाद रूकी। चालक कार से बाहर आने के बाद बहुत नाराज था : "हे, क्या तुम्हें चलते हुए दिखाई नहीं दे रहा था।" आजकल, लोग इसी तरह बर्ताव करते हैं और किसी समस्या के सामने आने पर सबसे पहले जिम्मेदारी से मुकर जाते हैं, भले ही गलती उन्हीं से हुई हो। कार के अंदर बैठे यात्री बोले : "यह तो पता करो कि महिला को कितनी चोट लगी है। हम उसे अस्पताल ले चलते हैं।" चालक अपनी सदबुद्धि में वापस आया और कहने के लिए दौड़ा : "आप कैसी हैं? क्या आपको चोट लगी है? चलिए जांच के लिए अस्पताल चलें।" यह अभ्यासी धीरे से जमीन से उठी और बोली : "मुझे कुछ नहीं हुआ है। आप जा सकते हैं।" उसने अपने कपड़ों से गंदगी झाड़ी और अपने पति के साथ चली गई।

उसने कक्षा में आकर मुझे यह कहानी बताई, और मैं बहुत प्रसन्न हुआ। हमारे अभ्यासियों के शिनशिंग में वास्तव में सुधार हुआ है। उसने मुझे कहा : "गुरुजी, आज मैंने फालुन दाफा पढ़ा था। यदि मैंने फालुन दाफा नहीं पढ़ा होता, तो मैं इस दुर्घटना को उस प्रकार न ले पाती जैसे आज किया।" आप सभी यह सोचें : एक सेवानिवृत्त व्यक्ति के लिए, आजकल कपड़ों के दाम भी इतने बढ़ गये हैं और लोगों के लिए कोई कल्याणकारी योजनाएं भी नहीं है। पचास वर्ष से ऊपर की एक महिला कार द्वारा इतनी

दूरी तक घिसटती चली गई और जमीन पर गिर गई। उसके शरीर पर कहां चोट आ सकती थी? हर जगह। वह जमीन पर बिना उठे पड़ी रह सकती थी। वह अस्पताल जाती? ठीक है। वह अस्पताल में भर्ती हो सकती थी और फिर बाहर नहीं निकलती। एक साधारण व्यक्ति इस प्रकार हो सकता था, किन्तु वह एक अभ्यासी है और उसने वैसा नहीं किया। हमने कहा है कि अच्छाई या बुराई व्यक्ति के तत्कालिक विचार से आते हैं, और उस क्षण का विचार विभिन्न परिणाम ला सकता है। उस वृद्धावस्था में, यदि वह साधारण व्यक्ति होती, क्या वह घायल नहीं होती? किन्तु उसकी त्वचा पर खरोंच तक नहीं आई। अच्छाई या बुराई उस तत्कालिक विचार से आते हैं। यदि वह वहां पड़ी रहती और कहती, "अह, मुझे बहुत दर्द है। यहां और वहां बहुत चोट लगी है।" तब, उसकी हड्डियों में वास्तव में फ्रैक्चर हो सकता था, और वह अपंग हो सकती थी। भले ही उसे कितना भी धन दिया जाता, वह अपना बाकी जीवन अस्पताल में काट कर कैसे आरामदेह हो सकती थी? आसपास खड़े लोगों को भी यह विचित्र लगा कि वृद्ध महिला ने उसका उपयोग नहीं किया और उससे धन नहीं मांगा। आजकल, मानव नैतिक आदर्श विकृत हो गये हैं। चालक वास्तव में कार बहुत तेज चला रहा था, किन्तु वह कैसे किसी को जान-बूझकर ठोकर मार सकता था? क्या उसने यह अनजाने में नहीं किया? किन्तु आज लोग इसी तरह हैं। यदि उसका उपयोग नहीं किया गया, तो आसपास खड़े लोगों को भी यह न्यायसंगत नहीं लगा। मैंने कहा है आज लोग अच्छाई और बुराई में भेद नहीं कर सकते। यदि कोई व्यक्ति दूसरे को बताता है कि वह कोई बुरा कार्य कर रहा है, तो वह इस पर विश्वास नहीं करेगा। क्योंकि मानव नैतिक आदर्श बदल गये हैं, कुछ लोगों को निजी-लाभ के अलावा कुछ दिखाई नहीं पड़ता और वे धन के लिए कुछ भी करेंगे। "यदि कोई व्यक्ति निजी-लाभ के पीछे नहीं है, तो धरती-आकाश उसे मार ही देंगे।" -आजकल यही उद्देश्य बन गया है!

बीजिंग में एक अभ्यासी अपने बच्चे को शाम को च्येनमन[3] चौक पर टहलाने के लिए लाया और उसने एक लॉटरी बेचने वाले वाहन को देखा। बच्चे को उत्साह आ गया और उसने लॉटरी खेलने के लिए कहा। उसने बच्चे को खेलने के लिए एक युआन दिया, और बच्चे का दूसरा पुरस्कार निकल आया, जो एक छोटी डीलक्स साइकिल थी। बच्चा बहुत आनंदित था। तभी पिता के मन में एक विचार आया : "मैं एक अभ्यासी हूँ। मैं इस प्रकार की वस्तु कैसे ले सकता हूँ? यदि मैं कुछ ऐसा प्राप्त करता हूँ

जिसका मैंने भुगतान नहीं किया है तब मुझे कितना द त्यागना पड़ेगा? उसने बच्चे से कहा : "हम इसे नहीं लेते। यदि तुम चाहते हो तो हम स्वयं ही एक खरीद सकते हैं।" बच्चा नाराज हो गया : "मैं आपसे इसे खरीदने के लिए मिन्नतें करता रहा, और तब आपने यह नहीं खरीदी। और अब जब मुझे यह मिल गई है तो आप मुझे रखने नहीं देते।" बच्चा बुरी तरह रोने चीखने लगा। यह व्यक्ति इस बारे में कुछ नहीं कर सका और साइकिल को घर ले आया। घर में, जितना उसने इसके बारे में सोचा, उतना ही वह बेचैन हुआ। उसने उन लोगों के पास धन भेजने के बारे में भी सोचा। तब उसने अनुमान लगाया : "लॉटरी के टिकट बिक चुके हैं, और यदि मैं उन्हें धन वापस भेजता हूँ तो क्या वे उसे आपस में नहीं बांट लेंगे? मुझे धन अपने कार्यस्थल में दान में दे देना चाहिए।"

सौभाग्य से, उसके कार्यस्थल में कई फालुन दाफा अभ्यासी थे, और उसका अफसर उसे समझ सका। यदि यह एक साधारण वातावरण या साधारण कार्यस्थल में होता, जहां आप कहते कि आप एक अभ्यासी हैं जो लॉटरी में निकली साइकिल नहीं चाहता और धन को कार्यस्थल में दान में देना चाहता है, तो अफसर भी सोचता कि आपको कुछ मानसिक समस्या है। दूसरे लोग भी कुछ टिप्पणी करते : "क्या यह व्यक्ति चीगोंग अभ्यास में भटक गया है या उसे साधना पागलपन हो गया है?" मैं कह चुका हूँ कि नैतिक आदर्श विकृत हो गये हैं। 1950 या 1960 के दशकों में, यह कोई बड़ी बात नहीं होती और बहुत साधारण होती- किसी को भी यह बात अजीब या अनोखी नहीं लगती।

हम कह चुके हैं कि भले ही मानव नैतिक आदर्श कितने ही बदल जायें, विश्व की यह प्रकृति ज़न-शान-रेन सदैव अपरिवर्तनीय रहती है। यदि कोई कहता है कि आप अच्छे हैं, हो सकता है आप वास्तव में अच्छे न हों। यदि कोई कहता है कि आप बुरे हैं, हो सकता है वास्तव में बुरे न हों। यह इसलिए क्योंकि अच्छाई और बुराई मापने के मानक विकृत हो गये हैं। केवल वही जो विश्व की इस प्रकृति के अनुरूप है एक अच्छा व्यक्ति है। यही एकमात्र मानक है जो एक अच्छे और बुरे व्यक्ति में भेद करता है, और इसकी पहचान विश्व द्वारा की जाती है। हालांकि मानव समाज में महान बदलाव आ चुके हैं, मानव नैतिक आदर्श बहुत अधिक गिर चुके हैं। मानव नैतिकता प्रतिदिन खराब होती जा रही है, और लाभ ही एकमात्र ध्येय बन गये हैं। किन्तु विश्व में बदलाव मानव जाति में बदलावों के अनुसार नहीं होते। एक अभ्यासी होते हुए, वह साधारण लोगों के

आदर्श के अनुसार आचरण नहीं कर सकता। इसकी अनुमति नहीं है कि आप जायें और कुछ भी करते रहें क्योंकि साधारण लोग उसे सही मानते हैं। जब साधारण लोग कहते हैं कि यह अच्छा है, हो सकता है कि यह अच्छा न हो। जब साधारण लोग कहते हैं यह बुरा है, हो सकता है यह बुरा न हो। इस समय में जब नैतिक आदर्श विकृत हो गये हैं, यदि आप किसी को बतायें कि वह बुरा कर रहा है, वह इस पर विश्वास नहीं करेगा! एक अभ्यासी होते हुए, व्यक्ति को विश्व की प्रकृति के अनुसार ही वस्तुऐं जांचनी चाहिए। केवल तभी वह भेद कर पायेगा कि क्या सच्चे रूप से अच्छा है और क्या वास्तव में बुरा।

शक्ति-पात

साधकों के समाज में, एक परिस्थिति होती है जिसे शक्ति-पात (*ग्वान-डिंग*) कहते हैं। शक्ति-पात बुद्ध विचारधारा के तंत्र साधना मार्ग की एक धार्मिक क्रिया है। इसका उद्देश्य है कि, शक्ति-पात की रीति के द्वारा, व्यक्ति कोई दूसरी साधना पद्धति नहीं मानेगा और इस पद्धति विशेष में सच्चे शिष्य की तरह स्वीकार किया जायेगा। अब, इसमें इतना अनोखा क्या है? यह धार्मिक औपचारिकता चीगोंग पद्धतियों में भी प्रयोग की जा रही है। न केवल इसे तंत्र में प्रयोग में किया जाता है, बल्कि ताओ पद्धति में भी। मैं कह चुका हूँ कि वे सभी जो समाज में तंत्र की पद्धति तंत्र के नाम से सिखाते हैं, पाखण्डी हैं। यह इस प्रकार क्यों है? यह इसलिए क्योंकि तांग तंत्रविद्या हमारे देश से एक हजार वर्ष से पहले ही लुप्त हो चुकी है, और इसका अस्तित्व नहीं है। भाषा की बाधा के कारण, तिब्बत की तंत्रविद्या कभी भी पूरी तरह *हान* [4] प्रदेशों में परिचित नहीं हो पायी। विशेषत:, क्योंकि यह एक गुप्त धर्म है, इसका अभ्यास मठों में गुप्त रूप से किया जाना आवश्यक है। गुरु द्वारा भी इसे गुप्त रूप से सिखाया जाना आवश्यक होता है, और गुरु व्यक्ति को गुप्त रूप से अभ्यास सिखाता है। यदि ऐसा नहीं किया जा सकता, तो इसे बिल्कुल सिखाया ही नहीं जा सकता।

कई लोग जो तिब्बत जाकर चीगोंग सीखते हैं उनका केवल यह लक्ष्य होता है: वे गुरु को ढूंढ कर तिब्बत की तंत्रविद्या सीखना चाहते हैं जिससे वे भविष्य में चीगोंग गुरु बन जायें और धनी और प्रसिद्ध हो जायें। आप सब यह सोचें : एक सच्चे, जीवित

बुद्धमत के लामा जिन्होंने सच्ची शिक्षा प्राप्त की है, उनकी दिव्य सिद्धियाँ बहुत प्रबल होती हैं और वे इस प्रकार के व्यक्ति के मन को पढ़ सकते हैं। यह व्यक्ति यहां क्यों आया है? वे इस व्यक्ति के मन को पढ़ कर तुरंत समझ जायेंगे : "तुम यहां धन और प्रसिद्धि के लिए पद्धति को सीखने और चीगोंग गुरु बनने आये हो, जो इस बुद्ध साधना पद्धति का अपमान है।" बुद्धत्व की साधना के लिए इतनी गंभीर पद्धति को, प्रसिद्धि और धन के लिए आपके चीगोंग गुरु बनने की इच्छा के लिए सरलता से कैसे बर्बाद किया जा सकता है? आपका क्या लक्ष्य है? इसलिए, वह इस व्यक्ति को कुछ भी नहीं सिखायेगा, न ही यह व्यक्ति कोई वास्तविक शिक्षाऐं प्राप्त करेगा। नि:संदेह, आसपास इतने मठ होने के कारण, वह कुछ बनावटी वस्तुऐं सीख सकता है। यदि उसका मन उचित नहीं है, चीगोंग गुरु बनने का प्रयत्न करते समय और बुरे कार्य करते समय वह प्रेत या पशु द्वारा ग्रसित हो जायेगा। ग्रसित करने वाले पशुओं में भी शक्ति होती है, किन्तु यह तिब्बत तंत्रविद्या द्वारा नहीं आती। जो लोग तिब्बत में सच्चे भाव से धर्म की खोज में जाते हैं वे वहां पहुंचने पर वहीं रह जाते हैं- वे सच्चे अभ्यासी हैं।

यह अनोखी बात है कि अब कई ताओ पद्धतियां भी शक्ति-पात का प्रयोग करती हैं। ताओ पद्धति में शक्ति नाड़ियां प्रयोग होती हैं। इसमें तथाकथित शक्ति-पात का अभ्यास क्यों होना चाहिए? मैं व्याख्यान देने दक्षिण की ओर भी जा चुका हूँ। जहां तक मैं जानता हूँ, वहां दस से भी अधिक अलग-अलग पद्धतियां हैं जो शक्ति-पात का अभ्यास करती हैं, विशेषकर ग्वांगडोंग के प्रदेश में। वे क्या करने का प्रयास कर रहे हैं? यदि गुरु आपके लिए शक्ति-पात करता है, तो आप उसके शिष्य बन जायेंगे और किसी दूसरी पद्धति को नहीं सीख सकेंगे। यदि आप ऐसा करेंगे, वह आपको सजा देगा, क्योंकि वह ऐसा ही करता है। क्या यह किसी दुष्ट पद्धति को करने जैसा नहीं है? जो वह सिखाता है वह केवल आरोग्य और स्वस्थ रहने के लिए है। लोग इसे केवल इसीलिए सीख रहे हैं क्योंकि वे स्वस्थ शरीर पाना चाहते हैं। उसे यह सब क्यों करना चाहिये? किसी का कहना है यदि लोग उसके चीगोंग का अभ्यास करते हैं, वे किसी और चीगोंग का अभ्यास नहीं कर सकते। क्या वह लोगों को बचा सकता है और उन्हें उनकी साधना पूर्ण करने में समर्थ बना सकता है? यह शिष्यों को गुमराह करना है। कई लोग वस्तुऐं इसी प्रकार करते हैं।

ताओ पद्धति कभी शक्ति-पात नहीं सिखाती, किन्तु अब इसमें भी तथाकथित शक्ति-पात होता है। मैंने पाया है कि जो चीगोंग गुरु शक्ति-पात के प्रयोग के बारे में सबसे अधिक आवाज उठाता है, उसका गोंग स्तम्भ केवल किसी दो या तीन मंजिल की इमारत के बराबर ऊँचा रह गया है। मैं सोचता हूँ कि एक सुप्रसिद्ध चीगोंग गुरु के लिए, उसका गोंग बहुत अधिक गिर गया है। सैकड़ों लोग उसके आगे शक्ति-पात करवाने के लिए पंक्ति में खड़े होते हैं। उसका गोंग उस ऊँचाई तक सीमित है और जल्द ही गिर कर समाप्त हो जायेगा। तब वह शक्ति-पात के लिए क्या प्रयोग करेगा? क्या वह लोगों को धोखा नहीं दे रहा? दूसरे आयाम से देखे जाने पर, सच्चा शक्ति-पात व्यक्ति की हड्डियों को सर से पैर तक श्वेत रत्न जैसा दिखाता है। यह गोंग या उच्च शक्ति पदार्थ द्वारा किया जाता है जिसमें व्यक्ति के शरीर को सर से पैर तक शुद्ध किया जाता है। क्या यह चीगोंग गुरु ऐसा कर सकता है? वह नहीं कर सकता। वह क्या करता है? नि:संदेह, वह एक नया धर्म आरम्भ करना नहीं चाहेगा। उसका ध्येय यह है कि यदि आप एक बार उसकी पद्धति सीखें, तो आप उससे संबंधित हो जायें। आपके लिए उसकी कक्षाओं में उसकी वस्तुओं को सीखना आवश्यक हो जाता है। उसका ध्येय आपका धन प्राप्त करना है। उसे कोई धन अर्जित नहीं होगा यदि कोई भी उसकी पद्धति नहीं सीखता।

बुद्ध विचारधारा के अन्य साधना अभ्यासों के शिष्यों की तरह, फालुन दाफा के शिष्य दूसरे आयामों में उच्च स्तर के गुरुओं द्वारा कई बार शक्ति-पात अनुभव करेंगे; किन्तु आपको इसके बारे में बताया नहीं जायेगा। वे जिनके पास दिव्य सिद्धियाँ हैं या जो संवेदनशील हैं उन्हें सोते समय या किसी और समय इसका अनुभव हो सकता है, जैसे एक गर्म प्रवाह अचानक ही सर के ऊपर से उतर कर उनके पूरे शरीर में बहेगा। शक्ति-पात का लक्ष्य आपके गोंग में ऊँचे गोंग को मिलाना नहीं है, क्योंकि यह आपके अपने साधना अभ्यास द्वारा विकसित किया जाना चाहिए। शक्ति-पात एक सुदृढ़ करने का तरीका है जो आपके शरीर का शुद्धिकरण और शोधन करता है। आप शक्ति-पात से कई बार गुजरेंगे- आपके शरीर का प्रत्येक स्तर पर शोधन करना आवश्यक होता है। क्योंकि साधना व्यक्ति के अपने प्रयत्न पर निर्भर करती है और गोंग का रूपांतरण गुरु द्वारा किया जाता है, हम यहां शक्ति-पात की औपचारिकता का अभ्यास नहीं करते।

कुछ ऐसे भी लोग हैं जो गुरु की उपासना करते हैं। इसके बारे में कहा जाये तो, मैं कुछ बताना चाहूँगा। कई लोग मुझे गुरु की तरह पूजना चाहते हैं। इतिहास में हमारा यह काल चीनी सामंतवादी समाज से भिन्न है। क्या झुकने और दण्डवत प्रणाम करने का यह अर्थ है कि आप किसी को गुरु मानते हैं? हम इस औपचारिकता का अभ्यास नहीं करते। कई लोग सोचते हैं : "यदि मैं प्रणाम करूं, अगरबत्ती जलाऊं, और बुद्ध की सच्चे हृदय से पूजा करूं, मेरा गोंग बढ़ जायेगा।" मुझे यह बहुत उपहासपूर्ण लगता है। सच्चा साधना अभ्यास पूरी तरह व्यक्ति के अपने ऊपर निर्भर करता है, इसलिए किसी वस्तु के लिए प्रार्थना करना व्यर्थ है। आपको बुद्ध की पूजा करना या अगरबत्ती जलाना आवश्यक नहीं है। जब तक आप वास्तव में एक अभ्यासी के आदर्श के अनुसार साधना अभ्यास करते हैं, बुद्ध आपको देख कर बहुत प्रसन्न होंगे। यदि आप और स्थानों पर हमेशा बुरे कार्य करते हैं, वे आपको देखना भी पसंद नहीं करेंगे, भले ही आप उनके लिए अगरबत्ती जलाते हैं और प्रणाम करते हैं। क्या यह सत्य नहीं है? सच्चा साधना अभ्यास व्यक्ति के अपने ऊपर निर्भर करता है। गुरु के लिए आपके प्रणाम करने और पूजा करने का क्या उपयोग है यदि आज इस द्वार से बाहर निकल कर आप जो चाहे वो करते हैं? हम इस औपचारिकता की परवाह बिल्कुल नहीं करते। आप मेरे मान को भी नुकसान पहुंचा सकते हैं!

हमने सभी को इतनी अधिक वस्तुऐं दी हैं। आप सभी के लिए, जब तक आप वास्तव में साधना अभ्यास करते हैं और अपना आचरण सख्ती से दाफा के अनुरूप रखते हैं, मैं आपको अपना शिष्य मानूंगा। जब तक आप फालुन दाफा का अभ्यास करते हैं, मैं आपको शिष्य मानूंगा। यदि आप इसका अभ्यास नहीं करना चाहते, हम आपके लिए कुछ नहीं कर सकते। यदि आप साधना नहीं करते, तो उस नाम को बनाये रखने की क्या उपयोगिता है। इससे कोई अंतर नहीं पड़ता कि आप पहले सत्र की कक्षाओं से है या दूसरे सत्र से। आप केवल व्यायामों को करने से हमारे अभ्यासी कैसे हो सकते हैं? एक स्वस्थ शरीर पाने के लिए और उच्च स्तरों की ओर वास्तविक उन्नति करने के लिए, आपको सच्चे रूप से हमारे शिनशिंग आदर्श का पालन करते हुए साधना करनी होगी। इसलिए हम उन औपचारिकताओं की परवाह नहीं करते। जब तक आप साधना करते हैं, आप हमारी अभ्यास पद्धति के अभ्यासी हैं। मेरे फा-शरीर सब कुछ जानते हैं- वे आपके मन की सब बातें जानते हैं, और वे सब कुछ कर सकते

हैं। यदि आप साधना अभ्यास नहीं करते तो वे आपकी देख-रेख नहीं करेंगे। यदि आप साधना अभ्यास करते हैं, वे अंत तक आपकी मदद करेंगे।

कुछ चीगोंग पद्धतियों में, जिन अभ्यासियों ने अपने गुरुओं को कभी नहीं देखा है उनका मत है कि यदि वे कुछ सौ युआन भेंट करें और किसी विशेष दिशा में प्रणाम करें, तो इतना कुछ बहुत होगा। क्या यह स्वयं को तथा औरों को धोखा देना नहीं है? इसके अतिरिक्त, ये लोग इसके बाद बहुत समर्पित हो जाते हैं और अपनी पद्धतियों और गुरुओं की प्रतिरक्षा और बचाव करने लगते हैं। वे औरों को भी कहते हैं कि वे दूसरी पद्धतियों को न पढ़ें। मुझे यह बहुत उपहासपूर्ण लगता है। साथ ही, कुछ लोग *मो दिंग* [5] नामक औपचारिकता भी करते हैं। कोई नहीं जानता कि इस प्रकार छूने के बाद क्या प्रभाव होता है।

न केवल वे जो तंत्र के नाम से अपने अभ्यास सिखाते हैं पाखण्डी हैं; बल्कि वे सब भी वैसे ही हैं जो बुद्धमत के नाम से चीगोंग सिखाते हैं। आप सब यह सोचें : कई हजार वर्षों से, बुद्धमत की साधना पद्धतियां उस प्रकार रही हैं। यदि कोई इसमें बदलाव कर दे तो यह तब भी बुद्धमत कैसे रह सकता है? साधना पद्धतियां गंभीर बुद्ध साधना के लिए होती हैं, और वे अत्यन्त जटिल होती हैं। एक छोटा बदलाव सब कुछ बिगाड़ देगा। क्योंकि गोंग का रूपांतरण बहुत जटिल होता है, जो व्यक्ति को अनुभव होता है उसका कोई महत्व नहीं है। कोई इस आधार पर साधना नहीं कर सकता कि उसे कैसा अनुभव होता है। भिक्षुओं के लिए धार्मिक रीति-रिवाज एक साधना पद्धति है; यदि इसे बदल दिया जाये, तो यह उस पद्धति का नहीं रह जायेगा। प्रत्येक पद्धति का एक महान ज्ञानप्राप्त व्यक्ति प्रभारी होता है, और प्रत्येक पद्धति ने अनेकों महान ज्ञानप्राप्त व्यक्ति पैदा किये हैं। कोई भी सहज ही उस पद्धति की साधना प्रणाली में बदलाव का साहस नहीं करता। किसी साधारण चीगोंग गुरु के लिए, उसमें क्या महान गुण है कि वह गुरु का अनादर करने का साहस करे और बुद्ध साधना पद्धति में बदलाव करे? यदि इसे वास्तव में बदल दिया जाये क्या यह तब भी वही पद्धति कहलायेगी? पाखण्डी चींगोंग की पहचान की जा सकती है।

दिव्य मार्ग को उचित स्थान पर रखना

"दिव्य मार्ग को उचित स्थान पर रखने" को "एक दिव्य छिद्र" भी कहा जाता है। ऐसी शब्दावलि तान जिंग, ताओ जांग, और शिंगमिंग गुइज़ी नामक पुस्तकों में पाई जा सकती है। तो यह सब किसके बारे है? कई चीगोंग गुरु इसे स्पष्ट नहीं समझा सकते। यह इसलिए क्योंकि किसी साधारण चीगोंग गुरु के स्तर पर, न तो वह इसे देख सकता है न ही उसे यह देखने की अनुमति है। यदि कोई अभ्यासी इसे देखना चाहता है, तो उसे प्रज्ञा दृष्टि के ऊपरी स्तर या उससे ऊँचा पहुंचना होगा। एक साधारण चींगोंग गुरु इस स्तर पर नहीं पहुंच सकता; जिससे, वह इसे नहीं देख सकता। पूरे इतिहासकाल में, साधक समाज में यह चर्चा रही है कि दिव्य मार्ग क्या है, एक दिव्य छिद्र कहां होता है, और दिव्य मार्ग को उचित स्थिति में कैसे रखा जाता है। तान जिंग, ताओ जांग, और शिंगमिंग गुइज़ी की पुस्तकों में, आप पाते हैं वे सब सिध्दांतों पर चर्चा करती हैं और मूल तत्व नहीं बतातीं। एक चर्चा से दूसरी चर्चा तक, वे आपको उलझा देती हैं। वे आपको स्पष्ट रूप से विषय नहीं समझातीं क्योंकि मूल तत्व साधारण लोगों द्वारा नहीं जाना जा सकता।

इसके अतिरिक्त, मैं आपको यह बता रहा हूँ क्योंकि आप फालुन दाफा शिष्य हैं, मैं आपको ये शब्द कहूँगा: "उन विकृत चीगोंग पुस्तकों को न पढ़ें"। मैं उपरोक्त पारंपरिक पुस्तकों के लिए नहीं कह रहा हूँ, बल्कि उन पाखण्डी चीगोंग पुस्तकों के लिए कह रहा हूँ जो लोगों द्वारा आजकल लिखी जाती हैं। आपको उन्हें खोलना भी नहीं चाहिए। यदि आपके मन में यह विचार आता है कि "यह वाक्य उचित जान पड़ता है," इससे, पुस्तक में ग्रसित करने वाला प्रेत या पशु आपके शरीर से जुड़ जायेगा। कई पुस्तकें ग्रसित करने वाले प्रेत या पशुओं के प्रभाव में लिखी गई हैं जो प्रसिद्धि और धन के मानव मोहभावों को नियंत्रित करते हैं। पाखण्डी चीगोंग पुस्तकें बहुत अधिक हैं। बहुत से लोग दायित्व नहीं मानते और ग्रसित करने वाले प्रेत या पशुओं और बुरी वस्तुओं के प्रभाव में पुस्तक लिखते हैं। साधारणत:, उपरोक्त पारंपरिक पुस्तकों या दूसरे संबंधित पारंपरिक ग्रन्थों को भी पढ़ना अच्छा नहीं है, क्योंकि इसमें एक अभ्यास में एकाग्रचित होने का विषय सम्मिलित है।

चीन चीगोंग विज्ञान शोध संस्थान के एक प्रबंधक ने मुझे एक कहानी सुनाई जिससे मुझे वास्तव में हंसी आ गई। उसने बताया कि बीजिंग में एक व्यक्ति था जो अक्सर चीगोंग सभाओं में जाया करता था। कई उपदेशों को सुनने के बाद, उसे लगा कि जो वहां बताया गया था, चीगोंग उससे अधिक नहीं है। क्योंकि हर कोई समान स्तर पर था, वे सब एक जैसे विषयों के बारे में बात करते थे। दूसरे पाखण्डी चीगोंग गुरुओं की भांति ही, उसने सोचा कि चीगोंग का सार उससे अधिक नहीं है! तब वह चीगोंग पर एक पुस्तक भी लिखना चाहता था। आप सब यह सोचें : एक व्यक्ति जो अभ्यासी नहीं हैं एक चीगोंग की पुस्तक लिखेगा। आजकल, चीगोंग पुस्तकें एक-दूसरे से नकल की जाती हैं। जैसे-जैसे उसका लिखना आगे बढ़ा, वह दिव्य मार्ग के विषय पर रूक गया। कौन समझता है कि दिव्य मार्ग क्या है? यहां तक कि सच्चे चीगोंग गुरुओं में भी, कुछ ही इसे समझते हैं। उसने जाकर एक पाखण्डी चीगोंग गुरु से पूछा। वह नहीं जानता था कि वह व्यक्ति पाखण्डी है, क्योंकि वह स्वयं वैसे भी चीगोंग नहीं समझता था। किन्तु यदि यह चीगोंग गुरु प्रश्न का उत्तर नहीं दे पाता, तो दूसरे यह नहीं जान जाते कि वह नकली है? इसलिए, उसने जवाब बनाने का साहस किया और कहा कि दिव्य मार्ग व्यक्ति के लिंग के अग्रभाग पर होता है। यह बहुत उपहासपूर्ण है। हंसिए मत, क्योंकि यह पुस्तक पहले से ही जनता में प्रकाशित हो चुकी है। तात्पर्य यह है कि आजकल की चीगोंग पुस्तकें कितने उपहासपूर्ण स्तर तक पहुंच चुकी हैं। उन पुस्तकों को पढ़ने से आपको क्या लाभ होगा? उनकी कोई उपयोगिता नहीं है और यह केवल हानिकारक ही हो सकता है।

"दिव्य मार्ग को उचित स्थान पर रखने" का क्या अर्थ है? त्रिलोक-फा साधना के दौरान, जब व्यक्ति की साधना त्रिलोक-फा के मध्यम स्तर से आगे या उच्च स्तर पर होती है, उस व्यक्ति के पास *अमर शिशु* का विकास होना आरंभ हो जाता है। अमर शिशु और साधना-जनित शिशु *(यिंगहाइ)* जिनकी हम बात करते हैं, दो भिन्न वस्तुऐं हैं। साधना-जनित शिशु छोटे और खेलप्रिय होते हैं, और विनोदपूर्वक क्रीड़ा करते हैं। अमर शिशु स्थिर रहता है। यदि व्यक्ति की मूल आत्मा इस पर नियंत्रण नहीं कर लेती, अमर शिशु एक कमल पुष्प पर दोनों पैरों को एक-दूसरे पर रखकर और दोनों हाथों को मिलाकर स्थिर बैठता है। अमर शिशु दानत्येन से बढ़ता है और एक सूक्ष्म स्तर पर देखा जा सकता है, जब यह सूई की नोक से भी छोटा होता है।

इसके अतिरिक्त, एक और विषय स्पष्ट करना आवश्यक है। केवल एक ही वास्तविक दानत्येन होता है और यह उदर के निचले भाग में स्थित *त्येन* [6] होता है। यह व्यक्ति के शरीर में *ह्वेयिन* [7] बिंदु के ऊपर और पेट के नीचे होता है। अनेक प्रकार के गोंग, अनेक दिव्य सिद्धियाँ, अनेक सिद्धियाँ, फा-शरीर, अमर शिशु, साधना-जनित शिशु, और बहुत सी सत्ताएं इसी त्येन से विकास करते हैं।

अतीत में, कुछ अभ्यासी ऊपरी दानत्येन, मध्य दानत्येन और निम्न दानत्येन के बारे में बात करते थे। मैं कहूँगा कि वे गलत थे। कुछ लोग यह भी कहते हैं कि उनके गुरुओं ने वंशानुगत उन्हें इसी प्रकार सिखाया है, और पुस्तकों में भी इसी प्रकार बताया है। मैं सभी को बताना चाहूँगा कि प्राचीन काल में भी विकृतियां थीं। यद्यपि कुछ वस्तुऐं वंशानुगत चली आ रही हैं, किन्तु वे अनुचित हो सकती हैं। कुछ निम्न साधना मार्ग साधारण लोगों के बीच सदैव चले आ रहे हैं, किन्तु वे साधना के लिए नहीं हैं और व्यर्थ होते हैं। जब वे इन्हें ऊपरी दानत्येन, मध्य दानत्येन और निम्न दानत्येन कहते हैं, उनका अर्थ है कि दानत्येन वहीं होता हैं जहां दान उत्पन्न हो सके। क्या यह उपहासपूर्ण नहीं है? जब कोई व्यक्ति अपने मन को शरीर में कहीं भी लम्बे समय तक केन्द्रित करता है, एक शक्तिपुंज उत्पन्न हो जाता है और दान बन जाता है। यदि आप इस पर विश्वास नहीं करते, तो अपने मन को अपने हाथ पर केन्द्रित करें और इसी प्रकार लम्बे समय तक रखें और वहां दान बन जायेगा। इसलिए, कुछ लोगों ने इस परिस्थिति को देखा और कह दिया कि दानत्येन सब जगह होता है। यह और भी उपहासपूर्ण जान पड़ता है। वे सोचते हैं कि जहां कहीं दान बन जाये वहां दानत्येन होता है। वास्तव में, यह दान है, किन्तु एक त्येन नहीं है। आप कह सकते हैं कि दान सब जगह होता है, या यह कि ऊपरी दानत्येन, मध्य दानत्येन और निम्न दानत्येन होते हैं। किन्तु, वास्तविक त्येन केवल एक होता है जो अनेकों फा उत्पन्न कर सकता है, और यह उदर के निचले भाग में होता है। इसलिए, ऊपरी दानत्येन, मध्य दानत्येन और निम्न दानत्येन की बातें गलत हैं। जहां कहीं व्यक्ति का मन लम्बे समय तक केन्द्रित होता है, दान बन जाता है।

अमर शिशु का उदर के निचले भाग में दानत्येन में धीरे-धीरे विकास आरंभ होता है और यह बड़ा होता जाता है। जब यह एक पिंग-पोंग गेंद के बराबर बड़ा हो जाता है, इसके पूरे शरीर का आकार स्पष्ट दिखाई देता है तथा नाक और आंखें बन चुकी होती हैं। उसी समय जब अमर शिशु पिंग-पोंग गेंद के बराबर बड़ा होता है, इसके

साथ ही एक छोटा गोल बुलबुला पैदा होता है। पैदा होने के बाद, बुलबुला अमर शिशु के साथ ही विकास करता है। जब अमर शिशु चार इंच का हो जाता है, एक कमल पुष्प की पत्ती बन जाती है। जब अमर शिशु पांच या छ: इंच का हो जाता है, तो कमल पुष्प की पत्तियां मूल रूप से बन चुकी होती हैं, और कमल पुष्प की एक तह प्रकट होती है। एक प्रकाशमान, सुनहरा अमर शिशु एक सुनहरे कमल पुष्प पर विराजमान होता है और बहुत सुन्दर दिखाई देता है। यह है अजर-अमर वज्र शरीर, जिसे बुद्ध विचारधारा में "बुद्ध शरीर" कहा जाता है, या ताओ विचारधारा में "अमर शिशु"।

हमारी अभ्यास पद्धति में दोनों प्रकार के शरीरों को साधना द्वारा विकसित करने की आवश्यकता होती है; मूल शरीर को भी रूपांतरित करना आवश्यक होता है। यह सभी को ज्ञात है कि बुद्ध शरीर को साधारण लोगों के बीच प्रकट होने की अनुमति नहीं है। अत्यधिक प्रयास द्वारा, यह अपनी रूपरेखा दिखा सकता है और इसका प्रकाश एक साधारण व्यक्ति की आंखों द्वारा देखा जा सकता है। रूपांतरित होने के बाद, हालांकि, भौतिक शरीर साधारण लोगों के बीच एक औसत व्यक्ति के शरीर जैसा ही दिखाई पड़ता है। एक साधारण व्यक्ति इसमें भेद नहीं कर सकता, हालांकि यह शरीर आयामों के बीच आवागमन कर सकता है। जब अमर शिशु चार से पांच इंच बड़ा हो जाता है, गोल बुलबुला भी उतना ही बड़ा हो जाता है, और यह एक हवा के गुब्बारे की तरह पारदर्शी होता है। अमर शिशु वहां ध्यान मुद्रा में स्थिर बैठता है। इस समय तक बुलबुला दानत्येन छोड़ देता है। क्योंकि यह बड़ा और विकसित हो जाता है, इसलिए यह ऊपर की ओर उठता है। इसके उठने का क्रम बहुत धीमा होता है, किन्तु इसकी गति का निरीक्षण रोज किया जा सकता है। यह धीरे-धीरे ऊपर की ओर उठता जाता है। बहुत ध्यान देने पर, हम इसके अस्तित्व का अनुभव कर सकते हैं।

जब बुलबुला व्यक्ति के *तानजोंग* [8] बिंदु तक पहुंचता है, यह कुछ समय वहां रूकता है। क्योंकि वहां मानव शरीर का बहुत सा सत्व होता है (हृदय भी वहीं होता है), बुलबुले में वस्तुओं की एक प्रणाली विकसित होगी। यह सत्व बुलबुले के अंदर समाया जाएगा। कुछ समय पश्चात, यह फिर से ऊपर उठने लगेगा। जब यह गले से गुजरता है, तो व्यक्ति को इस प्रकार घुटन होगी जैसे सभी रक्त की नसें अवरुद्ध हो गई हों, और व्यक्ति को बहुत असुविधाजनक सूजन अनुभव होगी। यह स्थिति केवल दो दिन रहेगी। तब बुलबुला व्यक्ति के सर के ऊपर तक पहुंच जायेगा, और हम इसे

"नीवान तक पहुंचना" कहते हैं। यह कहा जाता है कि यह नीवान तक पहुंच गया, जबकि वास्तव में यह आपके पूरे सर के बराबर बड़ा होता है। आपके सर में सूजन अनुभव होगी। क्योंकि नीवान मनुष्य के लिए एक बहुत महत्वपूर्ण स्थान होता है, इसका सत्व भी बुलबुले में विकसित होना आवश्यक है। तब बुलबुला दिव्य नेत्र की सुरंग से संकुचित होकर बाहर आने का प्रयत्न करेगा, और इसमें बहुत असुविधाजनक महसूस होगा। व्यक्ति का दिव्य नेत्र सूजन आने तक संकुचित हो जायेगा, और व्यक्ति की कनपटी का भाग भी सूज जायेगा जबकि आंखें अंदर की ओर धंसती हुई महसूस होंगी। यह अनुभव तब तक रहेगा जब तक बुलबला दिव्य नेत्र की सुरंग से बाहर निकलता है और व्यक्ति के माथे के आगे लटक जाता है। इसे दिव्य मार्ग को उचित स्थान पर रखना कहते हैं, और यह वहां लटका रहता है।

इस समय पर, जिन लोगों के दिव्य नेत्र खुले होते हैं वे कुछ भी देख पाने में असमर्थ होते हैं। यह इसलिए क्योंकि बुद्ध विचारधारा या ताओ विचारधारा के साधना अभ्यास में, दिव्य मार्ग के अंदर वस्तुओं के विकास को शीघ्र करने के लिए इसके द्वार बंद कर दिये जाते हैं। वहां दो आगे के द्वार ओर दो पीछे के द्वार होते हैं, और वे सभी बंद हो जाते हैं। जैसे बीजिंग में त्येनानमन के प्रवेश द्वार में, वहां दोनों ओर दो बड़े द्वार होते हैं। दिव्य मार्ग को शीघ्रता से विकसित और सुदृढ़ करने के लिए, द्वारों को किसी बहुत विशेष परिस्थिति के अलावा खोला नहीं जाता। जो लोग दिव्य नेत्र से वस्तुओं को देख सकते हैं वे अब नहीं देख सकते, क्योंकि इसकी अनुमति नहीं है। इसके वहां लटके रहने का क्या प्रयोजन है? क्योंकि हमारे शरीर की सैकड़ों शक्ति नाड़ियां वहां मिलती हैं, इस स्थिति में उन सभी को दिव्य मार्ग में से घूमकर वापस आना होता है। उनका दिव्य मार्ग से घूमकर आना आवश्यक होता है, और इसका लक्ष्य दिव्य मार्ग के अंदर कुछ अतिरिक्त आधार बनाना और वस्तुओं की प्रणाली बनाना है। क्योंकि मानव शरीर एक लघु विश्व होता है, यह एक लघु जगत बना लेता है जिसमें मानव शरीर की समस्त आवश्यक वस्तुऐं बनी होती हैं। किन्तु यह केवल व्यवस्था होती है जो पूरी तरह कार्यशील नहीं हो सकती।

चीमन विचारधारा के साधना अभ्यास में, दिव्य मार्ग खुला होता है। जब दिव्य मार्ग बाहर की ओर निकलता है, यह बेलन के आकार का होता है, किन्तु धीरे-धीरे यह गोलाकार हो जाता है। इस प्रकार इसके दोनों ओर के द्वार खुले होते हैं। क्योंकि चीमन

विचारधारा में बुद्धत्व या ताओ की प्राप्ति के लिए साधना नहीं होती, इसमें अपनी रक्षा स्वयं करनी आवश्यक होती है। बुद्ध विचारधारा और ताओ विचारधारा में अनेक गुरु होते हैं, जो सब आपकी रक्षा कर सकते हैं। आपको वस्तुओं को देखने की आवश्यकता नहीं होती, और न ही आपको कोई समस्या आती है। किन्तु चीमन विचारधारा में इस प्रकार नहीं होता, क्योंकि अपनी रक्षा स्वयं करनी होती है। इसलिए, वस्तुओं को देखने की योग्यता बने रहना आवश्यक होता है। उस समय, दिव्य नेत्र वस्तुओं को एक दूरबीन की तरह देखता है। इस प्रणाली के बन जाने के बाद, करीब एक महीने में, यह अंदर की ओर लौटने लगता है। इसके सर के अंदर लौटने पर, इसे "दिव्य मार्ग का स्थान बदलना" कहा जाता है।

जब दिव्य मार्ग अंदर की ओर प्रवेश करता है, तो व्यक्ति का सर सूजा हुआ और असुविधाजनक महसूस होता है। तब यह व्यक्ति के *यूजन* [9] बिंदु से संकुचित होकर बाहर निकलता है। इसका संकुचित होकर बाहर निकलना बहुत असुविधाजनक लगता है, जैसे व्यक्ति का सर फटा जा रहा हो। दिव्य मार्ग एक साथ ही बाहर आ जाता है, और तब व्यक्ति तुरंत ही राहत अनुभव करता है। बाहर आने के बाद, दिव्य मार्ग एक बहुत गहरे आयाम में रहेगा और उस बहुत गहरे आयाम के शरीर के रूप में रहेगा। इसलिए, सोते समय इससे छूने का एहसास भी नहीं होगा। किन्तु एक बात है : जब दिव्य मार्ग को स्थान पर रखने की स्थिति पहली बार होती है, व्यक्ति को आंखों के सामने कुछ महसूस होता है। हालांकि यह दूसरे आयाम में होता है, व्यक्ति को हमेशा लगता है कि आंखें धुंधली हो गई हों और जैसे उन्हें कुछ ढके हुए हो, इससे उसे बहुत असुविधाजनक लगता है। क्योंकि यूजन बिंदु भी बहुत महत्वपूर्ण मार्ग होता है, इसलिए दिव्य मार्ग को वहां कुछ प्रणालियां बनानी आवश्यक होती हैं। तब यह फिर से व्यक्ति के शरीर में प्रवेश कर जाता है। एक दिव्य छिद्र वास्तव में एक दिव्य मार्ग की स्थिति को नहीं दर्शाता, क्योंकि यह कई बार अपनी स्थिति बदलता है। जब यह नीवान पर लौटता है, यह शरीर में नीचे की ओर उतरने लगता है और *मिंगमेन* बिंदु[10] तक आ जाता है। मिंगमेन बिंदु पर, यह दोबारा बाहर निकलता है।

मानव शरीर में मिंगमेन बिंदु एक बहुत महत्वपूर्ण और अहम बिंदु होता है। इसे ताओ विचारधारा में "छिद्र" कहा जाता है और हम इसे "मार्ग" (*ग्वान*) कहते हैं। यह एक महत्वपूर्ण मार्ग होता है जो वास्तव में एक लौह द्वार की भांति होता है, और इसमें

लौह द्वारों की अनेक परतें होती हैं। जैसे ज्ञातव्य है कि मानव शरीर की अनेक परतें होती हैं। हमारी भौतिक कोशिकाऐं एक परत है, और अंदर के अणु एक और। वहां परमाणुओं, प्रोटोन, इलेक्ट्रॉन, बहुत सूक्ष्म कणों, अत्यन्त सूक्ष्म कणों, और अत्यन्त सूक्ष्म कणों से लेकर अत्यन्त अनन्त सूक्ष्म कणों तक की प्रत्येक परत पर एक द्वार होता है। इसलिए, वहां अनेको दिव्य सिद्धियाँ और कई विशेष योग्यताऐं विभिन्न परतों के द्वारों में बंद रहती हैं। दूसरी पद्धतियां दान की साधना करती हैं। जब दान में विस्फोट होने वाला होता है, तो सबसे पहले मिंगमेन बिंदु को विस्फोट द्वारा खोलना आवश्यक होता है। यदि इसे विस्फोट द्वारा नहीं खोला जाता, तो दिव्य सिद्धियों को मुक्त नहीं कराया जा सकता। जब दिव्य मार्ग मिंगमेन बिंदु पर प्रणालियां बना लेता है, यह फिर से शरीर में लौट आता है। तब यह उदर के निचले भाग में लौट आता है। इसे "दिव्य मार्ग का उचित स्थान पर लौटना" कहा जाता है।

लौटने के पश्चात, दिव्य मार्ग अपने मूल स्थान पर वापस नहीं आता। अब तक, अमर शिशु बहुत बड़ा हो जाता है। पारदर्शी बुलबुला अमर शिशु को घेर कर ढके रहता है। जैसे-जैसे अमर शिशु बढ़ता है, वैसे दिव्य मार्ग भी बढ़ता जाता है। ताओ विचारधारा में, साधारणत: जब अमर शिशु छ: या सात वर्ष के बालक की उम्र का हो जाता है, इसे व्यक्ति के शरीर को छोड़ने की अनुमति हो जाती है; इसे "अमर शिशु का जन्म होना" कहा जाता है। व्यक्ति की मूल आत्मा के नियंत्रण में, यह उसके शरीर के बाहर विचरण कर सकता है। व्यक्ति का भौतिक शरीर स्थिर रहता है, और उसकी मूल आत्मा बाहर आ जाती है। साधारणत: बुद्ध विचारधारा में, अमर शिशु को कोई खतरा नहीं होता जब यह साधना द्वारा व्यक्ति के बराबर बड़ा हो जाता है, और इसका आवरण भी बड़ा हो जाता है। यह आवरण शरीर को बाहर से घेरे रहता है- इसे दिव्य मार्ग कहते हैं। क्योंकि अमर शिशु इतना बड़ा हो चुका होता है, दिव्य मार्ग अवश्य ही शरीर को बाहर से घेरे रहता है।

शायद आपने मंदिरों में बुद्ध प्रतिमाऐं देखी होंगी और देखा होगा कि बुद्ध हमेशा एक वृत में होते हैं। विशेष रूप से, किसी बुद्ध के चित्र में सदैव एक वृत होता है जिसमें बुद्ध बैठते हैं। अनेको बुद्ध चित्र इस प्रकार होते हैं, और विशेषकर प्राचीन मंदिरों में सभी इस प्रकार होते हैं। बुद्ध एक वृत के अंदर क्यों बैठते हैं? कोई भी इसे स्पष्ट नहीं समझा पाता। मैं आपको बताना चाहूँगा कि यह यही दिव्य मार्ग है, किन्तु इस समय इसे

दिव्य मार्ग नहीं कहा जाता। इसे एक "दिव्यलोक" कहा जाता है, यद्यपि वास्तव में यह अभी एक दिव्यलोक नहीं है, इसमें केवल इसकी प्रणाली होती है। यह एक कारखाने की तरह होता है जिसकी व्यवस्था प्रणाली होती है, किन्तु उत्पाद बनाने की क्षमता नहीं होती। कार्यशील होने से पहले शक्ति भंडार और कच्चे उत्पाद का होना आवश्यक है। कुछ वर्षों पहले, कई अभ्यासी कहते थे : "मेरे गोंग का स्तर एक बोधिसत्व से भी ऊँचा है," या "मेरे गोंग का स्तर एक बुद्ध से भी ऊँचा है।" ऐसा सुनकर, औरों को इस पर विश्वास नहीं होता था। वास्तव में जो उन्होंने कहा वह बिल्कुल भी अविश्वसनीय नहीं था, क्योंकि मानव जगत में व्यक्ति के गोंग को वास्तव में साधना द्वारा बहुत ऊँचे स्तर तक बढ़ाना चाहिए।

यह इस प्रकार कैसे हो सकता है : वे एक बुद्ध से भी ऊँचा स्तर प्राप्त कर लें? इसे इतने सतही रूप से नहीं समझा जा सकता। उस व्यक्ति का गोंग वास्तव में बहुत ऊँचे स्तर पर होता है। यह इसलिए क्योंकि जब उसकी साधना एक बहुत ऊँचे स्तर पर पहुंचती है और पूर्ण ज्ञानप्राप्ति के क्षण पर, उसका गोंग स्तर वास्तव में बहुत ऊँचा होगा। पूर्ण ज्ञानप्राप्ति से कुछ क्षण पूर्व, उसके गोंग का दस में से आठवां भाग उसके शिनशिंग के आदर्श के साथ कम कर दिया जायेगा, और यह शक्ति उसके दिव्यलोक को सुदृढ़ करने के लिए प्रयोग की जायेगी- जो उसका अपना दिव्यलोक होगा। हर कोई जानता है कि इस शिनशिंग आदर्श के अलावा, एक अभ्यासी का गोंग जीवनभर की अनेकों परेशानियों को सहने और कठिन वातावरणों से गुजर कर साधना द्वारा प्राप्त होता है। यह इसलिए अत्यन्त मूल्यवान होता है। इस मूल्यवान पदार्थ का दस में से आठवां भाग उसके दिव्यलोक को सुदृढ़ करने के लिए प्रयोग किया जाता है। इसलिए, जब वह भविष्य में साधना में सफल होता है, वह केवल अपना हाथ बढ़ाकर कुछ भी प्राप्त कर लेगा जो वह चाहेगा, और उसके पास वह सब कुछ होगा जिसकी उसे इच्छा है। वह जो चाहे कर सकता है, और उसके दिव्यलोक में सब कुछ होता है। यह उसका महान गुण है जो उसके दु:खों को सहने से साधना द्वारा प्राप्त हुआ है।

इस व्यक्ति की शक्ति इच्छानुसार किसी भी वस्तु में रूपांतरित की जा सकती है। इसलिए, यदि कोई बुद्ध कुछ चाहता है, कुछ खाना चाहता है, या किसी के साथ खेलना चाहता है, तो वह ऐसा कर सकता है। वे उसके साधना की उपलब्धि से आते हैं, जो उसकी बुद्ध पदवी *(फोवी)* है। इसके बिना, व्यक्ति साधना में सफल नहीं हो

सकता। इस समय इसे उसका अपना दिव्यलोक कहा जा सकता है। इस व्यक्ति के पास साधना को पूर्ण करने के लिए और ताओ की प्राप्ति के लिए अपने गोंग का केवल दस में से दूसरा भाग शेष रहेगा। यद्यपि उसका केवल दस में से दूसरा भाग शेष बचा है, उसका शरीर बंधित नहीं है। वह या तो अपना शरीर त्याग सकता है या रख सकता है, किन्तु यह शरीर पहले से ही उच्च शक्ति पदार्थ से रूपांतरित हो चुका होता है। इस समय, वह अपनी महान दिव्य शक्तियों का प्रयोग कर सकता है, जो अद्वितीय रूप से महान होती हैं। किन्तु जब कोई व्यक्ति साधारण लोगों के बीच साधना करता है, वह बिना किसी महान सिद्धियों के, अक्सर बंधित रहता है। उसका गोंग स्तर कितना भी ऊँचा क्यों न हो, तब भी वह बंधित रहता है। अब यह भिन्न है।

---

1. आह क्यू — चीनी साहित्य में एक मूर्ख पात्र
2. ताइयुआन — शांक्सी राज्य की राजधानी
3. च्येनमन — बीजिंग का एक प्रमुख व्यावसायिक क्षेत्र
4. *हान* — इसमें चीन के मध्य के क्षेत्र सम्मिलित हैं
5. *मो दिंग* — कुछ चीगोंग गुरुओं द्वारा शक्ति देने के लिए व्यक्ति के सर के ऊपर छूना
6. *त्येन* — शक्ति क्षेत्र
7. *ह्वेयिन* — पेरिनियम के मध्य में स्थित एक्यूपंक्चर बिंदु
8. *तानजोंग* बिंदु — छाती के मध्य में स्थित एक्यूपंक्चर बिंदु
9. *यूजन* बिंदु — सर के पीछे निचले भाग में स्थित एक्यूपंक्चर बिंदु
10. *मिंगमेन* बिंदु — "जीवन का द्वार," पीठ के पिछले भाग के मध्य में स्थित एक्यूपंक्चर बिंदु।

उपदेश पाँच

फालुन प्रतीक

हमारे फालुन दाफा का प्रतीक फालुन है। जिनके पास दिव्य सिद्धियाँ हैं वे देख सकते हैं कि यह फालुन आवर्तन कर रहा है। वैसा ही हमारे छोटे फालुन चिन्हों के लिए भी सत्य है, वे भी आवर्तन कर रहे हैं। हमारी साधना अभ्यास विश्व की प्रकृति सत्य-करूणा-सहनशीलता, और ब्रह्माण्ड के क्रम-विकास के सिध्दांतों से निर्देशित होता है। इसलिए, जिसकी हम साधना करते हैं वह बहुत प्रगाढ़ है। एक प्रकार से, यह फालुन प्रतीक विश्व का एक लघु रूप है। बुद्ध विचारधारा में विश्व की एक दस दिशाओं वाले जगत की धारणा है जिसके चार मुख हैं और आठ भुजाएँ हैं। हो सकता है कुछ लोग फालुन के ऊपर और नीचे एक लम्बवत् शक्ति स्तम्भ देख सकें। इसके ऊपरी और निचले भाग के साथ, फालुन ठीक एक दस दिशाओं वाले जगत को बनाता है और इस विश्व को स्थापित करता है। यह बुद्ध विचारधारा के विश्व को संक्षेप में दर्शाता है।

यह विश्व नि:संदेह अनेकों आकाशगंगाओं से बना है जिसमें हमारी आकाशगंगा भी सम्मिलित है। संपूर्ण विश्व गतिशील है, और साथ ही इसके अंदर सभी आकाशगंगाएँ भी। इसलिए, ताइजी चिन्ह और प्रतीक में छोटे स्वास्तिक[1] 卍 चिन्ह भी आवर्तन कर रहे हैं। संपूर्ण फालुन आवर्तन कर रहा है, और मध्य में बड़ा 卍 चिन्ह भी आवर्तन कर रहा है। एक प्रकार से, यह हमारी आकाशगंगा को दर्शाता है। क्योंकि हम बुद्ध विचारधारा से हैं, इसलिए मध्य में बुद्ध विचारधारा का चिन्ह रखा गया है; इसकी सतह इस प्रकार दिखाई पड़ती है। सभी विभिन्न वस्तुओं के अपने अस्तित्व के रूप होते हैं जो उन दूसरे आयामों में विद्यमान होते हैं जहाँ उनकी बहुत महान और बहुत जटिल विकास की प्रणालियाँ और स्वरूप होते हैं। हमारा फालुन प्रतीक विश्व का लघु रूप है। इसका सभी आयामों में अपना अस्तित्व का रूप और विकास की प्रणाली भी है, इसलिए मैं इसे एक जगत कहता हूँ।

जब फालुन घड़ी की दिशा में आवर्तन करता है, यह विश्व से स्वचालित शक्ति ग्रहण कर सकता है। घड़ी की विपरीत दिशा में आवर्तन करते हुए, यह शक्ति छोड़ सकता है। अन्दर की ओर (घड़ी की दिशा में) आवर्तन स्वयं को मुक्ति प्रदान करता है जबकि बाहर की ओर (घड़ी की विपरीत दिशा में) आवर्तन दूसरों को मुक्ति प्रदान करता है- यह हमारे अभ्यास का एक लक्षण हैं। कुछ लोग पूछते हैं : "जब हम बुद्ध विचारधारा से हैं, तो ताइजी का प्रयोग क्यों करते हैं? क्या ताइजी ताओ विचारधारा से संबंधित नहीं है?" यह इसलिए है क्योंकि जो हम साधना करते हैं वह बहुत प्रगाढ़ है, जो संपूर्ण विश्व की साधना करने जैसा है। तब आप सब यह सोचें : यह विश्व दो मुख्य विचारधाराओं से स्थापित है, बुद्ध विचारधारा और ताओ विचारधारा। यदि हम एक को भी छोड़ दें, तो यह एक पूर्ण विश्व को स्थापित नहीं करेगा, और न ही इसे एक पूर्ण विश्व कहा जा सकता है। तदनुसार, हमने ताओ विचारधारा से भी वस्तुऐं सम्मिलित की हैं। साथ ही कुछ लोग कहते हैं कि ताओ विचारधारा के अलावा, ईसाई, कन्फ्यूशियन, आदि और दूसरे धर्म भी हैं। मैं आपको बताना चाहूँगा कि इसकी साधना एक बहुत ऊँचे स्तर तक पहुँचने पर, कन्फ्यूशियन मत ताओ विचारधारा से संबंधित होता है; जब अनेक पश्चिमी धार्मिक साधना अभ्यास ऊँचे स्तरों पर पहुँचते हैं, उन्हें हमारी पद्धति की भाँति ही बुद्ध विचारधारा से संबंधित माना जाता है। केवल यही दो मुख्य विचारधाराएँ हैं।

तब दो ताइजी चिन्हों के ऊपरी भाग में लाल और नीचे भाग में नीला, और दूसरे दो ताइजी चिन्हों के ऊपरी भाग में लाल और नीचे भाग में काला क्यों है? जो हम साधारणत: जानते हैं कि ताइजी काले और श्वेत दो पदार्थों से बना होता है, जो यिन और यैंग की ची है। यह धारणा बहुत निम्न स्तर से आई है, क्योंकि ताइजी के विभिन्न आयामों में विभिन्न साकार रूप होते हैं। उच्चतम स्तर पर, इसके रंग इस प्रकार प्रकट होते हैं। जिस ताओ को हम साधारणत: जानते हैं उसमें ऊपर लाल और नीचे काला रंग होता है। उदाहरण के लिए, हमारे कुछ अभ्यासियों के दिव्य नेत्र खुले हैं, और उन्होंने पाया है कि लाल रंग जो वे अपनी आँखों से देखते हैं साथ के दूसरे आयाम में हरा है। सुनहरी रंग दूसरे आयाम में बैंगनी दिखाई देता है, क्योंकि इसका ऐसा परिवर्तन होता है। दूसरे शब्दों में, एक आयाम से दूसरे आयाम में रंग बदलते रहते हैं। वह ताइजी जिसमें ऊपर लाल रंग है और नीचे नीला महान प्राचीन ताओ विचारधारा से संबंधित हैं,

जिसमें चीमन विचारधारा की साधना पद्धतियां भी सम्मिलित हैं। चार छोटे 卍 चिन्ह बुद्ध विचारधारा से हैं। वे उसी के समान हैं जैसा मध्य में चिन्ह है, वह भी बुद्ध विचारधारा से है। इन रंगों में फालुन अपेक्षाकृत उज्जवल दिखाई देता है, और हम इसे फालुन दाफा के प्रतीक चिन्ह की भांति प्रयोग करते हैं।

फालुन जो हमें दिव्य नेत्र द्वारा दिखाई पड़ता है आवश्यक नहीं कि इन्हीं रंगों में हो, क्योंकि इसका पृष्ठभूमि का रंग बदल सकता है, हालांकि इसकी रूपरेखा नहीं बदलती। जब यह फालुन जिसे मैंने आपके उदर के निचले भाग में स्थापित किया है आवर्तन करता है, आपका दिव्य नेत्र इसे लाल, बैंगनी, हरे रंग में या शायद रंगहीन देख सकता है। इसका पृष्ठभूमि का रंग लाल, संतरी, पीला, हरा, आसमानी, नीला, और बैंगनी रंगों के क्रम में बदलता रहता है। परिणामस्वरूप, हो सकता है जो आप देखें वह भिन्न रंगों में हो, किन्तु इसके अंदर के स्वास्तिक चिन्ह या ताइजी के रंग और रूपरेखा समान रहेंगे। हमने पाया कि यह पृष्ठभूमि का रंग अपेक्षाकृत अच्छा दिखाई देता है, इसलिए हमने इसे अपना लिया। जिनके पास दिव्य सिद्धियाँ हैं वे इस आयाम के पार बहुत सी वस्तुएं देख सकते हैं।

कुछ लोग कहते हैं : "यह 卍 चिन्ह हिटलर के चिन्ह जैसा दिखाई देता है।" मैं आपको बताना चाहूँगा कि यह चिन्ह स्वयं में किसी वर्ग की धारणा को नहीं दर्शाता। कुछ लोग कहते हैं : "यदि इसका कोना इस ओर झुक जाये, तो यह हिटलर का चिन्ह बन जायेगा।" यह इस प्रकार नहीं है, क्योंकि यह दोनों ओर आवर्तन करता है। हमारा मानव समुदाय इस चिन्ह को बड़े स्तर पर पच्चीस सौ वर्ष पूर्व शाक्यमुनि के समय में जानने लगा था। दूसरे विश्व युद्ध के दौरान हिटलर के समय को कुछ दशक ही हुए हैं। उसने इसका प्रयोग किया, किन्तु जो रंग उसने प्रयोग किया वह हमारे से भिन्न था। यह काला था और इसका कोना ऊपर की ओर था, और इसे सीधी स्थिति में प्रयोग किया गया था। मैं इस फालुन के बारे में इतना ही कहूँगा, हालांकि मैंने केवल इसके सतही रूप का वर्णन किया है।

तब यह 卍 हमारे बुद्ध विचारधारा में क्या दर्शाता है? कुछ लोग कहते हैं कि यह अच्छे भाग्य का सूचक है, जो साधारण लोगों की व्याख्या है। मैं आपको बताना चाहूँगा कि 卍 एक बुद्ध के स्तर को दर्शाता है। यह केवल बुद्ध स्तर पर विद्यमान होता है। किसी बोधिसत्व या अरहत के पास यह नहीं होता। किन्तु वरिष्ठ बोधिसत्व, जैसे

चार वरिष्ठ बोधिसत्वों के पास यह है। हमने पाया है कि ये चार मुख्य बोधिसत्व साधारण बुद्ध स्तर से भी कहीं आगे निकल गई हैं, और वे तथागत से भी ऊँची हैं। तथागत स्तर के आगे, अनेकों बुद्ध होते हैं। एक तथागत के पास केवल एक 卍 चिन्ह होता है। जो तथागत स्तर से आगे निकल गये हैं उनके पास और अधिक 卍 चिन्ह होते हैं। एक बुद्ध जिनका स्तर तथागत से दो गुणा अधिक ऊँचा होता है उनके पास दो 卍 चिन्ह होते हैं। जो और अधिक ऊँचे होते हैं, उनके पास तीन, चार, पांच, आदि स्वास्तिक होते हैं। कुछ के पास इतने अधिक स्वास्तिक होते हैं कि वे उनके पूरे शरीर पर होते हैं जिसमें उनका सर, कंधे, और घुटने सम्मिलित हैं। जब वे बहुत अधिक होते हैं, वे उनकी हथेलियों, उंगलियों, पैर की एड़ियों और पंजों आदि पर भी प्रकट हो जाते हैं। जैसे-जैसे स्तर बढ़ता जाता है, 卍 चिन्ह भी और अधिक बढ़ते जाते हैं। इसलिए, 卍 चिन्ह एक बुद्ध की पदवी को दर्शाता है। जितनी अधिक ऊँची किसी बुद्ध की पदवी होती है, उतने अधिक 卍 चिन्ह उस बुद्ध के पास होते हैं।

चीमन विचारधारा

बुद्ध विचारधारा और ताओ विचारधारा के अलावा, एक चीमन विचारधारा है, जो स्वयं को चीमन साधना पद्धति कहती है। जहाँ तक साधना पद्धतियों का प्रश्न है, साधारण लोगों का यह मानना है: प्राचीन चीन से आज तक, लोगों ने बुद्ध विचारधारा और ताओ विचारधारा को पारंपरिक साधना मार्ग माना है, और वे उन्हें साधना अभ्यास के उचित मार्ग भी कहते हैं। इस चीमन विचारधारा को कभी भी सार्वजनिक नहीं किया गया, और साहित्यिक पुस्तकों के अलावा, बहुत ही कम लोगों ने इसके अस्तित्व के बारे में सुना है।

क्या चीमन विचारधारा का अस्तित्व है? हाँ। मेरे साधना अभ्यास के क्रम के दौरान, विशेषकर बाद के वर्षों में, मैं चीगोंग विचारधारा के तीन बहुत पहुँचे हुए गुरुओं से मिला। उन्होंने मुझे अपनी पद्धतियों का सार प्रदान किया, जो बहुत अनोखी और बहुत अच्छी वस्तुऐं थीं। क्योंकि यह बहुत अनोखा है, साधना द्वारा जो यह संवर्धन करता है बहुत भिन्न है और अधिकांश लोगों द्वारा नहीं समझा जा सकता। इसके अतिरिक्त, उनका मत है कि वे न तो बुद्ध विचारधारा से संबंधित हैं और न ही ताओ

विचारधारा से। वे न तो बुद्धत्व की प्राप्ति के लिए साधना करते हैं और न ही ताओ के लिए। यह जानने पर कि वे न तो बुद्धत्व के लिए या ताओ के लिए साधना करते हैं, लोग उन्हें "पार्श्व द्वार और बेढंगा मार्ग" *(पैंगमेन ज़ुओताओ)* कहते हैं। वे स्वयं को चीमन विचारधारा कहते हैं। पार्श्व द्वार और बेढंगे मार्ग का निम्न भावार्थ है, किन्तु यह नकारात्मक रूप से नहीं है, क्योंकि यह इस विचारधारा को एक दुष्ट पद्धति नहीं मानता- यह निश्चित है। इस शब्द की साहित्यिक परिभाषा भी इसे दुष्ट पद्धति का दर्जा नहीं देती। इतिहास में, बुद्ध विचारधारा और ताओ विचारधारा को "पारंपरिक विचारधाराएँ" कहा गया है। जब यह पद्धति लोगों द्वारा नहीं समझी जा सकती, लोग इसे "पार्श्व द्वार" या बगल का मार्ग और एक गैर-पारंपरिक विचारधारा कहते हैं। इसमें "बेढंगा मार्ग" क्या है ? "बेढंगे" का अर्थ है अव्यवस्थित या उलझा हुआ मार्ग। "बेढंगा" जो प्राचीन चीन का शब्द है उसे अक्सर अव्यवस्थित के अर्थ में प्रयोग किया जाता है। पार्श्व द्वार और बेढंगा मार्ग इसी भावार्थ का सूचक है।

यह एक दुष्ट पद्धति क्यों नहीं है? यह इसलिए क्योंकि इसकी भी कठोर शिनशिंग आवश्यकताएँ हैं। इसकी साधना पद्धति भी विश्व की प्रकृति का पालन करती है। यह विश्व की प्रकृति या सिध्दांत की अवमानना नहीं करती, और न ही यह बुरे कार्यों में लिप्त होती है। इसलिए, इसे एक दुष्ट पद्धति नहीं कहा जा सकता। बुद्ध विचारधारा और ताओ विचारधारा पारंपरिक विचारधाराएं हैं, इसलिए नहीं कि विश्व की प्रकृति उनकी पद्धतियों के अनुरूप है, बल्कि बुद्ध और ताओ विचारधारा दोनों की पद्धतियाँ विश्व की प्रकृति का पालन करती हैं। यदि चीमन विचारधारा की साधना पद्धति भी विश्व की प्रकृति के अनुरूप है, तो यह एक दुष्ट पद्धति नहीं है बल्कि एक उचित विचारधारा है। यह इसलिए क्योंकि अच्छाई या बुराई और परोपकार या दुष्टता में भेद करने का मानदण्ड विश्व की प्रकृति है। इसकी साधना विश्व की प्रकृति का पालन करती है, इसलिए यह भी एक उचित मार्ग है, हालांकि इसकी आवश्यकताएं बुद्ध विचारधारा और ताओ विचारधारा से भिन्न हैं। यह बड़े स्तर पर शिष्यों को शिक्षा नहीं देती, और यह जनसमुदाय के बहुत कम भाग को सिखाया जाता है। ताओ विचारधारा बहुत से शिष्यों को शिक्षा देती है, किन्तु केवल एक शिष्य सच्ची शिक्षाएँ प्राप्त करता है। बुद्ध विचारधारा समस्त प्राणियों के उद्धार में विश्वास करती है, इसलिए जो कोई साधना कर सकता है वह इसे कर सकता है।

एक चीमन विचारधारा पद्धति को दो लोगों द्वारा प्राप्त नहीं किया जा सकता, क्योंकि इतिहास में लम्बे समय से यह केवल एक चुने हुए व्यक्ति को हस्तांतरित होती रही है। इसलिए, पूरे इतिहासकाल में यह साधारण लोगों की नजरों में नहीं आई। नि:संदेह, जब चीगोंग प्रसिद्ध था, मैंने पाया कि इस विचारधारा के कुछ लोग सिखाने के लिए सामने आए। कुछ सार्वजनिक शिक्षाओं के बाद, हालांकि, उन्होंने जाना कि यह संभव नहीं है क्योंकि उनके गुरु ने इसमें से कुछ भाग लोगों के बीच सिखाने की मनाही की थी। यदि आप इसे लोगों के बीच सिखाना चाहते हैं, तो आप शिष्यों का चुनाव नहीं कर सकते। जो इसे सीखने आयेंगे वे विभिन्न शिनशिंग के स्तर और विभिन्न मानसिकताएँ लायेंगे, क्योंकि वे सभी प्रकार के विभिन्न लोग हैं। आप सिखाने के लिए शिष्यों का चुनाव नहीं कर सकेंगे। इसलिए, चीमन विचारधारा को लोगों के बीच बड़े स्तर पर नहीं सिखाया जा सकता। ऐसा करना सरलता से खतरा उत्पन्न कर सकता है क्योंकि इसका अभ्यास बहुत अनोखा है। कुछ लोग आश्चर्य करते हैं कि जब बुद्ध विचारधारा में बुद्धत्व की प्राप्ति के लिए और ताओ विचारधारा में ताओ की प्राप्ति के लिए साधना की जाती है, एक चीमन विचारधारा का अभ्यासी साधना पूर्ण होने के बाद क्या बनेगा? यह व्यक्ति एक विचरण करता हुआ देवता होगा जिसकी विश्व में कोई निश्चित सीमा नहीं होगी। हर कोई यह जानता है कि तथागत शाक्यमुनि का सहालोक है, बुद्ध अमिताभ का सुखावती दिव्यलोक है, और भैषज्यगुरु का आभावान दिव्यलोक है। प्रत्येक तथागत या महान बुद्ध का स्वयं अपना दिव्यलोक है। प्रत्येक महान ज्ञानप्राप्त व्यक्ति अपने दिव्यलोक का निर्माण करता है, और उसके कई शिष्य वहाँ रहते हैं। किन्तु जो चीमन विचारधारा से हैं उनकी विश्व में कोई निर्दिष्ट सीमा नहीं होती, और यह व्यक्ति एक घूमते हुए देवता या अकेले अमर प्राणी की भांति होता है।

दुष्ट साधना का अभ्यास

"दुष्ट साधना का अभ्यास" क्या होता है? इसके कई प्रकार हैं। ऐसे लोग होते हैं जिन्हें दुष्ट साधना के अभ्यास में महारथ हासिल है, क्योंकि पूरे इतिहासकाल में ऐसे लोग रहे हैं जो इन वस्तुओं को हस्तांतरित करते रहे हैं। उन्हें हस्तांतरित क्यों किया जाता रहा है? यह इसलिए क्योंकि वे साधारण लोगों के बीच प्रसिद्धि, निजी लाभ, और

धन खोजते हैं; वे यही चाहते हैं। निश्चित ही, इस प्रकार के व्यक्ति का ऊँचे स्तर का शिनशिंग नहीं होता और वह गोंग प्राप्त नहीं कर सकता। तब वह क्या प्राप्त कर सकता है? कर्म। यदि व्यक्ति के पास बहुत अधिक कर्म है, यह एक प्रकार की शक्ति बन सकता है। किन्तु इस व्यक्ति की कोई पदवी नहीं होती और उसकी एक अभ्यासी के साथ तुलना नहीं की जा सकती। हालांकि, साधारण लोगों की तुलना में, वह उन पर प्रभाव डाल सकता है क्योंकि कर्म भी एक प्रकार की शक्ति होती है। जब इसका घनत्व बहुत अधिक हो जाता है, यह भी व्यक्ति के शरीर की दिव्य सिद्धियों को सुदृढ़ कर सकता है और इस प्रकार का प्रभाव उत्पन्न कर सकता है। इसलिए, पूरे इतिहासकाल के दौरान कुछ लोग इसे सिखाते रहे हैं। ऐसा व्यक्ति कहता है : "बुरे कार्य करने और अपशब्द कहने से, मैं अपना गोंग बढ़ा सकता हूँ।" वह गोंग नहीं बढ़ा रहा है। वास्तव में, वह अपने काले पदार्थ का घनत्व बढ़ा रहा है, क्योंकि बुरे कार्य करने से बुरा पदार्थ, कर्म उत्पन्न होता है। इसलिए, इस व्यक्ति की छोटी-मोटी जन्मजात दिव्य सिद्धियाँ इस कर्म द्वारा सुदृढ़ हो सकती हैं। वह कुछ छोटी दिव्य सिद्धियाँ विकसित कर सकता है, हालांकि वे कुछ भी महत्वपूर्ण करने में असमर्थ होती हैं। इन लोगों का मानना है कि बुरे कार्य करने से, वे भी गोंग बढ़ा सकते हैं- वे यही कहते हैं।

कुछ लोग कहते हैं : "जबकि एक ताओ एक फुट ऊँचा होता है, एक असुर एक गज ऊँचा होगा।" यह साधारण लोगों द्वारा बनाया गया एक गलत वक्तव्य है। एक असुर कभी भी किसी ताओ से ऊँचा नहीं हो सकता। सत्य यह है कि जिसे हम मनुष्य एक विश्व मानते हैं वह अनेकों ब्रह्माण्डों में से एक लघु विश्व है, और हम इसे संक्षेप में विश्व कहते हैं। हर बार जब हमारा विश्व बहुत अधिक वर्षों की समयावधि पूरी कर लेता है, यह सदैव एक महान प्रलय को प्राप्त होता है जो विश्व में सभी कुछ नष्ट कर देता है, जिसमें सभी ग्रह और जीवन सम्मिलित हैं। विश्व की गति एक सिध्दांत के अनुसार होती है। हमारे इस समय के विश्व में, मानव समुदाय ही केवल एक प्रजाति नहीं है जो भ्रष्ट हो गई है। अनेको प्राणी पहले से ही इस परिस्थिति को देख चुके हैं, जहाँ तक वर्तमान समय की बात है, बहुत समय पहले इस विश्व के अंतरिक्ष में एक महान विस्फोट हुआ था। आज, खगोलविद उसे नहीं देख सकते क्योंकि जो हम अब सबसे शक्तिशाली दूरबीनों द्वारा देख सकते हैं वे 150 हजार प्रकाश वर्ष पहले की वस्तुऐं हैं। आज के विश्व के बदलावों को देखने के लिए, हमें 150 हजार वर्ष गुजरने की प्रतीक्षा करनी होगी। जो

एक बहुत सुदूर काल है।

वर्तमान में, संपूर्ण विश्व पहले ही एक महान बदलाव से गुजर चुका है। जब कभी इस प्रकार का बदलाव होता है, संपूर्ण विश्व के सभी जीव पूरी तरह नष्ट और खंडित हो जाते हैं। हर बार जब यह परिस्थिति होती है, प्रकृति और पुराने विश्व के अंदर के संपूर्ण पदार्थ का विस्फोट होना आवश्यक होता है। साधारणत:, इस विस्फोट से सभी जीव समाप्त हो जाते हैं। किन्तु हर बार विस्फोट से हर कोई नष्ट नहीं होता। एक अत्यन्त ऊँचे स्तर के महान ज्ञानप्राप्त प्राणियों द्वारा नये विश्व के पुनर्निर्माण होने के बाद, कुछ प्राणी विस्फोट से बचे रह जाते हैं। महान ज्ञानप्राप्त व्यक्ति विश्व का निर्माण उनकी अपनी प्रकृति और आदर्शों के अनुसार करते हैं। इसलिए, इसकी प्रकृति पिछले विश्व से भिन्न होती है।

जो विस्फोट से बचे रह जाते हैं वे इस विश्व में कार्य करने के लिए पिछली प्रकृति और सिध्दांतों को जकड़े रहते हैं। नवनिर्मित विश्व अपने संचालन में नये विश्व की प्रकृति और सिध्दांतों का पालन करता है। इस प्रकार, जो विस्फोट से बचे रह गये वे असुर बन जाते हैं जो विश्व के सिध्दांतों में विघ्न डालते हैं। तब भी, वे उतने बुरे नहीं हैं क्योंकि वे केवल पिछले समय के विश्व की प्रकृति का पालन कर रहे हैं। वे वही हैं जिन्हें लोग परलोक के असुरों की संज्ञा देते हैं। हालांकि, वे साधारण लोगों के लिए खतरा नहीं है, न ही वे लोगों को कोई क्षति पहुंचाते हैं। वे कार्य करने के लिए केवल अपने सिध्दांतों पर अटल रहते हैं। अतीत में, साधारण लोगों द्वारा यह जानने की मनाही थी। मैं कह चुका हूँ तथागत स्तर से आगे बहुत से बुद्ध हैं। इन असुरों की क्या तुलना है? वे तुलना में बहुत निम्न हैं। बुढ़ापा, रोग, और मृत्यु भी असुरों के प्रकार हैं, किन्तु उन्हें विश्व की प्रकृति को व्यवस्थित रखने के लिए बनाया जाता है।

बुद्धमत संसार के क्रम में विश्वास करता है, जिसमें *असुर* के विषय का वर्णन है। वास्तव में, इसका सन्दर्भ विभिन्न आयामों के प्राणियों से है, किन्तु वे मानवीय, जन्मजात प्रकृति धारण नहीं किये होते हैं। एक महान ज्ञानप्राप्त व्यक्ति के लिए, वे बहुत निम्न स्तर पर होते हैं और बहुत अयोग्य होते हैं। तब भी, वे साधारण लोगों की दृष्टि में भयावह होते हैं क्योंकि उनके पास कुछ शक्ति होती है। वे साधारण लोगों को पशुओं की तरह मानते हैं, इसलिए वे लोगों को ग्रास करने में प्रसन्न होते हैं। गत वर्षों में, वे भी चीगोंग सिखाने के लिए सामने आये हैं। वे किस प्रकार के प्राणी हैं? वे मनुष्यों की भांति

कैसे दिखाई दे सकते हैं? वे बहुत भयावह दिखाई पड़ते हैं। एक बार उनकी वस्तुऐं सीख लेने पर, आपको उनके साथ जाना होगा और उनकी प्रजाति बनना होगा। चीगोंग अभ्यास में, यदि कुछ लोगों के बुरे विचार होते हैं जो उनकी मानसिकता से मेल खाते हैं, तो वे इन लोगों को सिखाने आ जायेंगे। एक पवित्र मन सौ बुराइयों को दबा सकता है। यदि आप किसी वस्तु का इच्छा प्रयास न करें, तो कोई भी आपको परेशान करने का साहस नहीं करेगा। यदि आप बुरा विचार उत्पन्न कर लेते हैं या किसी बुरी वस्तु के पीछे जाते हैं, वे आपकी मदद के लिए आ जायेंगे, और आप एक दुष्ट साधना मार्ग का अनुसरण कर रहे होंगे। यह समस्या आ सकती है।

दूसरी परिस्थिति को "अनजाने में एक दुष्ट साधना मार्ग का अभ्यास करना" कहा जाता है। "अनजाने में एक दुष्ट साधना मार्ग का अभ्यास करना" क्या होता है? यह तब होता है जब कोई बिना जाने हुए किसी दुष्ट मार्ग का अभ्यास करता है। यह समस्या बहुत सार्वजनिक है और बहुत व्यापक हो गई है। जैसा मैंने दूसरे दिन कहा था, कई लोग अपने मन में बुरे विचारों को रखते हुए चीगोंग का अभ्यास करते हैं। हालांकि वे खड़े होकर व्यायाम कर रहे होते हैं और उनके हाथ और पैर थकान से कांप रहे होते हैं, उनका मन शांत नहीं होता। कोई सोचता है : "दाम बढ़ते जा रहे हैं। मुझे व्यायाम समाप्त करके खरीदारी के लिए जाना है। यदि मैं जल्दी नहीं करता, तो वस्तुऐं और मंहगी हो जायेंगी।" दूसरा व्यक्ति सोचता है "कार्यस्थल अब मकानों का आबंटन कर रहा है। क्या मुझे एक मिलेगा? मकानों के आबंटन करने वाले प्रभारी की हमेशा मुझसे अनबन रहती है।" जितना यह व्यक्ति इसके बारे में सोचता है, उतना ही वह क्रोधित होता जाता है : "निश्चित ही वह मुझे मकान आबंटित नहीं करेगा। मैं उससे कैसे झगड़ा करूं।" सभी विचार उभर कर आते हैं। जैसा मैंने पहले कहा, वे पारिवारिक विषयों से लेकर देश की परिस्थिति तक टिप्पणी करते रहते हैं। जब वे दु:खद विषयों के बारे में बात करते हैं, वे और भी क्रोधित हो जाते हैं।

चीगोंग अभ्यास में व्यक्ति को द का मान करना आवश्यक होता है। व्यायामों को करते हुए, यदि आप अच्छी बातें नहीं सोच सकते, तो कम से कम आपको बुरी बातें नहीं सोचनी चाहियें। सबसे अच्छा होगा यदि आप कुछ नहीं सोचते। यह इसलिए क्योंकि निम्न स्तर के चीगोंग अभ्यास में, एक आधार बनाना आवश्यक होता है। यह आधार एक निर्णायक भूमिका निभाता है, क्योंकि मनुष्य की मानसिक क्रियायें बहुत

महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। आप सब यह सोचे : आप अपने गोंग में क्या मिला रहे हैं? जो आप अभ्यास कर रहे हैं वह अच्छा कैसे हो सकता है? यह काला क्यों नहीं हो सकता? जो लोग चीगोंग का अभ्यास करते हैं उनमें से कितनों के इस प्रकार के विचार नहीं होते? हालांकि आप हर समय चीगोंग का अभ्यास करते हैं, आपके रोग जाते क्यों नहीं? यद्यपि कुछ लोगों के व्यायाम स्थल पर वे बुरे विचार नहीं होते, वे हमेशा चीगोंग का अभ्यास दिव्य सिद्धियों के मोहभाव, इधर-उधर के इच्छा प्रयासों, विभिन्न मानसिकताओं, और प्रबल इच्छाओं के साथ करते हैं। वास्तव में, उन्होंने पहले से ही अनजाने में दुष्ट साधना का अभ्यास कर लिया है। यदि आप कहते हैं कि यह व्यक्ति एक दुष्ट मार्ग का अभ्यास कर रहा है, तो वह अप्रसन्न हो जायेगा : "मुझे एक सुप्रसिद्ध चीगोंग गुरु ने शिक्षा दी थी।" किन्तु उस सुप्रसिद्ध चीगोंग गुरु ने आपको द का मान रखने के लिए भी कहा था। क्या आपने यह किया? चीगोंग अभ्यास के दौरान, आप हमेशा कुछ बुरे विचार मिला देते हैं। आप कैसे कह सकते हैं कि आप अभ्यास से अच्छी वस्तुओं के साथ निकलेंगे? यह समस्या है, और यह अनजाने में दुष्ट साधना का अभ्यास करना है- जो बहुत सार्वजनिक है।

स्त्री और पुरुष की युग्म साधना

साधकों के समुदाय में, एक साधना पद्धति है जिसे स्त्री और पुरुष की युग्म साधना कहा जाता है। हो सकता है आपने तिब्बत तंत्र की साधना पद्धतियों को देखा हो, जिसमें एक बुद्ध की प्रतिमा या चित्र में, साधना करते हुए एक पुरुष आकृति एक स्त्री के शरीर को थामे होती है। पुरुष आकृति कई बार एक बुद्ध की भांति दिखती है, और वह एक नग्न स्त्री को थामे होती है। कुछ बैल-मुख और अश्व-मुख वाले वज्र के रूप में बुद्ध के रूपांतरण हो सकते हैं, जो एक निर्वस्त्र स्त्री शरीर को थामे होते हैं। यह इस प्रकार क्यों है? हम पहले इस विषय को सभी को समझायेंगे। हमारे ग्रह में, केवल चीन ही कन्फ्यूशियन मत से प्रभावित नहीं रहा है। कुछ शताब्दियों पहले हमारी पूरी मानव जाति के समान नैतिक गुण थे। इसलिए, यह साधना पद्धति वास्तव में हमारे इस ग्रह से नहीं आई है। यह दूसरे ग्रह से आई थी, किन्तु यह प्रणाली वास्तव में व्यक्ति को साधना के अभ्यास में समर्थ कर सकती है। जब इस साधना पद्धति को उस समय चीन में

प्रचलित किया गया, यह चीनी लोगों के लिए अस्वीकार्य थी क्योकि इसमें स्त्री और पुरुष की युग्म साधना और गुप्त पद्धतियों का समावेश था। इसलिए, तांग राजवंश में ह्वेचांग के शासन काल में शासक ने इस पर हान प्रांतों में पाबंदी लगा दी थी। इसे हान प्रांतों में सिखाने की मनाही थी और इसे उस समय तांग तंत्रविद्या, कहा जाता था। हालांकि यह तिब्बत के अनोखे वातावरण में जो एक विशेष स्थान है, हस्तांतरित होती रही। वे इस प्रकार साधना क्यों करते हैं? पुरुष और स्त्री की युग्म साधना यिन को एकत्रित करके यैंग की पूर्ति करती है और इसके विपरीत भी जिससे परस्पर साधना के लिए परस्पर पूर्ति हो सके, जिससे यिन और यैंग को संतुलित करने का लक्ष्य प्राप्त हो सके।

जैसे ज्ञातव्य है कि बुद्ध विचारधारा या ताओ विचारधारा के अनुसार, विशेष रूप से ताओ के यिन और यैंग के सिध्दांत के अनुसार, एक मानव शरीर में प्राकृतिक रूप से ही यिन और यैंग होते हैं। क्योंकि मानव शरीर में यिन और यैंग होते हैं, यह साधना अभ्यास द्वारा अनेकों दिव्य सिद्धियाँ और जीवन सत्ताएं जैसे अमर शिशु, साधना जनित शिशु, फा-शरीर आदि विकसित कर सकता है। यिन और यैंग के अस्तित्व के कारण, व्यक्ति साधना द्वारा अनेक जीवन सत्ताएं विकसित कर सकता है, जो दानत्येन में बढ़ सकती हैं भले ही उसका शरीर पुरुष का हो या स्त्री का- यह एक जैसा है। यह सिध्दांत वास्तव में उचित लगता है। ताओ विचारधारा अक्सर ऊपरी शरीर को यैंग और निचले शरीर को यिन मानती है। कुछ लोग शरीर के पीछे के भाग को यैंग और आगे के भाग को यिन मानते हैं। कुछ लोग शरीर के बांयें भाग को यैंग और दांयें भाग को यिन मानते हैं। चीन में, हमारे यहां कहा जाता है कि शरीर का बांया भाग पुरुष है और दांया भाग स्त्री, और इसका निष्कर्ष बहुत तर्क के साथ निकाला जाता है। क्योंकि मानव शरीर में प्राकृतिक रूप से यिन और यैंग होते हैं, यिन और यैंग की परस्पर क्रिया द्वारा, यह स्वयं ही यिन और यैंग के संतुलन का लक्ष्य प्राप्त कर सकता है; यह इस प्रकार अनेक जीवन सत्ताओं को जन्म दे सकता है।

यह तब एक विषय को स्पष्ट करता है : एक पुरुष और स्त्री की युग्म साधना की पद्धति को अपनाये बिना भी, हम साधना में एक बहुत ऊँचे स्तर पर पहुंच सकते हैं। पुरुष और स्त्री की युग्म साधना की पद्धति को यदि अनुचित प्रकार से प्रयोग में लाया जाता है, तो व्यक्ति को आसुरिक विघ्न का सामना करना होगा, और यह एक दुष्ट

पद्धति बन जायेगी। तंत्रविद्या में यदि पुरुष और स्त्री की युग्म साधना को एक बहुत ऊँचे स्तर पर प्रयोग किया जाता है, तो आवश्यक है कि भिक्षु या लामा की साधना का स्तर बहुत ऊँचा होना चाहिए। उस समय, गुरु किसी व्यक्ति का इस प्रकार की साधना पद्धति में मार्गदर्शन कर सकता है। क्योंकि इस व्यक्ति का शिनशिंग स्तर बहुत ऊँचा है, वह दुष्टता की ओर भटके बिना स्वयं को ठीक से संभाल सकता है। किन्तु जिसका शिनशिंग निम्न स्तर का है उसे इस पद्धति को बिल्कुल नहीं अपनाना चाहिए। अन्यथा, यह व्यक्ति निश्चित ही दुष्ट पद्धति का अनुसरण करेगा। क्योंकि उसका शिनशिंग स्तर सीमित है और क्योंकि वह साधारण लोगों की इच्छाओं और वासना को नहीं छोड़ पाया है, जहां उसका शिनशिंग मानदण्ड है, यदि इसका प्रयोग किया गया तो यह निश्चित ही दुष्ट होगा। इसलिए, हम कह चुके हैं जब इसे निम्न स्तर पर सहज ही सिखाया जाता है, तो यह एक दुष्ट पद्धति को सिखाना है।

हाल के वर्षों में, कई चीगोंग गुरु पुरुष और स्त्री की युग्म साधना सिखाते आ रहे हैं। इसमें इतना विचित्र क्या है? पुरुष और स्त्री की युग्म साधना ताओ विचारधारा की पद्धतियों में भी प्रयोग होने लगी है। इसके अतिरिक्त, इसका आरंभ आज नहीं हुआ है, बल्कि तांग राजवंश में हुआ था। ताओ विचारधारा में पुरुष और स्त्री की युग्म साधना कैसे हो सकती है? ताओ विचारधारा के ताइजी सिध्दांत के अनुसार, एक मानव शरीर एक लघु विश्व है जिसमें प्राकृतिक रूप से यिन और यैंग होते हैं। सभी सच्ची, महान पवित्र शिक्षाएं एक सुदूर काल से हस्तांतरित होती आ रही हैं। कोई भी बदलाव या मिलावट उस विशिष्ट विचारधारा की पद्धति को खराब कर देगी और साधना अभ्यास को पूर्ण करने के लक्ष्य की प्राप्ति को असमर्थ कर देगी। इसलिए यदि आपकी पद्धति में पुरुष और स्त्री की युग्म साधना नहीं है, तो आपको इसे साधना में बिल्कुल नहीं करना चाहिए। अन्यथा, आप भटक जायेंगे और समस्याओं में घिर जायेंगे। विशेष रूप से हमारी फालुन दाफा की पद्धति में, पुरुष और स्त्री की युग्म साधना नहीं होती, और न ही हमें इसकी आवश्यकता है। हम इस विषय को इस दृष्टि से देखते हैं।

मन और शरीर की साधना

मन और शरीर की साधना का विषय आपको पहले ही समझाया जा चुका है। मन और शरीर की साधना का संदर्भ अपने शिनशिंग का उसी समय संवर्धन करने से है जब शरीर का संवर्धन किया जा रहा होता है। दूसरे शब्दों में, मूल शरीर रूपांतरित किया जाता है। रूपांतरण की प्रक्रिया में, मानव कोशिकाएँ क्रमश: उच्च शक्ति पदार्थ से प्रतिस्थापित कर दी जायेंगी, और उम्र का बढ़ना धीमा हो जायेगा। व्यक्ति का शरीर युवावस्था की ओर लौटता हुआ प्रतीत होगा और क्रमबद्ध रूपांतरण अनुभव करेगा, जब अंत तक, यह पूरी तरह उच्च शक्ति पदार्थ द्वारा रूपांतरित कर दिया जाता है। तब, इस व्यक्ति का शरीर पहले ही दूसरे प्रकार के पदार्थ के शरीर में परिवर्तित हो चुका होगा। वह शरीर, जैसा मैंने पहले कहा, पंच तत्वों को पार कर जायेगा। क्योंकि यह पंच तत्वों तक सीमित नहीं है, इस व्यक्ति के शरीर का कभी क्षय नहीं होगा।

मठों में किये जाने वाली साधना पद्धति केवल मन की साधना से संबंधित होती है, इसलिए यह व्यायाम या शरीर की साधना नहीं सिखाती। इसमें निर्वाण की आवश्यकता होती है, क्योंकि जो पद्धति शाक्यमुनि ने सिखाई थी उसमें निर्वाण आवश्यक होता है। वास्तव में, शाक्यमुनि का स्वयं अपना महान, उच्च-स्तरीय धर्म था, और वे अपने मूल शरीर को पूरी तरह उच्च शक्ति पदार्थ में रूपांतरित करने और अपने साथ ले जाने के लिए समर्थ थे। इस साधना पद्धति को छोड़ने के लिए, उन्होंने स्वयं निर्वाण का मार्ग अपनाया। उन्होंने यह इस प्रकार क्यों सिखाया? उन्होंने ऐसा इसलिए किया जिससे लोग, जहाँ तक हो सके, मोहभाव और सर्वस्व त्याग सकें, जिसमें अंतत: उनका भौतिक शरीर भी सम्मिलित था; सभी मोहभावों का त्याग किया जाना था। इसलिए उन्होंने निर्वाण का मार्ग अपनाया जिससे लोग इसे जितना संभव हो उतना प्राप्त कर सकें। इसलिए, पूरे इतिहास काल में सभी बुद्धमत के भिक्षुओं ने निर्वाण का मार्ग अपनाया। निर्वाण का अर्थ है कि जब किसी भिक्षु की मृत्यु होती है वह अपना भौतिक शरीर त्याग देता है, और उसकी मूल आत्मा उसके गोंग के साथ उत्थान करती है।

ताओ विचारधारा शरीर की साधना पर बल देती है। क्योंकि यह शिष्यों का चयन करती है और समस्त प्राणियों को मुक्ति प्रदान नहीं करती, इसके शिष्य बहुत

विलक्षण प्रतिभा वाले होते हैं। इसलिए, यह तकनीक और जीवन संवर्धन संबंधित विषय सिखाती है। किन्तु बुद्ध विचारधारा की इस विशिष्ट साधना पद्धति में, और विशेष रूप से बुद्धमत में, ये नहीं सिखाये जाते। ऐसा नहीं है कि बुद्ध विचारधारा की सभी पद्धतियाँ इसे नहीं सिखातीं। बुद्ध विचारधारा की भी कई उच्च-स्तरीय पद्धतियाँ इसे सिखाती हैं। हमारी पद्धति भी इसे सिखाती है। हमारे फालुन दाफा में मूल-शरीर और अमर शिशु दोनों आवश्यक होते हैं; वे दोनों भिन्न होते हैं। अमर शिशु भी एक शरीर है जो उच्च शक्ति पदार्थ से बना होता है, किन्तु इसे सहज ही हमारे इस आयाम में नहीं दिखाया जा सकता। लम्बे समय तक इस आयाम में एक साधारण व्यक्ति जैसा रूप बनाये रखने के लिए, हमारे लिए हमारा मूल-शरीर आवश्यक होता है। इसलिए, इस मूल-शरीर के रूपांतरित हो जाने पर, इसकी आणविक संरचनाएँ नहीं बदलतीं हालांकि इसकी कोशिकाएँ उच्च-शक्ति पदार्थ द्वारा प्रतिस्थापित की जा चुकी हैं। इस प्रकार, यह शरीर साधारण लोगों के शरीर से बहुत भिन्न नहीं लगेगा। किन्तु एक भिन्नता अवश्य है : वह यह, कि यह शरीर दूसरे आयामों में प्रवेश कर सकता है।

जो पद्धतियाँ शरीर और मन दोनों की साधना करती हैं वे व्यक्ति को दिखने में बहुत युवा बना देती हैं, और व्यक्ति अपनी वास्तविक उम्र से बहुत भिन्न दिखाई देता है। एक दिन एक महिला ने मुझ से पूछा : "गुरुजी, आप क्या समझते हैं कि मेरी उम्र कितनी होगी?" वास्तव में, वह सत्तर वर्ष की होने जा रही थी, किन्तु वह केवल चालीस की लगती थी। उसके चेहरे पर कोई झुर्रियाँ नहीं थीं, और उसका वर्ण गोरा और खिला हुआ था। वह सत्तर की ओर पहुँचती हुई महिला कहीं से दिखाई नहीं पड़ती थी। यह हमारे फालुन दाफा के अभ्यासियों के साथ होगा। एक परिहास सुनाता हूँ, युवा महिलायें हमेशा श्रृंगार करना पसंद करती हैं और अपने रंग रूप को उजला और अच्छा बनाना चाहती हैं। मैं कहूँगा कि यदि आप वास्तव में मन और शरीर के साधना अभ्यास का अनुसरण करें, तो आपको अपने आप ही यह लक्ष्य प्राप्त हो जायेगा। निश्चित ही आपको श्रृंगार सामग्री की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। हम इस प्रकार के और उदाहरण नहीं देंगे। विगत में, क्योंकि विभिन्न व्यवसायों में अधिकतर वयोवृद्ध कॉमरेड थे, मुझे एक युवा की भांति माना जाता था। आजकल स्थिति में सुधार हो रहा है, और सभी व्यवसायों में अब अपेक्षाकृत अधिक युवा लोग हैं। वास्तव में, मैं उतना युवा नहीं हूँ। मैं पचास की उम्र को पहुँच रहा हूँ, क्योंकि मैं पहले ही तैंतालीस साल का हो चुका हूँ।

फा-शरीर

बुद्ध प्रतिमा के चारों ओर एक शक्ति क्षेत्र क्यों होता है? कई लोग इसे समझा नहीं पाते। कुछ लोग कहते हैं : "बुद्ध प्रतिमा के पास शक्ति क्षेत्र होता है क्योंकि भिक्षु इसकी ओर शास्त्रों का उच्चारण करते हैं।" दूसरे शब्दों में, यह शक्ति क्षेत्र भिक्षुओं के इसके सामने साधना अभ्यास करने से आता है। यदि यह भिक्षुओं या दूसरों के साधना अभ्यास द्वारा आता है, तो इस शक्ति क्षेत्र को सभी ओर फैला हुआ होना चाहिए न कि एक ही दिशा में। मठ के धरातल, छत, और दीवारों सभी ओर समान शक्ति क्षेत्र होना चाहिए। तब बुद्ध प्रतिमा पर शक्ति क्षेत्र इतना प्रबल क्यों होता है? विशेष रूप से जो प्रतिमाएँ पर्वतों, गुफाओं या किसी चट्टान पर होती हैं, वहाँ अक्सर शक्ति क्षेत्र होता है। कुछ लोगों ने इसे अलग-अलग तरह से समझाया है किन्तु कोई भी स्पष्ट नहीं समझा पाया। वास्तव में, बुद्ध प्रतिमा के पास शक्ति क्षेत्र इसलिए होता है क्योंकि इसमें एक महान ज्ञानप्राप्त व्यक्ति का फा-शरीर होता है। क्योंकि वहाँ ज्ञानप्राप्त व्यक्ति का फा-शरीर हैं, इसमें शक्ति होती है।

शाक्यमुनि हों या बोधिसत्व अवलौकितेश्वर[2], यदि इतिहास में वे वास्तव में हुए थे- आप सब यह सोचें- क्या वे भी अपने साधना अभ्यास के दौरान अभ्यासी नहीं थे? जब कोई व्यक्ति पर-त्रिलोक-फा के अत्यन्त ऊँचे स्तर पर साधना अभ्यास करता है, वह फा-शरीर विकसित करेगा। फा-शरीर व्यक्ति के दानत्येन क्षेत्र से जन्म लेता है और फा तथा गोंग से बना होता है। यह दूसरे आयामों में साकार होता है। फा-शरीर के पास व्यक्ति की अधिकांश शक्तियाँ होती हैं, किन्तु इसके मन और विचार उस व्यक्ति के नियंत्रण में होते हैं। तब भी फा-शरीर स्वयं में एक पूर्ण, स्वतंत्र और वास्तविक जीवन सत्ता होती है। इसलिए, यह कुछ भी स्वयं स्वतंत्र रूप से कर सकता है। जो फा-शरीर करता है वह बिल्कुल वैसा ही होता है जैसा इसकी मुख्य चेतना इससे चाहती है। यदि कोई व्यक्ति कोई कार्य किसी विशेष प्रकार से करता है, उसका फा-शरीर उसी प्रकार करेगा; हमारा फा-शरीर से संदर्भ यही है। जो मैं करना चाहता हूँ वह सब मेरे फा-शरीर द्वारा किया जा सकता है, जैसे सच्चे अभ्यासियों के शरीरों को व्यवस्थित करना। क्योंकि फा-शरीर साधारण लोगों का शरीर धारण किये नहीं होता, यह दूसरे आयामों में प्रकट होता है। इसका शरीर सीमित नहीं होता जो बदल न सके; बल्कि, यह बड़ा या छोटा हो सकता है। कई बार, यह बहुत बड़ा हो जाता है, इतना बड़ा कि आप इसका

पूरा सर भी नहीं देख सकते। कई बार यह बहुत छोटा हो जाता है, एक कोशिका से भी छोटा।

प्रतिमा को प्रतिष्ठापित करना

कारखाने में निर्मित बुद्ध प्रतिमा केवल एक कला की वस्तु है। बुद्ध प्रतिमा में बुद्ध के फा-शरीर को आमंत्रित करने के लिए इसे "प्रतिष्ठापित" किया जाता है जिससे इसकी साधारण लोगों के बीच दृश्यमान रूप से उपासना की जा सके। साधना अभ्यास में, जब किसी अभ्यासी के हृदय में भक्तिभाव होता है, बुद्ध प्रतिमा का फा-शरीर उस व्यक्ति के लिए फा की संभाल करेगा, और उसकी देख-रेख और रक्षा करेगा। प्रतिष्ठापित करने का यही वास्तविक उद्देश्य है। यह औपचारिक प्रतिष्ठापन समारोह में, केवल एक अत्यन्त ऊँचे स्तर के महान ज्ञानप्राप्त व्यक्ति या एक बहुत ऊँचे स्तर के अभ्यासी, जिसके पास यह शक्ति हो, के द्वारा पवित्र विचारों को व्यक्त करने से किया जा सकता है।

एक मठ में यह आवश्यक होता है कि इसकी बुद्ध प्रतिमा प्रतिष्ठापित की गई हो, और लोग कहते हैं कि बिना प्रतिष्ठापन के, बुद्ध प्रतिमा की कोई उपयोगिता नहीं होगी। आज, मठों के भिक्षु- जो सच्चे महान गुरु थे- सभी जा चुके हैं। महान सांस्कृतिक आंदोलन के बाद से, कई कनिष्ठ भिक्षु जिन्हें कोई वास्तविक शिक्षाएँ प्राप्त नहीं हुई थीं, वे अब मठाधीश बन गये हैं। बहुत सी वस्तुओं का हस्तांतरण नहीं हुआ है। यदि आप उनमें से किसी से पूछें : "प्रतिष्ठापन का क्या उद्देश्य होता है?" वह कहेगा : "बुद्ध प्रतिमा प्रतिष्ठापन के बाद कार्य करेगी।" वह स्पष्ट नहीं समझा पाता कि यह विशेष रूप से क्यों उपयोगी है, इसलिए वह केवल इसका समारोह आयोजित करता है। वह बुद्ध प्रतिमा के अंदर एक बुद्धमत का शास्त्र रख देगा। तब वह प्रतिमा को कागज में लपेट देगा और इसकी ओर शास्त्रों का उच्चारण करेगा। वह इसे प्रतिष्ठापित करना कहता है, किन्तु क्या इससे प्रतिष्ठापन का उद्देश्य प्राप्त हो गया है? यह इस पर निर्भर करता है कि वह शास्त्रों का उच्चारण किस प्रकार करता है। शाक्यमुनि ने कहा था कि व्यक्ति को शास्त्र का उच्चारण एक पवित्र मन से और एकाग्रचित होकर करना चाहिए जिससे उनके साधना अभ्यास का दिव्यलोक भी हिल जाये। केवल तभी एक महान ज्ञानप्राप्त व्यक्ति को

आमंत्रित किया जा सकता है। और केवल जब किसी महान ज्ञानप्राप्त व्यक्ति का फा-शरीर बुद्ध प्रतिमा में आता है तभी प्रतिष्ठापन का उद्देश्य पूर्ण होता है।

वहाँ शास्त्रों का उच्चारण करते समय, कुछ भिक्षु अपने मन में सोच रहे होते हैं: "प्रतिष्ठापन के बाद, मुझे कितना धन मिलेगा?" या शास्त्रों का उच्चारण करते समय, कोई सोचता है : "अमुक ने मेरे साथ बहुत बुरा बर्ताव किया।" उनके भी व्यक्तिगत मतभेद होते हैं। अब यह धर्मविनाश का काल है। इसे नकारा नहीं जा सकता कि ऐसी परिस्थिति होती है। हम यहाँ बुद्धमत की आलोचना नहीं कर रहे हैं। धर्मविनाश काल में कुछ उपासना स्थल शांतिमय नहीं रह गये हैं। यदि किसी का मन इन्हीं वस्तुओं से भरा हुआ है और वह इस प्रकार के बुरे विचार व्यक्त करता है, तो वह महान ज्ञानप्राप्त व्यक्ति कैसे आ सकता है? प्रतिष्ठापन का उद्देश्य किसी भी प्रकार पूर्ण नहीं हो सकता। किन्तु यह सदैव ऐसा नहीं है, क्योंकि कुछ अच्छे उपासना स्थल और ताओ मठ हैं।

एक शहर में, मैंने एक भिक्षु को देखा जिसके हाथ बहुत काले थे। उसने एक बुद्ध प्रतिमा के अंदर शास्त्र रखे और उसे लापरवाही से बंद कर दिया। उसके बाद उसने कुछ शब्द बुदबुदाये, और प्रतिष्ठापन प्रक्रिया पूरी हो गयी। तब वह एक और बुद्ध प्रतिमा लाया और फिर से कुछ शब्द बुदबुदाये। वह प्रतिष्ठापन के लिए हर बार चालीस युआन लेता था। आजकल, भिक्षुओं ने प्रतिष्ठापन को व्यावसायिक बना दिया है और इससे धन अर्जित करते हैं। इसे देखने पर, मैंने पाया कि प्रतिष्ठापन पूर्ण नहीं हुआ था क्योंकि वह इसे कर ही नहीं सका था। आजकल भिक्षु इस प्रकार के कार्य भी करते हैं। और मैंने क्या देखा? एक व्यक्ति जो बुद्ध उपासक जान पड़ता था वह एक मठ में बुद्ध प्रतिमा को प्रतिष्ठापित कर रहा था। उसने एक दर्पण धूप में दिखाया और इसका प्रकाश बुद्ध प्रतिमा पर डाला। तब उसने घोषणा की कि प्रतिष्ठापन हो गया है। यह इतना उपहासपूर्ण हो गया है! आज, बुद्धमत इस बिंदु तक आ गया है, और यह एक बहुत साधारण घटना है।

नानजिंग[3] में एक बड़ी कांस्य की बुद्ध प्रतिमा बनायी गयी, और इसे हांगकांग के लांताओ द्वीप में स्थापित किया गया। यह एक बहुत बड़ी प्रतिमा है। दुनिया भर से अनेक भिक्षु इसे प्रतिष्ठापित करने आये। एक भिक्षु ने दर्पण को धूप में दिखा कर बुद्ध प्रतिमा के मुख पर प्रकाश डाला और इसे प्रतिष्ठापन कहा। इतने महान सम्मानीय समारोह में भी, ऐसा कुछ हो सकता है। मैं इसे वास्तव में निंदनीय मानता हूँ! कोई

आश्चर्य नहीं कि शाक्यमुनि ने कहा था : "धर्मविनाश काल के समय तक, भिक्षुओं के लिए स्वयं को बचाना भी कठिन होगा, दूसरों का उद्धार करना दूर की बात है।" इसके अतिरिक्त, कई भिक्षु बुद्धमत के शास्त्रों की अपने दृष्टिकोण से विवेचना करते हैं। यहाँ तक की शक्ति रानी माँ के शास्त्र भी उपासना स्थलों में पहुँच गये हैं। कई वस्तुएँ जो पारंपरिक बुद्धमत की सामग्री नहीं हैं वे भी उपासना स्थलों तक पहुँच गई हैं, जिससे ये स्थान अब बहुत अशांत और उलझन भरे हो गये हैं। निश्चित ही, ऐसे भिक्षु अभी भी हैं जो सच्चे रूप से साधना अभ्यास करते हैं और बहुत अच्छे हैं। प्रतिष्ठापन वास्तव में एक महान ज्ञानप्राप्त व्यक्ति के फा-शरीर को बुद्ध प्रतिमा पर रहने के लिए आमंत्रित करना है। यह प्रतिष्ठापन है।

यदि किसी बुद्ध प्रतिमा का सफलतापूर्वक प्रतिष्ठापन नहीं हुआ है, तो इसकी उपासना नहीं करनी चाहिए। यदि इसकी उपासना की जाती है तो परिणाम गंभीर होंगे। इसके क्या गंभीर परिणाम होंगे? आज, मानव शरीर के शोधकर्ताओं ने यह पता लगाया है कि हमारे मानवीय मन की क्रियायें या मानवीय विचार एक पदार्थ को उत्पन्न कर सकते हैं। एक बहुत ऊँचे स्तर पर, हमने पाया है कि यह वास्तव में एक पदार्थ है, किन्तु यह पदार्थ मस्तिष्क तरंगों के रूप में नहीं है जैसा हमें आज खोज द्वारा पता लगा है। बल्कि, यह एक संपूर्ण मानवीय मस्तिष्क रूप में है। क्योंकि इसमें शक्ति नहीं होती, यह उसके कुछ समय बाद बिखर जाता है। इसके विपरीत, एक अभ्यासी की शक्ति एक लम्बे समय तक संरक्षित रह सकती है। कहने का अर्थ यह नहीं है कि कारखाने में बनने के बाद बुद्ध प्रतिमा का कोई मन होता है। इसका कोई मन नहीं होता। कुछ बुद्ध प्रतिमाओं का प्रतिष्ठापन नहीं हुआ है, और न ही उपासना स्थलों में ले जाने के बाद प्रतिष्ठापन का उद्देश्य पूर्ण हुआ। यदि प्रतिष्ठापन किसी पाखण्डी चीगोंग गुरु या किसी दुष्ट पद्धति के व्यक्ति द्वारा किया जाता है, तो यह और भी खतरनाक होगा, क्योंकि कोई भेड़िया या नेवला बुद्ध प्रतिमा पर आ जायेगा।

कोई बुद्ध प्रतिमा जो प्रतिष्ठापन की प्रक्रिया से नहीं गुजरी है, यदि आप इसकी उपासना करते हैं, तो यह बहुत खतरनाक होगा। यह कैसे खतरनाक होगा? मैं बता सकता हूँ जैसे मनुष्य जाति का आज तक विकास हुआ है, सभी कुछ विकृत हो रहा है। पूरे समाज और संपूर्ण विश्व में सभी कुछ एक के बाद एक भ्रष्ट हो रहा है। जो कुछ साधारण लोगों के साथ हो रहा है वह स्वयं उन्हीं के कारण है। अनेक ओर से विघ्न के

कारण, एक उचित मार्ग का पता करना या उचित मार्ग पर चलना बहुत कठिन है। कोई बुद्ध की उपासना करना चाहता है, किन्तु कौन बुद्ध है? उपासना के लिए उनमें से किसी को ढूंढना बहुत कठिन है। यदि आप इस पर विश्वास नहीं करते, तो मैं बताता हूँ। यदि कोई व्यक्ति किसी बुद्ध प्रतिमा की उपासना करता है जो प्रतिष्ठापन की प्रक्रिया से नहीं गुजरी है तो बहुत बुरा होगा। आज कितने लोग हैं जो बुद्ध की उपासना साधना में उचित फल की प्राप्ति के लिए करते हैं? ऐसे लोग बहुत कम हैं। अधिकतर लोगों का बुद्ध की उपासना करते समय क्या उद्देश्य रहता है? वे कठिनाइयों को हटाना चाहते हैं, समस्याओं को सुलझाना चाहते हैं, और धन अर्जित करना चाहते हैं। क्या ये वस्तुऐं बुद्धमत के शास्त्रों से हैं? उनमें ये वस्तुएँ तनिक भी नहीं हैं।

कल्पना कीजिए एक बुद्ध उपासक जिसका मन धन के पीछे है, वह किसी बुद्ध की प्रतिमा या बोधिसत्व अवलौकितेश्वर या किसी तथागत के सामने समर्पित होता है और कहता है: "मुझे कुछ धन प्रदान करने की कृपा करें।" तभी एक पूर्ण मन बन जायेगा। क्योंकि यह आग्रह एक बुद्ध प्रतिमा को किया गया है, यह तुरंत ही उस बुद्ध प्रतिमा पर चला जायेगा। दूसरे आयाम में, एक सत्ता बड़ी या छोटी बन सकती है। जब यह विचार इस सत्ता पर आता है, तो बुद्ध प्रतिमा का एक मस्तिष्क और मन विकसित हो जायेगा, किन्तु इसके पास शरीर नहीं है। और लोग भी बुद्ध प्रतिमा की उपासना के लिए आते हैं। इस प्रकार की उपासना से, वे धीरे-धीरे उसे कुछ शक्ति प्रदान करेंगे। यह और भी खतरनाक होगा यदि कोई अभ्यासी इसकी उपासना करता है, क्योंकि यह उपासना धीरे-धीरे उसे शक्ति प्रदान करेगी और उसका एक दृश्यमान शरीर विकसित हो जायेगा। किन्तु यह दृश्यमान शरीर दूसरे आयाम में विकसित होता है। इसके बनने के बाद, यह दूसरे आयाम में रहता है और विश्व का कुछ सत्य भी जान सकता है। इसलिए, यह लोगों के लिए कुछ कार्य कर सकता है। इस प्रकार, यह कुछ गोंग भी विकसित कर सकता है। किन्तु यह लोगों की मदद शर्त के साथ और दाम सहित करता है। यह दूसरे आयाम में स्वतंत्र घूम सकता है और साधारण लोगों को बहुत सरलता से नियंत्रित कर सकता है। यह दृश्यमान शरीर बिल्कुल वैसा ही दिखाई पड़ता है जैसी वह प्रतिमा। इसलिए यह मनुष्य की उपासना द्वारा है जिससे किसी पाखण्डी बोधिसत्व अवलौकितेश्वर या किसी नकली तथागत की रचना हो जाती है, जो बुद्ध के स्वरूप के साथ ठीक बुद्ध प्रतिमा जैसी दिखाई पड़ती है। किन्तु पाखण्डी बुद्ध या पाखण्डी

बोधिसत्व का मन बहुत बुरा होता है और धन के पीछे होता है। इसका जन्म दूसरे आयाम में होता है। मन के होने से, यह कुछ सत्य जानती है और कोई बड़ा दुष्कर्म करने का साहस नहीं करती, किन्तु यह छोटे दुष्कर्म करने का साहस अवश्य करती है। कई बार यह इन लोगों की मदद भी करती है; अन्यथा यह पूरी तरह दुष्ट होगी और उसे समाप्त कर दिया जायेगा। यह लोगों की मदद किस प्रकार करती है? जब कोई प्रार्थना करता है : "हे बुद्ध, कृपया मेरी मदद करें क्योंकि मेरे घर में कोई बीमार है," तब, यह आपकी मदद करेगी। यह आपको दानपात्र में धन दान करने देगी। क्योंकि इसका मन धन के पीछे है। जितना अधिक धन आप दानपात्र में डालते हैं, उतनी ही जल्दी बीमारी ठीक होगी। क्योंकि इसमें कुछ शक्ति होती है, यह दूसरे आयाम से साधारण व्यक्ति को नियंत्रित कर सकती है। यदि कोई अभ्यासी इसकी उपासना के लिए जाता है तो यह विशेष रूप से खतरनाक होगा। यह अभ्यासी किसलिए प्रार्थना करता है? धन के लिए। आप सब यह सोचें : एक अभ्यासी को धन के पीछे क्यों जाना चाहिए? परिवार के सदस्यों के अभाग्य मिटाने और रोग दूर करने के लिए प्रार्थना करना अपने परिवार के साथ भावुकता का मोहभाव दर्शाता है। क्या आप दूसरे लोगों का भाग्य बदलना चाहते हैं? सभी का अपना-अपना भाग्य होता है ! यदि आप इसकी उपासना करते हैं और बुदबुदाते हैं : "कृपया मुझे कुछ धन प्राप्त करने में मदद कीजिए," तब, यह आपकी मदद करेगी। यह चाहेगी कि आप और अधिक धन के पीछे जायें, क्योंकि जितना आप इसे चाहेंगे, उतनी ही वस्तुऐं यह आप से ले सकती है। यह एक संतुलित व्यवसाय है। दूसरे उपासक दानपात्र में बहुत सा धन डाल चुके हैं, और यह आपको कुछ ले लेने देगी। यह किस प्रकार किया जाता है? द्वार से बाहर निकल कर आपको कोई बटुआ मिल सकता है, या कार्यस्थल आपको कोई पारितोषिक दे सकता है। किसी भी प्रकार, यह आपके लिए धन पाने की व्यवस्था कर देगी। यह आपकी मदद बिना शर्त क्यों करेगी? कोई त्याग नहीं तो कोई प्राप्ति नहीं। यदि इसकी आवश्यकता है तो यह आपका कुछ गोंग ले लेगी, या यह आपके द्वारा साधना में अर्जित दान ले जायेगी। यह इन वस्तुओं को चाहती है।

ये पाखण्डी बुद्ध कई बार बहुत खतरनाक होते हैं। हमारे कई अभ्यासी जिनके दिव्य नेत्र खुले हैं, सोचते हैं कि उन्होंने किसी बुद्ध को देखा है। कोई कहता है कि इस मंदिर में आज बुद्ध का एक समूह आया, जिसमें अमुक बुद्ध अगवाही कर रहे थे। यह

व्यक्ति वर्णन करेगा कि कल कैसा समूह था, और आज कैसा समूह है, और जैसे ही एक समूह जाता है, उसके कुछ देर बाद दूसरा समूह आ जाता है। वे कौन हैं? वे इस वर्ग से संबंधित हैं- वे सच्चे बुद्ध नहीं हैं, बल्कि पाखण्डी हैं। ऐसी घटनाएँ बहुतायत से होती हैं।

यह और भी खतरनाक होगा यदि यह किसी मंदिर में होता है। यदि भिक्षु इसकी उपासना करते हैं, यह उन पर हावी हो जायेगी : "क्या तुम मेरी उपासना नहीं कर रहे हो? और तुम यह एक स्पष्ट मन से कर रहे हो! क्या तुम साधना अभ्यास नहीं करना चाहते? मैं तुम्हारी देख-रेख करूँगा और बताऊँगा कि साधना अभ्यास कैसे किया जाये।" यह आपके लिए व्यवस्था करेगी। यदि वे साधना पूरी करते हैं तो वे कहाँ जायेंगे? क्योंकि साधना अभ्यास की व्यवस्था इसके द्वारा की गई थी, कोई भी उच्च स्तर की पद्धति आपको स्वीकार नहीं करेगी। क्योंकि इसने आपके लिए पूरी व्यवस्था की है, भविष्य में आपको इसका अनुसरण करना होगा। क्या आपकी साधना व्यर्थ नहीं जायेगी? मैं बता चुका हूँ मनुष्य जाति के लिए साधना में उचित फल प्राप्त करना बहुत कठिन है। यह परिस्थिति बहुतायत से होती है। आपमें से अनेकों ने सुप्रसिद्ध पर्वतों और मुख्य नदियों के किनारे बुद्ध प्रकाश को देखा है। इनमें से अधिकांश इस वर्ग से संबंधित है। इसमें शक्ति होती है और यह स्वयं को प्रकट कर सकती है। एक सच्चा महान ज्ञानप्राप्त व्यक्ति अकारण ही स्वयं को प्रकट नहीं करता।

विगत में, ऐसे तथाकथित सांसारिक बुद्ध या सांसारिक ताओ बहुत कम होते थे। हालांकि, अब ये बहुत हैं। जब वे कोई दुष्कर्म करते हैं, उच्च प्राणी उन्हें मार देते हैं। जब यह होने वाला होता है, वे भागकर बुद्ध प्रतिमा पर चढ़ जाते हैं। अक्सर, एक महान ज्ञानप्राप्त व्यक्ति साधारण लोगों के नियमों में अकारण विघ्न नहीं डालता। महान ज्ञानप्राप्त व्यक्ति का स्तर जितना ऊँचा होता है, उतना ही कम वह साधारण लोगों के नियमों में विघ्न डालने की परवाह करता है, वह जरा भी परवाह नहीं करता। अन्ततः, यह उच्च प्राणी अचानक ही विद्युत गिरा कर बुद्ध प्रतिमा को विखण्डित नहीं कर देगा, वह ऐसा नहीं करेगा। यदि वे बुद्ध प्रतिमा पर चढ़ जाते हैं तो उच्च प्राणी उन्हें छोड़ देगा। यदि वे मारे जाने वाले होते हैं तो वे जान जाते हैं, इसलिए वे बच निकलने का प्रयत्न करते हैं। इस प्रकार, जो आपने देखा क्या वह वास्तविक बोधिसत्व अवलौकितेश्वर थी? क्या जो आपने देखा वह वास्तविक बुद्ध था? यह बताना कठिन है।

आप में से कई इस बारे में सोच रहे होंगे : "घर में जो बुद्ध प्रतिमा हैं हमें उसका क्या करना चाहिए?" शायद बहुत से लोगों ने मेरे बारे में सोचा है। अभ्यासियों को साधना अभ्यास में मदद करने के लिए, मैं आपको बता रहा हूँ कि आप इस प्रकार कर सकते हैं। बुद्ध प्रतिमा को हाथ में रख कर, आप मेरी पुस्तक (क्योंकि इसमें मेरा चित्र है) या मेरा चित्र ले सकते हैं। तब आप बड़ी कमल पुष्प हस्त मुद्रा बनायें और गुरु से प्रतिष्ठापन के लिए आग्रह करें, जैसे आप मुझसे आग्रह कर रहे हों। यह आधे मिनट में हो जायेगा। मैं सभी को बताना चाहूँगा कि यह केवल हमारे अभ्यासियों के लिए किया जा सकता है। यह प्रतिष्ठापन आपके संबंधियों या मित्रों के लिए कार्य नहीं करेगा, क्योंकि हम केवल अभ्यासियों की देख-रेख करते हैं। कुछ लोग कहते हैं कि वे मेरा चित्र अपने संबंधियों या मित्रों के घर दुष्ट आत्माओं को हटाने के लिए ले जायेंगे। मैं यहाँ साधारण लोगों के लिए दुष्ट आत्माएँ हटाने के लिए नहीं हूँ - यह गुरु के लिए सबसे बुरा अनादर है।

सांसारिक बुद्ध या सांसारिक ताओ की बात की जाये तो, एक और विषय आता है। प्राचीन चीन में, ऐसे बहुत से लोग थे जो सुदूर पर्वतों और गहन वनों में साधना अभ्यास करते थे। उनमें से कोई आज क्यों नहीं है? वास्तव में, वे लुप्त नहीं हुए हैं। वे केवल साधारण लोगों को जानने नहीं देते, उनमें से एक भी कम नहीं हुआ है। इन सभी लोगों के पास दिव्य सिद्धियाँ हैं। ऐसा नहीं है कि गत वर्षों में वे यहाँ नहीं हैं- वे अभी भी हैं। संसार में आज भी ऐसे कई हजार लोग हैं। उनमें से अपेक्षाकृत हमारे देश में अधिक हैं, विशेष रूप से प्रसिद्ध विशाल पर्वतों में और मुख्य नदियों के किनारे। वे कुछ ऊँचे पर्वतों में भी वास करते हैं, किन्तु वे अपनी गुफाएँ दिव्य सिद्धियों से बंद कर देते हैं जिससे आप उन्हें न देख सकें। उनकी साधना की प्रक्रिया अपेक्षाकृत धीमी होती है, और उनकी पद्धतियाँ अपेक्षाकृत उलझी हुई होती हैं क्योंकि उन्होंने साधना का मूल ग्रहण नहीं किया है। हम, इसके विपरीत, सीधे व्यक्ति के मन को साधते हैं और विश्व की उच्चतम प्रकृति और विश्व के स्वरूप के अनुसार साधना अभ्यास करते हैं। स्वाभाविक ही, गोंग अति शीघ्र विकास करता है। यह इसलिए क्योंकि साधना अभ्यास के मार्ग एक पिरामिड की तरह होते हैं; केवल मध्य का मार्ग मुख्य मार्ग होता है। उन किनारों के और लघु मार्गों पर, हो सकता है साधना अभ्यास में व्यक्ति का शिनशिंग ऊँचा न हो। हो सकता है व्यक्ति को साधना में ऊँचा स्तर प्राप्त किये बिना ही ज्ञानप्राप्ति हो जाए। वे,

हालांकि, सच्चे साधना अभ्यास के मुख्य मार्ग से कहीं निम्न हैं।

इस प्रकार की अभ्यास पद्धति में भी शिष्यों को लिया जाता है। क्योंकि इस अभ्यास में साधना स्तर इतना ही ऊँचा पहुँच सकता है और व्यक्ति का शिनशिंग स्तर इतना ही ऊँचा बढ़ सकता है, सभी शिष्य केवल इसी स्तर की ओर साधना करते हैं। कोई बगल मार्ग की अभ्यास पद्धति जितनी अधिक साधना के बाहरी किनारे के पास होती है, उतनी ही अधिक इसकी आवश्यकताएँ होंगी और उतना ही जटिल इसका साधना अभ्यास होगा, क्योंकि यह साधना के मूल को नहीं समझ सकी है। साधना में, व्यक्ति को मुख्यत: अपने शिनशिंग का संवर्घन करना चाहिए। वे अब भी यह नहीं जानते और मानते हैं कि वे केवल कठिनाइयाँ भोग कर साधना कर सकते हैं। इसलिए, एक बहुत लम्बी समयावधि के बाद और कई सौ वर्षों या एक हजार वर्ष से अधिक साधना अभ्यास करने के बाद, वे केवल थोड़ा सा गोंग प्राप्त करते हैं। वास्तव में, यह उनके कठिनाई भोगने के कारण नहीं है कि उन्हें गोंग प्राप्त हुआ है। वे इसे कैसे प्राप्त करते हैं? यह एक साधारण व्यक्ति की स्थिति के समान है : युवावस्था में व्यक्ति के बहुत से मोहभाव होते हैं, किन्तु जब तक वह वृद्ध होता है, समय गुजरने के साथ उसका भविष्य निराशाजनक जान पड़ता है। ये मोहभाव स्वाभाविक ही समाप्त हो जाते हैं और छूट जाते हैं। ये बगल-मार्ग के अभ्यास भी इस पद्धति को अपनाते हैं। उन्होंने पाया है कि जब व्यक्ति साधना में विकास के लिए ध्यानमुद्रा, समाधि, और कठिनाइयाँ भोगने पर आश्रित होता है, तो वह गोंग भी बढ़ा सकता है। किन्तु वे यह नहीं जानते कि उनके साधारण लोगों के मोहभाव एक लम्बे और कठोर समय काल के दौरान धीरे-धीरे हट जाते हैं, और यह उनके धीरे-धीरे मोहभाव छोड़ने के कारण है कि गोंग बढ़ जाता है।

हमारे अभ्यास का एक दिशा लक्ष्य है और वास्तव में उन मोहभावों को उजागर करता है। उन्हें छोड़ने पर, व्यक्ति साधना में बहुत शीघ्र विकास करेगा। मैं कुछ स्थानों पर गया हूँ जहाँ मैं अक्सर ऐसे लोगों के सम्मुख हुआ हूँ जिन्होंने कई वर्षों तक साधना अभ्यास किया है। उन्होंने कहा : "यह कोई नहीं जानता कि हम यहाँ हैं। जहाँ तक जो आप कर रहे हैं, हम इसमें कोई विघ्न नहीं डालेंगे या कठिनाई उत्पन्न नहीं करेंगे।" ये लोग उस वर्ग में आते हैं जो अपेक्षाकृत अच्छे हैं।

उनमें से कुछ बुरे भी रहे हैं जिनसे हमें निपटना पड़ा। उदाहरण के लिए, जब मैंने ग्वेज़ू[4] में पहली बार कक्षा ली, कोई मुझे कक्षा के दौरान खोजता हुआ आया और

बोला कि उसके प्रमुख गुरु मुझसे मिलना चाहते हैं। उसने अपने प्रमुख गुरु का वर्णन किया और बताया कि कैसे उन्होंने वर्षों तक साधना अभ्यास किया है। मैंने पाया कि यह व्यक्ति गंदली ची धारण किये हुए था और उसका चेहरा पीलापन लिये हुए बहुत दुष्ट दिखाई पड़ता था। मैंने कहा कि मेरे पास उनसे मिलने का समय नहीं हैं और उसे मना कर दिया। इसके बाद, उसका वृद्ध गुरु नाराज हो गया और मेरे लिए परेशानियाँ खड़ी करने लगा, और लगातार हर रोज परेशानियाँ उत्पन्न करता। मैं इस प्रकार का व्यक्ति हूँ जो दूसरों से झगड़ा करना पसंद नहीं करता, और न ही वह झगड़ा करने योग्य था। जब कभी वह कुछ बुरी वस्तुएँ मुझ पर छोड़ता, मैं उन्हें हटा देता था। उसके बाद, मैं अपना व्याख्यान आरंभ कर देता।

मिंग[5] राजवंश में एक ताओ अभ्यासी था, जिसे उसकी ताओ साधना के दौरान एक सर्प ने ग्रसित कर लिया था। बाद में, इस ताओ अभ्यासी की साधना पूर्ण किये बिना ही मृत्यु हो गयी। सर्प ने ताओ अभ्यासी के शरीर पर कब्जा कर लिया और एक मनुष्य रूप धारण कर लिया। उस व्यक्ति का प्रमुख गुरु मनुष्य रूप में वह सर्प था। क्योंकि उसका स्वभाव नहीं बदला था, वह स्वयं को बड़े सर्प में रूपांतरित करके मेरे लिए परेशानी खड़ी करने लगा। मैंने सोचा कि उसने यह बहुत अधिक कर लिया है, इसलिए मैंने उसे अपने हाथ में पकड़ लिया। मैंने एक बहुत शक्तिशाली गोंग जिसे "विलय करने वाला गोंग" कहा जाता है का प्रयोग उसके शरीर के निचले भाग को विलय करने के लिए किया और इसे पानी में परिवर्तित कर दिया। उसका ऊपरी शरीर घर की ओर वापस भाग गया।

एक दिन, उस व्यक्ति का शिष्य ग्वेजू के हमारे निर्देशन संस्थान की स्वयंसेवी निदेशक को मिला, जिसने कहा कि उसके प्रमुख गुरु उससे मिलना चाहते हैं। निदेशक वहाँ गयी और एक अंधकारमय गुफा में प्रवेश किया जहाँ वह वहाँ एक बैठी हुई परछाई के अलावा कुछ और नहीं देख सकी, जिसकी आँखें हरी रोशनी से चमक रही थीं। जब वह अपनी आँखें खोलता, तो गुफा प्रकाशमान हो जाती। यदि वह आँखें बंद करता तो गुफा फिर से अंधकारमय हो जाती। उसने एक स्थानीय भाषा में कहा : "ली होंगज़ी फिर वापस आयेंगे, और इस समय हममें से कोई भी दोबारा वैसी परेशानियाँ उत्पन्न नहीं करेगा। मैं गलत था। ली होंगज़ी लोगों का उद्धार करने के लिए आये हैं।" उसके शिष्य ने उससे पूछा : "प्रमुख गुरु, कृपया खड़े हो जाइये। आपके पैरों को क्या हुआ?"

उसने उत्तर दिया : "मैं खड़ा नहीं हो सकता क्योंकि मेरे पैर घायल हैं।" जब उससे पूछा गया कि वे कैसे घायल हो गये, वह अपनी परेशानी खड़ी करने वाली प्रक्रिया के बारे में बताने लगा। 1993 की पूर्वी स्वास्थ्य प्रदर्शनी के दौरान, वह फिर मुझसे उलझा। क्योंकि वह सदैव बुरे कार्य करता था और मेरे दाफा सिखाने में विघ्न डालता था, तब मैंने उसे पूर्णतया समाप्त कर दिया। उसके समाप्त होने पर, उसके सब भाई-बंधु बदला लेना चाहते थे। उस समय, मैंने कुछ शब्द कहे। वे सब चौंक गये और इतने भयभीत हो गये कि उनमें से कोई भी कुछ करने का साहस नहीं कर सका। उन्हें भी समझ आ गया कि क्या हो रहा है। उनमें से कुछ अभी भी पूरी तरह साधारण व्यक्ति थे, हालांकि उन्होंने बहुत लम्बे समय तक साधना अभ्यास किया था। ये कुछ उदाहरण हैं जो मैंने प्रतिष्ठापन के विषय का वर्णन करने के लिए दिये।

झाड़-फूंक का विषय

झाड़-फूंक क्या होता है? साधक समाज में, चीगोंग सिखाने के दौरान कई लोग इसे साधना के एक विषय की तरह सिखाते हैं। वास्तव में, यह ऐसा कुछ नहीं है जो साधना अभ्यास के विषय से संबंधित हो। इसे विधियों, मंत्रों और तकनीक की तरह सिखाया जाता है। इसमें आकृतियाँ बनाने, धूप जलाने, कागज जलाने, मंत्र उच्चारण करने, आदि का प्रयोग किया जाता है। इससे रोग ठीक हो सकते हैं, और इसके उपचार के तरीके बहुत विचित्र होते हैं। उदाहरण के लिए, यदि किसी के चेहरे पर कोई फोड़ा है, अभ्यासी जमीन पर सिंदूरी स्याही में डूबी कलम से वृत बनायेगा और वृत के मध्य में क्रॉस का निशान बनायेगा। वह उसे वृत के मध्य में खड़े होने के लिए कहेगा। तब वह मंत्र उच्चारण आरंभ कर देगा। इसके बाद वह सिंदूरी स्याही में डूबी कलम से उसके चेहरे पर वृत बनायेगा। आकृति बनाते समय, वह मंत्र उच्चारण करेगा। वह तब तक आकृति बनाता रहेगा जब तक उस फोड़े के ऊपर कलम से एक बिंदु न बना दे, और तब मंत्र उच्चारण बंद हो जाता है। वह उसे बतायेगा कि वह अब ठीक है। जब वह फोड़े को महसूस करेगी, उसे भी लगेगा कि यह वास्तव में छोटा हो गया है और दर्द नहीं कर रहा है, इस प्रकार यह प्रभावी हो सकता है। वह छोटे रोग ठीक कर सकता है, किन्तु बड़े नहीं। यदि आपके हाथ में दर्द होता है तो वह क्या करेगा? वह आपके हाथों को

उठाने के लिए कहेगा और मंत्रों का उच्चारण आरंभ कर देगा। वह आपके इस हाथ के *हेगू* [6] बिंदु पर फूंक मारेगा और यह आपके दूसरे हाथ के हेगू बिंदु से निकलेगी। आपको एक हवा का झोंका महसूस होगा, और जब आप अपनी बांह को छूऐंगे, इसमें पहले जैसा दर्द महसूस नहीं होगा। इसके अतिरिक्त, कुछ लोग कागज जलाने, आकृतियाँ बनाने, आकृतियों को भेजने, आदि क्रियाओं का प्रयोग करते हैं। वे इन वस्तुओं को करते हैं।

ताओ विचारधारा की सांसारिक बगल-मार्ग की पद्धतियाँ जीवन का संवर्धन नहीं करतीं। ये पूरी तरह भाग्य बताने, *फेंग-श्वे* [7], दुष्ट आत्माओं को भगाने, और रोग ठीक करने में समर्पित हैं। इनमें से अधिकतर सांसारिक बगल-मार्ग की पद्धतियों में प्रयोग होते हैं। ये रोग ठीक कर सकते हैं, किन्तु प्रयोग किये तरीके अच्छे नहीं होते। हम यह नहीं बतायेंगे कि वे रोग ठीक करने के लिए किसका प्रयोग करते हैं, किन्तु दाफा के अभ्यासियों को उनका प्रयोग नहीं करना चाहिए क्योंकि उनमें बहुत निम्न और बहुत बुरे संदेश समाहित होते हैं। प्राचीन चीन में, उपचार के तरीकों को विषयों में वर्गीकृत किया हुआ था जैसे, टूटी हड्डियों को जोड़ने के तरीके, एक्यूपंक्चर, मालिश, हस्तरेखा विद्या, एक्यूप्रेशर, चीगोंग उपचार, जड़ी-बूटी उपचार, इत्यादि। वे कई भागों में वर्गीकृत थे। प्रत्येक उपचार के तरीके को एक विषय कहा जाता था। यह झाड़-फूंक का तरीका भी तेरहवें विषय पर वर्गीकृत किया गया था। इसलिए, इसका पूरा नाम है "संख्या तेरह का झाड़-फूंक का विषय।" झाड़-फूंक का हमारी साधना पद्धति से कोई संबंध नहीं है, क्योंकि यह साधना अभ्यास से प्राप्त गोंग नहीं है। बल्कि, यह एक तकनीक की तरह है।

---

1. स्वास्तिक (श्रीवत्स) — "प्रकाश चक्र" संस्कृत भाषा से, यह चिन्ह 2500 वर्ष से भी अधिक प्राचीन है और यूनान, पेरू, भारत और चीन के सांस्कृतिक अवशेषों में पाया गया। शताब्दियों से इसे अच्छे भाग्य का प्रतीक, सूर्य का प्रतीक, अच्छाई का प्रतीक माना गया।
2. बोधिसत्व अवलौकितेश्वर — वे सुखावती दिव्यलोक में दो वरिष्ठ बोधिसत्व में से एक हैं, वे अपनी करूणा के लिए जानी जाती हैं।
3. नानजिंग — ज्यांगसू प्रांत की राजधानी।

4. ग्वेजू — दक्षिण-पश्चिम चीन का एक प्रान्त।
5. मिंग राजवंश — चीनी इतिहासकाल में 1368 ए.डी. से 1644 ए.डी. तक।
6. *हेगू* बिंदु — हाथ के पीछे अंगूठे और पहली अंगुली के बीच का एक्यूपंक्चर बिंदु।
7. *फेंग-श्वे* — चीनी वास्तुशास्त्र।

उपदेश छः

साधना पागलपन

साधक समाज में एक शब्द है जिसे साधना पागलपन कहा जाता है। इसका जनता पर बहुत बड़ा प्रभाव रहा है। विशेषरूप से, कुछ लोगों ने इसे इतना चर्चित कर दिया है कि कुछ लोग चीगोंग का अभ्यास करने से घबराते हैं। जब लोग सुनते हैं कि चीगोंग अभ्यास करने से साधना पागलपन हो सकता है, वे इतना घबरा जाते हैं कि इसे नहीं करते। वास्तव में, मैं आपको बताना चाहूँगा कि साधना पागलपन नाम की कोई परिस्थिति नहीं होती।

बहुत से लोग प्रेत या पशुओं द्वारा ग्रसित हुए हैं क्योंकि उनके मन उचित नहीं थे। उनकी मुख्य चेतना स्वयं को नियंत्रित नहीं रख सकी और उन्हें गोंग मानती है। उनके शरीर ग्रसित करने वाले प्रेत या पशुओं द्वारा निर्देशित होते हैं, जिससे वे पागलों जैसी हरकतें करते हैं और चीखते चिल्लाते हैं। जब लोग देखते हैं कि चीगोंग अभ्यास इस प्रकार होता है, वे इतना घबरा जाते हैं कि अभ्यास नहीं करते। आप में से कई सोचते हैं कि यह चीगोंग है, किन्तु यह चीगोंग अभ्यास कैसे हो सकता है? यह केवल निम्नतम स्तर का रोग निवारण और स्वस्थ होना है, किन्तु यह बहुत खतरनाक है। यदि आप इस मार्ग से अभ्यस्त हैं, आपकी मुख्य चेतना आपको सदैव नियंत्रण में नहीं रख पायेगी। तब आपका शरीर सह चेतना, बाहरी संदेशों, ग्रसित करने वाले प्रेतों या पशुओं से हावी हो जायेगा। आप कुछ खतरनाक कार्यों में सम्मिलित हो सकते हैं और साधक समाज को भारी नुकसान पहुँचा सकते हैं। यह व्यक्ति के अपवित्र मन और दिखावे के मोहभाव से होता है- यह साधना पागलपन नहीं है। कोई नहीं जानता कि कुछ लोग तथाकथित चीगोंग गुरु कैसे बन गये, क्योंकि वे भी साधना पागलपन में विश्वास करते हैं। वास्तव में चीगोंग अभ्यास व्यक्ति को पागलपन की राह पर नहीं ले जा सकता। अधिकतर लोग यह शब्दावली साहित्य, युद्धकला के उपन्यासों आदि से सीखते हैं। यदि आप इसमें विश्वास नहीं करते, आप प्राचीन पुस्तकें या साधना की पुस्तकें देख सकते हैं, जहाँ ऐसी कोई वस्तु नहीं है। साधना पागलपन जैसी परिस्थिति कैसे हो सकती है? इस प्रकार की

परिस्थिति का होना असंभव है।

अक्सर यह माना जाता है कि साधना पागलपन के कई प्रकार हैं। जिसका मैंने अभी उल्लेख किया वह भी उनमें से एक प्रकार है। क्योंकि व्यक्ति का मन उचित नहीं होता, वह प्रेत या पशु द्वारा ग्रसित हो जाता है और अनेक मानसिकताएँ, जैसे दिखावे के लिए किसी चीगोंग अवस्था की इच्छा, दर्शाता है। कुछ लोग दिव्य सिद्धियों के पीछे पड़े होते हैं या पाखण्डी चीगोंग अभ्यास करते हैं। जब वे चीगोंग का अभ्यास करते हैं, वे अपनी मुख्य चेतना को छोड़ देने के आदी हो जाते हैं। वे अपने आसपास की सभी वस्तुओं की चेतना भूल जाते हैं और अपने शरीर औरों को दे देते हैं। वे मानसिक रूप से भटक जाते हैं और अपने शरीरों को सह चेतना या बाहरी संदेशों द्वारा निर्देशित होने देते हैं। वे कुछ विचित्र हाव-भाव भी दिखाते हैं। यदि उसे कहा जाये तो इस प्रकार का व्यक्ति इमारत से बाहर कूद जायेगा या पानी में छलांग लगा देगा। वह स्वयं जीना भी नहीं चाहता और अपना शरीर औरों को दे देता है। यह साधना पागलपन नहीं है, बल्कि यह चीगोंग अभ्यास में भटक जाना है, और यह व्यक्ति द्वारा आरंभ में इस प्रकार जान-बूझ कर करने से होता है। कई लोग सोचते हैं कि अपने शरीर को इधर-उधर अचेतन होकर झुमाना चीगोंग अभ्यास है। वास्तव में, यदि कोई इस अवस्था में चीगोंग अभ्यास करता है, तो इसके गंभीर परिणाम हो सकते हैं। यह चीगोंग अभ्यास नहीं है, बल्कि यह साधारण लोगों के मोहभावों और इच्छा-प्रयासों के परिणामस्वरूप होता है।

दूसरी अवस्था है कि चीगोंग अभ्यास में, जब ची शरीर में अवरुद्ध हो जाती है या ची सर के ऊपर से नीचे नहीं उतर पाती तो व्यक्ति घबरा जाता है। मानव शरीर एक लघु विश्व है। विशेष रूप से ताओ अभ्यास में, जब ची किसी मार्ग से गुजर रही होती है, तो व्यक्ति को इस प्रकार की समस्याएँ आ सकती हैं। यदि ची मार्ग में से नहीं निकल पाती, यह वहीं अटक जाती है। यह न केवल सर में हो सकता है, बल्कि शरीर के दूसरे भागों में भी हो सकता है; हालांकि, व्यक्ति का सबसे संवेदनशील स्थान सर है। ची सर के ऊपर तक चढ़ती है और तब नीचे आ जाती है। यदि यह किसी मार्ग से नहीं निकल पाती, व्यक्ति इस प्रकार की संवेदना महसूस करेगा जैसे सर भारी और सूजा हुआ हो गया हो, जैसे ची की कोई भारी टोपी ओढ़ ली हो। किन्तु ची कुछ भी नियंत्रित नहीं कर सकती, और न ही यह कोई समस्या उत्पन्न कर सकती है या किसी प्रकार की बीमारी ला सकती है। कुछ लोग चीगोंग के बारे में सत्य नहीं जानते और रहस्यपूर्ण चर्चा करते

हैं, और इससे परिस्थिति उलझ गई है। इस प्रकार, लोग सोचते हैं यदि ची सर के ऊपर चढ़ जाये और नीचे न उतरे, तो व्यक्ति को साधना पागलपन हो सकता है, वह भटक सकता है, इत्यादि। परिणामस्वरूप, कई लोग स्वयं घबराते हैं।

यदि ची सर के ऊपर तक चढ़ जाये और नीचे न आ सके, तो यह केवल एक अस्थायी अवस्था है। कुछ लोगों के लिए, यह आधे साल या बहुत लम्बे समय तक रह सकती है, और तब भी यह नीचे नहीं आती। यदि यह परिस्थिति है, तो व्यक्ति एक सच्चा चीगोंग गुरु ढूंढ़ सकता है जो ची को निर्देशित करके नीचे ले आये, और तब यह नीचे आ सकती है। चीगोंग अभ्यास में, आपमें से जिनकी ची किसी मार्ग में से नहीं गुजर पाती और या नीचे नहीं आ पाती उन्हें इसके कारण अपने शिनशिंग के अंदर देखने चाहिए, जिससे यह पता लग सके कि आप उसी स्तर पर बहुत समय से अटके हैं और आपको अपना शिनशिंग बढ़ाना चाहिए! जब आप वास्तव में अपना शिनशिंग बढ़ा लेते हैं, आप पायेंगे कि ची नीचे आ रही है। शिनशिंग के सुधार पर ध्यान दिये बिना आप भौतिक शरीर में केवल गोंग के रूपांतरण की इच्छा नहीं रख सकते। यह केवल आपके शिनशिंग में सुधार के लिए प्रतीक्षा कर रहा है - केवल तभी आप पूर्ण रूप से बदलाव ला पायेंगे। यदि ची वास्तव में अवरुद्ध हो जाती है, तब भी इससे कोई समस्या नहीं हो सकती। यहाँ अक्सर हमारे मानसिक पहलू कार्य कर रहे होते हैं। इसके अतिरिक्त, व्यक्ति घबरा जाता है जब वह किसी पाखण्डी चीगोंग गुरु से सीखता है कि जब ची सर के ऊपर चढ़ जाती है, तो व्यक्ति भटक जाता है। इस भय के कारण, इस व्यक्ति को वास्तव में कुछ समस्या आ सकती है। यदि आप घबराते हैं, तो यह भय का मोहभाव है। क्या यह एक मोहभाव नहीं है? एक बार आपका मोहभाव उभरने पर, क्या इसे हटाना आवश्यक नहीं है? जितना आप इससे भयभीत होंगे, उतने ही आप बीमार लगेंगे। आपके इस मोहभाव को हटाना आवश्यक है। आपको इस शिक्षा से सिखाया जायेगा जिससे आपका भय हट सके, और आप आगे बढ़ सकें।

अभ्यासियों को अपने भविष्य की साधना में शारीरिक रूप से आरामदेह नहीं लगेगा, क्योंकि उनके शरीर कई प्रकार के गोंग विकसित करेंगे, जो सब उनके शरीरों के अंदर गतिशील बहुत शक्तिशाली वस्तुएँ हैं; उनसे आपको किसी न किसी प्रकार असुविधाजनक लगेगा। आपकी असुविधा का कारण मुख्यत: यह है कि आप सदैव किसी बीमारी के होने से घबराते हैं। वास्तव में, जो वस्तुएँ आपके शरीर में विकसित

होती हैं वे बहुत शक्तिशाली हैं, और वे सब गोंग, दिव्य सिद्धियाँ, और अनेक चेतन सत्ताएँ हैं। यदि वे इधर-उधर गतिशील होती हैं, आपको शारीरिक रूप से दर्द, खुजलाहट, परेशानी, आदि होंगे। तंत्रिका तंत्र के सिरे विशेष रूप से बहुत संवेदनशील होते हैं, और यहाँ सभी प्रकार के लक्षण होंगे। जब तक आपका शरीर उच्च-शक्ति पदार्थ से पूरी तरह प्रतिस्थापित नहीं हो जाता, आपको इस प्रकार महसूस होगा। इसे हालांकि एक अच्छी ही वस्तु मानना चाहिए। एक अभ्यासी होते हुए, यदि आप स्वयं को हमेशा एक साधारण व्यक्ति की भांति मानते हैं और सोचते हैं कि आपको रोग हैं, तो आप साधना अभ्यास कैसे कर सकते हैं? जब साधना अभ्यास में कोई कठिनाई आती है, यदि आप तब भी स्वयं को एक साधारण व्यक्ति मानते हैं, मैं कहूँगा कि उस समय आपका शिनशिंग एक साधारण व्यक्ति के स्तर पर गिर चुका है। कम से कम इस विषय पर, आप साधारण लोगों के स्तर पर गिर चुके हैं।

सच्चे अभ्यासियों की भांति, हमें विषयों को एक बहुत ऊँचे स्तर से देखना चाहिए न कि साधारण लोगों के दृष्टिकोण से। यदि आप मानते हैं कि आप रोगग्रस्त हैं, तो यह आपको वास्तव में रोगी बना सकता है। यह इसलिए क्योंकि एक बार आप मान लेते हैं कि आप रोगी हैं, आपका शिनशिंग स्तर उतना ही ऊँचा होता है जितना साधारण लोगों का। चीगोंग अभ्यास और वास्तविक साधना अभ्यास रोग अवस्था की ओर नहीं ले जायेंगे, विशेषरूप से इस परिस्थिति में। यह ज्ञातव्य है कि व्यक्ति के रोगी होने के सत्तर प्रतिशत कारण मानसिक होते हैं और तीस प्रतिशत शारीरिक। खासतौर से, जब व्यक्ति को कोई मानसिक आघात पहुँचता है, उसका मन इसे नहीं संभाल पाता, और वह भारी मानसिक दबाव महसूस करता है जिससे रोग अवस्था बुरी तरह बिगड़ जाती है। उदाहरण के लिए, एक बार एक व्यक्ति था जिसे बिस्तर से बांध दिया गया। उन्होंने उसके एक हाथ को पकड़ा और कहा कि वे इसे थोड़ा चीर देंगे जिससे रक्त निकलने लगे। तब उन्होंने उसकी आँखों पर पट्टी बांध दी और उसकी कलाई को एक बार खुरच दिया (उसे बिल्कुल भी नहीं काटा था और रक्त नहीं निकला)। एक पानी का नल चला दिया गया जिससे वह पानी गिरते हुए सुन सके, और उसने इस प्रकार सोचा कि यह उसका रक्त है जो गिर रहा है। वह व्यक्ति उसके कुछ देर बाद ही मर गया। वास्तव में उसे काटा नहीं गया था और न ही रक्त बहा था- यह नल का पानी था जो गिर रहा था। उसके मानसिक कारकों के कारण उसकी मृत्यु हुई। यदि आप हमेशा

मानते हैं कि आप रोगग्रस्त हैं, आप शायद इस कारण अपने को रोगी बना लेंगे। क्योंकि आपका शिनशिंग साधारण लोगों के स्तर पर गिर गया है, एक साधारण व्यक्ति को, निश्चित ही, रोग होंगे।

एक अभ्यासी होते हुए, यदि आप हमेशा सोचते हैं कि यह एक रोग है, तो आप वास्तव में इसे निमंत्रण दे रहे हैं। यदि आप किसी रोग को मांगते हैं, तो यह आपके शरीर के अंदर आ जायेगा। एक अभ्यासी होते हुए, आपका शिनशिंग स्तर ऊँचा होना चाहिए। आपको हमेशा यह चिन्ता नहीं करनी चाहिए कि यह एक रोग है, क्योंकि यह रोग का भय एक मोहभाव है और यह इस प्रकार आपके लिए समस्या ला सकता है। साधना अभ्यास में व्यक्ति को कर्म हटाने की आवश्यकता होती है, और यह दु:खदायी होता है। व्यक्ति गोंग को आरामदेह तरीके से कैसे बढ़ा सकता है? अन्यथा उसके मोहभाव कैसे दूर होंगे? मैं आपको बुद्धमत से एक कहानी बताना चाहूँगा। एक व्यक्ति था जो साधना में बहुत प्रयत्न के बाद एक अरहत बन गया। जैसे ही वह साधना में उचित फल प्राप्त करने वाला था और अरहत बनने वाला था, वह कैसे प्रसन्न न होता? वह तीन लोकों के पार जाने वाला था! किन्तु यह उत्साह एक मोहभाव है, हर्ष का मोहभाव। एक अरहत को मोहभावों से मुक्त होना चाहिए, और हृदय प्रभावित नहीं होना चाहिए। किन्तु वह असफल रहा, और उसकी साधना व्यर्थ समाप्त हुई। क्योंकि वह असफल हुआ था, उसे आरम्भ से फिर शुरूआत करनी पड़ी। उसने अपनी साधना आरम्भ की, और बहुत दु:खदायी प्रयत्नों के बाद वह फिर अपनी साधना में सफल हुआ। इस बार वह भयभीत हो गया और उसने अपने मन में समझाया : "मुझे उत्साहित नहीं होना चाहिए। अन्यथा, मैं दोबारा असफल हो जाऊँगा।" इस भय से, वह दोबारा असफल हो गया। भय भी एक प्रकार का मोहभाव है।

एक ओर परिस्थिति होती है : जब कोई व्यक्ति मानसिक रूप से पागल हो जाता है, इस व्यक्ति को साधना पागलपन का लेबल लगा दिया जाता है। कुछ ऐसे भी लोग हैं जो मेरी प्रतीक्षा करते हैं कि मैं उनके पागलपन का उपचार करूँ! मैं कहूँगा कि पागलपन कोई रोग नहीं है, और न ही मेरे पास ऐसी वस्तुओं की देख-रेख के लिए समय है। क्यों? यह इसलिए क्योंकि एक पागलपन के रोगी में कोई वायरस नहीं होते, और न ही उसके शरीर में कोई शारीरिक बदलाव आते हैं और न ही संक्रमण होते हैं; मेरी दृष्टि में यह रोग नहीं है। पागलपन तब होता है जब व्यक्ति की मुख्य चेतना बहुत

कमजोर हो जाती है। यह कितनी कमजोर हो सकती है? यह उस व्यक्ति की भांति है जो स्वयं को कभी नहीं संभाल पाता। एक पागल रोगी की मुख्य आत्मा इसी प्रकार होती है। यह शरीर को नहीं संभालना चाहती। यह हमेशा एक बेहोशी की हालत में रहती है और चेतन नहीं हो सकती। इस अवस्था में, व्यक्ति की सह चेतना या बाहरी संदेश उसके साथ विघ्न डालेंगे। प्रत्येक आयाम में बहुत से स्तर होते हैं। सभी प्रकार के संदेश उसे परेशान करेंगे। इसके अतिरिक्त, हो सकता है उसकी मुख्य आत्मा ने पिछले जन्मों में कुछ दुष्कर्म किए हों, और लेनदार उसे नुकसान पहुँचाएँ। कई प्रकार की वस्तुएँ घटित हो सकती हैं। हम कहेंगे कि पागलपन में यह सब होता है। मैं इसे आपके लिए कैसे ठीक करूँगा? मैं कहूँगा कि इस प्रकार वास्तव में पागलपन होता है। इसके लिए क्या किया जा सकता है? व्यक्ति को सिखायें और उसे चेतन बनने में मदद करें- किन्तु ऐसा करना बहुत कठिन है। आप पायेंगे कि जब पागलखाने का चिकित्सक बिजली का झटका देने के लिए तार अपने हाथ में उठाता है, रोगी तुरन्त ही बहुत भयभीत हो जाता है और कुछ बकवास नहीं बोलता। ऐसा क्यों है? उस पल, व्यक्ति की मुख्य आत्मा चेतन हो जाती है, और इसे बिजली के झटके से डर लगता है।

अक्सर, एक बार साधना अभ्यास के द्वार में प्रवेश करने पर, व्यक्ति इसे निरंतर करना चाहता है। हर किसी के पास बुद्ध-प्रकृति और साधना के लिए हृदय होता है। इसलिए, ऐसा सीखने पर, बहुत से अभ्यासी अपने शेष जीवन भर साधना अभ्यास करते हैं। भले ही वे साधना अभ्यास में सफल हो पायें या फा प्राप्त कर पायें अथवा नहीं। हालांकि इस व्यक्ति का ताओ का पालन करने का हृदय है और वह सदैव इसका अभ्यास करना चाहता है। हर कोई जानता है कि यह व्यक्ति चीगोंग का अभ्यास करता है। उसके कार्यस्थल में लोग यह जानते हैं, और यह उसके सभी पड़ोसियों और आसपास रहने वालों को भी मालूम है। किन्तु इसके बारे में आप सब सोचें: जहाँ तक सच्चे साधना अभ्यास का प्रश्न है, कुछ वर्ष पहले ऐसा अभ्यास कौन सिखा रहा था? कोई नहीं। केवल यदि व्यक्ति सच्चा साधना अभ्यास करता है तभी उसके जीवन के पथ को बदला जा सकता है। किन्तु एक साधारण व्यक्ति की भांति, यह व्यक्ति केवल रोग निवारण और स्वास्थ्य के लिए चीगोंग का अभ्यास कर रहा है। उसके जीवन का पथ कौन बदलेगा? एक साधारण व्यक्ति की भांति, उसे किसी दिन कोई रोग हो जायेगा या दूसरे दिन कोई और समस्या हो जायेगी। हो सकता है किसी दिन वह मनोरोगी हो

जाये या मृत्यु को प्राप्त हो जाये। एक साधारण व्यक्ति का पूरा जीवन इसी प्रकार होता है। हालांकि आप एक व्यक्ति को उद्यान में चीगोंग का अभ्यास करते हुए पाते हैं, वास्तव में, वह सच्चे रूप से साधना अभ्यास नहीं कर रहा है। हालांकि उसकी इच्छा है कि वह एक ऊँचे स्तर की ओर साधना अभ्यास करे, वह उचित मार्ग को प्राप्त किये बिना इसे नहीं कर सकता। उसे केवल एक इच्छा है कि वह ऊँचे स्तर की ओर साधना अभ्यास करे। यह व्यक्ति अभी भी रोग निवारण और स्वास्थ्य के निम्न स्तर पर एक चीगोंग अभ्यासी है। कोई भी उसके जीवन का पथ नहीं बदलेगा, इसलिए उसे रोग होंगे। यदि व्यक्ति नैतिकता को मान नहीं देता, तो उसके रोग भी ठीक नहीं होंगे। यह सत्य नहीं है कि एक बार कोई व्यक्ति चीगोंग का अभ्यास करता है, उसे कोई रोग नहीं होगा।

व्यक्ति को सच्चे रूप से साधना करनी चाहिए और अपने शिनशिंग पर ध्यान देना चाहिए। केवल सच्चे रूप से साधना अभ्यास करने से ही व्यक्ति के रोग दूर किए जा सकते हैं। क्योंकि चीगोंग अभ्यास कोई शारीरिक व्यायाम नहीं है बल्कि साधारण लोगों से आगे की वस्तु है, अभ्यासियों के लिए ऊँचा नियम और आदर्श आवश्यक हैं। व्यक्ति को उसका पालन करना चाहिए जिससे वह लक्ष्य को प्राप्त कर सके। किन्तु कई लोग ऐसा नहीं कर पाते और साधारण लोग बने रहते हैं। इसलिए समय आने पर वे भी रोगग्रस्त होंगे। इस व्यक्ति को एक दिन अचानक मस्तिष्क की नसें अवरुद्ध होने का रोग हो सकता है, या अचानक कोई और रोग या मनोरोग हो सकता है। हर कोई जानता है कि वह चीगोंग का अभ्यास करता है। एक बार मनोरोगी हो जाने पर, लोग कहेंगे, "उसे साधना पागलपन हुआ है," और यह लेबल लग जायेगा। आप सब यह सोचें : क्या ऐसा करना तर्क संगत है? एक अनजान व्यक्ति सत्य नहीं जानता। पेशेवर लोगों और कई अभ्यासियों के लिए भी इसका सत्य जान पाना कठिन है। यदि यह व्यक्ति घर में मनोरोगी होता है, हो सकता है इसमें कम समस्या हो, हालांकि दूसरे लोग अब भी कहेंगे कि उसे यह चीगोंग अभ्यास से हुआ है। यदि व्यक्ति किसी व्यायाम स्थल पर मनोरोगी हो जाता है, तो यह भयंकर होगा। एक बड़ा लेबल लगा दिया जायेगा जो प्रयत्न के बाद भी हटाना असंभव होगा। समाचार पत्र यही छापेंगे कि चीगोंग अभ्यास से साधना पागलपन हुआ है। कुछ लोग तथ्य जाने बिना ही इसका विरोध करेंगे : "देखिए, कुछ समय पहले चीगोंग अभ्यास करते समय वह ठीक था, और अब वह ऐसा हो गया है।" एक साधारण व्यक्ति की तरह, जो कुछ उसके साथ होना चाहिए वह

होगा। उसे कोई और रोग हो सकते थे या कोई और समस्याएँ आ सकती थीं। क्या सभी वस्तुओं के लिए चीगोंग अभ्यास पर आरोप लगाना तर्क संगत है? यह अस्पताल में एक चिकित्सक की तरह है : यदि कोई एक चिकित्सक है, उसे जीवन भर रोगी होना ही नहीं चाहिए- इसे इस प्रकार कैसे समझा जा सकता है?

इसलिए, यह कहा जा सकता है कि चीगोंग के वास्तविक तथ्य और इसके पीछे के नियमों को जाने बिना कई लोग बेमानी बातें करते हैं। एक बार कोई समस्या होने पर, चीगोंग पर सभी प्रकार के आरोप लगा दिये जायेंगे। चीगोंग समाज में बहुत कम समय से ही प्रचलित हुआ है। कई लोग हठी धारणायें रखते हैं और हमेशा इसका विरोध करते हैं, आरोप लगाते हैं, और अस्वीकृत करते हैं। कोई नहीं जानता कि इन लोगों की मनोदशा कैसी है। वे चीगोंग से इतने चिढ़े रहते हैं, जैसे इसका सारा संबंध उन्हीं से है। जैसे ही चीगोंग शब्द सामने आता है, वे इसे अकल्पनीय कहेंगे। चीगोंग एक विज्ञान है, और यह एक उच्च विज्ञान है। यह इसलिए होता है क्योंकि इन लोगों की धारणायें बहुत हठी होती हैं और उनका ज्ञान बहुत सीमित है।

एक और परिस्थिति होती है जिसे साधक समाज में "चीगोंग अवस्था" कहते हैं। इस प्रकार के व्यक्ति को मानसिक भ्रम होते हैं, किन्तु साधना पागलपन नहीं। इस अवस्था में व्यक्ति असाधारण रूप से तर्क संगत होता है। मैं आपको पहले समझाना चाहूँगा कि चीगोंग अवस्था से क्या तात्पर्य है। जैसे ज्ञातव्य है कि चीगोंग अभ्यास का संबंध व्यक्ति के जन्मजात गुण से होता है। संसार के सभी देशों में ऐसे लोग हैं जो धर्म में विश्वास करते हैं। कई हजार वर्षों से चीन में लोग बुद्धमत और ताओ मत में विश्वास करते रहे हैं। वे मानते हैं कि अच्छे कार्य करने से अच्छा फल मिलता है, और बुरा बनने से बुराई वापस मिलती है। किन्तु कुछ लोग इसे नहीं मानते। विशेष रूप से महान सांस्कृतिक आंदोलन के दौरान, इसकी आलोचना की गई और अंधविश्वास करार दे दिया गया। कुछ लोग उन सब को अंधविश्वास मान लेते हैं जिसे वे नहीं समझ पाते, जो पाठयपुस्तकों में नहीं पढ़ाया जाता, जिसका आधुनिक विज्ञान ने अभी विकास नहीं किया है, और जिसे अभी नहीं समझा जा सका है। कुछ वर्ष पहले ऐसे बहुत से लोग थे, किन्तु अब ऐसे लोग कम हुए हैं। हालांकि आप कुछ घटनाओं को स्वीकार न करें, वे हमारे आयाम में पहले ही वास्तव में प्रकट हो चुकी हैं। आप उन्हें स्वीकारने का साहस नहीं करते, किन्तु अब लोगों में उनके बारे में बात करने का साहस है। वे चीगोंग

अभ्यास के बारे में भी सुन कर या देख कर कुछ तथ्य जान गये हैं।

कुछ लोग इतने हठी होते हैं कि जैसे ही आप चीगोंग का उल्लेख करते हैं, वे आप पर अपने अंदर की गहराई से हँसते हैं। वे सोचते हैं कि आप अंधविश्वासी हैं और बहुत उपहासपूर्ण हैं। जैसे ही आप चीगोंग अभ्यास कि घटनाओं के बारे में बताते हैं, वे आपको बहुत नासमझ मानते हैं। यद्यपि ऐसा व्यक्ति भ्रांति धारण किये होता है, हो सकता है उसका जन्मजात गुण बुरा न हो। यदि उसका जन्मजात गुण अच्छा है और वह चीगोंग अभ्यास करना चाहता है, हो सकता है उसका दिव्य नेत्र एक बहुत ऊँचे स्तर पर खुल जाये, और उसे दिव्य सिद्धियाँ भी प्राप्त हो जायें। वह चीगोंग में विश्वास नहीं करता, किन्तु वह यह सुनिश्चित नहीं कर सकता कि उसे रोग नहीं होगा। जब वह रोगग्रस्त होता है, वह अस्पताल जायेगा। जब पश्चिमी दवाओं का चिकित्सक उसे ठीक नहीं कर पाता, वह चीनी दवाओं के चिकित्सक से मिलता है। जब चीनी दवाओं का चिकित्सक भी उसका रोग ठीक नहीं कर पाता और जब कोई विशेष नुस्खा काम नहीं करता, वह तब चीगोंग के बारे में सोचता है और विचार करता है : "मैं यह देखने के लिए अपना भाग्य आजमाता हूँ कि चीगोंग से वास्तव में मेरा रोग ठीक हो सकता है या नहीं।" वह बहुत हिचकिचाहट के साथ आयेगा। अपने अच्छे जन्मजात गुण के कारण, जैसे ही वह चीगोंग का अभ्यास करता है, वह इसमें बहुत निपुण होगा। शायद किसी गुरु को उसमें रुचि होगी या हो सकता है दूसरे आयाम में कोई उच्च सत्ता उसकी मदद करे। अचानक ही, उसका दिव्य नेत्र खुल जाता है, या वह अर्ध-ज्ञानप्राप्ति की अवस्था में पहुँच जाता है। उसके दिव्य नेत्र के बहुत ऊँचे स्तर पर खुलने से, वह अचानक ही विश्व का कुछ सत्य देख पाता है। इसके अतिरिक्त, उसके पास दिव्य सिद्धियाँ होंगी। जब ऐसा व्यक्ति इस प्रकार की स्थिति को देखता है, आप क्या कहते हैं उसका मस्तिष्क इसे स्वीकार कर पायेगा? आप क्या समझते हैं वह किस प्रकार की मनोदशा में होगा? जब और लोग बात करते समय जिसे कभी अंधविश्वास, बिल्कुल असंभव और उपहासपूर्ण मानते थे, वह वास्तव में ठीक उसकी आँखों के सामने प्रकट है, और वह वास्तव में उसके साथ संपर्क में है। इस व्यक्ति का मन तब इसे ग्रहण नहीं कर पायेगा, क्योंकि मानसिक दबाव बहुत अधिक होगा। वह जो कहेगा उसे और लोग नहीं समझ पायेंगे, हालांकि उसका मन तर्क संगत है। किन्तु वह दोनों ओर के संबंध में सामंजस्य नहीं रख पाता। उसे पता लगता है कि जो मानव समुदाय करता है वह गलत है, जबकि जो दूसरी

ओर किया जाता है अक्सर उचित होता है। यदि वह वस्तुएँ उसी प्रकार करता है जैसे वे उस ओर की जाती हैं, लोग कहेंगे कि वह गलत है। वे उसे समझ नहीं पाते, इसलिए वे कहेंगे कि उसे साधना पागलपन है।

वास्तव में, इस व्यक्ति को साधना पागलपन नहीं है। आप में से अधिकतर लोग जो चीगोंग का अभ्यास करते हैं इस प्रकार बिल्कुल नहीं होंगे। वे लोग जिन्हें बहुत अधिक भ्रांतियाँ हैं केवल उन्हीं को चीगोंग अवस्था अनुभव होगी। यहाँ बैठे बहुत से लोगों के दिव्य नेत्र खुले हैं- जो बहुत अधिक संख्या में हैं। उन्होंने वास्तव में दूसरे आयाम की वस्तुओं को देखा है। उन्हें कोई आश्चर्य नहीं होता, उन्हें अच्छा लगता है, उनके मस्तिष्क को झटका नहीं लगता, और न ही वे इस चीगोंग अवस्था में होते हैं। व्यक्ति के चीगोंग अवस्था में पहुँचने पर, वह बहुत तर्क संगत होता है और बहुत तर्क के साथ विवेकपूर्ण तरीके से बोलता है। केवल यह है कि जो वह कहता है, साधारण लोग उसमें विश्वास नहीं करते। कभी वह आपको बताता है कि उसने किसी को देखा जिसकी मृत्यु हो चुकी है, और इस व्यक्ति ने उसे कुछ करने के लिए कहा। एक साधारण व्यक्ति इस पर कैसे विश्वास कर सकता है? बाद में, यह व्यक्ति समझ जाता है कि उसे उन वस्तुओं को अपने तक रखना चाहिए न कि उनके बारे में बात करनी चाहिए। जब वह दोनों ओर के बीच संबंध को उचित प्रकार संभालना सीख जाता है, तब सब ठीक हो जाता है। अक्सर, इन लोगों के पास दिव्य सिद्धियाँ भी होती हैं, किन्तु यह भी साधना पागलपन नहीं है।

एक और परिस्थिति होती है जिसे "सच्चा पागलपन" कहते हैं, और इसे दुर्लभ ही देखा जाता है। "सच्चा पागलपन" जिससे हमारा संदर्भ है उसका संबंध उन लोगों से नहीं है जो वास्तव में पागल हैं। बल्कि इसका तात्पर्य "सत्य की साधना" से है। सच्चा पागलपन क्या है? मैं कहूँगा कि अभ्यासियों के बीच ऐसा व्यक्ति दुर्लभ ही दिखाई देता है, शायद एक लाख लोगों में से एक। परिणामस्वरूप, यह साधारणत: नहीं होता और इसका समाज पर कोई प्रभाव भी नहीं है।

अक्सर, "सच्चे पागलपन" के लिए एक पूर्व आवश्यकता है। वह यह कि इस व्यक्ति का जन्मजात गुण श्रेष्ठ होना चाहिए और उसे वयोवृद्ध होना चाहिए। अधिक उम्र होने के कारण, इस व्यक्ति के लिए साधना अभ्यास के लिए बहुत देर हो चुकी है। श्रेष्ठ जन्मजात गुण वाले लोग अक्सर यहां ऊँचे स्तर से किसी उद्देश्य से आते हैं; इस

साधारण मानव समाज में आने से हर कोई घबराता है, क्योंकि एक बार स्मृति मिटा दिये जाने पर व्यक्ति किसी को पहचान नहीं सकेगा। व्यक्ति के इस साधारण लोगों के सामाजिक वातावरण में आने के बाद, मानवीय विघ्न उसे प्रसिद्धि और धन के पीछे जाने के लिए विवश करेंगे और अन्तत: वह साधारण लोगों के स्तर पर गिर जायेगा। ऐसा कोई दिन नहीं होगा जब वह यहां से बच कर निकल सके। इसलिए, कोई भी यहां आने का साहस नहीं करता, क्योंकि हर किसी को डर होता है। किन्तु ऐसे लोग हैं जो यहां आये हैं। यहां आने पर, वे वास्तव में साधारण लोगों के बीच स्वयं को ठीक से नहीं संभाल पाते। वे वास्तव में निम्न स्तर की ओर गिर जाते हैं और अपने जीवन में बहुत से बुरे कार्य कर बैठते हैं। जब व्यक्ति निजी लाभ की प्रतिस्पर्धा के लिए जीता है, वह बहुत से बुरे कार्य करता है और औरों का बहुतायत से ऋणी हो जाता है। उसका गुरु देखता है कि वह अब गिरने वाला है। किन्तु वह फल पदवी प्राप्त व्यक्ति है, इसलिए उसका गुरु उसे इतनी सरलता से नहीं गिरने देगा! क्या किया जा सकता है? उसका गुरु बहुत चिंतित होता है और उसके पास उसे साधना अभ्यास सिखाने का कोई और उपाय नहीं होता। वह इस समय एक गुरु कहां से खोजेगा? उसे मूल स्थान की ओर शून्य से साधना अभ्यास करके पहुंचना है। किन्तु यह सरलता से कैसे किया जा सकता है? वृद्ध होने के कारण, उसे साधना अभ्यास करने के लिए बहुत देर हो चुकी है। उसे मन और शरीर की साधना पद्धति कहां से मिलेगी?

केवल तभी जब उसका जन्मजात गुण श्रेष्ठ होता है, और इस असाधारण परिस्थिति में, उस पर सच्चे पागलपन की पद्धति अपनाई जा सकती है। दूसरे शब्दों में, जब इस व्यक्ति के लिए उसके मूल स्थान की ओर स्वयं लौटने के लिए कोई आशा नहीं बचती, तब इस तरीके का उपयोग उसे पागल बनाने के लिए किया जा सकता है। उसके मस्तिष्क की कुछ प्रक्रियाओं को बंद कर दिया जायेगा। उदाहरण के लिए, मनुष्य होते हुए हमें शीत और गंदगी से डर लगता है, और इसलिए मस्तिष्क के वे भाग जो शीत और गंदगी से डरते हैं उन्हें बंद कर दिया जाता है। कुछ प्रक्रियाओं को बंधित कर दिये जाने पर, ऐसा लगेगा जैसे उसे कुछ मानसिक समस्यायें हों और वह ऐसा बर्ताव करेगा जैसे वास्तविक पागल। किन्तु वह अक्सर कोई गलत कार्य नहीं करता, और न ही वह लोगों का अपमान करता है या मारता है। इसके विपरीत, वह अक्सर अच्छे कार्य करता है, किन्तु वह अपने लिए बहुत क्रूर होता है। क्योंकि उसे ठंड का अहसास

नहीं होता, शीतकाल में वह बर्फ में नंगे पैर इधर-उधर दौड़ता है और हल्के कपड़े पहनता है। उसके पैर रक्त निकलने की अवस्था तक जम जाते हैं। क्योंकि उसे गंदगी का अहसास नहीं होता, वह मानव मल और मानव मूत्र भी खाने का साहस कर लेता है। मैं एक बार ऐसे एक व्यक्ति को जानता था जो घोड़े के मल को खाता था जैसे यह स्वादिष्ट हो, जबकि यह बहुत जमा होता था। वह उन कठिनाइयों को भोग पाता था जो साधारण लोग चेतन मन से नहीं भोग सकते। यह सोचें कि इस पागलपन के कारण उसे कितनी पीड़ा भोगनी पड़ी। नि:संदेह, ऐसे लोगों के पास अक्सर दिव्य सिद्धियाँ होती हैं; उनमें से अधिकांश वृद्ध महिलायें होती हैं। विगत में एक वृद्ध महिला थी जिसके पैरों को छोटा करने के लिए बांधा गया था, किन्तु वह तब भी बिना प्रयत्न दो मीटर या उससे अधिक ऊँची दीवार को लांघ जाती थी। जब उसके परिवार ने देखा कि वह पागल है और हमेशा घर से बाहर भागती रहती है, वे उसे घर में बंद कर देते थे। परिवार के सदस्यों के घर से बाहर जाने पर, वह दरवाजे को केवल ताले की ओर अपनी अंगुली दिखा कर खोल लेती थी। तब वह भाग जाती थी। बाद में, वे उसे लोहे की जंजीरों से बांध कर रखते थे। जब हर कोई घर से चला जाता था, वह जंजीरों को सरलता से झटक कर हटा देती थी। उसे काबू में रखना असंभव था। इससे, वह बहुत अधिक कठिनाइयां सहती थी। क्योंकि उसने इतनी पीड़ा भोगी, उसने जल्द ही अपने बुरे कार्यों के ऋण को चुकता कर दिया। इसमें अधिकतम तीन वर्ष लगते हैं, और अक्सर एक या दो वर्ष, क्योंकि वह पीड़ा बहुत अधिक होती है। इसके पश्चात, वह सब समझ गई कि क्या हुआ था। क्योंकि उसने अपनी साधना पूर्ण कर ली थी, तभी उसका गोंग खोल दिया गया और विभिन्न प्रकार की दिव्य शक्तियाँ प्रकट हुईं। इन घटनाओं को बहुत दुर्लभ ही देखा जाता है, किन्तु पूरे इतिहासकाल में ऐसी कुछ हुई हैं। साधारण जन्मजात गुण के लोगों के लिए इस प्रकार करने की अनुमति नहीं होगी। यह ज्ञातव्य है कि इतिहास में वास्तव में पागल भिक्षुओं और पागल ताओ का वर्णन रहा है, जैसे वह पागल भिक्षु जिसने *चिन ह्वे*[1] को झाड़ू से मंदिर से निकाल दिया था, और पागल ताओ के बारे में दूसरी कहानियाँ। ऐसी कई पारंपरिक कहानियाँ हैं।

जहाँ तक साधना पागलपन का प्रश्न है, हम कह सकते हैं कि इसका वास्तव में कोई अस्तित्व नहीं है। यदि कोई आग उत्पन्न कर सकता है, यदि यह वास्तव में ऐसा है, तो मैं कहूँगा कि यह व्यक्ति बहुत शक्तिवान है। यदि कोई व्यक्ति मुंह खोल कर या

हाथ बढ़ा कर आग जला सके, या अंगुली से सिगरेट सुलगा सके, तो मैं इसे दिव्य सिद्धि कहूँगा!

साधना में आसुरिक विघ्न

साधना में आसुरिक विघ्न क्या होता है? यह वह विघ्न है जो चीगोंग अभ्यास में अक्सर हमारे सामने आता है। चीगोंग अभ्यास आसुरिक विघ्न को कैसे आमंत्रित कर लेता है? जब व्यक्ति साधना अभ्यास करना चाहता है तो वास्तव में बहुत कठिनाइयाँ होती हैं। व्यक्ति सच्ची साधना में मेरे फा-शरीर की सुरक्षा के बिना सफल हो ही नहीं सकता। जैसे ही आप द्वार से बाहर कदम रखते हैं, आपका जीवन खतरे में होता है। व्यक्ति की मूल आत्मा समाप्त नहीं होती। तब, आपके पिछले जन्मों के सामाजिक कार्यकलापों में, हो सकता है आप कभी औरों के ऋणी रहे हों, उन्हें धमकाया हो, या दूसरे दुष्कर्म किये हों। वे लेनदार आपको खोजेंगे। बुद्धमत में यह कहा जाता है कि व्यक्ति कर्मफल भुगतान के लिए जीता है। यदि आप पर किसी का किसी वस्तु के लिए ऋण है, वह आपको इसे चुकाने के लिए खोजेगा। यदि वह अधिक भुगतान ले लेता है, उसे अगली बार बाकी भाग आपको वापस करना होगा। यदि कोई पुत्र अपने माता-पिता का अनादर करता है, तो वे अगले जन्म में स्थान बदल लेंगे। इसी प्रकार यह क्रम चलता रहता है। किन्तु हमने वास्तव में आसुरिक विघ्न को देखा है, जो आपको चीगोंग का अभ्यास करने से रोकता है। इन सभी का कर्म संबंध होता है और अकारण नहीं होते। इनके अकारण होने की अनुमति नहीं है।

आसुरिक विघ्न का सबसे साधारण प्रकार इस तरह होता है। आपके चीगोंग अभ्यास करने से पहले, आपका वातावरण अपेक्षाकृत शांत होता है; क्योंकि आपने चीगोंग सीखा है, आप सदैव इसका अभ्यास करना चाहते हैं। जैसे ही आप ध्यान-मुद्रा में बैठते हैं, अचानक कमरे के बाहर से शोर आने लगता है। कार के हॉर्न, गलियारे में चहलकदमी, बातचीत, दरवाजे का टकराना, और रेडियो की आवाजें बाहर से आने लगती हैं। अचानक ही वातावरण शांत नहीं रह जाता। यदि आप चीगोंग का अभ्यास नहीं करते, वातावरण बहुत शांत होता है, किन्तु जैसे ही आप चीगोंग अभ्यास आरंभ करते हैं, यह इस प्रकार हो जाता है। आप में से अनेक ने इसके बारे में और नहीं सोचा

होगा। वास्तव में क्या हो रहा है? आपको यह केवल विचित्र जान पड़ता है और चीगोंग अभ्यास न कर पाने के कारण बहुत निराशा महसूस होती है। यह "विचित्रता" आपके अभ्यास को रोक लेती है। यह असुर है जो आपके साथ विघ्न डाल रहा है, क्योंकि यह आपको अशांत करने के लिए लोगों को नियंत्रित करता है। यह विघ्न का सरलतम प्रकार है, और यह आपको साधना अभ्यास करने से रोकने का लक्ष्य प्राप्त कर सकता है। यदि आप साधना अभ्यास करते हैं और ताओ प्राप्त कर लेते हैं, उन बिना चुकता किये हुए ऋणों का क्या होगा जिनके आप देनदार हैं? वे इसकी अनुमति नहीं देंगे, इसलिए वे आपको चीगोंग का अभ्यास नहीं करने देंगे। किन्तु यह एक विशिष्ट स्तर को भी दर्शाता है। कुछ समय के पश्चात, यह स्थिति नहीं होने दी जायेगी। दूसरे शब्दों में, इन ऋणों के चुक जाने पर, उन्हें दोबारा आने और विघ्न डालने की अनुमति नहीं होगी। यह इसलिए क्योंकि जो हमारे फालुन दाफा में साधना अभ्यास करते हैं वे शीघ्र विकास करते हैं, और वे अपने स्तरों में भी शीघ्र भेदन करते हैं।

एक और प्रकार का आसुरिक विघ्न होता है। आप जानते हैं कि चीगोंग अभ्यास द्वारा हमारा दिव्य नेत्र खुल सकता है। दिव्य नेत्र खुल जाने पर, कुछ लोगों को घर में चीगोंग का अभ्यास करते समय हो सकता है कुछ भयावह दृश्य या डरावने चेहरे दिखाई दें। कुछ के उलझे हुए, लम्बे बाल होते हैं, और कुछ आपसे लड़ना चाहते हैं या ऐसी भाव-भंगिमायें बनाते हैं जो बहुत डरावनी होती हैं। कई बार व्यक्ति उन सबको खिड़की के बाहर रेंगता हुआ देखेगा, जो बहुत भयावह लगते हैं। यह परिस्थिति कैसे हो सकती है? यह आसुरिक विघ्न का एक प्रकार है। हमारी फालुन दाफा पद्धति में, हालांकि, यह परिस्थिति दुर्लभ ही दिखाई पड़ती है। शायद यह सौ लोगों में से एक के साथ होती है। अधिकांश लोगों के सामने यह परिस्थिति नहीं आयेगी। क्योंकि इसका आपके अभ्यास के लिए कोई लाभ नहीं है, इसे इस प्रकार आपके साथ विघ्न डालने की अनुमति नहीं है। दूसरी पारंपरिक पद्धतियों में, इस प्रकार का विघ्न सबसे साधारण परिस्थिति है, और यह बहुत लम्बे समय तक रहती है। कुछ लोग चीगोंग का अभ्यास नहीं कर सकते और केवल इसी कारण से भयभीत हो जाते हैं। व्यक्ति चीगोंग अभ्यास के लिए अक्सर रात में एक शांत वातावरण चुनता है। यदि वह अपनी आंखों के सामने ऐसा आदमी देखता है जो आधा प्रेत और आधा मनुष्य दिखाई देता है, तो वह चीगोंग का अभ्यास करने से बहुत डर जायेगा। अक्सर, हमारे फालुन दाफा में इस प्रकार की

परिस्थिति नहीं होती। किन्तु कुछ बहुत दुर्लभ अपवाद होते हैं, क्योंकि कुछ लोगों की बहुत विशेष परिस्थितियां होती हैं।

दूसरे प्रकार की पद्धति दोनों आंतरिक और बाह्य साधना की होती है। इसमें युद्ध कला और आंतरिक साधना के अभ्यास की आवश्यकता होती है। ताओ विचारधारा में इस प्रकार की पद्धति साधारणत: देखी जाती है। एक बार व्यक्ति इस पद्धति को सीखता है, वह अक्सर इस आसुरिक विघ्न का सामना करेगा जो साधारण पद्धतियों में नहीं आता, जो केवल दोनों आंतरिक और बाह्य साधना की पद्धतियों या युद्ध कलाओं में आता है। इसमें, लोग उसे युद्ध के लिए खोजेंगे। संसार में अनेक ताओ अभ्यासी हैं; जिनमें से कई युद्ध कला या आंतरिक और बाह्य साधना के शिष्य हैं। एक युद्ध कला का शिष्य भी गोंग विकसित कर सकता है। ऐसा क्यों है? यदि कोई व्यक्ति प्रसिद्धि और निजी लाभ जैसे और मोहभावों को छोड़ देता है, वह भी गोंग बढ़ा सकता है। किन्तु उसके प्रतिद्वन्द के लिए मोहभाव को छोड़ने में समय लगेगा, और यह बहुत धीरे-धीरे छूटेगा। इसलिए, वह सरलता से इस प्रकार करेगा, और यह कुछ विशेष स्तरों पर भी हो सकता है। ध्यान में बैठे हुए, वह जान जायेगा कि कौन युद्ध कला का अभ्यास कर रहा है। उसकी मूल आत्मा उसके शरीर को छोड़ कर दूसरे व्यक्ति को युद्ध के लिए ललकारेगी जिससे यह निर्धारित हो सके कि किसकी युद्ध कला उत्तम है, और तब यह युद्ध आरंभ हो जायेगा। ये वस्तुएँ दूसरे आयाम में भी होती हैं जहाँ कोई दूसरा भी उसके पास युद्ध के लिए आ सकता है। यदि वह मना करता है, तो दूसरा व्यक्ति वास्तव में उसका वध कर देगा। इस प्रकार दोनों के बीच युद्ध छिड़ जायेगा। जब यह व्यक्ति सो जाता है, कोई उसे युद्ध के लिए ललकारेगा, और इससे उसकी रात अशांत हो जाती है। वास्तव में, समय आ गया है कि वह अपना प्रतिद्वन्द का मोहभाव छोड़ दे। यदि यह प्रतिद्वन्द की मानसिकता नहीं छोड़ी गई, वह सदैव इस प्रकार रहेगा। जैसे समय गुजरेगा, वह कई वर्षों बाद भी इस स्तर से आगे नहीं जा सकेगा। वह चीगोंग का निरंतर अभ्यास करने में असमर्थ हो जायेगा। बहुत अधिक शक्ति खर्च होने के कारण, उसका भौतिक शरीर इसे नहीं सह पायेगा और सरलता से अपंग हो सकता है। इस प्रकार, आतंरिक और बाह्य दोनों की साधना पद्धतियों में, यह परिस्थिति आ सकती है, और यह भी बहुत सामान्य है। हमारी आतंरिक साधना की पद्धति में, इस प्रकार की कोई परिस्थिति नहीं होती, और न ही इसके होने की अनुमति है। ये अनेकों प्रकार जिनका

मैंने अभी वर्णन किया अक्सर होते हैं।

एक और प्रकार का आसुरिक विघ्न होता है जिसे हर कोई, जिसमें हमारी पद्धति के भी सभी लोग सम्मिलित हैं, अनुभव करेगा : यह है वासना का असुर। यह बहुत गंभीर है। साधारण मानव समाज में, इस दाम्पत्य जीवन के कारण, मनुष्यजाति अपने वंशज पैदा कर सकती है। मानव समुदाय इसी प्रकार आगे बढ़ता है, और मानव समाज में भावुकताएँ होती हैं। इस प्रकार, ऐसी वस्तु साधारण लोगों के लिए पूर्णत: उपयुक्त है। क्योंकि मनुष्यों में भावुकता होती है, नाराज होना भावुकता है, और इसी प्रकार प्रसन्नता, प्यार, घृणा, किसी कार्य को पसंद करना, किसी कार्य को नापसंद करना, किसी व्यक्ति को दूसरे से अधिक पसंद करना, अभिरुचि, और नापसंदगी। सभी कुछ भावुकता से संबंधित हैं, और साधारण लोग केवल इसी के लिए जीते हैं। तब, एक अभ्यासी की भांति और जो इसके ऊपर और आगे निकल गया है, उसे वस्तुओं को इस प्रकार नहीं परखना चाहिए, और उसे इनसे छूट कर दूर हो जाना चाहिए। इसलिए, जहाँ तक अनेकों मोहभावों का प्रश्न है जो भावुकता से आते हैं, हमें उनको हल्केपन से लेना चाहिए और अंतत: उन्हें छोड़ देना चाहिए। इच्छाएँ, वासना, और इस प्रकार की वस्तुएँ सभी मानव मोहभाव हैं, और उन सभी को छोड़ देना चाहिए।

वे अभ्यासी जो साधारण लोगों के बीच साधना अभ्यास करते हैं, हमारी अभ्यास पद्धति आपको सन्यासी या सन्यासिन बनने के लिए नहीं कहती। युवा अभ्यासियों के अभी भी परिवार होने चाहिएँ। तब, इस विषय को कैसे लेना चाहिए? मैं कह चुका हूँ कि हमारी अभ्यास पद्धति सीधे व्यक्ति के मन पर प्रभाव डालती है। भौतिक लाभों की दृष्टि से, इसके कारण आपको वास्तव में कोई हानि नहीं उठानी पड़ती। बल्कि, साधारण लोगों के भौतिक लाभों के बीच आपको अपना शिनशिंग सुदृढ़ करना होता है। जिसका वास्तव में विकास होता है वह है आपका शिनशिंग। यदि आप मोहभाव छोड़ सकते हैं, तो आप सभी कुछ छोड़ने में समर्थ होंगे; जब आपको भौतिक लाभों को छोड़ने के लिए कहा जाएगा, तब आप अवश्य ही यह कर सकेंगे। यदि आप मोहभाव नहीं छोड़ सकते, तो आप कुछ भी छोड़ पाने में असमर्थ होंगे। इसलिए, साधना का वास्तविक उद्देश्य आपके हृदय का संवर्धन करना है। मठों की साधना पद्धतियों में आपको इन वस्तुओं को छोड़ने के लिए बाध्य कर दिया जाता है। जिससे आपके इस मोहभाव से छुटकारा पाया जा सके। आपके द्वारा इसके बारे में नहीं

सोचे दिये जाने पर, वे आपको इसे पूर्णतया छोड़ने के लिए बाध्य कर देते हैं; और उन्होंने इस प्रकार की प्रणाली अपनायी है। किन्तु हम आपके लिए ऐसा करने की आवश्यकता नहीं रखते। हम आपको कहते हैं कि आप अपने सामने पड़े हुए भौतिक लाभों के बारे में कम परवाह करें। इस प्रकार, जो अपनी साधना हमारी पद्धति द्वारा करते हैं वे सर्वाधिक दृढ़ होते हैं। हम आपको सन्यासी या सन्यासिन बनने के लिए नहीं कहते। भविष्य में जैसे हमारी पद्धति का और अधिक विस्तार होगा, हमारे वे अभ्यासी जो साधारण लोगों के बीच साधना अभ्यास करते हैं उन सभी को आधा-सन्यासी नहीं बना दिया जाना चाहिए। प्रत्येक फालुन दाफा अभ्यासी के लिए इस प्रकार बनना आवश्यक नहीं है। अभ्यास के क्रम के दौरान, हमारी सभी से यह आवश्यकता है : भले ही आप अभ्यास करते हैं और आपके पति या पत्नी नहीं, अभ्यास के कारण आपको तलाक लेने की अनुमति नहीं है। दूसरे शब्दों में, हमें इस विषय को हल्केपन से लेना चाहिए, आपको इसे इतना महत्व नहीं देना चाहिए जितना साधारण लोग देते हैं। विशेषरूप से, तथाकथित आज के समाज की यौन आजादी और अश्लील साहित्य लोगों के साथ विघ्न डाल रहे हैं। कुछ लोग इन वस्तुओं में बहुत रुचि रखते हैं। अभ्यासियों की भांति, हमें उन पर जरा भी महत्व नहीं देना चाहिए।

उच्च स्तर के दृष्टिकोण से, समाज में रहते हुए साधारण लोग मिट्टी से खेल रहे हैं, बिना यह जाने कि यह गंदी है। वे पृथ्वी पर मिट्टी से खेल रहे हैं। हम बता चुके हैं कि इस विषय के कारण आपको अपने परिवार में अशांति नहीं करनी चाहिए। इसलिए, वर्तमान अवस्था में, आपको इसके बारे में कम परवाह करनी चाहिए। एक साधारण और शांत वैवाहिक जीवन बनाये रखना अच्छा है। भविष्य में, जब आप एक विशेष स्तर पर पहुँचेंगे, तब उस स्तर पर कोई और परिस्थिति होगी। वर्तमान में, यह इस प्रकार रहना चाहिए, और यदि आप इस आवश्यकता को पूर्ण करते हैं तो यह ठीक रहेगा। नि:संदेह, जो समाज में चल रहा है आपको उसका अनुसरण नहीं करना चाहिए। उसकी अनुमति कैसे हो सकती है।

इस विषय में एक और भाग सम्मिलित है। आप जानते हैं कि हमारे अभ्यासियों के शरीरों में शक्ति होती है। आपका गोंग और आपका वर्तमान शिनशिंग स्तर अनुपात में नहीं है। आपका गोंग अस्थाई रूप से अधिक है, जिसे आकस्मिक बढ़ा दिया गया है, और अब आपके शिनशिंग में सुधार किया जा रहा है। क्रमश:, आपका

शिनशिंग बढ़ जायेगा। यह निश्चित है कि इस समयावधि में यह बढ़ जायेगा। इसलिए हमने यह समय से पहले कर दिया है। दूसरे शब्दों में, आपके पास कुछ मात्रा में शक्ति है। क्योंकि एक उचित साधना मार्ग से प्राप्त शक्ति पवित्र और परोपकारी होती है, यहाँ बैठे हर व्यक्ति को शांति और करुणा का वातावरण अनुभव होता है। मैंने स्वयं इस प्रकार साधना की है और ये वस्तुएँ मेरे साथ रहती हैं। यहाँ बैठा हर कोई शांत है और उसके मन में बुरे विचार नहीं हैं, और कोई धूम्रपान करने के बारे में भी नहीं सोचता। भविष्य में, आपको भी हमारे दाफा की आवश्यकताओं का पालन करना चाहिए, और साधना अभ्यास द्वारा आप जो गोंग विकसित करेंगे वह भी इसी प्रकार होगा। आपके बढ़ते हुए गोंग सामर्थ्य के कारण, आपके शरीर के गोंग द्वारा निष्कासित शक्ति बहुत प्रबल होगी। यह उतनी प्रबल न भी हो, आपके प्रभाव क्षेत्र में एक साधारण व्यक्ति तब भी नियंत्रित होगा। अथवा यदि आप घर में हैं, आप औरों को भी नियंत्रित करेंगे, और आपके परिवार के सदस्य आपसे नियंत्रित हो सकते हैं। यह इस प्रकार क्यों है? आपको ऐसा करने के लिए अपने मन का प्रयोग करना भी आवश्यक नहीं है। यह प्रभाव क्षेत्र पवित्र शांति, करुणा, और सच्चे विश्वास का है। इसलिए, बहुत संभव है कि लोग बुरी वस्तुओं के बारे में न सोचें और बुरे कार्य न करें। इसका यह प्रभाव हो सकता है।

दूसरे दिन मैंने कहा था कि बुद्ध-प्रकाश सभी ओर प्रकाशित होता है और सभी अवधारणाओं को ठीक करता है। दूसरे शब्दों में, आपके शरीरों द्वारा निष्कासित शक्ति सभी अनुचित अवस्थाओं को ठीक कर सकती है। इसलिए, इस क्षेत्र के प्रभाव में, यदि आप इन वस्तुओं के बारे में नहीं सोचते हैं, तो आप अनजाने में अपने पति या पत्नी को भी नियंत्रित करेंगे। यदि आप उनके बारे में न तो सोचते हैं और न सोचेंगे, तो आपके पति या पत्नी भी उनके बारे में नहीं सोचेंगे। किन्तु यह अटल नहीं है, क्योंकि वर्तमान वातावरण में, टेलीविजन पर सभी प्रकार की वस्तुएँ होती हैं, जिसे यदि चला दिया जाये तो सरलता से व्यक्ति की इच्छाएँ जागृत हो सकती हैं। किन्तु साधारण परिस्थितियों में, आपका यह नियंत्रण का प्रभाव हो सकता है। भविष्य में जब आप ऊँचे स्तर के साधना अभ्यास में पहँचेंगे, मेरे बताए बिना ही, आप जान जायेंगे कि क्या करना है। तब शांतिपूर्ण जीवन को सुनिश्चित करने के लिए एक और अवस्था होगी। इसलिए, आपको इसकी बहुत अधिक चिंता नहीं करनी चाहिए, क्योंकि बहुत अधिक चिंता करना भी एक मोहभाव है। पति या पत्नी के बीच में कामुकता का विषय नहीं होता, किन्तु वासना

का होता है। जब तक आप इसे हल्केपन से ले सकते हैं और अपने मन में उचित अनुभव कर सकते हैं, यह ठीक होगा।

तो व्यक्ति का किस प्रकार के वासना के असुरों से सामना होगा? यदि आपके *दिंग* [2] का सामर्थ्य समुचित नहीं हैं, यह सोते समय आपके स्वप्न में आयेगा। जब आप सो रहे होंगे या ध्यान में होंगे, यह अचानक प्रकट हो जायेगा। यदि आप पुरुष हैं, एक सुन्दरी प्रकट होगी। यदि आप स्त्री हैं, आपके सपनों का पुरुष प्रकट होगा। किन्तु वे निर्वस्त्र होंगे। एक बार आपका मन इसके बारे में सोचेगा, आप अनियंत्रित हो जायेंगे और इसे वास्तविक बना देंगे। आप सब यह सोचें : हमारे साधना अभ्यास में, व्यक्ति के जीवन का संवर्धन करने के लिए शरीर के सत्व का प्रयोग किया जाता है; आप सदैव इस प्रकार अनियंत्रित नहीं हो सकते। साथ ही, आपने वासना की परीक्षा पास नहीं की। इसकी अनुमति कैसे हो सकती है? इसलिए मैं आपको बता रहा हूँ कि हर किसी का इस विषय से सामना होगा, और यह निश्चित है। फा को सिखाते हुए, मैं आपके मन में बहुत प्रबल शक्ति की छाप छोड़ रहा हूँ। इस द्वार से बाहर निकलने के बाद हो सकता है कि आपको स्पष्ट रूप से याद न रहे कि मैंने क्या कहा था, किन्तु जब आप वास्तव में इस विषय के सम्मुख होंगे, जो मैंने कहा आपको याद आ जायेगा। जब तक आप स्वयं को एक अभ्यासी मानते हैं, यह तुरन्त आपको याद आ जायेगा और आप स्वयं को नियंत्रित कर सकेंगे, और तब आप इस परीक्षा में सफल हो सकेंगे। यदि आप इस परीक्षा में पहली बार असफल हो जाते हैं, इसमें दूसरी बार सफल होना कठिन होगा। किन्तु यह भी परिस्थिति है जब व्यक्ति पहली बार परीक्षा में असफल रहता है, नींद से जागने पर उसे बहुत खेद होगा। शायद यह धारणा और मनोस्थिति इसके बारे में आपके विचारों को दृढ़ करेगी। जब यह विषय दोबारा आयेगा, आप स्वयं को नियंत्रित कर सकेंगे और परीक्षा में सफल हो सकेंगे। यदि व्यक्ति जो परीक्षा में असफल हो जाता है और इसकी परवाह नहीं करता, इसमें बाद में सफल होना और कठिन होगा। यह निश्चित ही इस प्रकार है।

इस प्रकार का विघ्न असुरों से या गुरु से आ सकता है, जो आपकी परीक्षा के लिए एक वस्तु को किसी और में रूपांतरित करते हैं। यह दोनों प्रकार से होता है क्योंकि हर किसी को इस परीक्षा में सफल होना आवश्यक है। हम साधना अभ्यास का आरंभ साधारण व्यक्ति होते हुए करते हैं। पहली सीढ़ी यह परीक्षा है, और हर किसी का इससे

सामना होगा। मैं आपको एक उदाहरण देना चाहूँगा। जब मैं वूहान में एक कक्षा को सिखा रहा था, वहाँ एक तीस वर्ष का युवक था। मेरे व्याख्यान देने के ठीक बाद, वह घर चला गया और साधना में बैठ गया। उसने दिंग की अवस्था तुरन्त प्राप्त कर ली। उसके बाद, उसने अचानक ही एक ओर बुद्ध अमिताभ को प्रकट होते हुए देखा और दूसरी ओर लाओ ज़ को। अपने अनुभव विवरण में उसने यह बताया। प्रकट होने पर, दोनों ने बिना कुछ कहे उसे देखा और अंतर्ध्यान हो गये। बाद में, बोधिसत्व अवलोकितेश्वर प्रकट हुई जो हाथ में पात्र लिये थीं जिसमें से श्वेत धुआं निकल रहा था। जैसे वह वहाँ बैठा था और उसने सभी कुछ बहुत स्पष्ट देखा, वह बहुत प्रसन्न हो गया। अचानक, धुआँ कुछ अप्सराओं में रूपांतरित हो गया; अप्सराएँ दिव्यलोक की वे उड़ने वाली युवतियाँ होती हैं जो बहुत सुन्दर होती है। वे उसके लिए बहुत शोभायुक्त मुद्राओं से नृत्य कर रही थीं। उसने स्वयं से सोचा : "क्योंकि मैं यहाँ अभ्यास कर रहा हूँ, बोधिसत्व अवलोकितेश्वर मेरे देखने के लिए कुछ अप्सराओं को प्रकट कर रही हैं और अप्सराओं को मेरे लिए नृत्य दिखाने के लिए भेज रही हैं।" जैसे वह इस विचार से प्रसन्नचित हो रहा था, ये अप्सराएँ अचानक ही निर्वस्त्र हो गयीं और उसकी ओर विभिन्न भाव दर्शाने लगीं, उसके गले और कमर को सहलाने लगीं। इस अभ्यासी के शिनशिंग में बहुत तेजी से सुधार हुआ था। उस समय पर, वह तुरंत ही सावधान हो गया। पहला विचार जो उसके मन में आया वह था : "मैं कोई साधारण व्यक्ति नहीं हूँ। मैं एक अभ्यासी हूँ। आपको मेरे साथ इस प्रकार बर्ताव नहीं करना चाहिए, क्योंकि मैं एक फालुन दाफा अभ्यासी हूँ।" जैसे ही यह विचार आया, सभी कुछ अचानक ही अदृश्य हो गया क्योंकि उन्हें वैसे भी रूपांतरित किया गया था। तब बुद्ध अमिताभ और लाओ ज़ दोबारा प्रकट हुए। लाओ ज़ ने इस अभ्यासी की ओर संकेत किया और बुद्ध अमिताभ से मुस्कुराते हुए कहा : "यह बालक सिखाने योग्य है।" इसका अर्थ है कि यह व्यक्ति अच्छा है और इसे सिखाया जा सकता है।

पूरे इतिहासकाल में, ऊँचे आयामों के दृष्टिकोण से, व्यक्ति की इच्छा और वासना के विषय यह निर्धारित करने में बहुत निर्णायक रहे हैं कि वह साधना अभ्यास कर सकता है अथवा नहीं। इसलिए हमें इन वस्तुओं को वास्तव में अनिच्छा से लेना चाहिए। हालांकि, हम साधारण लोगों के बीच साधना अभ्यास करते हैं, और इसलिए हम आपको इसे पूर्णरूप से त्यागने के लिए नहीं कहते। कम से कम वर्तमान अवस्था में,

आपको इसे हल्केपन से लेना चाहिए और वैसा नहीं रहना चाहिए जैसे आप पहले थे। एक अभ्यासी की भाँति, आपको इस प्रकार होना चाहिए। जब कभी चीगोंग अभ्यास में किसी प्रकार का विघ्न आता है, आपको अपने अंदर कारणों को देखना चाहिए और निर्धारित करना चाहिए कि आपने अभी तक किसका त्याग नहीं किया है।

स्वयं अपने मन द्वारा आसुरिक विघ्न

"स्वयं अपने मन द्वारा आसुरिक विघ्न" क्या होता है? मानव शरीर का प्रत्येक स्तर के आयाम में एक भौतिक क्षेत्र होता है। एक विशिष्ट क्षेत्र में, विश्व की किसी भी वस्तु को आपके आयाम क्षेत्र में एक प्रतिबिम्ब की भाँति परावर्तित किया जा सकता है। यद्यपि वे प्रतिबिम्ब हैं, किन्तु उनका भौतिक अस्तित्व होता है। आपके आयाम क्षेत्र के अंदर सभी कुछ आपके मस्तिष्क के विचारों की आज्ञा द्वारा होता है। अर्थात, यदि आप अपने दिव्य नेत्र द्वारा अपने मन का प्रयोग किये बिना शांत भाव से वस्तुओं को देखते हैं, जो आप देखते हैं वह सत्य होता है। यदि आप तनिक भी सोचने लगते हैं, तो जो आप देखते हैं वह असत्य होगा। इसे व्यक्ति के अपने मन द्वारा आसुरिक विघ्न या "रूपांतरण मनो-विचार का अनुसरण करता है" कहा जाता है। यह इसलिए होता है क्योंकि कुछ अभ्यासी अपना बर्ताव अभ्यासी की भाँति नहीं रख पाते और स्वयं को उचित प्रकार नहीं संभाल पाते। वे दिव्य सिद्धियों के लिए इच्छा-प्रयास रखते हैं और छोटे कौशल या दूसरे आयामों से कुछ ध्वनियों को सुनने के लिए लालायित रहते हैं। उन्हें इन वस्तुओं की चाह रहती है। इन लोगों के लिए स्वयं अपने मन द्वारा आसुरिक विघ्न उत्पन्न होना और निम्न स्तरों पर गिरना सबसे सरल हो जाता है। भले ही व्यक्ति का साधना स्तर कितना ही ऊँचा क्यों न हो, एक बार इस समस्या के उत्पन्न होने के बाद वह सीधे धरातल पर गिरेगा, और अन्त में, बर्बाद हो जायेगा- यह एक बहुत गंभीर विषय है। यह दूसरे क्षेत्रों की भाँति नहीं है जहाँ यदि व्यक्ति इस बार शिनशिंग परीक्षा पास नहीं कर पाता, वह नीचे से ऊपर की ओर उठ सकता है और साधना अभ्यास जारी रख सकता है। किन्तु यह तब नहीं हो पाता यदि व्यक्ति के अपने मन द्वारा आसुरिक विघ्न उत्पन्न हो जाता है, क्योंकि व्यक्ति का यह जीवन बर्बाद हो जायेगा। विशेष रूप से वे अभ्यासी जिनके दिव्य नेत्र विशिष्ट स्तर पर खुले हैं, उनके साथ यह

समस्या सरलता से हो सकती है। साथ ही, कुछ लोगों को अपनी चेतना में सदैव बाह्य संदेशों द्वारा विघ्न होता रहता है, और जो कुछ बाह्य संदेश उन्हें बताते हैं वे उस पर विश्वास कर लेते हैं; यह समस्या भी आ सकती है। इसलिए, आपमें से कुछ जिनके दिव्य नेत्र खुले हैं उन्हें विभिन्न प्रकार के संदेशों द्वारा विघ्न होगा।

मैं आपको एक उदाहरण देना चाहूँगा। व्यक्ति के लिए साधना के निम्न स्तर पर अपने मन को शांत रखना बहुत कठिन होता है। हो सकता है आप स्पष्ट रूप से न देख पायें कि आपके गुरु कैसे दिखाई पड़ते हैं। एक दिन आप अचानक एक बहुत बड़े, विशाल देव को देखते हैं। वह आपकी प्रशंसा में कुछ शब्द कहता है और आपको कुछ सिखाता है। यदि आप इसे स्वीकार कर लेते हैं, तो आपका गोंग विकृत हो जायेगा। यदि आप हर्षोत्साहित हो जाते हैं और उसे अपना गुरु मान लेते हैं, तो आप उसका अनुसरण करेंगे। किन्तु उसे भी उचित फल की प्राप्ति नहीं हुई है। उस आयाम में, उसका शरीर रूपांतरित हो कर बड़ा या छोटा हो सकता है। इसके अपनी आँखों के सामने होने पर और इस विशाल देव को देख कर, आप वास्तव में हर्षोत्साहित हो जायेंगे। इस उत्साह में, क्या आप उससे सीखेंगे नहीं? यदि कोई अभ्यासी स्वयं को उचित प्रकार से नहीं संभालता तो उसे बचाना बहुत कठिन होता है। वह सरलता से स्वयं को बर्बाद कर सकता है। देवलोक के वासी सभी देव होते हैं, किन्तु उन्हें भी उचित फल की प्राप्ति नहीं हुई है और वे भी संसार के चक्र से गुजरेंगे। यदि आप ऐसे व्यक्ति को सहज ही अपना गुरु मान लेते हैं और उसका अनुसरण करते हैं, तो वह आपको कहाँ ले जा सकता है? वह उचित फल भी प्राप्त नहीं कर सकता। क्या आपकी साधना व्यर्थ नहीं जायेगी? अन्ततः, आपका गोंग विकृत हो जायेगा। अपने मन को विघ्न से बचाये रखना बहुत कठिन होता है। मैं सभी को बता रहा हूँ कि यह एक बहुत गंभीर विषय है, और आप में से अनेकों के साथ यह समस्या बाद में आयेगी। मैंने आपको फा सिखा दिया है; यह आप पर निर्भर करता है कि आप स्वयं को उचित प्रकार संभाल पाते हैं। जिसका मैंने वर्णन किया है वह एक परिस्थिति है। जब आप दूसरी अभ्यास पद्धति के किसी ज्ञानप्राप्त व्यक्ति को देखते हैं तो अपने मन को अशांत न होने दें। एक ही अभ्यास पद्धति में स्थिर रहें। भले ही वह कोई बुद्ध, कोई ताओ, कोई देवता, या कोई असुर हो, उनसे आपका हृदय नहीं डोल जाना चाहिए। स्वयं को इस प्रकार संभालने से, सफलता मिलनी निश्चित है।

स्वयं अपने मन द्वारा आसुरिक विघ्न दूसरे रूपों में भी प्रकट होता है। हो सकता है आपको किसी संबंधी द्वारा विघ्न हुआ हो जिसकी मृत्यु हो चुकी है, और यह व्यक्ति कुछ कार्य करने के लिए प्रार्थना याचना करता है। सभी प्रकार की वस्तुएँ हो सकती हैं। क्या आपका मन निर्विघ्न रहेगा? मान लीजिए कि आप अपने इस बच्चे को बहुत चाहते हैं या अपने माता-पिता को चाहते हैं, और आपके माता-पिता की मृत्यु हो चुकी है। उन्होंने आपको कुछ कार्य करने के लिए कहे थे- वे वस्तुएँ जो आपको नहीं करनी चाहिए। यदि आप उन्हें करते हैं तो यह बुरा होगा। एक अभ्यासी होना इतना अधिक कठिन है। यह कहा जाता है कि बुद्धमत अव्यवस्थित हो चुका है। इसने कनफ्यूशियन मत से भी वस्तुएँ ग्रहण कर ली हैं जैसे माता-पिता का सम्मान करना और बच्चों को प्यार करना। बुद्धमत में इस प्रकार की वस्तुएँ नहीं थीं। इसका क्या अर्थ है? क्योंकि व्यक्ति का वास्तविक जीवन उसकी मूल आत्मा होती है, जो आपकी मूल आत्मा को जन्म देती है वह आपकी वास्तविक माता है। संसार के चक्र के दौरान, आपकी माताएँ मनुष्य और जो मनुष्य नहीं हैं वे भी रही हैं, और वे इतनी अधिक हैं कि गिनना भी कठिन है। आपके विभिन्न जीवनों में आपके कितने बेटे और बेटियाँ रहे हैं वे भी असंख्य हैं। आपकी माता कौन है? आपका बेटा या बेटी कौन है? व्यक्ति की मृत्यु हो जाने के पश्चात यह कोई नहीं जानता। आप पर जो औरों का कर्ज है वह आपको चुकाना आवश्यक है। मनुष्य भ्रमजाल में जीते हैं और इन वस्तुओं को नहीं छोड़ पाते। कुछ लोग अपने बेटों और बेटियों को नहीं भुला पाते और कहते हैं कि वे कितने अच्छे हैं, और तब उनकी मृत्यु हो जाती है। कोई व्यक्ति कह सकता है कि उसकी माता कितनी अच्छी है, किन्तु तब उसकी भी मृत्यु हो जाती है। यह व्यक्ति इतना विलाप करता है कि बाकी जीवन भर वह उसके पास जाना चाहता है। आप इसके बारे में क्यों नहीं सोचते? क्या वे यहाँ आपको कष्ट देने के लिये नहीं हैं? वे इस रूप को धारण करते हैं जिससे आप अच्छा जीवन व्यतीत करने में असमर्थ हो जायें।

शायद साधारण लोग इसे नहीं समझते। यदि आप इसके मोह से बंधे हैं, तो आप किसी भी प्रकार साधना नहीं कर सकते। बुद्धमत में इस प्रकार की वस्तुएँ नहीं होतीं। यदि आप साधना अभ्यास करना चाहते हैं तो मानव भावुकता को त्यागना आवश्यक है। नि:संदेह, साधारण मानव समाज में साधना अभ्यास करते हुए, हमें अपने माता-पिता का सम्मान करना चाहिए और अपने बच्चों को शिक्षित करना चाहिए।

सभी परिस्थितियों में, हमें दूसरों के लिए अच्छा और दयालु रहना चाहिए, जिसमें हमारे परिवार के सदस्य भी सम्मिलित हैं। हमें सभी के साथ एक जैसा बर्ताव करना चाहिए। हमें अपने माता-पिता और बच्चों के लिए अच्छा होना चाहिए और दूसरों के लिए हर प्रकार से विचारवान होना चाहिए। इस प्रकार का हृदय स्वार्थी नहीं होता, और यह एक दया और परोपकार का हृदय होता है। भावुकता एक साधारण लोगों का भाव है, और साधारण लोग केवल इसी के लिए जीते हैं।

कई लोग अपना आचरण उचित नहीं रखते, और इससे साधना अभ्यास में कठिनाइयाँ उत्पन्न होती हैं। एक व्यक्ति यह कह सकता है कि एक बुद्ध ने उसे कुछ कहा है। जब तक आपके जीवन को ही खतरा न हो और आपको बताया जाये कि इसे कैसे टाला जाये, वे सब जो आपको बताते हैं कि आपको आज एक समस्या आयेगी और जो अभी होने वाला है उसे कैसे टाला जाये, जो आपको प्रथम पुरस्कार वाली लॉटरी टिकट का नम्बर बताते हैं और आपको खेलने के लिए कहते हैं, और जो आपको साधारण मानव समाज में अच्छी वस्तुएँ प्राप्त करवाना चाहते हैं, वे असुर हैं। यदि आपके लिए सदैव साधारण लोगों के बीच मार्ग प्रशस्त हो जाता है और आप इस परीक्षा को पास नहीं कर पाते, तो आप कोई विकास नहीं करेंगे। यदि आप साधारण लोगों के बीच बहुत अच्छे प्रकार से रहते हैं, तो आप साधना अभ्यास कैसे कर सकते हैं? आपके कर्म का रूपांतरण कैसे किया जायेगा? सभी को अपने मन में यह सुनिश्चित रखना चाहिए। एक असुर भी आपकी प्रशंसा कर सकता है और कह सकता है कि आपका स्तर कितना ऊँचा है, आप कितने महान बुद्ध या ताओ हैं, और उसके विचार में आप बेजोड़ हैं- वे सब पाखण्डी हैं। जो वास्तव में ऊँचे स्तरों की ओर साधना अभ्यास करता है उसकी भाँति आपको विभिन्न मोहभाव त्यागने चाहिएँ। इन विषयों का सामना करते समय, आप सभी को सावधान रहना चाहिए।

साधना अभ्यास के दौरान, आपका दिव्य नेत्र खोला जायेगा। दिव्य नेत्र खुले होने पर, व्यक्ति के लिए साधना में उसकी कठिनाइयाँ होती हैं। दिव्य नेत्र बंद होने पर भी, व्यक्ति के लिए साधना में कठिनाइयाँ होती हैं। किसी भी प्रकार से, साधना करना सरल नहीं है। आपका दिव्य नेत्र खुल जाने के पश्चात, अनेकों संदेश जब आपके साथ विघ्न करेंगे, तब आपके लिए स्वयं को उचित प्रकार से संभालना वास्तव में बहुत कठिन होगा। दूसरे आयामों में, सभी कुछ आँखों को चकाचौंध कर देने वाला और

बहुत सुन्दर और शोभावान होता है, जिन सब से आपका हृदय डोल सकता है। एक बार आप इससे प्रभावित हो जाते हैं, तो आपके साथ विघ्न हो सकते हैं और आपका गोंग विकृत हो जायेगा- यह अक्सर इस प्रकार होता है। इस प्रकार, जब स्वयं अपने मन द्वारा आसुरिक विघ्न द्वारा प्रभावित व्यक्ति स्वयं को उचित प्रकार नहीं संभाल पाता, तब यह परिस्थिति हो सकती है। उदाहरण के लिए, एक बार व्यक्ति कोई बुरा विचार उत्पन्न कर लेता है, तो यह बहुत खतरनाक होता है। एक दिन उसका दिव्य नेत्र खुल जाता है, और वह वस्तुओं को बहुत स्पष्ट देख पाता है। वह सोचता है : "इस व्यायाम स्थल पर, केवल मेरा दिव्य नेत्र अच्छी प्रकार से खुला है। क्या मैं एक दुर्लभ व्यक्ति हूँ? मैं गुरु ली का फालुन दाफा सीख सका हूँ और इसे इतनी अच्छी तरह पढ़ा है, जो और सभी से अच्छा है। शायद मैं कोई साधारण व्यक्ति भी नहीं हूँ।" यह विचार पहले ही उचित नहीं है। वह आश्चर्य करेगा : "हो सकता है मैं कोई बुद्ध हूँ। ठीक है, एक बार मैं स्वयं को देखता हूँ।" जब वह अपने को देखता है, वह स्वयं को वास्तव में एक बुद्ध पाता है। ऐसा क्यों है? यह इसलिए क्योंकि उसके शरीर के सब ओर आयाम क्षेत्र के अंदर सभी कुछ उसके विचारों के अनुसार रूपांतरित होता है, जिसे "रूपांतरण द्वारा मनो-विचार का अनुसरण करना" कहा जाता है।

विश्व से परावर्तित सभी कुछ व्यक्ति के विचारों द्वारा रूपांतरित हो जायेगा, क्योंकि व्यक्ति के आयाम क्षेत्र के अंदर सभी कुछ उसके आदेशानुसार होता है। इसी प्रकार परावर्तित चित्र होते हैं, जिनका भी भौतिक अस्तित्व होता है। यह व्यक्ति सोचता है : "हो सकता है मैं एक बुद्ध हूँ, और शायद मैं एक बुद्ध के वस्त्र धारण किये हूँ।" तब वह पायेगा कि जो वह पहने हैं वे वास्तव में बुद्ध के वस्त्र हैं। "आश्चर्यजनक, मैं वास्तव में एक बुद्ध हूँ।" वह बहुत उत्साहित हो जायेगा। "शायद मैं एक छोटा बुद्ध भी नहीं हूँ।" दोबारा देखने पर, वह स्वयं को एक बड़ा बुद्ध पायेगा। "शायद मैं ली होंगज़ी से भी अधिक महान हूँ!" वह दोबारा देखेगा। "आश्चर्य, मैं वास्तव में ली होंगज़ी से अधिक महान हूँ।" कुछ लोग यह अपने कानों से भी सुनते हैं। कोई असुर उसके साथ विघ्न डालेगा और कहेगा : "आप ली होंगज़ी से भी महान हैं। आप ली होंगज़ी से इतने अधिक महान हैं।" वह उस पर विश्वास भी कर लेगा। क्या आपने सोचा है कि आप भविष्य में साधना किस प्रकार करेंगे? क्या आपने कभी साधना का अभ्यास किया है? आपको साधना किसने सिखाई है? जब एक वास्तविक बुद्ध भी यहाँ किसी उद्देश्य से

आते हैं, उन्हें भी शून्य से साधना करनी होती है। उनका मूल गोंग उन्हें नहीं दिया जाता, और केवल यह है कि वे साधना अभ्यास में शीघ्र प्रगति करते हैं। इसलिए, एक बार उसके साथ यह समस्या आने पर, उसके लिए अपनी मदद कर बाहर निकलना कठिन होगा; उसे तुरन्त ही यह मोहभाव उत्पन्न हो जायेगा। यह मोहभाव उत्पन्न हो जाने के बाद, वह कुछ भी कहने का साहस करेगा: "मैं एक बुद्ध हूँ। आपको औरों से सीखने की आवश्यकता नहीं है। मैं एक बुद्ध हूँ, इसलिए मैं आपको बताऊँगा क्या करना है।" वह ये वस्तुएँ करना आरम्भ कर देगा।

क्या ऐसा ही एक व्यक्ति चांगचुन में नहीं है? आरम्भ में वह बहुत अच्छा था। बाद में, वह यह सब करने लगा। उसने सोचा कि वह एक बुद्ध है। अन्त में, वह स्वयं को और सभी से महान मानने लगा। यह तब हुआ जब वह स्वयं को ठीक से नहीं संभाल पाया और उसे उत्पन्न हुए मोहभाव के कारण। ऐसी परिस्थिति क्यों होती है? बुद्धमत सिखाता है कि भले ही आप कुछ भी देखें, आपको उस पर ध्यान नहीं देना चाहिए, क्योंकि यह सब आसुरिक भ्रम है, और व्यक्ति को केवल ध्यान द्वारा साधना में आगे की ओर बढ़ना चाहिए। यह आपको उन्हें देखने और उनके लिए मोहभाव उत्पन्न करने की अनुमति क्यों नहीं देता? यह इस समस्या के उत्पन्न होने की चेतावनी देता है। बुद्धमत के साधना अभ्यास में, सुदृढ़ साधना प्रणाली नहीं होती, न ही इसके शास्त्रों में इन वस्तुओं से बचने के लिए कोई मार्गदर्शन है। शाक्यमुनि ने उस समय इस प्रकार का धर्म नहीं सिखाया था। स्वयं अपने मन द्वारा आसुरिक विघ्न की समस्या या रूपांतरण द्वारा मनो-विचार के अनुसरण करने की समस्या से बचने के लिए, उन्होंने साधना अभ्यास के दौरान दिखाई पड़ने वाले सभी दृश्यों को आसुरिक भ्रम कहा था। इसलिए, एक बार मोहभाव उत्पन्न हो जाने पर, यह आसुरिक भ्रम पैदा करेगा। इससे बच कर रहना बहुत कठिन है। यदि इससे ठीक प्रकार नहीं निपटा जाता, तो व्यक्ति बर्बाद हो जायेगा और कोई आसुरिक मार्ग अपना लेगा। क्योंकि उसने स्वयं को एक बुद्ध कहा है, उसने पहले ही स्वयं को असुर बना लिया है। अन्त में, वह आत्माओं द्वारा ग्रसित हो जायेगा, या कुछ और अनुभव करेगा और पूरी तरह बर्बाद हो जायेगा। उसका हृदय भी अनैतिक हो जायेगा, और वह पूर्णत: नीचे गिर जायेगा। ऐसे बहुत से लोग हैं। इस कक्षा में भी, ऐसे लोग हैं जो अभी अपने बारे में बहुत ऊँचा सोचते हैं और एक भिन्न मुद्रा में बात करते हैं। बुद्धमत में भी व्यक्ति के लिए यह पता लगाना निषेध है कि वह कहाँ पर

है। जो मैंने अभी कहा वह आसुरिक विघ्न का एक और प्रकार है, जिसे "स्वयं अपने मन द्वारा आसुरिक विघ्न" या "रूपांतरण द्वारा मनो-विचार का अनुसरण करना" कहा जाता है। बीजिंग में ऐसे कुछ अभ्यासी हैं, और ऐसे ही कुछ दूसरे प्रदेशों में हैं। इसके अतिरिक्त, उन्होंने अभ्यासियों के लिए बहुत गंभीर विघ्न उत्पन्न कर दिया है।

किसी ने मुझसे पूछा है : "गुरुजी, आप इस समस्या का निदान क्यों नहीं करते?" आप सब यह सोचें : यदि हम आपके साधना अभ्यास के मार्ग में सभी बाधायें हटा दें, आप कैसे साधना करेंगे। आसुरिक विघ्न की परिस्थितियों के बीच ही आप प्रदर्शित कर सकते हैं कि आप अपनी साधना में निरन्तर रह पाते हैं, वास्तव में ताओ की ज्ञानप्राप्ति कर पाते हैं, विघ्न के प्रभाव से दूर रह पाते हैं, और इस अभ्यास पद्धति में स्थिर रह पाते हैं। बड़ी लहरें रेत को छान कर अलग कर देती हैं, और साधना अभ्यास भी इसी प्रकार है। अन्त में जो बचता है वह खरा सोना होता है। इस प्रकार के विघ्न के बिना, मैं कहूँगा कि व्यक्ति के लिए साधना करना बहुत सरल हो जायेगा। मेरे विचार में, आपकी साधना पहले ही बहुत सरल है। उच्च स्तर के वे महान ज्ञानप्राप्त व्यक्ति इसे पक्षपातपूर्ण मान सकते हैं : "आप क्या कर रहे हैं? आप लोगों को इस प्रकार बचा रहे हैं? साधना के मार्ग में कोई बाधाएँ ही नहीं हैं, और व्यक्ति अपनी साधना सीधे अन्त तक पूर्ण कर सकता है। क्या यह साधना है? जैसे-जैसे व्यक्ति साधना में आगे बढ़ता है, उसके लिए यह और अधिक सुगम और विघ्न-रहित होता जाता है। इसकी अनुमति कैसे हो सकती है?" यह विषय है, और मैं भी इसके बारे में सोच रहा हूँ। शुरूआत में, मैंने ऐसे कई असुरों का निपटान किया था। यदि मुझे यह हर समय करना है, तो मैं भी इसे उचित नहीं पाता। मुझे यह भी बताया गया: "आपने उनकी साधना को बहुत सरल बना दिया है। लोगों की अपनी केवल नाममात्र की कठिनाई होती है। उनके पास उनकी केवल वह नाममात्र की कठिनाई है। उनके बहुत से मोहभाव हैं जिन्हें वे अभी भी नहीं छोड़ पाते! यह देखा जाना शेष है कि जब वे भ्रम और कठिनाइयों के बीच हैं तब वे आपका दाफा स्वयं में समझ पाते हैं अथवा नहीं।" इस संदर्भ में यह विषय है, इसलिए विघ्न और परीक्षाएँ आयेंगी। मैंने अभी बताया कि यह आसुरिक विघ्न का एक प्रकार है। किसी व्यक्ति को वास्तव में बचाना बहुत कठिन होता है, किन्तु किसी व्यक्ति को बर्बाद करना बहुत सरल। एक बार आपका मन उचित नहीं है, आप तुरन्त ही बर्बाद हो जायेंगे।

आपकी मुख्य चेतना प्रबल होनी चाहिए

क्योंकि लोगों ने अपने विभिन्न पूर्वजन्मों में कुछ अनुचित कार्य किये होते हैं, इससे लोगों के लिए विपत्तियाँ आती हैं और अभ्यासियों के लिए कर्म संबंधी बाधाएँ आती हैं। इसलिए, जन्म, वृद्धावस्था, रोग और मृत्यु आयेंगे। ये साधारण कर्म हैं। इसके अतिक्ति एक और शक्तिशाली कर्म होता है जो अभ्यासियों पर बहुत अधिक प्रभाव डालता है- इसे विचार कर्म कहते हैं। लोगों को जीवन जीने के लिए सोचने की आवश्यकता होती है। क्योंकि व्यक्ति साधारण लोगों के बीच खोया रहता है, वह अपने मन में अक्सर प्रसिद्धि, लाभ, वासना, क्रोध, आदि के विचार विकसित कर लेता है। धीरे-धीरे, ये विचार शक्तिशाली विचार कर्म बन जाते हैं। क्योंकि दूसरे आयामों में सभी कुछ जीवित होता है, ऐसा ही कर्म के साथ भी है। जब व्यक्ति एक उचित मार्ग में साधना आरम्भ करता है, उसे अपने कर्म को हटाना आवश्यक होता है। कर्म को हटाने का अर्थ है कर्म को मिटा देना और रूपांतरित करना। नि:संदेह, कर्म प्रतिरोध करेगा, और इसलिए व्यक्ति के पास कठिनाइयाँ और बाधाएँ आयेंगी। किन्तु विचार कर्म सीधे व्यक्ति के मन के साथ विघ्न डाल सकता है। इसलिए, व्यक्ति के मन में अपशब्द आते हैं जो गुरु और दाफा की भर्त्सना करते हैं, और व्यक्ति कुछ दुष्ट विचार या अपशब्द सोच सकता है। परिणामस्वरूप, कुछ अभ्यासी यह नहीं जानते कि क्या हो रहा है और यह समझते हैं कि ये विचार स्वयं उनमें से आ रहे हैं। कुछ लोग यह भी विश्वास करते हैं कि वे ग्रसित करने वाली आत्माओं या पशुओं से हैं, किन्तु वे ग्रसित करने वाली आत्माओं या पशुओं से नहीं हैं। बल्कि, वे व्यक्ति के मन में विचार कर्म के दर्शाने द्वारा उत्पन्न होते हैं। कुछ लोगों की मुख्य चेतना बहुत प्रबल नहीं होती और अनुचित कार्यों के लिए विचार कर्म की बात मान लेती है। ऐसे लोग बर्बाद हो जायेंगे और स्तरों में गिर जायेंगे। हालांकि, अधिकतर लोग अपने बहुत प्रबल विचारों द्वारा (प्रबल मुख्य चेतना द्वारा) इसे हटा और रोक सकते हैं। इससे, यह दर्शाता है कि इस व्यक्ति को बचाया जा सकता है और वह अच्छे और बुरे में भेद कर सकता है। दूसरे शब्दों में, इस व्यक्ति का ज्ञानप्राप्ति का गुण अच्छा है। मेरे फा-शरीर ऐसे अधिकांश विचार कर्म को हटाने में मदद करेंगे। यह परिस्थिति अक्सर देखने में आती है। एक बार प्रकट हो जाने पर, व्यक्ति की यह देखने के लिए परीक्षा ली जायेगी कि वह स्वयं ऐसे बुरे विचारों को हरा पाता है।

यदि व्यक्ति दृढ निश्चयी है, कर्म को हटाया जा सकता है।

आपका मन उचित होना आवश्यक है

एक अनुचित मन क्या होता है? इसका अर्थ किसी व्यक्ति का स्वयं को सदैव एक अभ्यासी मानने में असमर्थ रहना है। एक अभ्यासी के सामने साधना अभ्यास में कठिनाइयाँ आयेंगी। जब कोई कठिनाई आती है, यह एक-दूसरे के बीच मतभेद के रूप में प्रकट हो सकती है। इसमें मानसिक चालें और बहुत कुछ सम्मिलित होगा, जो सीधे आपके शिनशिंग पर प्रभाव डालते हैं। इस संदर्भ में ऐसी बहुत सी परिस्थितियाँ होंगी। आप और क्या सामना करेंगे? हमारे शरीर अचानक अस्वस्थ महसूस होंगे। यह इसलिए क्योंकि कर्म का भुगतान विभिन्न रूपों में व्यक्त होगा। एक निश्चित समायावधि पर, आप यह स्पष्ट रूप से भेद करने में असमर्थ बना दिये जायेंगे कि कुछ वास्तव में सत्य है, कि आपका गोंग वास्तव में है, कि आप साधना कर सकते हैं और इसे पूर्ण कर सकते हैं, यह कि बुद्ध जनों का अस्तित्व होता है और वे वास्तव में हैं। भविष्य में, ये परिस्थितियाँ दोबारा आपको भ्रमित करने के लिए प्रकट होंगी और आपको महसूस कराएँगी जैसे उनका अस्तित्व न हो और वे सब भ्रम हों- यह देखने के लिए है कि आप संकल्पित हैं। आप कहते हैं कि आपको स्थिर और दृढ़ होना चाहिए। इस संकल्प के साथ, यदि आप उस समय पूरी तरह दृढ़ निश्चयी रह पाते हैं, आप प्राकृतिक रूप से अच्छा करेंगे क्योंकि आपके शिनशिंग में पहले ही सुधार आ चुका है। किन्तु अभी आप उतने स्थिर नहीं हैं। यदि आपको यह कठिनाई तुरन्त ही दे दी जाती है, आपको इसका जरा भी ज्ञानवर्धन नहीं हो पायेगा, और न ही आप किसी भी प्रकार साधना कर पायेंगे। कठिनाइयाँ विभिन्न संदर्भों में आ सकती हैं।

साधना अभ्यास के दौरान, व्यक्ति को ऊँचे स्तरों की ओर उठने के लिए इस प्रकार साधना करनी चाहिए। इस प्रकार, यदि आपमें से किसी को कहीं कुछ शारीरिक असुविधा महसूस होती है, आप सोचेंगे कि आप बीमार हैं। आप स्वयं को सदैव एक अभ्यासी की भांति मानने में असफल रहते हैं, क्योंकि यदि आपके साथ यह होता है तो आप इसे एक रोग मानते हैं। इतनी अधिक कठिनाइयाँ क्यों आती हैं? मैं आपको बताना चाहूँगा कि इनमें से बहुत सी आपके लिए पहले ही हटायी जा चुकी हैं, और

आपकी कठिनाइयाँ पहले ही बहुत अल्प हैं। यदि इन्हें आपके लिए नहीं हटाया जाता, इस समस्या का सामना करने पर हो सकता है आप पहले ही धराशायी हो जाते। शायद आप अपने बिस्तर से कभी उठ ही न पाते। जब आपको जरा भी समस्या आती है, आपको असुविधा महसूस होगी। किन्तु यह उतना आरामदेह कैसे हो सकता है? उदाहरण के लिए, जब मैं चांगचुन में एक कक्षा ले रहा था, वहाँ एक बहुत अच्छे जन्मजात गुण वाला व्यक्ति था, जो वास्तव में एक अच्छा प्रत्याशी था। मैंने उसे बहुत अच्छा पाया और उसकी कठिनाइयाँ थोड़ी सी बढ़ा दीं जिससे शीघ्रता से उसके कर्म का भुगतान हो सके और उसे ज्ञानप्राप्ति हो सके- मैं इसकी इस प्रकार तैयारी कर रहा था। किन्तु एक दिन अचानक ऐसा लगा कि उसके मस्तिष्क की नसों में अवरोध का रोग हुआ है और वह जमीन पर गिर गया। उसे लगा कि वह हिल भी नहीं सकता जैसे उसके चारों हाथ-पैर बेकार हो गये हों। उसे आकस्मिक चिकित्सा के लिए अस्पताल भेजा गया। तब वह दोबारा चलने-फिरने लगा। आप सब यह सोचें: मस्तिष्क की नसों में अवरोध के रोग के साथ, कोई फिर से इतना शीघ्र कैसे चल-फिर सकता था और अपने दोनों हाथ और पैरों को हिला सकता था? बल्कि, उसने यह सब होने के लिए फालुन दाफा को दोष दिया। उसने इसके बारे में नहीं सोचा : वह मस्तिष्क की नसों में अवरोध के रोग से इतना शीघ्र कैसे ठीक हो सकता था? यदि उसने उस समय फालुन दाफा का अभ्यास नहीं किया होता, हो सकता है जब वह गिरा था तब वह वहाँ वास्तव में मृत हो गया होता। शायद अपने शेष जीवन भर उसे पक्षाघात हो गया होता और उसे वास्तव में मस्तिष्क की नसों में अवरोध का रोग हो जाता।

कहने का तात्पर्य है कि किसी व्यक्ति को बचाना कितना अधिक कठिन है। उसके लिए इतना अधिक किया गया था, किन्तु वह तब भी यह नहीं जान पाया; बल्कि उसने वैसा कुछ कहा। कुछ अनुभवी अभ्यासी कहते हैं: "गुरुजी, मुझे अपने पूरे शरीर में असुविधाजनक क्यों लगता है? मैं हमेशा अस्पताल में सुई लगवाने जाता हूँ, किन्तु इससे मदद नहीं मिलती। दवा लेने से भी कोई मदद नहीं मिलती।" मुझे ऐसा बताने में उन्हें संकोच भी नहीं हुआ! नि:संदेह, उनसे कोई मदद नहीं मिलेगी। वे रोग नहीं हैं। उनसे मदद कैसे मिल सकती है? आप जाकर अपना शारीरिक परीक्षण करा सकते हैं। आपको कुछ नहीं हुआ है, किन्तु आपको केवल असुविधाजनक महसूस होता है। हमारे बीच एक अभ्यासी है जो अस्पताल में कुछ सुइयाँ तोड़ चुका है। अन्त में, दवा

निकल कर बाहर बह गई, और सुई तब भी अन्दर नहीं जा रही थी। उसे समझ आया : "ओह, मैं एक अभ्यासी हूँ, और मुझे सुई नहीं लगवानी चाहिए।" वह समझ गया कि उसे सुई नहीं लगवानी चाहिए। इसलिए, जब कभी आप कठिनाइयों के सम्मुख होते हैं, तो इस विषय को ध्यान में अवश्य रखें। कुछ लोग सोचते हैं कि मैं उन्हें अस्पताल जाने की अनुमति नहीं देता, इसलिए वे सोचते हैं : "यदि आप मुझे अस्पताल नहीं जाने देते, तो मैं किसी चीगोंग गुरु के पास जाऊँगा।" वे अब भी इसे एक रोग मानते हैं और चीगोंग गुरु को दिखाना चाहते हैं। वे एक सच्चा चीगोंग गुरु कहाँ पायेंगे? यदि आप किसी पाखण्डी के पास जाते हैं, आप तुरन्त ही बर्बाद हो जायेंगे।

हम कह चुके हैं : "आप एक पाखण्डी चीगोंग गुरु और एक सच्चे गुरु में कैसे भेद करेंगे?" अनेक चीगोंग गुरु स्व-घोषित होते हैं। मेरा परीक्षण किया जा चुका है और मेरे पास वैज्ञानिक संस्थानों के परीक्षण दस्तावेज हैं। कई चीगोंग गुरु पाखण्डी और स्व-घोषित होते हैं। उनमें से अनेक झूठ बोलते हैं और लोगों को धोखा देते हैं। ऐसा पाखण्डी चीगोंग गुरु भी रोगों को ठीक कर सकता है। वह ऐसा क्यों कर सकता है? यह व्यक्ति किसी प्रेत या पशु द्वारा ग्रसित है जिसके बिना वह लोगों को धोखा नहीं दे सकेगा! वह ग्रसित करने वाला प्रेत या पशु भी शक्ति निष्कासित कर सकता है और रोगों को ठीक कर सकता है। क्योंकि यह एक प्रकार की शक्ति है, यह साधारण लोगों पर सरलता से प्रभाव डाल सकती है। किन्तु मैं कह चुका हूँ, "वह ग्रसित करने वाला प्रेत या पशु आपको क्या देगा जब वह आपके रोग का उपचार करता है?" बहुत सूक्ष्म स्तर पर, यह सब उस ग्रसित करने वाले प्रेत या पशु का प्रतिरूप होता है। यदि यह आपको दिया जाता है, आप क्या करेंगे? "किसी देव को आमंत्रित करना सरल है किन्तु वापस भेजना कठिन।"[3] हमें साधारण लोगों की चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि वे केवल साधारण लोग बने रहना चाहते हैं और अस्थाई समाधान पाते हैं। आप, हालांकि, एक अभ्यासी हैं। क्या आप निरन्तर अपने शरीर को शुद्ध नहीं करना चाहते? यदि यह आपके शरीर पर आ जाता है, आप इससे कब छुटकारा पायेंगे? इसके अतिरिक्त, इसके पास कुछ मात्रा में शक्ति भी होती है। कुछ लोग आश्चर्य करते हैं : "फालुन इसे आने ही क्यों देता है? क्या हमारी रक्षा के लिए हमारे पास गुरु के फा-शरीर नहीं हैं?" हमारे विश्व में एक नियम है: यदि आप स्वयं कुछ चाहते हैं तो इसमें कोई भी हस्तक्षेप नहीं करेगा। जब तक आप इसी को चाहते हैं, इसमें कोई हस्तक्षेप नहीं करेगा।

मेरा फा-शरीर आपको रोकेगा और आपको संकेत देगा। यदि उसे लगता है कि आप हमेशा इसी प्रकार हैं, यह इसके बाद आपकी देख-रेख नहीं करेगा। किसी को साधना अभ्यास करने के लिए बाध्य कैसे किया जा सकता है? आपको साधना करने के लिए मनाया या बाध्य नहीं किया जा सकता। यह आप पर निर्भर करता है कि आप सच्चे रूप से विकास करें। कोई इस बारे में कुछ नहीं कर सकता यदि आप स्वयं अपने में सुधार नहीं लाना चाहते। आपको नियम और फा सिखा दिये गये हैं। आप किसे दोषी ठहरा सकते हैं यदि आप अब भी अपना सुधार नहीं करना चाहते। जहाँ तक यह बात है कि आप क्या चाहते हैं, फालुन और मेरा फा-शरीर दोनों ही इसमें हस्तक्षेप नहीं करेंगे- यह निश्चित है। कुछ लोग दूसरे चीगोंग गुरुओं की कक्षाओं में भी गये और घर वापस जाने पर उन्हें बहुत असुविधाजनक लगा। यह निश्चित था। मेरे फा-शरीर ने आपकी रक्षा क्यों नहीं की? आप वहां किस लिए गये थे? वहाँ जाकर सुनने के लिए, क्या आप कुछ खोजना नहीं चाहते थे? यदि आपने अपने कानों से नहीं सुना, तो यह आपके शरीर में प्रवेश कैसे कर गया? कुछ लोगों ने अपने फालुन विकृत कर लिये हैं। मैं आपको बताना चाहूँगा कि यह फालुन आपके जीवन से भी अधिक मूल्यवान है। यह एक उच्च जीवन है जिसे मन चाहे बर्बाद नहीं किया जा सकता। आज-कल बहुत से पाखण्डी चीगोंग गुरु हैं, और उनमें से कुछ बहुत जाने-माने हैं। मैं चीन चीगोंग विज्ञान शोध संस्थान में प्रबंधकों को बता चुका हूँ कि प्राचीन समय में, शाही दरबार में एक बार *दा-जी*[4] का उपद्रव रहा था। उस भेड़िये ने बहुत से दुराचार किये थे, किन्तु यह तब भी उतना बुरा नहीं था जितने आज के पाखण्डी चीगोंग गुरु हैं जिन्होंने पूरे देश को नुकसान पहुँचाया है। कितने लोगों को शिकार बनाया जा चुका है?! आप देखें तो सतही रूप से यह बहुत अच्छा जान पड़ता है, किन्तु कितने लोग उस प्रकार की वस्तुओं को अपने शरीरों पर लिये हुए हैं? यदि वे इसे आपको दे देते हैं, यह आपके पास आ जायेगी- वे बहुतायत में हैं। इसलिए साधारण व्यक्ति के लिए सतही रूप से भेद करना कठिन है।

कुछ लोग सोच सकते हैं : "इस चीगोंग गोष्ठी में आने के बाद और जो ली होंगज़ी ने आज कहा वह सुनने के बाद, मैं समझ गया हूँ कि चीगोंग कितना महान और प्रगाढ़ है! यदि कुछ और चीगोंग गोष्ठियाँ आयोजित होती हैं, मुझे उनमें भी जाना चाहिए।" मैं कहूँगा कि आपको निश्चित ही वहाँ नहीं जाना चाहिए। यदि आप उन्हें सुनते हैं, बुरी वस्तुएँ आपके कानों में प्रवेश करेंगी। किसी व्यक्ति को बचाना और उसके

विचार को बदलना दोनों ही बहुत ही कठिन है। किसी व्यक्ति के शरीर को शुद्ध करना भी बहुत कठिन होता है। पाखण्डी चीगोंग गुरु बहुत अधिक संख्या में हैं। जहाँ तक किसी उचित पद्धति के सच्चे चीगोंग गुरु की बात है, क्या वह वास्तव में शुद्ध है? कुछ पशु बहुत दुष्ट होते हैं। हालांकि वे वस्तुएँ उसके शरीर पर नहीं आ सकतीं, किन्तु न ही वह उन्हें दूर भगा सकता है। यह व्यक्ति, और विशेष रूप से उसके शिष्यों के पास, उन वस्तुओं को बड़े स्तर पर ललकारने का सामर्थ्य नहीं होता। जब वह गोंग निष्कासित करता है, इसमें सब प्रकार की गन्दली वस्तुएँ मिली होती हैं। हालांकि वह स्वयं पवित्र हो सकता है, उसके शिष्य उचित नहीं हैं और विभिन्न प्रकार के प्रेतों और पशुओं द्वारा ग्रसित हैं- जो सब प्रकार के हैं।

यदि आप वास्तव में फालुन दाफा में अभ्यास करना चाहते हैं, आपको जा कर उन्हें नहीं सुनना चाहिए। नि:संदेह, यदि आप फालुन दाफा में साधना अभ्यास नहीं करना चाहते और सभी कुछ अभ्यास करना चाहते हैं, आप ऐसा कर सकते हैं; मैं आपको नहीं रोकूँगा, क्योंकि आप तब एक फालुन दाफा शिष्य भी नहीं हैं। यदि कुछ गलत होता है, तो यह न कहें कि यह फालुन दाफा अभ्यास के कारण हुआ है। केवल जब आप शिनशिंग आदर्श का पालन करते हैं और दाफा के अनुसार साधना अभ्यास करते हैं तभी आप एक सच्चे फालुन दाफा अभ्यासी हैं। किसी ने पूछा है : "क्या मैं दूसरी चीगोंग पद्धतियों के अभ्यासियों के साथ सम्मिलित हो सकता हूँ?" मैं आपको बताना चाहूँगा कि वे केवल चीगोंग का अभ्यास कर रहे हैं जबकि आप दाफा में साधना कर रहे हैं। इस कक्षा को पूर्ण करने के पश्चात, आप स्तरों की दृष्टि से उन्हें कहीं पीछे छोड़ देंगे। यह फालुन अनेकों पीढ़ियों के साधना अभ्यास द्वारा उत्पन्न हुआ है और इसकी शक्तियाँ महान हैं। निश्चित ही, जब आप उनके संपर्क में आते हैं, यदि आप ध्यान रखते हैं कि आप उनसे कुछ वस्तु लेते या प्राप्त नहीं करते और केवल साधारण मित्र बने रहते हैं, तो कोई अन्तर नहीं पड़ेगा। यदि वे लोग वास्तव में कुछ धारण किये हैं तो यह बहुत बुरा होगा, और अच्छा यह है कि उनसे कोई संपर्क न रखा जाये। जहाँ तक पति-पत्नी की बात है, मैं सोचता हूँ कि इससे भी कोई फर्क नहीं पड़ता यदि आपका पति या पत्नी कोई दूसरा चीगोंग अभ्यास करते हैं। किन्तु एक बात है : क्योंकि आप एक उचित मार्ग में अभ्यास करते हैं, आपका अभ्यास औरों को लाभ पहुँचायेगा। यदि आपका पति या पत्नी कोई दुष्ट अभ्यास करते हैं, उसके शरीर पर कुछ बुरी वस्तुएँ हो

सकती हैं। आपकी सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए, उसका भी शोधन करना आवश्यक है। आपके लिए दूसरे आयामों में सभी कुछ साफ किया जायेगा। आपके घर के वातावरण को भी स्वच्छ किया जायेगा। यदि आपके वातावरण को स्वच्छ नहीं किया जाता और आपके साथ सभी प्रकार की वस्तुएँ विघ्न डालती हैं, आप साधना अभ्यास कैसे कर पायेंगे?

किन्तु एक परिस्थिति हैं जिसमें मेरा फा-शरीर वस्तुओं का शोधन नहीं करेगा। एक अभ्यासी है जिसने एक दिन मेरे फा-शरीर को अपने घर आते हुए देखा। वह बहुत उत्साहित था: "गुरु के फा-शरीर यहाँ हैं। गुरुजी, कृपया अन्दर आ जाइये।" मेरे फा-शरीर ने कहा : "तुम्हारा कमरा बहुत गंदा है, और यहाँ बहुत सी वस्तुएँ हैं।" तब, यह लौट गया। अक्सर, जब दूसरे आयामों में कई दुष्ट प्रेत होते हैं, मेरा फा-शरीर आपके लिए उन्हें साफ कर देता है। उसका कमरा, हालांकि, विभिन्न बुरी चीगोंग पुस्तकों से भरा था। वह यह समझ गया और पुस्तकों को जला या बेचकर इसे साफ कर दिया। मेरा फा-शरीर तब वापस आ गया। इस अभ्यासी ने मुझे यह बताया।

ऐसे भी लोग हैं जो भविष्य बताने वालों से मिलते हैं। किसी ने मुझसे पूछा है : "गुरुजी, मैं अब फालुन दाफा का अभ्यास कर रहा हूँ। मैं जादू-टोने या भविष्य बताने जैसे विषयों में बहुत रुचि रखता हूँ। क्या मैं उन्हें अब भी प्रयोग कर सकता हूँ?" मैं इसे इस प्रकार कहूँगा : यदि आपके पास बहुत सी शक्ति है, जो कुछ आप कहेंगे उसका एक प्रभाव होगा। यदि कुछ इस प्रकार नहीं होना है, किन्तु आप किसी को बता चुके हैं कि यह इस प्रकार होगा, तो हो सकता है आप से एक बुरा काम हो गया है। एक साधारण व्यक्ति बहुत कमजोर होता है। उसके विचार अव्यवस्थित और परिवर्तनशील होते हैं। यदि आप अपना मुंह खोलें और उसे कुछ कह दें, तो वह विपत्ति सच में हो सकती है। यदि इस व्यक्ति के पास बहुत सा कर्म है जिसका उसे भुगतान करना है, और आप उसे बताते रहते हैं कि उसका भविष्य शुभ होगा, तो क्या इसकी अनुमति होगी जबकि वह अपने कर्म का भुगतान करने में असमर्थ है? क्या आप उसे हानि नहीं पहुँचा रहे हैं? कुछ लोग इन वस्तुओं को छोड़ ही नहीं पाते और उनसे इस प्रकार जकड़े रहते हैं जैसे उनमें कोई विशेष योग्यता हो। क्या यह एक मोहभाव नहीं है? इसके अतिरिक्त, यदि आप वास्तव में सत्य जानते भी हों, एक अभ्यासी की भाँति आपको अपना शिनशिंग संभालना चाहिए और किसी दिव्य रहस्य को अकारण एक साधारण व्यक्ति

को नहीं बताना चाहिए। यह सिद्धांत है। भले ही कोई जादू-टोने को भविष्य बताने के लिए कैसे भी प्रयोग करे, इसमें से कुछ पहले ही सत्य नहीं है। किसी एक या दूसरे प्रकार भविष्य बताना जिसमें कुछ सही है और कुछ गलत, इस प्रकार भविष्य बताने की साधारण मानव समाज में अनुमति रही है। क्योंकि आपके पास सच्चा गोंग है, मैं कहूँगा कि एक सच्चे अभ्यासी को एक उच्च आदर्श का पालन करना चाहिए। किन्तु कुछ अभ्यासी अपना भविष्य जानने के लिए दूसरे लोगों को ढूंढते हैं और पूछते हैं : "क्या मेरा भविष्य देख कर बताएँगे कि मेरा क्या होगा? मेरा साधना अभ्यास कैसा चल रहा है? या मेरे सामने कुछ विपत्तियाँ आएँगी?" वे ये बातें जानने के लिए औरों के पास जाते हैं। यदि आपकी उस विपत्ति के बारे में पहले से पता लग जाए, तो आप अपने में कैसे सुधार ला पायेंगे? एक अभ्यासी का पूरा जीवन पुनर्व्यवस्थित किया जा चुका है। व्यक्ति के हाथ की रेखाएँ, चेहरा, जन्मकुण्डली और व्यक्ति के शरीर के सभी संदेश पहले ही भिन्न हैं और बदले जा चुके हैं। यदि आप एक भविष्य बताने वाले के पास जाते हैं, आप उस पर विश्वास कर लेंगे। अन्यथा आप ऐसा क्यों करेंगे? जो वह बता सकता है वह आपके पिछले समय की छोटी-मोटी बातें हैं किन्तु उनका सार पहले ही बदल चुका है। तब आप सभी यह सोचें : यदि आप किसी भविष्य बताने वाले के पास जाते हैं, क्या आप उसे सुनकर विश्वास नहीं कर रहे? तब, क्या यह आप पर एक मानसिक दबाव उत्पन्न नहीं करता? यदि आप इसके बारे में सोच कर अपने पर दबाव डालें क्या यह मोहभाव नहीं है? तब इस मोहभाव को कैसे हटाया जा सकता है? क्या आपने स्वयं अपने ऊपर एक अतिरिक्त कठिनाई नहीं ले ली है? क्या आपको इस मोहभाव को छोड़ने के लिए और दु:ख नहीं उठाना पड़ेगा? प्रत्येक परीक्षा या प्रत्येक कठिनाई साधना में ऊपर उठने या गिरने से संबंधित है। यह पहले ही कठिन है, किन्तु आपने तब भी स्वयं यह कठिनाई ओढ़ ली है। आप इससे कैसे बाहर आ सकते हैं? इसके परिणामस्वरूप आपके सामने कठिनाईयाँ या समस्याएँ आ सकती हैं। आपके बदले हुए जीवन के पथ को किसी दूसरे के द्वारा देखने की अनुमति नहीं है। यदि इसे कोई और देख लेता है या यदि आपको बता दिया जाता है कि आपके सामने कब कठिनाई आयेगी, तो आप साधना कैसे कर सकेंगे? इसलिए, इसे देखने की अनुमति बिल्कुल नहीं है। न ही, कोई किसी दूसरी अभ्यास पद्धति से संबंधित व्यक्ति इसे देख सकता है। समान अभ्यास पद्धति से संबंधित साथ के शिष्य भी इसे नहीं देख सकते। कोई भी इसके बारे में ठीक प्रकार नहीं बता सकता, क्योंकि इस प्रकार का जीवन बदला जा

चुका है और यह साधना अभ्यास के लिए है।

किसी ने मुझसे पूछा कि क्या वह दूसरी धार्मिक पुस्तकें और दूसरी चीगोंग की पुस्तकें पढ़ सकता है। हम कह चुके हैं कि धार्मिक पुस्तकें, विशेष रूप से बुद्धमत संबंधित, सभी लोगों को सिखाती हैं कि शिनशिंग की साधना कैसे की जाए। हम भी बुद्ध विचारधारा से संबंधित हैं, इसलिए इसमें कोई समस्या नहीं होनी चाहिए। किन्तु यह स्पष्ट करना आवश्यक है : भाषा अनुवाद के दौरान धर्मशास्त्रों की बहुत-सी वस्तुओं का सही अनुवाद नहीं हुआ। इसके अतिरिक्त, शास्त्रों के विभिन्न स्तरों के दृष्टिकोण से कई भावार्थ भी बनाए गए, और बिना समझे टिप्पणियाँ बनाई गईं। यह धर्म को बर्बाद करने जैसा है। वे लोग जिन्होंने बिना समझे शास्त्रों के भावार्थ बनाए वे बुद्ध स्तर से कहीं दूर थे; वे शास्त्रों का वास्तविक सार नहीं जानते थे। इसलिए, उनकी विषयों के बारे में विभिन्न समझ रहती थी। आपके लिए उन्हें पूर्ण रूप से समझना बहुत सरल नहीं होगा, और आप स्वयं उन्हें नहीं समझ सकेंगे। किन्तु यदि आप कहते हैं : "मैं केवल शास्त्रों को पढ़ने में रुचि रखता हूँ," और आप सदैव शास्त्र पढ़ते हैं, तो आप उस अभ्यास पद्धति में अभ्यास कर रहे होंगे, क्योंकि शास्त्रों में भी उस अभ्यास पद्धति का गोंग और फा सम्मिलित है। एक बार आप उसे पढ़ते हैं, तो आप उस साधना पद्धति से अभ्यास कर रहे होंगे। इसमें यह विषय है। यदि आप इसे गहनता से पढ़ते हैं और उस अभ्यास पद्धति का अनुसरण करते हैं, हो सकता है आपने उस अभ्यास पद्धति को अपना लिया है न कि हमारी। पूरे इतिहासकाल में, साधना अभ्यास में यह आवश्यक रहा है कि व्यक्ति एक समय में दो अभ्यास पद्धतियों को न अपनाए। यदि आप वास्तव में इस अभ्यास पद्धति में अभ्यास करना चाहते हैं, आपको केवल इस अभ्यास पद्धति की पुस्तकें पढ़नी चाहिएँ।

जहाँ तक चीगोंग पुस्तकों का प्रश्न है, यदि आप साधना अभ्यास करना चाहते हैं तो आपको उन्हें नहीं पढ़ना चाहिए। विशेष रूप से आज-कल प्रकाशित होने वाली चीगोंग पुस्तकें, आपको उन्हें नहीं पढ़ना चाहिए। यह इस प्रकार की पुस्तकें जैसे पीले शासक की आन्तरिक रसायनशास्त्र की कृति, शिंगमिंग गुइजी, या ताओ ज़ांग के लिए भी सच है। यद्यपि उनमें वे बुरे संदेश समाहित नहीं होते, किन्तु उनमें भी विभिन्न आयामों के संदेश होते हैं। वे स्वयं भी साधना अभ्यास के मार्ग हैं। एक बार उन्हें आप पढ़ते हैं, वे आपको कुछ देंगे और आपके साथ व्यवधान करेंगे। यदि आपको उनका

कोई वाक्य अच्छा लगता है, तो कुछ आकर आपके गोंग में जुड़ जाएगा। हालांकि यह कुछ बुरा नहीं है, यदि आपको कुछ और अचानक दे दिया जाता है आप कैसे साधना अभ्यास करेंगे? क्या इससे समस्याएँ उत्पन्न नहीं होंगी? यदि आप एक टेलीविजन के इलेक्ट्रोनिक भाग में एक अतिरिक्त पुर्जा लगा दें, तो आप क्या समझते हैं इस टेलीविजन का क्या होगा? यह तुरन्त ही खराब हो जाएगा। यह सिद्धांत है। इसके अतिरिक्त, आजकल अनेक चीगोंग पुस्तकें गलत हैं और उनमें विभिन्न संदेश समाहित हैं। जैसे हमारा एक अभ्यासी एक चीगोंग पुस्तक के पन्ने पलट रहा था, इसमें से एक बड़ा सर्प निकल कर बाहर आया। निश्चित ही, मैं इसके बारे में विस्तार से चर्चा नहीं करूँगा। जो मैंने अभी बताया वे कुछ समस्याएँ हैं जो अभ्यासियों द्वारा स्वयं उचित आचरण न रख पाने के कारण उत्पन्न होती हैं; अर्थात्, वे समस्याएँ एक अनुचित मन द्वारा उत्पन्न होती हैं। इससे लाभ होगा कि हम उनके बारे में बताएँ और हर किसी को जानने दें कि क्या करें और उन्हें कैसे पहचाने जिससे भविष्य में समस्याएँ उत्पन्न न हों। यद्यपि जो मैंने अभी कहा है बहुत जोर डाल कर नहीं कहा है, सभी को इस पर अवश्य ध्यान देना चाहिए। क्योंकि इस विषय पर अक्सर समस्याएँ उत्पन्न होती हैं, और वे अक्सर इससे संबंधित होती हैं। साधना अभ्यास अत्यन्त कठिन और बहुत गंभीर है। यदि आप एक पल के लिए भी लापरवाह होते हैं, आप लड़खड़ा सकते हैं और तुरन्त बर्बाद हो सकते हैं। इसलिए, व्यक्ति का मन उचित होना चाहिए।

युद्ध-कला चीगोंग

आन्तरिक साधना अभ्यासों के अतिरिक्त, युद्ध-कला चीगोंग भी होती है। युद्ध-कला चीगोंग की बात की जाए तो, मैं एक विषय पर जोर डालूँगा कि साधकों के समुदाय में अब अनेक चीगोंग स्वरूप दावा पेश कर रहे हैं।

अब यहाँ तथाकथित चित्रकला चीगोंग, संगीत चीगोंग, सुलेखन चीगोंग, और नृत्य चीगोंग- सभी प्रकार के हैं। क्या वे चीगोंग हैं? मुझे यह बहुत विचित्र लगता है। मैं कहूँगा कि यह चीगोंग को लूटने जैसा है। यह न केवल चीगोंग को लूटने जैसा है, किन्तु सरल शब्दों में चीगोंग को बर्बाद करने जैसा है। उनका सैध्दान्तिक आधार क्या है? यह कहा जाता है कि जब कोई चित्र बनाता है, गाता है, नृत्य करता है, या लिखता है, उसे

अचेतन अवस्था या तथाकथित चीगोंग अवस्था में होना चाहिए। क्या इससे यह चीगोंग बन जाता है? इसे इस प्रकार नहीं समझना चाहिए। क्या यह चीगोंग को बर्बाद करना नहीं है? चीगोंग मानव शरीर की साधना की एक विस्तृत और प्रगाढ़ शिक्षा है। ओह, अचेतन अवस्था में होने को चीगोंग कैसे कहा जा सकता है? तब, इसे क्या कहा जाएगा यदि हम स्नानागार में अचेतन अवस्था में जाएँ? क्या यह चीगोंग को बर्बाद करना नहीं है? मैं इसे चीगोंग का अपमान करना कहूँगा। दो वर्ष पहले पूर्वी स्वास्थ्य प्रदर्शनी में, तथाकथित सुलेखन चीगोंग सम्मिलित था। सुलेखन चीगोंग क्या होता है? मैं वहाँ देखने के लिए गया और वहाँ एक व्यक्ति को लिखते हुए देखा। लिखने के बाद, उसने अपने हाथों से प्रत्येक शब्द को अपनी ची दी, और छोड़ी गई ची पूरी तरह काली थी। उसका मन धन और प्रसिद्धि से भरा था। उसके पास गोंग कैसे हो सकता था? उसकी ची भी अच्छी नहीं हो सकती थी। उसके लेखन महंगे दामों के साथ टंगे थे। किन्तु वे सब विदेशियों को बेचे गए। मैं कहूँगा कि जिस किसी ने उन्हें खरीदा होगा वह दयनीय होगा। काली ची कैसे अच्छी हो सकती है? उस व्यक्ति का पूरा चेहरा गहरे रंग का लग रहा था। उसे धन की लालसा थी और केवल धन के बारे में सोचता था- उसके पास गोंग कैसे हो सकता था? तब भी, उस व्यक्ति के परिचय पत्र पर ढेरों पदवियाँ लिखी थीं, जैसे अमुक अंतर्राष्ट्रीय सुलेखन चीगोंग। मैं पूछता हूँ कि इस प्रकार की वस्तु को चीगोंग कैसे कहा जा सकता है?

इसके बारे में आप सब सोचें : इस कक्षा के अस्सी से नब्बे प्रतिशत लोगों के न केवल रोग ठीक हो जाएंगे, बल्कि उनका गोंग भी उत्पन्न होगा- सच्चा गोंग। जो आपके शरीर में है वह पहले ही दिव्य है। यदि आप स्वयं साधना करते हैं, एक पूरे जीवनकाल में भी आप इसे साधना द्वारा उत्पन्न नहीं करेंगे। यदि एक युवक अभ्यास को अभी आरम्भ करता है, इस जीवन काल में वह वो उत्पन्न नहीं कर सकेगा जो मैंने दिया है, और उसे तब भी एक सच्चे, पवित्र गुरु की आवश्यकता होगी। हमें इस फालुन और इन यन्त्रों को बनाने में अनेक जीवनकाल लगे हैं। इन वस्तुओं को आपके शरीर में एक साथ स्थापित किया जाता है। इसलिए, मैं आपको बता रहा हूँ कि आप इसे सरलता से न खो दें क्योंकि आपने इसे सरलता से प्राप्त किया है। वे अत्यन्त कीमती और अनमोल हैं। इस कक्षा के बाद, जो आपके पास होगा वह वास्तविक गोंग है, एक उच्च शक्ति पदार्थ। जब आप घर जाएंगे और कुछ शब्द लिखेंगे- भले ही आपका

लेखन कैसा भी हो- इसमें गोंग होगा! इस प्रकार, क्या इस कक्षा में सभी को "गुरु" की पदवी दी जाए, और सब सुलेखन चीगोंग गुरु बन जाएँ? मैं कहूँगा कि इसे इस प्रकार नहीं समझना चाहिए। क्योंकि आपके पास गोंग और शक्ति है, आपको इसे जान बूझकर देने की आवश्यकता नहीं है; आप जो कुछ छूएंगे उस पर आप शक्ति छोड़ जाएंगे, और यह सब उज्जवल चमकेगा।

मैंने एक पत्रिका में एक समाचार पढ़ा जिसमें बताया गया था कि एक सुलेखन चीगोंग कक्षा होने जा रही है। मैंने इसे संक्षेप में यह देखने के लिए पढ़ा कि यह कैसे सिखाया जाएगा। यह लिखा था कि व्यक्ति को पहले अपना श्वास अन्दर लेने और बाहर निकालने को नियन्त्रित करना होगा। उसके बाद, व्यक्ति को पन्द्रह से तीस मिनट बैठना होगा, जिसमें वह दानत्येन की ची पर अपना मन केन्द्रित करे और कल्पना कर दानत्येन की ची को उठा कर बांह में लाए। तब, उसे कूची उठा लेनी चाहिए और इसे काली स्याही में डुबाना चाहिए। इसके बाद उसे ची को कूची की नोक पर ले जाना चाहिए। जब व्यक्ति का मनो-विचार वहाँ पहँचता है, वह लिखना आरम्भ कर सकता है। ओह, यदि कोई ची को कहीं ले जा सकता है, क्या उसे चीगोंग मान लेना चाहिए? उस प्रकार, भोजन करने से पहले हमें कुछ देर ध्यान में बैठना चाहिए। तब हमें चोपस्टिक उठानी चाहिए और भोजन करने के लिए ची को हमारी चोपस्टिक की नोक तक ले जाना चाहिए। उसे भोजन चीगोंग कहा जाएगा, क्या नहीं? जो हम खाएँगे उसमें भी शक्ति होगी। हम केवल इस विषय पर टिप्पणी कर रहे हैं। मैं उसे चीगोंग का अपमान करना कहूँगा, क्योंकि वे चीगोंग को इतना उथला मानते हैं। इसलिए लोगों को इसे इस प्रकार नहीं समझना चाहिए।

युद्ध कला चीगोंग को, यद्यपि, पहले ही एक स्वतन्त्र चीगोंग अभ्यास माना जा सकता है। ऐसा क्यों है? क्योंकि इसकी कई हजार वर्षों की धरोहर है, साधना सिद्धांतों की एक संपूर्ण प्रणाली है, और साधना पद्धतियों की एक संपूर्ण प्रणाली है, इसे एक संपूर्ण प्रणाली माना जा सकता है। इसके बावजूद, युद्ध कला चीगोंग आन्तरिक साधना अभ्यासों में सबसे निम्न स्तर पर आता है। कठोर चीगोंग एक प्रकार का समूह शक्ति पदार्थ है जो केवल प्रहार करने और मारने के लिए है। मैं आपको एक उदाहरण देना चाहूँगा। हमारी फालुन दाफा कक्षा में आने के बाद, बीजिंग में एक अभ्यासी अपने हाथ से कुछ दबा नहीं सकता था। जब वह एक बच्चा-गाड़ी खरीद रहा था, वह

आश्चर्यचकित था कि जब उसने बच्चा-गाड़ी की मजबूती अपने हाथों से जांची तो वह टूट कर गिर गई। जब वह घर गया और एक कुर्सी पर बैठा, वह इसे अपने हाथों से नहीं दबा सका। यदि वह दबाता, तो कुर्सी टूट जाती। उसने मुझसे पूछा यह क्या हो रहा है। मैंने उसे नहीं बताया क्योंकि मैं नहीं चाहता था कि उसे कोई मोहभाव उत्पन्न हो। मैंने केवल कहा कि यह सब प्राकृतिक है, इसे होने दे, और भूल जाए क्योंकि यह सब अच्छा है। यदि उस दिव्य सिद्धि को उचित प्रकार प्रयोग किया जाए, एक पत्थर के टुकड़े को हाथ की चुटकी से चूर-चूर किया जा सकता है। क्या यह कठोर चीगोंग नहीं है? यद्यपि, उसने कभी कठोर चीगोंग का अभ्यास नहीं किया था। आन्तरिक साधना अभ्यासों में, ये दिव्य सिद्धियाँ अक्सर उत्पन्न हो सकती हैं। किन्तु, क्योंकि व्यक्ति के लिए अपने शिनशिंग को संभालना कठिन होता है, उसे अक्सर उनके प्रयोग की अनुमति नहीं होती भले ही वे उत्पन्न हो गई हों। विशेष रूप से, साधना अभ्यास के निम्न स्तर पर, व्यक्ति के शिनशिंग में सुधार नहीं हुआ होता है। इस प्रकार, दिव्य सिद्धियाँ जो निम्न स्तर पर उत्पन्न होती हैं वे बिल्कुल प्रदान नहीं की जातीं। जैसे समय बीतता है और आपके स्तर में सुधार होता है, इन वस्तुओं का कोई उपयोग नहीं रहता और उन्हें प्रदान करने की आवश्यकता नहीं रहती।

युद्ध कला चीगोंग का विशिष्ट रूप से कैसे अभ्यास किया जाता है? युद्ध कला चीगोंग के अभ्यास में, व्यक्ति को अपनी ची नियन्त्रित करनी चाहिए, किन्तु आरम्भ में ची को नियन्त्रित करना सरल नहीं होता। यद्यपि व्यक्ति ची को नियन्त्रित करना चाहता है, हो सकता है वह ऐसा न कर सके। तब उसे क्या करना चाहिए? उसे अपने हाथों, अपनी छाती के दोनों ओर, अपने पैर, टांगों, बाहों और सर का व्यायाम करना चाहिए। वह उनका व्यायाम कैसे करे? कुछ लोग एक वृक्ष पर अपने हाथों या हथेली से प्रहार करते हैं, और कुछ लोग अपने हाथों से पत्थर पर प्रहार करते हैं। इस प्रकार का संपर्क हड्डियों के लिए कितना दु:खदायी होता होगा, क्योंकि कुछ बल लगने से ही उनमें रक्त बहने लगेगा! ची को अभी भी नियन्त्रित नहीं किया जा सकता। क्या किया जाना चाहिए? व्यक्ति अपनी बाहों को गोल घुमाना आरम्भ करता है जिससे रक्त बाहों के पीछे की ओर चला जाए, और इस प्रकार उसकी बाहें और हाथ सूज जाएंगे। वे वास्तव में सूज जाएंगे। उसके बाद, जब वह एक पत्थर पर हाथ मारता है, तो हड्डियों पर मोटी परत होगी और उनका पत्थर के साथ सीधा संपर्क नहीं होगा। इस प्रकार उन्हें उतना दर्द

अनुभव नहीं होगा। जैसे व्यक्ति अभ्यास करता जाता है, गुरु इस व्यक्ति को सिखाएगा। जैसे समय बीतता है, वह ची को नियन्त्रित करना सीख जाएगा। हालांकि, केवल ची को नियन्त्रित करने की योग्यता बहुत नहीं है, क्योंकि एक वास्तविक लड़ाई में प्रतिद्वंदी आपका इन्तजार नहीं करेगा। निश्चित ही, जब व्यक्ति ची को नियन्त्रित कर सकता है, वह प्रहार को झेल सकता है और एक मोटे डंडे के लगने से भी दर्द महसूस नहीं होगा। ची को बाहों की ओर भेजने पर, बाहें सूज जाएंगी। किन्तु आरम्भ में, ची सबसे साधारण वस्तु होती है और जैसे व्यक्ति निरन्तर अभ्यास करता है इसे एक उच्च शक्ति पदार्थ में परिवर्तित किया जा सकता है। जब इसे एक उच्च शक्ति पदार्थ में परिवर्तित किया जाता है, यह धीरे-धीरे बहुत घनत्व का एक शक्ति समूह बना लेती है, और यह शक्ति घनत्व प्रज्ञावान होता है। इसलिए, यह एक दिव्य सिद्धि का समूह होता है, या कहा जाए तो, एक प्रकार की दिव्य सिद्धि। तब भी, यह दिव्य सिद्धि केवल प्रहार करने और प्रहार को झेलने के लिए है। इसे रोगों को ठीक करने के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता। क्योंकि यह उच्च शक्ति पदार्थ दूसरे आयाम में होता है और हमारे आयाम में यात्रा नहीं करता, इसका समय हमारे समय से तीव्र होता है। जब आप किसी पर मुष्टी प्रहार करते हैं, आपको ची भेजने की या इसके बारे में सोचने की आवश्यकता नहीं होती क्योंकि गोंग पहले ही वहाँ होगा। जब आप किसी के प्रहार को झेलना चाहते हैं, तो गोंग वहाँ भी पहले ही होगा। भले ही आप कितना भी तीव्र प्रहार करें, यह आपसे पहले ही पहुंचेगा क्योंकि दोनों ओर समय की धारणाएँ भिन्न हैं। युद्ध कला चीगोंग के अभ्यास द्वारा, व्यक्ति तथाकथित लौह-रेत पंजा, सिन्दूरी पंजा, वज्र पांव, और अरहत पैर को विकसित कर सकता है। ये साधारण लोगों की सिद्धियाँ हैं। अभ्यास द्वारा, एक साधारण व्यक्ति इस स्तर को प्राप्त कर सकता है।

युद्ध कला चीगोंग और आन्तरिक साधना अभ्यास में सबसे बड़ा अन्तर यह है कि युद्ध कला चीगोंग में गति के साथ अभ्यास आवश्यक होता है; ची इस प्रकार त्वचा के नीचे प्रवाहित होती है। क्योंकि इसमें गति के साथ अभ्यास की आवश्यकता होती है, व्यक्ति शान्त अवस्था प्राप्त नहीं कर सकता, और न ही उसकी ची दानत्येन में प्रवेश करती है। उसकी ची त्वचा के नीचे और पेशियों के बीच प्रवाहित होती है। इसलिए, व्यक्ति न तो शरीर की साधना कर पाता है और न ही उच्च स्तर की सिद्धियों की। हमारे आन्तरिक साधना अभ्यास में शान्त अवस्था में अभ्यास करना आवश्यक होता है।

पारम्परिक अभ्यासों में आवश्यक होता है कि ची उदर के निचले भाग में दानत्येन में प्रवेश करे। उनमें शान्त अवस्था में अभ्यास और मूल शरीर का रूपान्तरण आवश्यक होता है। वे शरीर की साधना कर सकते हैं और उच्च स्तरों पर साधना प्रशस्त कर सकते हैं।

आपने उपन्यासों में युद्ध-कला के कौशल जैसे सुनहरी घण्टी कवच, लौह वस्त्र परिधान, और चिनार के वृक्ष को सौ गज की दूरी से भेदना, आदि के बारे में पढ़ा होगा। सूक्ष्म युद्ध-कला द्वारा, व्यक्ति उच्च स्थानों पर आ-जा सकता है। कुछ दूसरे आयाम में भी प्रवेश कर सकते हैं। क्या इस प्रकार की युद्ध-कला का अस्तित्व है? हाँ, निश्चित ही है। किन्तु उनका अस्तित्व साधारण लोगों के बीच नहीं है। जिन्होंने वास्तव में इतनी उत्कृष्ट युद्ध-कला की साधना की है वे इसका सार्वजनिक प्रदर्शन नहीं कर सकते। क्योंकि इस प्रकार का व्यक्ति केवल युद्ध-कला का अभ्यास नहीं करता और वह साधारण लोगों के स्तर से पूरी तरह आगे है, उसके लिए आवश्यक है कि वह आन्तरिक साधना द्वारा साधना का अभ्यास करे। उसके लिए शिनशिंग का मान रखना और उसमें सुधार करना आवश्यक है। उसे भौतिक लाभ जैसी वस्तुओं पर कम धयान देना चाहिए। हालांकि, वह इस प्रकार की युद्ध-कला की साधना कर सकता है, वह इसके बाद उन्हें सहज ही साधारण लोगों के बीच प्रयोग नहीं कर सकता। इसकी अनुमति है यदि वह उनका तब प्रयोग करे जब कोई देख न रहा हो। उन उपन्यासों को पढ़ते समय, आप पायेंगे कि पात्र किसी गुप्त तलवारबाजी दस्तावेज, खजाने, या औरतों के लिए लड़ाई और हत्या करता है। सभी को महान कौशल युक्त दर्शाया जाता है, जो रहस्यमय तरीके से आते-जाते रहते हैं। आप सब यह सोचें : वे लोग जिनके पास वास्तव में ये युद्ध-कला कौशल हैं क्या उन्हें इनको प्राप्त करने के लिए आन्तरिक साधना अभ्यास नहीं करना पड़ेगा? वे इन्हें केवल अपने शिनशिंग की साधना द्वारा प्राप्त कर सकते हैं, और यह आवश्यक है कि वे प्रसिद्धि, लाभ, और विभिन्न इच्छाओं में बहुत पहले से ही रुचि न रखते हों। वे दूसरों की हत्या कैसे कर सकते हैं? उनका धन और संपत्ति की ओर इतना ध्यान कैसे हो सकता है? यह बिल्कुल असंभव है। वे केवल कपोल कल्पनाएँ हैं। लोग केवल मनो-विनोद के पीछे जाते हैं और उस इच्छा के लिए कुछ भी करते हैं। लेखक इस बात का लाभ उठाते हैं और वह सब लिखने का प्रयास करते हैं जो आप खोज रहे हैं या आपको अच्छा लगता है। लेखन जितना अविश्वसनीय

होता है, उतना ही अधिक आप उसे पढ़ना चाहते हैं। वे केवल कपोल कल्पनाएँ हैं। वे जिनके पास वास्तव में ऐसे युद्ध-कला कौशल हैं, इस प्रकार व्यवहार नहीं करेंगे। विशेष रूप से, वे उनका सार्वजनिक प्रदर्शन नहीं करेंगे।

दिखावे की मानसिकता

साधारण लोगों के बीच साधना अभ्यास करने के कारण, हमारे बहुत से अभ्यासी अपने कई मोहभाव नहीं छोड़ पाते। कई मोहभाव स्वभाव में ही आ जाते हैं, और ये लोग स्वयं उन्हें नहीं पहचान पाते। दिखावे की यह मानसिकता किसी भी स्थिति में प्रकट हो सकती है; यह कोई अच्छा कार्य करते समय भी उभर सकती है। प्रसिद्धि, निजी लाभ, और कुछ प्रोत्साहन प्राप्त करने के लिए, कुछ लोग अक्सर अपने बारे में डींगें हाँकते हैं और दिखावा करते हैं : "मैं बहुत सक्षम और आगे रहने वाला हूँ।" हमारे पास ऐसे भी उदाहरण हैं जिसमें जो लोग दूसरों से कुछ अच्छा अभ्यास करते हैं, जिनकी दिव्य-नेत्र दृष्टि बेहतर है, या जिनके व्यायाम की मुद्राएँ बेहतर दिखती हैं वे भी दिखावा करना चाहते हैं।

यदि कोई कहता है : "मैंने गुरु ली से कुछ सुना है।" लोग इस व्यक्ति को घेर लेंगे और वह जो कहता है उसे सुनेंगे। वह सुनी हुई अफवाह बताएगा जिसमें उसने अपनी समझ भी डाल दी है। इसका क्या प्रयोजन है? यह उसके दिखावे के लिए है। कुछ ऐसे लोग हैं जो बहुत रुचि के साथ एक-दूसरे के बीच अफवाह फैलाते हैं, जैसे वे बहुत जानकार हों, और जैसे हमारे बहुत से अभ्यासी उतना न समझते या जानते हों जितना वे। मन ही मन, उनकी यह केवल दिखावे की मानसिकता है। अन्यथा, अफवाह फैलाने का क्या प्रयोजन हो सकता है? कुछ लोग गपशप करते हैं कि गुरुजी कब पर्वतों में वापस जाएँगे। मैं पर्वतों से नहीं आया हूँ। मैं पर्वतों में वापस क्यों लौटूँगा। जबकि दूसरे गपशप करते हैं कि मैंने किसी विशेष दिन किसी को कुछ बताया, और मैं उस व्यक्ति को बहुत विशेष मानता हूँ। ऐसी बातें फैलाने से क्या लाभ होगा? इससे कोई लाभ नहीं होगा। हालांकि हमने देखा है, कि यह उनका मोहभाव है- दिखावे की मानसिकता।

कुछ लोग मेरे पास मेरे हस्ताक्षर लेने आते हैं। इसका क्या प्रयोजन है? किसी के हस्ताक्षर याद रखने के लिए लेना साधारण लोगों का रिवाज है। यदि आप साधना

नहीं करते, तो मेरे हस्ताक्षर का आपको कोई उपयोग नहीं होगा। मेरी पुस्तक में प्रत्येक शब्द मेरी छवि और फालुन धारण किए है, और प्रत्येक वाक्य मेरे द्वारा बोला गया है। तब भी आप मेरा हस्ताक्षर किस लिए चाहते हैं? कुछ लोग मानते हैं : "हस्ताक्षर होने से, गुरुजी के संदेश मेरी रक्षा करेंगे।" वे संदेश जैसी वस्तुओं पर अब भी विश्वास करते हैं। यह पुस्तक पहले ही अनमोल है। इसके अलावा आप और क्या खोज रहे हैं? यह सब उन मोहभावों के कारण है। साथ ही, उन शिष्यों का आचरण देखकर जो मेरे साथ यात्रा करते हैं, कुछ लोग यह सोचे बिना ही कि यह उचित है या अनुचित उनकी नकल करते हैं। वास्तव में, इससे कोई अन्तर नहीं पड़ता कि वह कौन व्यक्ति है - यहाँ केवल एक फा है। केवल इस दाफा का पालन करने से व्यक्ति सच्चे आदर्श तक पहुँच सकता है। जो लोग मेरे साथ काम करते हैं उन्हें कोई विशेष बर्ताव नहीं मिलता और वे औरों के समान ही हैं; वे केवल शोध संस्थान के कर्मचारी सदस्य हैं। उन मोहभावों को उत्पन्न न होने दें। कई बार इन मोहभावों के उत्पन्न हो जाने से, आप अनजाने ही दाफा के अपमान की भूमिका निभा सकते हैं। जो सनसनीखेज अफवाह आपने पैदा की उससे मतभेद भी हो सकते हैं या अभ्यासियों में गुरु के नजदीक आने का मोहभाव जाग सकता है जिससे वे और बातें सुन सकें, आदि। क्या यह सब समान विषय नहीं हैं?

इस दिखावे की मानसिकता से सहज ही और क्या हो सकता है? मैं दो वर्ष से अभ्यास सिखा रहा हूँ। हमारे अनुभवी फालुन दाफा अभ्यासियों में से कुछ का गोंग खुलने वाला है। कुछ निरन्तर ज्ञानप्राप्ति की अवस्था में प्रवेश करेंगे और तुरन्त ही इसे प्राप्त कर लेंगे। उनके पास ये दिव्य सिद्धियाँ पहले क्यों नहीं आईं? यह इसलिए हालांकि मैंने आपको एक बार में ही इतने ऊँचे स्तर पर उठा दिया, वैसा करने की अनुमति नहीं होती, क्योंकि आपके साधारण लोगों के मोहभाव पूरी तरह दूर नहीं हुए थे। निश्चित ही, आपके शिनशिंग में उल्लेखनीय सुधार हुआ, किन्तु बहुत से मोहभाव नहीं छूटे थे। इसलिए, वे दिव्य सिद्धियाँ आपको नहीं दी गईं। इस अवस्था के पूर्ण होने पर और आपमें स्थिरता आने पर, आपको एक साथ ही निरन्तर ज्ञानप्राप्ति की अवस्था में प्रवेश करा दिया जाएगा। निरन्तर ज्ञानप्राप्ति की अवस्था में, आपका दिव्य नेत्र एक बहुत ऊँचे स्तर पर खोला जाएगा और आप अनेक दिव्य सिद्धियाँ उत्पन्न करेंगे। वास्तव में, मैं आपको बताना चाहूँगा कि जब आप वास्तव में साधना अभ्यास करते हैं, आपने पहले से ही अनेक दिव्य सिद्धियाँ उत्पन्न कर ली होती हैं। आप पहले ही इस ऊँचे स्तर पर

पहुँच चुके हैं, इसलिए आपके पास अनेक दिव्य सिद्धियाँ हैं। यह स्थिति आपमें से अनेकों के साथ हाल ही में हुई होगी। ऐसे भी कुछ लोग हैं जो साधना में किसी ऊँचे स्तर पर नहीं पहुँच सकते। उनके पास सहनशीलता सहित जो कुछ भौतिक रूप से है, पूर्व निश्चित है। परिणामस्वरूप, कुछ लोग एक बहुत निम्न स्तर पर गोंग के खुलने या ज्ञानप्राप्त - पूर्ण ज्ञानप्राप्त होने - का अनुभव करेंगे। ऐसे लोग होंगे।

मैं इस विषय पर प्रकाश डाल रहा हूँ जिससे सब जान सकें कि यदि कोई ऐसा व्यक्ति है, आपको उसे एक उल्लेखनीय, ज्ञानप्राप्त व्यक्ति नहीं मानना चाहिए। साधना अभ्यास में यह एक बहुत गंभीर विषय है। केवल इस दाफा का अनुसरण करके आप वस्तुओं को उचित प्रकार कर सकते हैं। आपको उसका अनुसरण करना या सुनना नहीं चाहिए क्योंकि उसके पास दिव्य सिद्धियाँ, अलौकिक शक्तियाँ हैं, या क्योंकि वह कुछ वस्तुएँ देख सकता है। आप उसे हानि पहुँचाएंगे, क्योंकि उसे उत्साह का मोहभाव उत्पन्न हो जाएगा और उससे सब कुछ छिन जाएगा और वे निष्क्रिय हो जाएंगी। अन्त में, वह लड़खड़ा कर गिर जाएगा। वह जो गोंग के खुलने की अवस्था में पहुँच चुका है, वह भी गिर सकता है। यदि व्यक्ति अपना आचरण उचित नहीं रख सकता, तो वह भी गिर सकता है भले ही उसे ज्ञानप्राप्त हो चुका हो। यदि वस्तुओं का उचित धयान न रखा जाए, एक बुद्ध भी गिर सकता है, साधारण लोगों के बीच आप जैसे अभ्यासी के बारे में क्या कहा जाए! इसलिए, भले ही आपने कितनी भी दिव्य सिद्धियाँ विकसित कर ली हों, वे कितनी भी महान हों, या आपकी दिव्य शक्ति कितनी भी प्रबल हो, आपको अपना आचरण उचित रखना चाहिए। हाल ही में, हमारे बीच यहाँ एक व्यक्ति बैठा था जो एक पल में लुप्त और दूसरे पल में प्रकट हो सकता है। यह इसी प्रकार है। इससे भी महान अलौकिक शक्तियाँ विकसित होंगी। आप क्या करेंगे? हमारे अभ्यासियों या शिष्यों की भाँति, भविष्य में जब ये वस्तुएँ आपके साथ या किसी और के साथ होती हैं, आपको उनकी उपासना नहीं करनी चाहिए या इन वस्तुओं की इच्छा नहीं रखनी चाहिए। यदि एक बार भी आपका मन अनुचित होता है, यह सब समाप्त हो जाएगा, और आप गिर जाएँगे। हो सकता है आप उनसे भी अधिक ऊँचे स्तर पर हों, किन्तु केवल इतना ही है कि आपकी अलौकिक शक्तियाँ अभी उत्पन्न नहीं हुई हैं। कम से कम, इस विशिष्ट विषय पर आप गिर गए हैं। इस प्रकार, प्रत्येक को इस विषय पर विशेष ध्यान देना चाहिए। हम इसे एक अत्यन्त महत्वपूर्ण विषय मानते हैं क्योंकि यह

पहलू जल्द ही सामने आएगा। एक बार होने पर, यदि आप अपना आचरण उचित नहीं रख पाते तो इसकी अनुमति नहीं है।

एक अभ्यासी जो गोंग विकसित कर चुका है और गोंग खुलने की अवस्था में पहुँच चुका है या वास्तव में ज्ञानप्राप्त कर चुका है उसे स्वयं को कोई विशेष व्यक्ति नहीं मानना चाहिए। जो कुछ उसने देखा है वह उसके अपने स्तर तक सीमित है। उसकी साधना इस स्तर तक पहुँची है, क्योंकि उसकी ज्ञानप्राप्ति की योग्यता, शिनशिंग आदर्श और समझ इस स्तर तक पहुँचे हैं। इसलिए, जहाँ तक उच्च स्तर की वस्तुओं की बात है, हो सकता है उसे विश्वास न हो। क्योंकि वह उन पर विश्वास नहीं करता, वह सोचता है कि जो वह देखता है वह निश्चित है और केवल यही वस्तुएँ हैं। यह कहीं दूर है, क्योंकि इस व्यक्ति का स्तर केवल यहीं है।

कुछ लोगों का गोंग इसी स्तर पर खोल दिया जाएगा क्योंकि साधना अभ्यास में वे और आगे नहीं जा सकते। परिणामस्वरूप, वे केवल इसी स्तर पर गोंग के खुलने और ज्ञानप्राप्त करने का अनुभव कर सकते हैं। आपमें से जो भविष्य में साधना पूर्ण करेंगे, कुछ लघु जगत के मार्गों पर ज्ञानप्राप्ति करेंगे, कुछ विभिन्न स्तरों पर ज्ञानप्राप्ति करेंगे, और कुछ उचित फल के साथ ज्ञानप्राप्ति करेंगे। केवल उचित फल के साथ ज्ञानप्राप्त व्यक्ति अपने उच्चतम स्तरों को प्राप्त करेंगे, विभिन्न स्तरों पर वस्तुओं को देख पाएँगे और स्वयं को प्रकट कर पायेंगे। वे भी जिन्हें जगत के मार्गों पर निम्नतम स्तरों पर ज्ञानप्राप्त होगा, कुछ आयामों और कुछ ज्ञानप्राप्त व्यक्तियों को देख पायेंगे, और वे उनके साथ संपर्क भी कर पायेंगे। उस समय, आपको शिथिल नहीं पड़ना चाहिए क्योंकि निम्न स्तरों पर लघु जगत के मार्गों पर ज्ञानप्राप्ति द्वारा उचित फल प्राप्त नहीं हो सकता- यह निश्चित है। तब, इसके बारे में क्या किया जा सकता है? वह केवल इसी स्तर पर रह सकता है। किसी ऊँचे स्तर की ओर साधना करना भविष्य की बात होगी। क्योंकि उसकी साधना केवल उतनी ही आगे जा सकती है, उसके गोंग को बांधे रखने का क्या औचित्य है? यद्यपि आप इस प्रकार अपनी साधना करते रहेंगे, आपकी साधना में और विकास नहीं होगा, इसलिए आपका गोंग खोल दिया जाएगा क्योंकि आप अपनी साधना के अन्त तक पहुँच गए हैं; ऐसे बहुत से लोग होंगे। भले ही कुछ भी हो, व्यक्ति को अपना शिनशिंग उचित रखना चाहिए। केवल दाफा के साथ चलने से व्यक्ति वास्तव में उचित हो सकता है। भले ही वे आपकी दिव्य सिद्धियाँ हों या आपके गोंग

का खुलना, आप उन्हें दाफा में साधना अभ्यास द्वारा प्राप्त करते हैं। यदि आप दाफा को दूसरे स्थान पर रखते हैं और अपनी अलौकिक शक्तियों को प्राथमिक स्थान पर, या आप मानते हैं कि एक ज्ञानप्राप्त व्यक्ति की भाँति जो आप एक या दूसरे प्रकार समझते हैं उचित है, या यदि आप स्वयं को महान और दाफा से आगे मानते हैं, मैं कहूँगा कि आप का गिरना आरंभ हो गया है। यह खतरनाक होगा और आप और बुरे हो जाएँगे। उस समय, आप वास्तव में समस्या में होंगे, और आपकी साधना व्यर्थ जाएगी। यदि वस्तुओं को उचित प्रकार नहीं किया गया, आप गिर जाएंगे और साधना में असफल होंगे।

मैं आपको यह भी बताना चाहूँगा कि इस पुस्तक का विषयसार उस फा को सम्मिलित किये है जो मैंने विभिन्न कक्षाओं में सिखाया है। सभी कुछ मेरे द्वारा सिखाया गया था, और प्रत्येक वाक्य मेरे द्वारा बोला गया था। प्रत्येक शब्द मेरी टेप-रिकॉर्डिंग से लिया गया था और शब्दानुसार लिखा गया था। मेरे शिष्यों और अभ्यासियों ने टेप-रिकॉर्डिंग से सभी कुछ लिखने में मेरी मदद की। तब मैंने इसे कई बार दोहरा कर उचित किया। यह सब मेरा फा है, और जो मैंने सिखाया है वह केवल यही फा है।

---

1. *चिन ह्वे* — सोंग राजवंश के राज दरबार में एक दुष्ट दरबारी।
2. *दिंग* — मन की रिक्त किन्तु चेतन अवस्था।
3. चीनी मुहावरा कि किसी परिस्थति में गिरना सरल है किन्तु निकलना कठिन।
4. *दा-जी* — शांग राजवंश में अतिंम शासक की एक दुष्ट रखैल।

उपदेश सात

वध का विषय

वध का विषय बहुत संवेदनशील है। अभ्यासियों के लिए हमने कड़ी आवश्यकता रखी है कि वे जीवों का वध नहीं कर सकते। भले ही यह बुद्ध विचारधारा, ताओ विचारधारा, या चीमन विचारधारा का अभ्यास हो, जब तक यह एक उचित साधना अभ्यास है, इसमें वध करने की सख्त मनाही होगी - यह निश्चित है। क्योंकि किसी जीव का वध करने का परिणाम बहुत गंभीर होता है, हमें इसके बारे में विस्तार से बताने की आवश्यकता है। मूल बुद्धमत में, वध करने का संदर्भ मुख्यत: किसी मानव का जीवन लेने से था, जो सबसे गंभीर कृत्य था। बाद में बड़े जीवों, बड़े पालतू जानवरों, या अपेक्षाकृत बड़े जानवरों, सभी का वध बहुत गंभीर माना जाने लगा। साधकों के समुदाय में वध के विषय को इतनी गंभीरता से क्यों लिया जाता है? अतीत में, बुद्धमत में यह माना जाता था कि वे जीव जिनकी मृत्यु अभी नहीं होनी है, यदि उनका वध कर दिया जाता है, वे भटकती हुई आत्माएँ और बेघर प्रेत बन जाएँगे। पहले, इन लोगों की आत्माओं को भटकने से बचाने के लिए संस्कार किए जाते थे। इन संस्कारों के बिना, ये आत्माएँ भूखी और प्यासी तड़पतीं, और बहुत बुरी अवस्था में रहतीं। अतीत में बुद्धमत में इस प्रकार कहा गया था।

हम विश्वास करते हैं कि जब कोई व्यक्ति किसी दूसरे के साथ कोई बुरा कार्य करता है, उसे उसकी भरपाई के लिए बहुत सा द देना पड़ता है। यहाँ, हमारा संदर्भ किसी के द्वारा दूसरे लोगों से संबंधित वस्तुएँ हथिया लेने इत्यादि से है। किन्तु यदि किसी का जीवन अचानक ही समाप्त कर दिया जाता है, भले ही यह कोई पशु है या कोई दूसरा जीव, इससे बहुत अधिक कर्म उत्पन्न होगा। अतीत में, वध का संदर्भ मुख्यत: किसी मानव का जीवन लेने से था, जिससे बहुत अधिक कर्म उत्पन्न होता है। किन्तु दूसरे साधारण जीवों का वध करना भी कोई कम अपराध नहीं है, क्योंकि इससे भी सीधे बहुत सा कर्म उत्पन्न होता है। विशेष रूप से एक अभ्यासी के लिए, साधना अभ्यास के क्रम के दौरान विभिन्न स्तरों पर आपको कुछ कठिनाइयाँ दी जाती है। वे

सब आपके अपने कर्म से आती हैं और आपकी अपनी कठिनाइयाँ हैं, जो आपके सुधार के लिए विभिन्न स्तरों पर रखी जाती हैं। जब तक आप अपने शिनशिंग में सुधार करते हैं, आप उन्हें पार कर सकेंगे। किन्तु यदि आप अचानक ही इतना अधिक कर्म प्राप्त कर लेते हैं, तो आप इसे कैसे पार कर सकेंगे? आपके शिनशिंग स्तर के साथ, आप इसमें बिल्कुल भी सफल नहीं हो सकेंगे। यह आपको साधना अभ्यास करने में पूरी तरह असमर्थ कर सकता है।

हमने पाया है कि जब किसी व्यक्ति का जन्म होता है, इस विश्व के एक विशिष्ट क्षेत्र में उसके ही जैसे अनेक एक साथ जन्म लेते हैं। वे सब एक जैसे दिखाई देते हैं और उनके एक नाम हैं, और वे एक जैसे कार्य करते हैं। इसलिए, उन्हें उसके संपूर्ण स्वरूप का भाग भी कहा जा सकता है। इसमें यह विषय आता है, कि यदि उनमें से एक की भी अचानक मृत्यु हो जाती है (जैसे दूसरे बड़े पशुओं के जीवन में होता है) जबकि अन्य विभिन्न आयामों में उसके दूसरे जीवनों की पूर्व निर्धारित जीवन यात्रा अभी पूर्ण होनी बाकी है और उनके जीवन के अभी कई वर्ष शेष हैं, यह मृत व्यक्ति एक बेघर अवस्था में रहेगा और विश्व के अन्तरिक्ष में इधर-उधर भटकेगा। अतीत में यह कहा जाता था कि भटकती हुई आत्माएँ और बेघर प्रेत, भूख, प्यास और दूसरी कठिनाइयों से पीड़ित होते हैं। यह सत्य हो सकता है। किन्तु हमने वास्तव में इस व्यक्ति को बहुत बुरी अवस्था में पीड़ित होते हुए देखा है क्योंकि जब तक प्रत्येक आयाम में उनमें से हर कोई अपनी जीवन यात्रा पूर्ण नहीं कर लेता उसे अपनी अन्तिम अवस्था के लिए प्रतीक्षा करनी होती है। इसमें जितनी देर होती है, उतना ही अधिक वह पीड़ित होता है। जितना अधिक वह पीड़ित होता है, उसके पीड़ित होने से उतना ही अधिक कर्म वध करने वाले के शरीर में डाल दिया जाएगा। इसके बारे में सोचें : इससे आप कितना और कर्म एकत्रित कर लेंगे? दिव्य सिद्धियों से हमने यह देखा है।

हमने यह स्थिति भी देखी है : जब किसी व्यक्ति का जन्म होता है, एक विशिष्ट आयाम में उसके संपूर्ण जीवन की रूपरेखा का अस्तित्व होता है। दूसरे शब्दों में, वह अपने जीवन में कहाँ रहता है और क्या करता है यह सब इसमें सम्मिलित रहता है। उसके जीवन को किसने व्यवस्थित किया है? यह स्पष्ट रूप से एक उच्च प्राणी द्वारा किया गया है। उदाहरण के लिए, हमारे साधारण मानव समाज में, जन्म के बाद व्यक्ति एक विशिष्ट परिवार से संबंधित होता है, एक विशिष्ट विद्यालय में जाता है, और बड़ा

होने पर किसी विशिष्ट स्थान पर कार्य करता है; समाज में बहुत से संबंध व्यक्ति के पेशे द्वारा बनते हैं। अर्थात, पूरे समाज की रूपरेखा इस प्रकार व्यवस्थित कर दी गई है। किन्तु यदि इस जीवन की अचानक ही मृत्यु हो जाती है जो मूल, विशिष्ट व्यवस्था के अनुसार नहीं है, या यदि परिस्थितियों को बदल दिया जाता है, तो उच्च प्राणी विघ्न डालने वाले को क्षमा नहीं करेगा। आप सब यह सोचें : अभ्यासियों की भाँति, हम उच्च स्तरों की ओर साधना अभ्यास करना चाहते हैं। वह उच्च स्तर का प्राणी वध करने वाले को क्षमा तक नहीं करेगा। क्या आप सोचते हैं कि यह व्यक्ति अब भी साधना अभ्यास कर सकता है? कई गुरुओं का स्तर भी इतना ऊँचा नहीं होता जितना इस उच्च प्राणी का है जिसने यह व्यवस्था बनाई है। इसलिए, व्यक्ति के गुरु को भी दण्डित किया जायेगा और निम्न स्तर पर भेज दिया जाएगा। इसके बारे में सोचें : क्या यह एक साधारण विषय है? इसलिए एक बार व्यक्ति ऐसा कार्य करता है, उसके लिए साधना अभ्यास करना बहुत कठिन होगा।

फालुन दाफा अभ्यासियों के बीच, ऐसे कुछ लोग हो सकते हैं जो युद्ध के समय में लड़े होंगे। वे युद्ध व्यापक रूप से बड़े विश्वक बदलावों के कारण उत्पन्न परिस्थितियाँ थीं, और आप उस परिस्थिति में एक तत्व मात्र थे। विश्वक बदलावों के बीच मानवीय कार्यकलापों के बिना, साधारण मानव समाज में इस प्रकार की परिस्थितियाँ नहीं हो सकतीं, और न ही उन्हें विश्वक बदलाव कहा जाएगा। वे घटनाएँ बड़े बदलावों के अनुसार उत्पन्न हुईं और पूरी तरह आपकी गलती नहीं थी। जिसकी हम यहाँ चर्चा कर रहे हैं वह कर्म है जो व्यक्ति के निजी लाभ खोजने, स्वार्थ की पूर्ति करने जैसे बुरे कार्य करने पर अडिग रहने से उत्पन्न होता है या जब वह किसी प्रकार प्रभावित होता है। जब तक इसका संबंध संपूर्ण व्यापक क्षेत्र में बदलावों और समाज में बड़े बदलावों से है, यह आपकी गलती नहीं है।

वध द्वारा बहुत अधिक कर्म उत्पन्न हो सकता है। कोई सोच सकता है : "हम किसी को मार नहीं सकते, किन्तु मुझे घर में खाना बनाना होता है। यदि मैं वध न करूँ तो मेरा परिवार क्या खाएगा?" मुझे इस विशिष्ट विषय की चिन्ता नहीं है, क्योंकि मैं अभ्यासियों को फा सिखा रहा हूँ न कि साधारण लोगों को बता रहा हूँ कि वे जीवन कैसे जिएँ। जहाँ तक यह बात है कि व्यक्ति को विशिष्ट विषयों के बारे में क्या करना चाहिए, आपको दाफा के अनुसार निर्णय लेना चाहिए। आपको वैसा करना चाहिए

जैसा आपको उचित लगे। साधारण व्यक्ति वैसा करेंगे जैसा वे चाहते हैं, और यह उनका निर्णय है; सभी के लिए सच्चे रूप से साधना अभ्यास करना संभव नहीं है। एक अभ्यासी की भाँति, हालांकि, व्यक्ति को एक ऊँचे आदर्श का पालन करना चाहिए, इसलिए मैं यहाँ अभ्यासियों के लिए आवश्यकताएँ रख रहा हूँ।

मनुष्यों और पशुओं के अलावा, पौधे भी जीव हैं। किसी भी पदार्थ का जीवन दूसरे आयामों में साकार हो सकता है। जब आपका दिव्य नेत्र फा दृष्टि के स्तर तक पहुँचता है, आप पाएंगे कि चट्टानें, दीवारें, या और वस्तुएँ भी आपसे बात कर सकते हैं और आपका स्वागत कर सकते हैं। हो सकता है कोई आश्चर्य करे : "जो अनाज और सब्जियाँ हम खाते हैं वे भी जीव हैं। घर में मच्छर और मक्खियाँ भी होते हैं। हमें क्या करना चाहिए?" गर्मियों में मच्छर द्वारा काटे जाने पर बहुत तकलीफ होती है, और व्यक्ति को बिना प्रतिक्रिया किए हुए इसे काटते हुए देखना होगा। यदि कोई अपने भोजन में एक मक्खी देखे जो उसे गंदा कर देती है, वह उसे मार न सके। मैं आपको बताना चाहूँगा कि हमें अकारण ही किसी का जीवन नहीं लेना चाहिए। किन्तु न ही हमें अत्यन्त सावधान सज्जन बन जाना चाहिए, जो हमेशा छोटी-छोटी बातों पर ध्यान करता है, यहाँ तक कि चलते हुए इधर-उधर उछलता है क्योंकि उसे चिन्ता है कि वह चीटियों पर पैर न रख दे। मैं कहूँगा कि आपका जीवन बहुत तनावपूर्ण हो जाएगा। क्या यह भी एक मोहभाव नहीं है? आपके इधर-उधर उछलने से हो सकता है कि चीटियाँ न मरी हों, किन्तु आपने बहुत से जीवाणुओं को मार दिया होगा। सूक्ष्म स्तर पर और भी छोटे जीव होते हैं, जैसे कीटाणु और बैक्टीरिया; हो सकता है आपने उन पर पैर रख दिया और उनमें से कइयों को मार दिया। इस अवस्था में, हमें जीना भी बंद कर देना चाहिए। हम ऐसा व्यक्ति नहीं बनना चाहते, क्योंकि इससे साधना अभ्यास करना असंभव हो जाएगा। व्यक्ति को उदार दृष्टिकोण रखना चाहिए और उचित और सम्मानजनक तरीके से साधना करनी चाहिए।

मनुष्य होते हुए, हमें मनुष्य जीवन को बनाए रखने का अधिकार है। इसलिए, हमारे रहन-सहन का वातावरण मनुष्य जीवन की आवश्यकतानुसार होना चाहिए। हम अनजाने में किसी को हानि नहीं पहुँचा सकते या किसी का जीवन नहीं ले सकते, किन्तु हमें इन छोटी-मोटी बातों से चिन्तित नहीं होना चाहिए। उदाहरण के लिए, जो सब्जियाँ और अनाज हम उगाते हैं वे सब जीव हैं। हम किसी वस्तु को खाना या पीना केवल

इसलिए नहीं बंद कर सकते कि इसमें जीवन है, अन्यथा हम साधना अभ्यास कैसे करेंगे? व्यक्ति को इसके आगे देखना चाहिए। उदाहरण के लिए, जब आप चलते हैं, कुछ चीटियाँ या कीट आपके पैरों के नीचे आ सकते हैं और मर सकते हैं। हो सकता है उन्हें मरना था क्योंकि आपने जान-बूझ कर उन्हें नहीं मारा। कीटों और जीवाणुओं के संसार में, वातावरण सन्तुलन का विषय भी है- कोई भी प्रजाति यदि बहुत अधिक हो जाए तो यह समस्या है। इस प्रकार हमें सम्मानजनक और उचित तरीके से साधना करनी चाहिए। जब घर में मक्खियाँ और मच्छर होते हैं, हम उन्हें बाहर भगा सकते हैं या खिड़की में जाली लगा कर उन्हें बाहर रख सकते हैं। कई बार, उन्हें बाहर नहीं भगाया जा सकता, और तब यदि उन्हें मारा जाता है, तो यह उचित है। यदि उस स्थान पर जहाँ मनुष्य रहते हैं वे लोगों को काटते हैं और नुकसान पहुँचाते हैं, उन्हें अवश्य ही बाहर निकाल देना चाहिए। यदि उन्हें बाहर नहीं निकाला जा सकता, उन्हें वहाँ लोगों को काटते हुए नहीं देखा जा सकता। एक अभ्यासी होने के कारण, आपको उनसे चिन्ता नहीं है क्योंकि आप उनसे प्रभावमुक्त हैं, किन्तु आपके परिवार के सदस्य साधना अभ्यास नहीं करते और साधारण लोग संक्रामक रोगों की समस्या से चिन्तित रहते हैं।

मैं आपको एक उदाहरण देना चाहूँगा। यह शाक्यमुनि के आरम्भिक वर्षों की एक कहानी है। एक दिन शाक्यमुनि वन में स्नान के लिए जा रहे थे, और उन्होंने एक शिष्य को हौज साफ करने के लिए कहा। उनका शिष्य हौज के पास गया और उसमें सब ओर कीड़े रेंग रहे थे। यदि वह हौज की सफाई करता तो कीड़े मर जाते। शिष्य शाक्यमुनि के पास वापस आया और कहा : "हौज कीड़ों से भरा हुआ है।" शाक्यमुनि ने उसकी ओर नहीं देखा और कहा : "तुम जाओ और हौज साफ करो।" शिष्य हौज के पास वापस गया और यह नहीं समझ सका कि वह इसे कैसे साफ करे, क्योंकि ऐसा करने से कीड़े मर जाते। वह दोबारा शाक्यमुनि के पास आया और कहा : "गुरुजी, हौज कीड़ों से भरा हुआ है। यदि मैं इसे साफ करता हूँ, कीड़े मर जाएंगे।" शाक्यमुनि ने उसकी ओर देखा और कहा : "मैंने तुम्हें जो करने के लिए कहा वह है कि हौज को साफ करो।" शिष्य तुरन्त ही समझ गया, और उसने तभी जा कर हौज साफ कर दिया। यह कहानी एक नियम बताती है : हमें इसलिए स्नान करना बंद नहीं कर देना चाहिए क्योंकि वहाँ कीड़े हैं, और न ही हमें रहने के लिए कोई और स्थान खोजना चाहिए क्योंकि वहाँ मच्छर हैं। हमें न ही अपने गले को बांध लेना चाहिए और खाना या पीना

बंद कर देना चाहिए क्योंकि अनाज और सब्जियाँ दोनों जीव हैं। यह इस प्रकार नहीं होना चाहिए। हमें इस संबंध के साथ उचित निर्वाह करना चाहिए और सम्मानजनक तरीके से साधना अभ्यास करना चाहिए। जब तक हम किसी जीव को जान-बूझ कर नुकसान नहीं पहुँचाते यह उचित होगा। साथ ही, यह आवश्यक है कि लोगों के पास रहन-सहन का स्थान और वातावरण होना चाहिए, और इनकी भी देख-रेख होनी चाहिए। मनुष्यों के लिए अपने जीवन की देख-रेख करना और सामान्य प्रकार रहना आवश्यक है।

विगत में, कुछ पाखण्डी चीगोंग गुरु कहते थे : "हर महीने की पहली और पन्द्रहवीं तारीख को जीवों को मारा जा सकता है।" उनमें से कुछ यह भी कहते थे कि दो पैरों वाले जीवों को मारना ठीक है जैसे उनमें जीवन ही न हो। क्या पहली और पन्द्रहवीं तारीख में वध को जीवन लेना नहीं माना जाएगा? तो क्या यह मिट्टी खोदने जैसा है? कुछ पाखण्डी चीगोंग गुरुओं को उनके कथन और आचरण से पहचाना जा सकता है, या जो वे कहते हैं और जिसके वे पीछे होते हैं। वे सब चीगोंग गुरु जो इस प्रकार के कथन कहते हैं अक्सर प्रेत या पशु द्वारा ग्रसित होते हैं। किसी भेड़िये द्वारा ग्रसित चीगोंग गुरु को मुर्गा खाते हुए देखिए। जब यह व्यक्ति इसे निगलता है, वह हड्डियाँ तक बाहर नहीं थूकना चाहता।

वध करने से न केवल बहुत सा कर्म उत्पन्न होता है, इसका करुणा के विषय से भी संबंध है। क्या एक अभ्यासी की तरह हमारे पास करुणा नहीं होनी चाहिए? जब हमारी करुणा जागृत होगी, हम कदाचित सभी जीवित प्राणियों और हरेक व्यक्ति को दु:ख भोगते हुए पाएँगे। ऐसा होगा।

मांस खाने का विषय

मांस खाना भी बहुत संवेदनशील विषय है, किन्तु मांस खाना जीव को मारना नहीं है। हालांकि आपने इतने समय से फा को सीखा है, हमने सभी के लिए मांस खाना बंद करने की आवश्यकता नहीं रखी है। अनेक चीगोंग गुरु, जब आप उनकी कक्षाओं में जाते हैं, आपसे मांस खाना बंद करने के लिए कहते हैं। आप सोचते हैं : "मैं तुरन्त ही मांस खाना बंद करने के लिए मानसिक रूप से तैयार नहीं हूँ।" आज घर में भुना हुआ

मुर्गा या तली हुई मछली बनी होगी। हालांकि उनकी गंध बहुत अच्छी लगती है, आपको उन्हें खाने की अनुमति नहीं है। ऐसा ही धार्मिक साधना अभ्यासों में है जो व्यक्ति को मांस न खाने के लिए बाध्य करते हैं। बुद्ध पद्धति के पारम्परिक अभ्यास और ताओ पद्धति के कुछ अभ्यास भी ऐसा कहते हैं और व्यक्ति को मांस खाने से मना करते हैं। हम यहाँ आपको ऐसा करने के लिए नहीं कह रहे हैं, किन्तु हमारा भी इस विषय से संबंध है। तब, हमारे लिए क्या आवश्यक है? क्योंकि हमारा अभ्यास ऐसा है जिसमें फा अभ्यासी को परिष्कृत करता है, इसका अर्थ है कि गोंग और फा से कुछ परिस्थितियाँ उत्पन्न होंगी। अभ्यास क्रम के दौरान, विभिन्न स्तर विभिन्न परिस्थितियाँ उत्पन्न करते हैं। किसी दिन या मेरे आज के व्याख्यान के बाद, कुछ लोग इस अवस्था में प्रवेश कर सकते हैं : वे मांस नहीं खा सकते, और मांस से उन्हें उबकाई आएगी। यदि वे इसे खाते हैं, वे उल्टी करना चाहेंगे। आपको किसी के द्वारा बाध्य नहीं किया गया है, और न ही आप स्वयं को मांस न खाने के लिए बाध्य कर रहे हैं। बल्कि, यह आपके मन से आता है। इस स्तर पर पहुँचने के बाद, आप मांस नहीं खा सकेंगे, क्योंकि यह गोंग द्वारा प्रदर्शित हो रहा है। यदि आप मांस निगल लेंगे, आप वास्तव में उसे उलट देंगे।

हमारे सभी अनुभवी अभ्यासी जानते हैं कि फालुन दाफा साधना अभ्यास में यह स्थिति आती है, क्योंकि विभिन्न स्तर विभिन्न स्थितियों को दर्शाते हैं। कुछ अभ्यासियों की मांस खाने के लिए बहुत तीव्र इच्छा और बहुत अधिक मोहभाव होता है- वे अक्सर बहुत अधिक मांस खाते हैं। जबकि दूसरों को मांस से उबकाई आती है, उन्हें ऐसा नहीं लगता और वे अब भी इसे खा सकते हैं। इस मोहभाव को हटाने के लिए, क्या किया जाना चाहिए? इस व्यक्ति को मांस खाने के बाद पेट में दर्द होगा। मांस न खाने पर, उसे दर्द नहीं होगा। यह स्थिति होगी, और इसका अर्थ है कि उसे मांस नहीं खाना चाहिए। क्या इसका अर्थ है कि इसके बाद हमारी अभ्यास पद्धति का मांस से कोई संबंध नहीं होगा? यह ऐसा नहीं है। हमें इस विषय को किस प्रकार लेना चाहिए? मांस न खा पाना व्यक्ति के अपने हृदय से आता है। इसका क्या प्रयोजन है? मठों का साधना अभ्यास व्यक्ति को मांस न खाने के लिए बाध्य करता है। यह, और मांस न खा पाना जो हमारे अभ्यास में प्रदर्शित होता है, दोनों इस मांस खाने की मानव इच्छा या मोहभाव को हटाना चाहते हैं।

यदि कटोरी में मांस न हो, तो कुछ लोग खाना ही नहीं खाएँगे। यह साधारण

लोगों की इच्छा है। एक सुबह जब मैं चांगचुन के विजय पार्क के पिछले प्रवेश द्वार से गुजर रहा था, तीन लोग जोर से बोलते हुए द्वार से बाहर आए। उनमें से एक ने कहा : "यह कैसा चीगोंग है जिसका अभ्यास किया जाता है जिसमें व्यक्ति मांस तक नहीं खा सकता? मैं मांस खाना छोड़ने के स्थान पर अपने जीवन से दस वर्ष कम करना उचित समझूँगा!" यह कितनी तीव्र इच्छा है! आप सब यह सोचें : "क्या इस इच्छा को हटाना आवश्यक नहीं है? इसे अवश्य हटाना चाहिए। साधना अभ्यास के क्रम के दौरान, व्यक्ति को विभिन्न इच्छाएँ और मोहभाव छोड़ने होते हैं। साफ शब्दों में कहा जाए तो, यदि मांस खाने की इच्छा को नहीं हटाया जाता है, क्या यह एक मोहभाव नहीं होगा जिसे हटाया नहीं गया है? तो व्यक्ति साधना पूर्ण कैसे करेगा? इसलिए, जब तक यह मोहभाव है, इसे हटाना आवश्यक है। किन्तु इसका यह अर्थ नहीं है कि व्यक्ति फिर कभी मांस नहीं खाएगा। मांस खाना छोड़ना स्वयं में प्रयोजन नहीं है। प्रयोजन यह है कि आपको यह मोहभाव नहीं होने दिया जाए। यदि आप उस समय मोहभाव छोड़ सकें जब आप मांस नहीं खा सकते, हो सकता है आप बाद में दोबारा इसे खा सकें। तब मांस दुर्गन्धपूर्ण और खाने में बुरा नहीं लगेगा। उस समय, यदि आप मांस खाते हैं, तो इससे कोई अन्तर नहीं पड़ेगा।

जब आप दोबारा मांस खाते हैं, आपके मांस के लिए मोहभाव और इच्छा दोनों पहले ही छूट गए होंगे। हालांकि एक बड़ा बदलाव होगा, कि मांस अब आपको स्वादिष्ट नहीं लगेगा। यदि यह घर में बनाया जाता है, आप इसे अपने परिवार के साथ खाएँगे। यदि यह घर में नहीं बनाया जाता है, आपको इसकी कमी नहीं खलेगी। यदि आप इसे खाते हैं, यह स्वादिष्ट नहीं लगेगा। यह परिस्थिति आएगी। किन्तु साधारण लोगों के बीच साधना अभ्यास करना बहुत जटिल होता है। यदि आपके परिवार में हमेशा मांस बनता है, कुछ समय बाद यह आपको दोबारा बहुत स्वादिष्ट लगने लगेगा। इस प्रकार की स्थिति भविष्य में होगी, और यह साधना अभ्यास के पूरे क्रम के दौरान कई बार आएगी। हो सकता है कि आप दोबारा अचानक मांस न खा सकें। जब आप इसे नहीं खा सकते आपको इसे नहीं खाना चाहिए। आप इसे वास्तव में नहीं खा सकेंगे, और इसे खाने पर आप इसे उलट देंगे। जब तक आप इसे दोबारा न खा सकें प्रतीक्षा करें और प्रकृति के क्रम का अनुसरण करें। मांस खाना या न खाना स्वयं में प्रयोजन नहीं है- इसकी कुंजी है इस मोहभाव को छोड़ना।

हमारी फालुन दाफा पद्धति में व्यक्ति शीघ्र उन्नति करता है। जब तक आप अपने शिनशिंग में विकास करते रहेंगे, आप प्रत्येक स्तर पर शीघ्र आगे बढ़ेंगे। कुछ लोगों का पहले से ही मांस के लिए मोहभाव नहीं होता और उनके खाने में मांस है या नहीं वे परवाह नहीं करते। उन्हें इस मोहभाव को छोड़ने में लगभग दो सप्ताह लगेंगे। कुछ लोगों को ऐसा करने के लिए एक, दो, या तीन महीने, या शायद आधा वर्ष भी लग सकता है। कुछ बहुत अनोखी परिस्थितियों को छोड़ कर, व्यक्ति को दोबारा मांस खा सकने के लिए एक वर्ष से अधिक नहीं लगेगा। यह इसलिए क्योंकि मांस पहले से ही लोगों के लिए प्रमुख भोजन हो गया है। हालांकि, मठों के अभ्यासियों को मांस नहीं खाना चाहिए।

आइये यह बात करें कि बुद्धमत में मांस खाने के बारे में क्या माना जाता है। आरंभिक मूल बुद्धमत में मांस खाने की मनाही नहीं थी। जब शाक्यमुनि अपने शिष्यों को कठिनाइयों के बीच साधना अभ्यास करने के लिए वन में ले गए, वहाँ मांस न खाने जैसा कोई नियम नहीं था। ऐसा क्यों नहीं था? यह इसलिए क्योंकि जब शाक्यमुनि ने दो हजार पाँच सौ वर्ष पूर्व अपना धर्म सिखाया, मानव समुदाय बहुत अविकसित था। कुछ स्थानों पर खेती होती थी जबकि कुछ पर नहीं। खेती के लिए भूमि बहुत कम थी, और वन सभी ओर थे। अनाज की कमी थी और वे दुर्लभ थे। मानव अभी प्राचीन समुदाय से बाहर आए थे और मुख्यत: शिकार द्वारा जीवन-यापन करते थे; कई स्थानों पर मुख्यत: मांस ही खाया जाता था। मानव मोहभाव का अधिकतम त्याग करने के लिए, शाक्यमुनि ने अपने शिष्यों को धन, संपत्ति, आदि के संपर्क से दूर रखा था। भोजन के लिए वे अपने शिष्यों को भिक्षा मांगने ले जाते थे। उन्हें जो कुछ मिलता था वे उसे खाते थे, क्योंकि अभ्यासी होने के कारण वे मिलने वाले भोजन को चुन नहीं सकते थे, जिसमें मांस भी हो सकता था।

मूल बुद्धमत में *हन* [1] निषेध था। हन के लिए यह मनाही मूल बुद्धमत से है, किन्तु अब मांस खाना भी हन माना जाता है। वास्तव में, उस समय हन का सन्दर्भ मांस से नहीं था, बल्कि प्याज, अदरक, और लहसुन जैसी वस्तुओं से था। उन्हें हन क्यों माना जाता था? आजकल, कई भिक्षु भी इसे ठीक से नहीं समझा पाते। क्योंकि उनमें से अनेक सच्चे रूप से साधना अभ्यास नहीं करते, वे बहुत सी वस्तुओं के बारे में स्पष्ट नहीं हैं। जो शाक्यमुनि ने सिखाया उसे "शील, समाधि, प्रज्ञा" कहा जाता था। शील का

अर्थ है साधारण लोगों के सभी मोहभाव का त्याग करना। समाधि का अर्थ है कि अभ्यासी ध्यान में बैठकर और निर्विचार हो कर साधना अभ्यास करे- उसे पूरी तरह निर्विचार होना चाहिए। जो कुछ भी व्यक्ति के ध्यान और साधना को प्रभावित करता था उसे गंभीर बाधा माना जाता था। जो कोई प्याज, अदरक, या लहसुन खाता था उससे तीव्र गंध आती थी। उस समय, भिक्षु अक्सर किसी वन या गुफा में रहते थे। सात या आठ लोग एक घेरे में बैठते थे, और वे ध्यान के लिए कई घेरों में बैठते थे। यदि कोई इन वस्तुओं को खाता था, इससे बहुत दुर्गन्ध पैदा होती थी जो ध्यान में बैठे दूसरे लोगों को प्रभावित करती थी, और उनके अभ्यास में गंभीर बाधा डालती थी। इस प्रकार यह नियम बनाया गया; इस प्रकार के भोजन को हन माना गया, और इसे खाने की मनाही थी। व्यक्ति के शरीर से उत्पन्न कई सत्ताएँ ऐसी तीव्र गंध से विकर्षित हो जाती हैं। प्याज, अदरक, और लहसुन से व्यक्ति की इच्छाएँ भी जागृत हो सकती हैं। यदि व्यक्ति उन्हें बहुत अधिक खाए, उसे उनकी लत भी पड़ सकती है, इसलिए उन्हें हन माना गया था।

विगत में, साधना में बहुत ऊँचे स्तर पर पहुँचने पर और गोंग खुलने या अर्ध गोंग खुलने के अवस्था पर पहुँचने पर, कई भिक्षुओं ने जाना कि साधना अभ्यास के दौरान उन नियमों का वास्तव में अधिक महत्व नहीं है। यदि उस मोहभाव को त्याग दिया जाता है, उस पदार्थ का स्वयं कोई प्रभाव नहीं है। जो वास्तव में व्यक्ति के साथ बाधा उत्पन्न करता है वह मोहभाव है। इसलिए, संपूर्ण इतिहासकाल में ज्ञानी भिक्षुओं ने यह पाया है कि व्यक्ति मांस खाता है अथवा नहीं कोई निर्णायक विषय नहीं है। मुख्य प्रश्न यह है कि मोहभाव को छोड़ा जा सकता है या नहीं। यदि व्यक्ति को कोई मोहभाव नहीं है, तो पेट भरने के लिए कुछ भी खाना उचित है। क्योंकि मठों में साधना अभ्यास एक विशेष रूप से होता रहा है, कई लोग पहले से ही उससे अभ्यस्त हो चुके हैं। इसके अतिरिक्त, यह केवल एक नियम का सरल विषय नहीं है, बल्कि मठों की लिखित नियमावली बन चुकी है कि व्यक्ति मांस बिल्कुल नहीं खा सकता। इसलिए, लोग इस प्रकार की साधना से अभ्यस्त हो चुके हैं। आइये भिक्षु जीगोंग[2] के बारे में बात करें जिसे साहित्य ने बहुत प्रसिद्ध बना दिया था। भिक्षुओं को मांस नहीं खाना चाहिए, किन्तु उसने मांस खाया और इस प्रकार बहुत चर्चित हो गया। वास्तव में, क्योंकि उसे लिंगयिन मठ से निकाल दिया गया था, भोजन उसके लिए सहज ही एक मुख्य समस्या बन गया क्योंकि उसका जीवन-यापन दाव पर था। अपना पेट भरने के लिए, उसे जो

कुछ मिला उसने खा लिया; इससे कोई अन्तर नहीं पड़ता, जब तक वह केवल अपना पेट भरना चाहता था और उसे किसी विशेष भोजन का मोह नहीं था। साधना की उस अवस्था पर, वह इस सिद्धांत को समझ गया था। वास्तव में, जीगोंग ने मांस केवल एक या दो बार ही खाया था। यह सुन कर कि एक भिक्षु ने मांस खाया, लेखक जोश में आ जाते हैं। जितना सनसनीखेज विषय होता है, उतनी ही रुचि पढ़ने वाले लेते हैं। साहित्य जीवन पर आधारित होते हैं और फिर इसके आगे चले जाते हैं; उसे इस प्रकार प्रचारित कर दिया गया। वास्तव में, यदि इस मोहभाव को वास्तव में त्याग दिया जाता है, तो व्यक्ति अपना पेट भरने के लिए क्या खाता है इससे कोई अंतर नहीं पड़ता।

दक्षिण-पूर्वी एशिया या चीन के दक्षिणी भागों जैसे ग्वांगडोंग और ग्वांगशी[3] में, कुछ बुद्धमत को मानने वाले लोग स्वयं को बातचीत में बौद्ध नहीं कहते, जैसे यह बहुत पुराने फैशन का लगता हो। वे कहते हैं कि वे बौद्ध भोजन करते हैं और शाकाहारी हैं, इसका भावार्थ है कि वे शाकाहारी बौद्ध हैं। वे बौद्ध साधना को इतना सरल मानते हैं। केवल शाकाहारी होना व्यक्ति को बुद्ध स्तर की साधना के लिए कैसे समर्थ बना सकता है? हर कोई जानता है कि मांस खाना केवल एक मोहभाव और एक इच्छा है- यह केवल एक मोहभाव है। शाकाहारी होना केवल इस एक मोहभाव को हटाता है। व्यक्ति को अभी ईर्ष्या, प्रतिद्वन्द की मानसिकता, उत्साह का मोहभाव, दिखावे की मानसिकता, और दूसरे अनेक मोहभावों को छोड़ने की आवश्यकता है; अभी अनेक मानव मोहभाव हैं। केवल सभी मोहभावों और इच्छाओं को हटा कर व्यक्ति अपना साधना अभ्यास पूर्ण कर सकता है। केवल मांस खाने के मोह को छोड़ कर व्यक्ति कैसे बुद्ध स्तर की साधना कर सकता है? इस प्रकार का कथन अनुचित है।

भोजन के विषय में, मांस खाने के अलावा व्यक्ति को किसी और भोजन के लिए भी मोह नहीं होना चाहिए। ऐसा ही दूसरी वस्तुओं के लिए भी सत्य है। कुछ लोग कहते हैं कि वे केवल एक विशेष भोजन खाना ही पसंद करते हैं- यह भी एक इच्छा है। साधना में एक विशेष स्तर पर पहुँचने पर, अभ्यासी में यह मोहभाव नहीं होगा। निश्चित ही, हमारा फा एक बहुत ऊँचे स्तर पर सिखाया जाता है और विभिन्न स्तरों का समावेश करके सिखाया जाता है। व्यक्ति के लिए इस स्तर पर सीधे पहुँचना असंभव है। आप कहते हैं कि आप केवल वह विशेष भोजन ही खाना चाहते हैं, किन्तु जब आपकी साधना वास्तव में वहाँ पहुँच गई है जब उस मोहभाव को छोड़ देना चाहिए,

आप इसे नहीं खा सकेंगे। यदि आप इसे खाते हैं, इसका स्वाद उचित नहीं लगेगा, और इसका स्वाद कैसा भी लग सकता है। जब मैं काम पर जाता था, कार्यस्थल पर भोजनालय हमेशा घाटे में रहता था और बाद में बंद कर दिया गया। इसके बंद होने के बाद, हर कोई लंच कार्यस्थल पर लाता था। सुबह भोजन बनाना असुविधाजनक और कठिनाई भरा था। कई बार, मैं दो भाप में पके बंद और एक सोया चटनी लगा टोफू का टुकड़ा ले लेता था। वास्तव में, यह एक हल्का भोजन होना चाहिए, किन्तु इसे हर बार खाना भी उचित नहीं था, क्योंकि मोहभाव को हटाना आवश्यक था। जैसे ही मैं टोफू को दोबारा देखता, मुझे उबकाई आने लगती। जब मैंने इसे दोबारा खाने का प्रयत्न किया मैं नहीं खा सका, जिससे मुझे मोहभाव विकसित न हो। निश्चित ही, यह तभी होगा जब कोई साधना अभ्यास में किसी विशिष्ट स्तर पर पहुँच गया हो। आरम्भ में यह इस प्रकार नहीं होगा।

बुद्ध विचारधारा शराब पीने की अनुमति नहीं देता। क्या आपने कभी किसी बुद्ध को शराब के प्याले के साथ देखा है? नहीं। मैं कह चुका हूँ कि हो सकता है व्यक्ति मांस न खा सके, किन्तु साधारण लोगों के बीच साधना अभ्यास के दौरान जब वह मोहभाव को त्याग देता है, और बाद में इसे दोबारा खाता है तो समस्या नहीं है। शराब पीना छोड़ने के बाद, हालांकि, व्यक्ति को इसे दोबारा नहीं पीना चाहिए। क्या अभ्यासी के शरीर में गोंग नहीं होता? विभिन्न प्रकार के गोंग और कुछ दिव्य सिद्धियाँ आपके शरीर की सतह पर दिखाई देते हैं, और वे सभी पवित्र हैं। जैसे ही आप शराब पीते हैं, वे सभी तुरन्त आपके शरीर को छोड़ देंगे। पल भर में, आपके शरीर पर कुछ शेष नहीं रहेगा, क्योंकि वे सब उस गंध से डरते हैं। यदि आपको इसकी लत पड़ जाती है तो यह बहुत घिनौना होगा, शराब पीने से व्यक्ति अपनी सूझबूझ खो सकता है। कुछ महान ताओ साधना अभ्यासों में शराब पीने की आवश्यकता क्यों होती है? यह इसलिए क्योंकि वे व्यक्ति की मुख्य आत्मा की साधना नहीं करते, और पीने से व्यक्ति की मुख्य आत्मा अचेत हो सकती है।

कुछ लोग शराब को अपने जीवन जितना ही चाहते हैं। कुछ लोग शराब पीना पसंद करते हैं। कुछ लोगों के लिए शराब विषकारक हो चुकी है, और वे पिये बिना अपनी चावल की कटोरी तक नहीं उठा सकते- पिये बिना उनका गुजारा नहीं चलता। अभ्यासी होने के कारण, हमें इस प्रकार नहीं होना चाहिए। शराब पीने से निश्चित ही

इसकी लत पड़ जाती है। यह एक इच्छा है और व्यक्ति की लत को बढ़ाती है। आइये इसके बारे में सोचें : अभ्यासी होने के कारण, क्या हमें इस मोहभाव को छोड़ नहीं देना चाहिए? इस मोहभाव को भी हटाना आवश्यक है। कोई सोच सकता है : "यह असंभव है क्योंकि मैं ग्राहकों के मनोरंजन के लिए उत्तरदायी हूँ," या "मैं व्यापारिक संबंध बनाने के लिए उत्तरदायी हूँ। शराब पिये बिना व्यापारिक समझौता करना सरल नहीं है।" मैं कहूँगा कि यह अवश्य ही इस प्रकार नहीं है। अक्सर, व्यापारिक समझौता करते समय, विशेष रूप से विदेशियों के साथ व्यापार या समझौता करते समय, आप एक सोडा ले सकते हैं, वह खनिज जल ले सकता या सकती है, और दूसरा व्यक्ति एक बीयर ले सकता है। कोई भी आपको शराब पीने के लिए बाध्य नहीं करेगा। आप अपनी पसंद चुन सकते हैं और जितना आप चाहें पी सकते हैं। विशेष रूप से बुद्धिजीवियों के बीच, ऐसी परिस्थिति अक्सर आती है। यह अक्सर इसी प्रकार होता है।

धूम्रपान करना भी एक मोहभाव है। कुछ लोग कहते हैं कि धूम्रपान उन्हें तरो-ताजा कर सकता है, किन्तु मैं इसे स्वयं को धोखा देना और दूसरों को धोखा देना कहता हूँ। काम करने या कुछ लिखने से जब व्यक्ति थकान महसूस करता है, वह एक सिगरेट पी कर कुछ अवकाश पाना चाहता है। सिगरेट पीने के बाद, वह तरो-ताजा महसूस करता है। वास्तव में, यह सच नहीं है। यह इसलिए क्योंकि उसने कुछ अवकाश लिया है। मानव मन एक झूठी छवि और भ्रम उत्पन्न कर सकता है जो बाद में वास्तव में एक धारणा या झूठी छवि बन जाता है कि धूम्रपान से व्यक्ति तरो-ताजा होता है। यह ऐसा नहीं कर सकता, न ही इसका ऐसा प्रभाव हो सकता है। धूम्रपान से मानव शरीर को कोई लाभ नहीं होता। यदि कोई व्यक्ति लम्बे समय तक धूम्रपान करता है, शल्य-चिकित्सा के समय चिकित्सक पायेगा कि उसकी श्वास नली और फेफड़े काले पड़ गए हैं।

क्या हम अभ्यासी अपने शरीरों को शुद्ध नहीं करना चाहते? हमें अपने शरीरों को निरन्तर शुद्ध करना चाहिए और निरन्तर ऊँचे स्तरों की ओर विकास करना चाहिए। किन्तु आप अब भी उसे अपने शरीर में जमा कर रहे हैं, तो क्या आप हमसे विपरीत दिशा में नहीं जा रहे हैं? इसके अतिरिक्त, यह एक प्रबल इच्छा भी है। कुछ लोग यह जानते भी हैं कि यह अच्छा नहीं है, किन्तु वे इसे नहीं छोड़ पाते। वास्तव में, मैं आपको बताना चाहूँगा कि उनके पास स्वयं को निर्देशित करने के लिए उचित विचार नहीं होते, और उस तरह उनके लिए छोड़ना सरल नहीं होगा। एक अभ्यासी के भाँति, आप इसे

एक मोहभाव की तरह क्यों नहीं लेते जिसे छोड़ा जाना है, और देखिए यदि आप छोड़ सकते हैं। मैं सभी को सलाह देता हूँ कि यदि आप वास्तव में साधना अभ्यास करना चाहते हैं आपको अब से धूम्रपान छोड़ देना चाहिए, और यह निश्चित है कि आप छोड़ सकते हैं। इस कक्षा के क्षेत्र में, कोई भी सिगरेट पीने के बारे में नहीं सोचता। यदि आप छोड़ना चाहते हैं, तो यह निश्चित है कि आप यह कर सकते हैं। जब आप दोबारा सिगरेट पियेंगे, इसका स्वाद उचित नहीं होगा। यदि आप पुस्तक में इस व्याख्यान को पढ़ते हैं, इसका भी यह प्रभाव होगा। निश्चित ही, यदि आप साधना अभ्यास नहीं करना चाहते, हम इसकी देख-रेख नहीं करेंगे। मैं सोचता हूँ कि एक अभ्यासी की भाँति, आपको इसे छोड़ देना चाहिए। मैने एक बार यह उदाहरण दिया था : क्या आपने कभी किसी बुद्ध या ताओ को वहाँ बैठे धूम्रपान करते देखा है? यह कैसे संभव हो सकता है? एक अभ्यासी होने के कारण, आपका क्या ध्येय है? क्या आपको इसे छोड़ना नहीं चाहिए? इसलिए, मैं कह चुका हूँ कि यदि आप साधना अभ्यास करना चाहते हैं, आपको धूम्रपान छोड़ना चाहिए। यह आपके शरीर को नुकसान पहुँचाता है और साथ ही एक इच्छा भी है। यह हमारे अभ्यासियों की आवश्यकताओं से ठीक विपरीत है।

ईर्ष्या

जब मैं फा सिखाता हूँ, मैं अक्सर ईर्ष्या के विषय के बारे में बताता हूँ। ऐसा क्यों है? यह इसलिए क्योंकि चीन में ईर्ष्या बहुत प्रबल रूप से दिखाई पड़ती है। यह इतनी प्रबल है कि यह स्वाभाविक हो गई है और व्यक्ति इसे अनुभव भी नहीं कर पाता। चीनी लोगों में इतनी प्रबल ईर्ष्या क्यों होती है? इसकी अपनी जड़ें हैं। अतीत में चीनी लोग कनफ्यूशियस से बहुत प्रभावित थे, और उनका स्वभाव अन्तर्मुखी हो गया। जब वे क्रोधित होते हैं या प्रसन्न होते हैं, वे इसे उजागर नहीं करते। वे आत्म-संयम और सहनशीलता में विश्वास करते हैं। क्योंकि वे इस प्रकार अभ्यस्त हो गए हैं, हमारे पूरे देश ने ही एक अन्तर्मुखी स्वभाव विकसित कर लिया है। निश्चित ही, इसके अपने लाभ हैं, जैसे अपनी आन्तरिक शक्तियों को न दिखाना। किन्तु इसकी हानियाँ भी हैं, और इससे हानिकारक प्रभाव उत्पन्न हो सकते हैं। विशेष रूप से इस धर्म-अन्त के काल में, इसके हानिकारक रूप अधिक व्यक्त हो गए हैं और वे व्यक्ति की ईर्ष्या को गहरा करने में

बढ़ावा दे सकते हैं। यदि किसी का अच्छा समाचार सार्वजनिक किया जाता है, दूसरे लोगों को तुरन्त ही बहुत ईर्ष्या हो जाएगी। कुछ लोग अपने कार्यस्थल या कहीं और से मिले पुरस्कारों या दूसरे लाभों के बारे में बताने से घबराते हैं, जिससे यह समाचार मिलने पर और लोग जलन न महसूस करें। पश्चिमी लोग इसे "औरिएन्टल ईर्ष्या" या "एशियन ईर्ष्या" कहते हैं। संपूर्ण एशिया क्षेत्र, चीनी कनफ्यूशियस के प्रभाव के कारण लगभग इसी प्रकार है। विशेष रूप से चीन में, यह प्रबल रूप से प्रकट होती है।

यह ईर्ष्या बहुत कुछ अटल समतावाद के कारण है जो एक बार चलन में था : आखिरकार, यदि आसमान गिर पड़े, हर किसी को साथ मरना चाहिए; यदि कुछ अच्छी वस्तु है तो सभी को समान भाग मिलना चाहिए; सभी का वेतन समान रूप से बढ़ना चाहिए, भले ही बढ़त का प्रतिशत कितना भी हो। यह मानसिकता उचित जान पड़ती है, जिसमें सभी के साथ समान व्यवहार किया जाता है। वास्तव में, लोग समान कैसे हो सकते हैं? जो कार्य वे करते हैं वे भिन्न हैं, और इसी प्रकार किस सीमा तक वे अपना उत्तरदायित्व निभाते हैं भिन्न हैं। इस विश्व में एक नियम है, "हानि नहीं, तो लाभ नहीं।" लाभ प्राप्त करने के लिए, व्यक्ति को हानि उठानी आवश्यक है। साधारण लोगों के बीच यह माना जाता है कि यदि व्यक्ति इसके लिए कार्य नहीं करता तो वह इसे प्राप्त नहीं करेगा। अधिक कार्य का अर्थ है अधिक लाभ, कम कार्य का अर्थ है कम लाभ। जितने अधिक प्रयत्न व्यक्ति करता है, उतने ही अधिक लाभ का वह पात्र हो जाता है। अटल समतावाद जिसका विगत में चलन था उसके अनुसार हर कोई समान पैदा हुआ है, और यह व्यक्ति के जन्म के बाद का जीवन है जो उसे बदलता है। मैं इस वक्तव्य को बहुत अटल मानता हूँ। यदि किसी को अटल बना दिया जाए, तो यह अनुचित बन जाता है। कुछ लोग नर और कुछ मादा क्यों पैदा होते हैं? वे एक जैसे क्यों नहीं दिखाई पड़ते? लोग एक समान नहीं पैदा होते, क्योंकि कुछ बीमार पैदा होते हैं और कुछ अपंग। उच्च स्तरों से, हम देख सकते हैं कि व्यक्ति के संपूर्ण जीवन का अस्तित्व दूसरे आयाम में होता है। वे समान कैसे हो सकते हैं? सब लोग समान होना चाहते हैं। यदि कोई वस्तु किसी के जीवन का भाग नहीं है, उन्हें कैसे समान बनाया जा सकता है? लोग समान नहीं होते।

पश्चिमी लोगों का स्वभाव अपेक्षाकृत बाह्यमुखी होता है। कोई भी बता सकता है कि वे प्रसन्न हैं या क्रोधित। इसके अपने लाभ हैं, किन्तु इसकी अपनी हानियाँ भी है

और यह बंधन-हीनता के रूप में व्यक्त हो सकता है। क्योंकि दो स्वभाव मानसिकता में भिन्न हैं, कार्यों को करते समय उनसे भिन्न परिणाम प्राप्त होते हैं। यदि किसी चीनी व्यक्ति की उसके अफसर द्वारा प्रशंसा की जाती है या कुछ अच्छी वस्तुएँ दी जाती हैं, तो औरों के मन विचलित हो जाएंगे। यदि उसे बड़ा बोनस मिलता है, वह इसे चुपचाप दूसरों को बताए बिना अपनी जेब में रख लेगा। आजकल, एक मॉडल कर्मचारी बनना कठिन है। "तुम एक मॉडल कर्मचारी हो। तुम इसे कर सकते हो। तुम्हें काम के लिए सुबह जल्दी आना चाहिए और रात में घर देर से जाना चाहिए। तुम यह सारा काम कर सकते हो क्योंकि तुम इसमें अच्छे हो। हम उतने अच्छे नहीं हैं।" लोग कुटिलता और द्वेषभाव दर्शाते हैं, और इसलिए एक अच्छा व्यक्ति बनना भी सरल नहीं है।

यदि यह दूसरे देशों में होता है, यह पूरी तरह भिन्न होगा। यदि कोई अफसर पाता है कि उसके कर्मचारी ने आज अच्छा काम किया है, अफसर उसे और अधिक बोनस दे सकता है। वह हर्ष के साथ औरों के आगे नोट गिनेगा : "अफसर ने आज मुझे इतना धन दिया।" वह प्रसन्नता से बिना किसी परिणाम के औरों को बता सकता है। यदि यह चीन में होता है कि किसी को अतिरिक्त बोनस मिलता है, तो अफसर भी उस व्यक्ति को इसे छिपाने और दूसरों को नहीं दिखाने के लिए कहेगा। दूसरे देशों में, यदि किसी बच्चे के परीक्षा में सौ अंक आएं, वह हर्ष के साथ घर दौड़ेगा और चिल्लायेगा : "मुझे आज सौ अंक मिले! मुझे सौ अंक मिले!" बच्चा पाठशाला से घर दौड़ता हुआ जाएगा। एक पड़ोसन अपना द्वार खोलेगी और कहेगी : "हे, टॉम, अच्छा बच्चा।" दूसरा पड़ोसी अपनी खिड़की खोलेगा : "हे, जैक, अच्छा काम किया। अच्छा बच्चा।" यदि यह चीन में होता है, तो विपत्ति आ जायेगी। "मुझे सौ अंक मिले, मुझे सौ अंक मिले।" बच्चा पाठशाला से घर दौड़ कर आता है। अपना द्वार खोलने से पहले ही, एक पड़ोसी पहले से ही अपने घर में कोसना आरम्भ कर देता है : "सौ अंक प्राप्त करने में क्या बड़ी बात है? दिखावा करने वाला! किसने सौ अंक प्राप्त नहीं किए हैं?" दो मानसिकताएँ भिन्न परिणाम उत्पन्न करती हैं। इससे व्यक्ति की ईर्ष्या उभर सकती है, क्यों यदि कोई अच्छा कर रहा है, उसके बारे में प्रसन्न न महसूस करते हुए, लोगों के मन विचलित महसूस करते हैं। इससे यह समस्या उत्पन्न हो सकती है।

कुछ वर्ष पहले, अटल समतावाद प्रचलन में था, और इसने लोगों के विचारों और मूल्यों को उलझा दिया है। मैं आपको एक विशिष्ट उदाहरण देना चाहूँगा।

कार्यस्थल पर, कोई व्यक्ति सोचता है कि दूसरे उतने समर्थ नहीं हैं जितना वह। जो कुछ वह करता है, वह अच्छे प्रकार से करता है। वह स्वयं को वास्तव में श्रेष्ठ मानता है। वह अपने बारे में सोचता है : "मैं कारखाना निदेशक या प्रबंधक, या उससे भी ऊँचे पद के लिए उपयुक्त हूँ। मैं सोचता हूँ कि मैं प्रधानमन्त्री भी बन सकता हूँ।" उसका अफसर भी कहता है यह व्यक्ति वास्तव में योग्य है और कुछ भी कार्य कर सकता है। सह-कर्मचारी भी यह कहते हैं कि वह वास्तव में योग्य और गुणी है। तब भी, उसी कर्मचारी वर्ग में या उसी दफ्तर में एक दूसरा व्यक्ति हो सकता है जो कुछ भी करने में अयोग्य हो और कोई काम न जानता हो। किन्तु एक दिन उससे यह अपेक्षाकृत अयोग्य व्यक्ति प्रोन्नति पा लेता है और वह उसका निरीक्षक भी बन जाता है। उसे अपने हृदय में लगेगा कि यह अनुचित हुआ है और बहुत विचलित और ईर्ष्या से जलते हुए, वह अपने अफसर और सहकर्मचारियों से शिकायत करेगा।

मैं आपको यह नियम बता रहा हूँ जो साधारण लोग समझने में असमर्थ हैं। आप सोचते होंगे कि आप हर काम में अच्छे हैं, किन्तु आपका जीवन संपन्न नहीं है। वह व्यक्ति कोई काम नहीं जानता, किन्तु उसका जीवन संपन्न है, और वह अफसर भी बन जाएगा। भले ही साधारण लोग कुछ भी सोचें, वह केवल साधारण लोगों की सोच है। एक उच्च जीवनसत्ता के दृष्टिकोण से, मानव समुदाय का विकास, विकास के विशिष्ट नियम के अनुसार आगे बढ़ता है। इसलिए, व्यक्ति जीवन में जो करता है वह उसकी योग्यता के अनुसार व्यवस्थित नहीं होता। बुद्धमत में कर्म के प्रतिफल के नियम में विश्वास किया जाता है। व्यक्ति का जीवन उसके कर्म के अनुसार व्यवस्थित होता है। भले ही आप कितने भी योग्य हों, यदि आपके पास द नहीं है, शायद आपके पास इस जीवन में कुछ नहीं होगा। आप सोचते हैं कि दूसरा व्यक्ति कोई काम नहीं जानता, किन्तु उसके पास बहुत सा द है। वह एक उच्च पदाधिकारी बन सकता है या बहुत सा धन कमा सकता है। एक साधारण व्यक्ति इस सन्दर्भ को नहीं देख पाता और सदैव विश्वास करता है कि उसे वही करना चाहिए जिसका वह योग्य है। इसलिए वह एक टूटे हुए हृदय के साथ पूरे जीवन जूझता और प्रतिद्वन्द करता रहता है। वह बहुत विचलित और थका हुआ महसूस करता है, और हमेशा वस्तुओं को अनुचित पाता है। वह ठीक प्रकार खा या सो भी नहीं पाता, वह दु:खी और निराश महसूस करता है। जब वह वृद्ध होता है, उसका स्वास्थ्य खराब हो जाता है और वह अनेक प्रकार के रोगों से ग्रस्त हो

जाता है।

इसलिए, हमारे अभ्यासियों को और भी कम इस प्रकार होना चाहिए, क्योंकि एक अभ्यासी को प्रकृति के क्रम का पालन करना चाहिए। यदि कोई वस्तु आपकी है, आप उसे नहीं खोएंगे। यदि कोई वस्तु आपकी नहीं है, आप उसे नहीं पाएंगे भले ही आप उसके लिए संघर्ष करें। यद्यपि, यह अटल नहीं है। यदि यह उतना ही अटल होता, तो बुरे कार्य करने का विषय ही नहीं होता। दूसरे शब्दों में, कुछ अव्यवस्थित कारक होते हैं। किन्तु एक अभ्यासी होने के कारण, आप गुरु के फा शरीर की रक्षा में होते हैं। दूसरे वह नहीं ले सकते जो आपका है, भले ही वे ऐसा चाहें। हम इसलिए प्रकृति के नियम का पालन करने में विश्वास करते हैं। कई बार, आप सोचते हैं कि अमुक वस्तु आपकी होनी चाहिए, और दूसरे भी आपको कहते हैं कि यह आपकी है। वास्तव में, यह नहीं है। आप मान सकते हैं कि यह आपकी है, किन्तु अन्त में यह आपकी नहीं होती। इसके द्वारा, यह देखा जा सकता है कि आप इसे छोड़ पाते हैं अथवा नहीं। यदि आप इसे नहीं छोड़ पाते हैं, तो यह एक मोहभाव है। इस पद्धति का प्रयोग आपके निजी लाभ के मोह को छुड़ाने के लिए किया जाना चाहिए। यह विषय है। क्योंकि साधारण लोगों को इस नियम का ज्ञान नहीं होता, वे सब लाभ के लिए संघर्ष और झगड़ा करते हैं।

साधारण लोगों के बीच, ईर्ष्या अनेक रूप में दिखाई पड़ती है। यह साधकों के समुदाय में भी बहुत देखी जाती है। वहाँ विभिन्न चीगोंग पद्धतियों के बीच में कोई आदर भाव नहीं होता, जैसे "मेरी पद्धति अच्छी है" या "उसकी पद्धति अच्छी है"- दोनों अच्छे और बुरे वक्तव्य दिये जाते हैं। मेरे विचार में, ये सभी रोग उपचार और स्वास्थ्य के स्तर से संबंधित हैं। उन आपस में विरोधाभास वाली पद्धतियों में, अधिकतर बुरे प्रभाव वाले, ग्रसित करने वाले प्रेतों या पशुओं से संबंधित हैं, और वे शिनशिंग का अनादर करते हैं। हो सकता है किसी व्यक्ति ने बिना किसी दिव्य सिद्धियाँ विकसित किए हुए बीस से भी अधिक वर्षों तक चीगोंग का अभ्यास किया हो, जबकि दूसरा व्यक्ति उन्हें अभ्यास आरम्भ होने के बाद तुरन्त प्राप्त कर लेता है। इस व्यक्ति को तब यह उचित नहीं लगता : मैंने बिना किसी दिव्य सिद्धि विकसित हुए बीस वर्षों से अधिक अभ्यास किया है, और उसने उन्हें विकसित कर लिया है। उसे किस प्रकार की दिव्य सिद्धियाँ प्राप्त हुई हैं?" इस व्यक्ति को क्रोध आ जाएगा : "वह प्रेत या पशु द्वारा

ग्रसित है और उसे साधना पागलपन हुआ है!" जब कोई चीगोंग गुरु किसी कक्षा को सिखाता है, वहाँ हो सकता है कोई व्यक्ति अनादर के साथ बैठा हो : "वह किस प्रकार का चीगोंग गुरु है? वह जो कह रहा है मैं उसे सुनने में भी इच्छुक नहीं हूँ।" हो सकता है वह चींगोंग गुरु वास्तव में उतना अच्छा न बोल सके जितना कि यह व्यक्ति। किन्तु, जो वह चींगोंग गुरु बताता है वह केवल उसी अभ्यास पद्धति से संबंधित है। यह व्यक्ति सभी कुछ पढ़ता है और वह सभी चीगोंग गुरुओं की कक्षाओं में गया है और ढेर सारे प्रमाणपत्र एकत्रित किए हैं। वास्तव में, यह व्यक्ति उस चींगोंग गुरु से बहुत अधिक जानता है। किन्तु उसका क्या उपयोग है? यह सब आरोग्य और स्वास्थ्य से संबंधित है। व्यक्ति जितना अधिक इससे भरा होता है, संदेश उतने ही बुरे प्रभाव वाले और जटिल हो जाएंगे, और उसके लिए साधना अभ्यास करना और अधिक कठिन हो जाएगा- यह सब उलझ जाएगा। सच्चे साधना अभ्यास एक मार्ग पर चलने की शिक्षा देते हैं, और भटकना नहीं चाहिए। यह सच्चे अभ्यासियों के बीच भी होता है, आपस में अनादर होने और संघर्ष के मोहभाव को न छोड़ने से सरलता से ईर्ष्या हो सकती है।

मैं आपको एक कहानी सुनाना चाहूँगा। देवताओं का राज्याभिषेक[4] पुस्तक में शेन गोंगबाओ[5] जियांग जिया[6] को वृद्ध और अयोग्य मानता था। किन्तु स्वर्गदेव ने जियांग जिया को देवताओं को पद प्रदान करने के लिए कहा। शेन गोंगबाओ ने अपने हृदय में इसे अनुचित माना: "उसे देवताओं को पद प्रदान करने के लिए क्यों कहा गया है? आप देखिए कि मैं कितना समर्थ हूँ। मेरा सर कट जाने पर भी, मैं इसे अपने कंधों पर वापस लगा सकता हूँ। मुझे देवताओं को पद प्रदान करने के लिए क्यों नहीं कहा गया?" उसे इतनी ईर्ष्या थी कि वह सदैव जियांग जिया के लिए कठिनाईयाँ उत्पन्न करता रहा।

शाक्यमुनि के समय में मूल बुद्धमत में दिव्य सिद्धियों की बात की जाती थी। आजकल बुद्धमत में, कोई भी दिव्य सिद्धियों की चर्चा करने का साहस नहीं करता। यदि आप दिव्य सिद्धियों की चर्चा करते हैं, वे कहेंगे कि आपको साधना पागलपन हुआ है। "कौन सी दिव्य सिद्धियाँ?" वे उन्हें बिल्कुल नहीं पहचानते। ऐसा क्यों है? वर्तमान में, भिक्षु भी उनके बारे में नहीं जानते। शाक्यमुनि के दस मुख्य शिष्य थे, जिनमें मौद्गल्यायन[7] को उनके द्वारा दिव्य सिद्धियों में सर्वप्रथम माना गया था। शाक्यमुनि की महिला शिष्य भी थीं, जिनमें से उत्पलवर्णा[8] दिव्य सिद्धियों में सर्वप्रथम थी। यह तब भी सत्य था जब बुद्धमत को चीन में स्थापित किया गया। पूरे इतिहासकाल में, अनेक

सामर्थ्यवान भिक्षु रहे हैं। जब बोधिधर्म चीन आए, वे एक नदी को पार करने के लिए एक सरकंडे की टहनी पर सवार हुए। जैसे इतिहास विकसित हुआ, हालांकि, दिव्य सिद्धियों को नकारा जाता गया। मुख्य कारण यह है कि मठों के प्रमुख भिक्षु, प्रबंधक, या मठाधीश आवश्यक नहीं कि महान जन्मजात गुण से संपन्न रहे हों। यद्यपि वे मठाधीश या प्रमुख भिक्षु थे, ये केवल साधारण लोगों के पद हैं। वे भी अभ्यासी हैं, अन्तर इतना है कि वे पेशेवर हैं। आप घर में स्वयं साधना अभ्यास करते हैं। व्यक्ति साधना में सफल हो पाता है या नहीं यह हृदय की साधना पर निर्भर करता है। यह सभी के लिए सत्य है, और इसमें थोड़ी सी भी कमी स्वीकार्य नहीं है। किन्तु एक कनिष्ठ भिक्षु जो भोजन बनाता है, हो सकता है वह निम्न जन्मजात गुण का न हो। जितना अधिक कनिष्ठ भिक्षु दु:ख भोगता है उतना ही उसके लिए गोंग खोलना सरल होता है। जितना आरामदेह वरिष्ठ भिक्षुओं का जीवन होता है, उतना ही उनके लिए गोंग खुलने की अवस्था तक पहुँचना कठिन होता है क्योंकि इसमें कर्म के रूपांतरण का विषय है। कनिष्ठ भिक्षु सदैव बिना थके कठोर कार्य करता है। उसके लिए उसके कर्म का भुगतान करना और ज्ञानप्राप्त करना शीघ्र होता है। हो सकता है एक दिन अचानक ही वह गोंग खुलने की अवस्था में पहुँच जाए। इस गोंग के खुलने, ज्ञानप्राप्ति, या अर्ध-ज्ञानप्राप्ति के साथ उसकी अलौकिक सिद्धियाँ उत्पन्न हो जाएंगी। मठ के सभी भिक्षु उससे प्रश्न पूछने आएंगे, और सभी उसका आदर करेंगे। किन्तु मठाधीश यह सहन नहीं कर पाएगा : "मैं अब भी मठाधीश कैसे रह पाउँगा? कैसी ज्ञानप्राप्ति? उसे साधना पागलपन हुआ है। उसे यहाँ से बाहर निकालो।" मठ इस प्रकार कनिष्ठ भिक्षु को बाहर निकाल देता है। जैसे समय बीतता गया, चीनी बुद्धमत में कोई भी दिव्य सिद्धियों का उल्लेख करने का साहस नहीं कर पाता। आप जानते हैं कि जीगोंग कितना सामर्थ्यवान था। वह पेड़ के तनों को इमेइ पर्वत से उखाड़ कर एक कुएँ[9] के बाहर फेंक सकता था। किन्तु अन्त में तब भी उसे लिंगयिन मठ से निकाल दिया गया।

ईर्ष्या का विषय बहुत गम्भीर है क्योंकि इसमें यह विषय सम्मिलित है कि आप साधना पूर्ण कर सकते हैं या नहीं। यदि ईर्ष्या को समाप्त नहीं किया गया, सभी कुछ जो आपने साधना में प्राप्त किया है भंगुर हो जाएगा। यहाँ यह नियम है: यदि साधना अभ्यास के दौरान ईर्ष्या को समाप्त नहीं किया जाता है, व्यक्ति को उचित फल प्राप्त नहीं होगा- निश्चित ही नहीं होगा। हो सकता है आपने कभी सुना होगा कि बुद्ध अमिताभ ने

दिव्यलोक में कर्म के साथ जाने के बारे में बोला था। किन्तु यह ईर्ष्या को हटाये बिना नहीं होगा। यह संभव हो सकता है कि व्यक्ति कुछ अन्य कारणों में कम रह जाए और दिव्यलोक में आगे की साधना के लिए कर्म सहित चला जाए। किन्तु यह बिल्कुल असंभव है यदि ईर्ष्या को नहीं छोड़ा जाता। आज मैं अभ्यासियों को बता रहा हूँ कि आप इसके बारे में ज्ञानवर्धन किए बिना स्वयं को अंधकार में न रखें। जो ध्येय आप प्राप्त करना चाहते हैं वह है उच्च स्तरों की ओर साधना अभ्यास करना। ईर्ष्या के मोहभाव को छोड़ना आवश्यक है, इसलिए मैंने इस व्याख्यान में इस विषय को अलग से बताया है।

रोग उपचार का विषय

रोग उपचार के संबंध में, मैं आपको रोगों का उपचार करने के बारे में नहीं बता रहा हूँ। किसी भी सच्चे फालुन दाफा शिष्य को दूसरों का रोग उपचार नहीं करना चाहिए। एक बार आप रोग का उपचार करते हैं, आपके शरीर से फालुन दाफा की सभी वस्तुएँ मेरे फा-शरीर द्वारा वापस ले ली जाएंगी। इस विषय को गंभीरता से क्यों लिया जाता है? यह इसलिए क्योंकि यह परिस्थिति दाफा का अनादर करती है। इससे आपको अपने स्वास्थ्य के अलावा और भी हानि होगी। जैसे ही कुछ लोग रोग का उपचार करते हैं, उनमें इसे दोबारा करने का कौतुहल होता है। उन्हें जो कोई दिखता है उसे पकड़ कर रोग उपचार करेंगे और अपना दिखावा करेंगे। क्या यह एक मोहभाव नहीं है? यह व्यक्ति के साधना अभ्यास में गंभीर बाधा डालेगा।

अनेक पाखण्डी चीगोंग गुरु, साधारण लोगों के चीगोंग सीख कर रोगियों के उपचार की इच्छा का लाभ उठाते हैं। वे आपको ये वस्तुएँ सिखाएंगे और दावा करेंगे कि ची निष्कासित करके आप रोगों को ठीक कर सकते हैं। क्या यह एक परिहास नहीं है? आपके पास ची है, और दूसरे व्यक्ति के पास भी ची है। आप अपनी ची द्वारा उसका उपचार कैसे कर सकते हैं? हो सकता है उसकी ची आप पर प्रभावी हो जाए! इस ची या उस ची के बीच कोई बाधा नहीं होती। जब व्यक्ति उच्च स्तर की साधना में गोंग विकसित करता है, जो वह उत्पन्न करता है वह उच्च शक्ति पदार्थ है, जो वास्तव में किसी रोग को भर, रोक, या नियन्त्रित कर सकता है, किन्तु यह उसके मूल कारण को

नहीं हटा सकता। इसलिए, किसी रोग को वास्तव में ठीक करने के लिए और पूरी तरह भरने के लिए दिव्य सिद्धियाँ आवश्यक होती हैं। प्रत्येक रोग को ठीक करने के लिए एक विशिष्ट दिव्य सिद्धि होती है। जहाँ तक रोगों को ठीक करने के लिए दिव्य सिद्धियों का प्रश्न है, मैं कहूँगा कि वे एक हजार प्रकार की होती हैं, और उतने प्रकार की दिव्य सिद्धियाँ होती हैं जितने कि रोग। इन दिव्य सिद्धियों के बिना, भले ही आपका उपचार कितना भी सजावटी क्यों न हो, यह व्यर्थ होगा।

गत वर्षों में, कुछ लोगों ने साधकों के समुदाय को बहुत अव्यवस्थित कर दिया है। वे सच्चे चीगोंग गुरु जो जनता में आरोग्य और स्वास्थ्य के लिए आए थे या वे जिन्होंने आरम्भ में मार्ग प्रशस्त किया था, उनमें से किसने लोगों को रोगियों का उपचार करना सिखाया था? उन्होंने सदैव आपके रोग ठीक किए और आपको दिखाया कि साधना का अभ्यास कैसे किया जाए और कैसे स्वस्थ रहा जाए। उन्होंने आपको व्यायाम सिखाए, और तब आप स्वयं अभ्यास द्वारा अपना रोग ठीक कर सकते थे। बाद में, पाखण्डी चीगोंग गुरु जनता में आए और अव्यवस्था फैला दी। जो कोई चीगोंग द्वारा रोगियों का उपचार करना चाहता है वह ग्रसित होने के लिए प्रेत या पशु को आकर्षित करेगा- यह निश्चित ही इस प्रकार है। उस समय की परिस्थितियों में, कुछ चीगोंग गुरुओं ने रोगियों का उपचार अवश्य किया था। यह उस समय के विश्वक वातावरण के साथ सहयोग करने के लिए था। किन्तु चीगोंग कोई साधारण लोगों का कौशल नहीं है, और वह परिस्थिति हमेशा के लिए नहीं रह सकती। यह उस समय के विश्वक वातावरण में बदलाव के कारण उत्पन्न हुई थी; यह केवल उस समयावधि का उत्पाद थी। बाद में, कुछ लोगों ने दूसरों को रोग उपचार सिखाने के लिए स्वयं को विशेषज्ञ बना लिया, और इस प्रकार अव्यवस्था फैला दी। एक साधारण व्यक्ति तीन या पाँच दिनों में किसी रोग का उपचार करना कैसे सीख सकता है? कोई दावा करता है: "मैं इस या उस रोग को ठीक कर सकता हूँ" मैं आपको बताना चाहूँगा कि वे सब लोग प्रेत या पशु द्वारा ग्रसित हैं। क्या वे जानते हैं कि उनकी पीठ पीछे क्या जुड़ा है? वे प्रेत या पशु द्वारा ग्रसित हैं, किन्तु वे न तो इसे महसूस करते हैं और न ही जानते हैं। तब भी, वे बहुत अच्छा महसूस करते हैं और सोचते हैं कि वे समर्थ हैं।

सच्चे चीगोंग गुरुओं को इस ध्येय को प्राप्त करने के लिए अपनी साधना में अनेक वर्षों का परिश्रम करना आवश्यक होता है। जब आप किसी रोगी का उपचार

करते हैं, क्या आपने कभी सोचा है कि आपके पास उस व्यक्ति के कर्म को हटाने के लिए प्रबल दिव्य सिद्धियाँ हैं? क्या आपने कभी कोई सच्ची शिक्षा प्राप्त की है? आप तीन से पाँच दिनों में रोगों का उपचार करना कैसे सीख सकते हैं? आप एक साधारण व्यक्ति के हाथों से किसी रोग का उपचार कैसे कर सकते हैं? तब भी, इस प्रकार के पांखडी चीगोंग गुरु ने आपकी कमजोरियों और लोगों के मोहभावों का लाभ उठाया है। क्या आप लोगों का उपचार नहीं करना चाहते? यह व्यक्ति एक उपचार कक्षा आयोजित करेगा जो विशेष रूप से आपको कुछ उपचार पद्धतियाँ सिखाती है, जैसे ची सुई, प्रकाश दीप्त पद्धति, ची निष्कासन, ची भरना, तथाकथित एक्यूप्रेशर, और तथाकथित हाथ से दबोचने की पद्धति। इनमें अनेक प्रकार की पद्धतियाँ हैं जिनका ध्येय आपका पैसा वसूलना है।

आइए हाथ से दबोचने की पद्धति के बारे में बात करें। जो हमने देखा है वह निम्नलिखित परिस्थिति है। लोग रोगी क्यों होते हैं? व्यक्ति को रोग होने और उसके सभी अभाग्यों का मूल कारण कर्म है और काले पदार्थ का कर्म क्षेत्र है। यह एक बुरा पदार्थ है। वे दुष्ट प्राणी भी बुरे हैं, और वे सभी काले हैं। इस प्रकार, वे आ सकते हैं क्योंकि यह वातावरण उनके अनुकूल है। यह इस व्यक्ति के रोगी होने का मूलभूत कारण है; यह रोगों का प्रमुख स्रोत है। नि:संदेह, इसके दो और प्रकार हैं। एक बहुत उच्च घनत्व का अति सूक्ष्म प्राणी है जो कर्म के पुंज जैसा है। दूसरा इस प्रकार है जैसे एक पाइप द्वारा प्रवाहित किया गया हो, किन्तु यह कम ही दिखाई देता है, यह सब व्यक्ति के पूर्वजों द्वारा एकत्रित किया जाता है। ये इस प्रकार भी होते हैं।

आइए सबसे साधारण रोगों के बारे में बात करें। व्यक्ति के शरीर में कहीं कोई गिल्टी, सूजन, अस्थि रोग, आदि हो सकता है। यह इसलिए क्योंकि दूसरे आयाम में वहाँ एक प्राणी वास करता है। वह प्राणी एक बहुत गहरे आयाम में है। एक साधारण चीगोंग गुरु या एक साधारण अलौकिक सिद्धि इसका पता लगाने में असमर्थ है; वे व्यक्ति के शरीर में केवल काली ची को देख सकते हैं। यह कहना उचित है कि जहाँ कहीं काली ची होती है, वहाँ रोग होता है। किन्तु काली ची रोग का मूल कारण नहीं है। यह इसलिए क्योंकि एक गहरे आयाम में एक प्राणी है जो इस क्षेत्र को उत्पन्न करता है। इसलिए कुछ लोग काली ची को निष्कासित करने और हटाने के बारे में बात करते हैं- इसे जैसे चाहें निष्कासित करें! कुछ समय बाद ही, यह दोबारा उत्पन्न हो जाएगी,

क्योंकि कुछ प्राणी बहुत प्रबल होते हैं और जैसे ही ची निकाली जाती है वे इसे दोबारा भर सकते हैं; वे स्वयं इसे भर सकते हैं। उपचार कारगर नहीं हो पाते भले ही वे कैसे भी प्रयोग किए जाएँ।

जो अलौकिक सिद्धियों के द्वारा देखता है उसके अनुसार, जहाँ कहीं काली ची होती है, उस स्थान पर माना जाता है कि रोगग्रस्त ची है। एक चीनी दवाओं का चिकित्सक उस स्थान पर शक्ति नाड़ियों को अवरुद्ध पाएगा, क्योंकि ची और रक्त का प्रवाह नहीं हो रहा है और शक्ति नाड़ियाँ अवरुद्ध हैं। पाश्चात्य दवाओं के चिकित्सक के लिए, वह स्थान किसी फोड़े, गिल्टी, अस्थि रोग, या सूजन की दशा दिखा सकता है। जब यह इस आयाम में प्रकट होता है, यह इस रूप में होता है। जब आप उस प्राणी को हटा देते हैं, आप पाएंगे कि इस आयाम के शरीर में कुछ गलत नहीं है। भले ही यह रीढ़ की हड्डी के खिसकने का रोग है या हड्डियों के जोड़ों का, जब आप उस वस्तु को हटा देते हैं और उस क्षेत्र को साफ कर देते हैं, आप पाएंगे कि यह तुरन्त ठीक हो जाता है। आप दूसरा एक्स-रे ले सकते हैं और पाएंगे कि अस्थि रोग लुप्त हो चुका है। मूल कारण यह है कि वह प्राणी एक प्रभाव उत्पन्न कर रहा था।

कुछ लोग दावा करते हैं कि आपको हाथ से दबोचने की पद्धति सिखा कर, आप तीन या पाँच दिनों में रोगों का उपचार कर सकते हैं। अपनी दबोचने की पद्धति मुझे दिखाइए! मनुष्य सबसे निर्बल हैं जबकि वह प्राणी बहुत शक्तिशाली है। यह आपके मन को नियन्त्रित कर सकता है और सरलता से आपको इच्छानुसार भ्रमित कर सकता है। यह सरलता से आपका जीवन समाप्त कर सकता है। आप दावा करते हैं कि आप इसे पकड़ सकते हैं। आप इसे कैसे पकड़ते हैं? आप अपने साधारण व्यक्ति के हाथों द्वारा इस तक नहीं पहुँच सकते। आप वहाँ बिना निशाना लिए इसे पकड़ते हैं, और यह आपकी परवाह नहीं करेगा और आपके पीछे आप पर हँसेगा- बिना निशाने के पकड़ना इतना उपहासपूर्ण है। यदि आप वास्तव इसे छू सकें, यह तुरन्त आपके हाथों को हानि पहुँचाएगा। वह एक वास्तविक घाव होगा! मैंने पहले कुछ लोगों को देखा जिनके दोनों हाथ किसी भी परीक्षण द्वारा साधारण दिखाई देते थे। उनके शरीर और उनके दोनों हाथ रोगग्रस्त नहीं थे, किन्तु वे अपने हाथों को उठा नहीं सकते थे जो इस प्रकार लटके रहते थे। मैंने ऐसे एक रोगी को देखा है: उसका दूसरे आयाम में शरीर चोटग्रस्त था- उस स्थिति में वह वास्तव में लकवे से ग्रस्त था। यदि आपका वह शरीर

चोटग्रस्त हो जाता है, क्या आप लकवाग्रस्त नहीं हो जाएंगे? कुछ लोग मुझसे पूछते हैं : "गुरुजी, क्या मैं चीगोंग का अभ्यास कर पाऊँगा? मेरी एक शल्य चिकित्सा हुई थी," या "मेरे शरीर से कुछ निकाला गया था।" मैंने उन्हें कहा, "इससे कोई अन्तर नहीं पड़ता क्योंकि आपके दूसरे आयाम के शरीर की चिकित्सा नहीं हुई थी, और चीगोंग अभ्यास में उस शरीर पर कार्य किया जाता है।" इसलिए, मैंने अभी कहा कि जब आप इसे पकड़ना चाहते हैं, यदि आप इस तक नहीं पहुँच सकते यह आपकी परवाह नहीं करेगा। यदि आप इसे छूते हैं, यह आपके हाथ को घायल कर सकता है।

राज्य द्वारा आयोजित एक मुख्य चीगोंग कार्यक्रम को सहयोग करने के लिए, मैंने कुछ शिष्यों के साथ बीजिंग में पूर्वी स्वास्थ्य प्रदर्शनी में भाग लिया। दो प्रदर्शनियों में से दोनों में, हमारा अभ्यास सबसे उत्कृष्ट था। पहली प्रदर्शनी में, हमारे फालुन दाफा को "सितारा चीगोंग पद्धति" सम्मान दिया गया। दूसरी प्रदर्शनी में, हमारे स्थान पर इतनी भीड़ थी कि हम उसे संभाल भी नहीं पाए। दूसरे प्रदर्शनी कक्षों में अधिक लोग नहीं थे, किन्तु हमारे कक्ष में लोगों की भीड़ लगी थी। वहाँ तीन प्रतीक्षा पंक्तियाँ थीं: पहली पंक्ति उनके लिए थी जिन्होंने सुबह के उपचार के लिए सुबह के आरम्भ में रजिस्टर करा लिया था, दूसरी पंक्ति दोपहर के उपचार के लिए प्रतीक्षा कर रही थी, और तीसरी पंक्ति मेरे हस्ताक्षर लेने के लिए प्रतीक्षा कर रही थी। हम रोगों का उपचार नहीं करते। हमने यह क्यों किया? क्योंकि यह राज्य द्वारा आयोजित मुख्य कार्यक्रम को सहयोग करने के लिए था और इसकी मदद करने के लिए था, हमने इसमें भाग लिया।

मैंने अपना गोंग शिष्यों के बीच बांट दिया जो वहां मेरे साथ थे। प्रत्येक को एक भाग मिला जो सौ से भी अधिक दिव्य सिद्धियों का एक शक्तिपुंज था। मैंने उनके हाथों को गोंग से सील कर दिया था, किन्तु तब भी उनके हाथों पर इतने घाव हो गए थे कि रक्त निकलने लगा था, यह कई बार हुआ। वे प्राणी बहुत दुष्ट थे। क्या आप सोचते हैं कि आप एक साधारण व्यक्ति के हाथों द्वारा उन्हें छूने का साहस कर सकते हैं? इसके अतिरिक्त, आप इस तक नहीं पहुँच सकते। यह उस प्रकार की दिव्य सिद्धि के बिना कारगर नहीं होगा। यह इसलिए क्योंकि दूसरे आयाम में यह जान जाएगा कि आप क्या करना चाहते हैं- इससे पहले आप इसके बारे में सोचें। जब आप इसे पकड़ने का प्रयत्न करते हैं, यह पहले ही भाग चुका होगा। जैसे ही रोगी द्वार के बाहर पहुँचता है, यह तुरन्त वहाँ वापस पहुँच जाएगा, और रोग वापस आ जाएगा। इससे निपटने के लिए इस प्रकार

की दिव्य सिद्धि की आवश्यकता है जिसमें व्यक्ति हाथ बढ़ाता है और "बैम!" इसे वहाँ दबोच लेता है। इसे दबोचने के बाद, हमारे पास दूसरी दिव्य सिद्धि है जिसे एक बार "महान आत्मा-बंध पद्धति" कहा जाता था, और वह दिव्य सिद्धि और अधिक प्रबल है। यह व्यक्ति की मूल आत्मा को बाहर निकाल सकती है, और तुरन्त व्यक्ति हिल-डुल पाने में असमर्थ होगा। इस दिव्य सिद्धि का अपना विशिष्ट प्रयोजन है, और हम केवल इस वस्तु पर निशाना बना कर दबोचते हैं। हर कोई जानता है कि भले ही आप सन वूकोंग[10] को बहुत विशाल मानें, तथागत अपने हाथ के कटोरे से सन वूकोंग को ढक कर एक बहुत छोटी वस्तु में बदल सकता है। इस दिव्य सिद्धि का यह प्रभाव हो सकता है। यह प्राणी कितना ही बड़ा या छोटा क्यों न हो, यह तुरन्त ही हाथ में पकड़ लिया जाएगा और बहुत छोटा हो जाएगा।

इसके अतिरिक्त, किसी के हाथ को किसी रोगी के भौतिक शरीर में अन्दर ले जाने और कुछ बाहर निकालने की अनुमति नहीं है। इससे साधारण मानव समाज में लोगों के मन में हलचल मच जाएगी, और उसकी सख्त मनाही है। यदि यह संभव भी होता, इसे इस प्रकार नहीं किया जा सकता था। जो हाथ अन्दर ले जाया जाता है वह हाथ दूसरे आयाम में होता है। उदाहरण के लिए जब किसी को कोई हृदय रोग होता है। जब यह हाथ उस प्राणी को दबोचने के लिए हृदय की ओर जाता है, दूसरे आयाम का हाथ शरीर के अन्दर पहुँचता है, और यह तुरन्त पकड़ लिया जाता है। जैसे आपका बाहर का हाथ इसे दबोचता है, दोनों हाथ पास आते हैं और इसे दबोच लेते हैं। यह बहुत दुष्ट होता है, कई बार आपके हाथों में छटपटाता है और उन्हें छेदने का प्रयत्न करता है, और कई बार काटता है और चीखता है। हालांकि यह आपके हाथों में बहुत छोटा दिखाई पड़ता है, यदि आप इसे अपने हाथों से छोड़ दें यह बहुत बड़ा हो जाएगा। यह कुछ ऐसा नहीं है जिसे हर कोई छू सके। उस दिव्य सिद्धि के बिना, कोई इसे छू भी नहीं सकता। यह उससे बिल्कुल भिन्न है जैसा साधारण लोग सोच सकते हैं।

नि:संदेह, भविष्य में इस प्रकार के चीगोंग उपचार के अस्तित्व में रहने की अनुमति हो सकती है, जैसे यह विगत में हमेशा अस्तित्व में रहा है। किन्तु इसमें यह शर्त आवश्यक है : यह व्यक्ति एक अभ्यासी होना चाहिए। साधना अभ्यास के दौरान, इस व्यक्ति के लिए करुणाभाववश यह कुछ अच्छे लोगों के लिए करने की अनुमति है। किन्तु वह उनका कर्म पूरी तरह समाप्त नहीं कर सकता क्योंकि उसके पास समुचित

महान गुण नहीं हैं। इसलिए, कठिनाइयाँ अभी भी रहेंगी, किन्तु विशिष्ट रोग ठीक हो जाएंगे। एक साधारण चीगोंग गुरु वह व्यक्ति नहीं है जिसे साधना अभ्यास में ताओ की प्राप्ति हो गई हो। वह केवल रोगों को विलम्बित या शायद उन्हें रूपांतरित कर सकता है। हो सकता है वह उन्हें दूसरे अभाग्य में रूपांतरित कर दे, किन्तु वह स्वयं इस विलम्बन की प्रक्रिया को नहीं जानता। यदि उसके अभ्यास में सह चेतना की साधना होती है, यह उसकी सह चेतना द्वारा किया जाता है। कुछ पद्धतियों के अभ्यासी बहुत प्रसिद्ध दिखाई पड़ते हैं। कई सुप्रसिद्ध चीगोंग गुरुओं के पास गोंग नहीं होता क्योंकि उनका गोंग उनकी सह चेतनाओं के शरीरों में विकसित होता है। यानि, कुछ लोगों को साधना अभ्यास के दौरान इस प्रकार की वस्तुओं को करने की अनुमति होती है क्योंकि वे इसी स्तर पर निरन्तर बने रहते हैं। वे दस वर्षों से अधिक या कई दशकों से अभ्यास कर रहे हैं और तब भी इस स्तर से आगे नहीं जा सकते। इसलिए अपने जीवन भर वे हमेशा रोगियों को देखते हैं। क्योंकि वे इस स्तर पर रहते हैं, उन्हें यह करने की अनुमति है। फालुन दाफा शिष्यों को रोगियों का उपचार करने की सख्त मनाही है। आप यह पुस्तक किसी रोगी के लिए पढ़ सकते हैं। यदि रोगी इसे स्वीकार कर सकता है, यह रोग ठीक कर सकती है। किन्तु परिणाम प्रत्येक व्यक्ति के संचित कर्म के अनुसार भिन्न होंगे।

अस्पताल उपचार और चीगोंग उपचार

आइए अस्पताल उपचार और चीगोंग द्वारा रोग ठीक करने के बीच संबंध के बारे में बात करें। पाश्चात्य चिकित्सा के कुछ चिकित्सक चीगोंग को मान्यता नहीं देते, और आप कह सकते हैं कि उनमें से अधिकांश इसी प्रकार हैं। उनका विचार है यदि चीगोंग रोगों को ठीक कर सकता है, तब हमें अस्पतालों की क्या आवश्यकता है? "आपको हमारे अस्पतालों को हटा देना चाहिए! क्योंकि आपका चीगोंग केवल हाथ से रोगों को ठीक कर सकता है और इसमें सुईयों, दवाओं और अस्पताल में भर्ती होने की आवश्यकता नहीं होती, क्या यह अच्छा नहीं होगा कि आप हमारे अस्पताल ही हटा दें?" यह वक्तव्य न तो तर्क संगत है न विवेकपूर्ण; कुछ लोग चीगोंग के बारे में नहीं जानते। वास्तव में चीगोंग उपचार साधारण लोगों के उपचारों की भांति नहीं हो सकता, क्योंकि यह कोई साधारण लोगों का कौशल नहीं है- यह दिव्य है। इसलिए जो इतना

दिव्य है उससे साधारण मानव समाज में बड़े पैमाने पर विघ्न डालने की अनुमति कैसे हो सकती है? एक बुद्ध महा-सामर्थ्यवान होता है, और वह समस्त मानव जाति के रोग अपना एक हाथ हिला कर मिटा सकता है। वह ऐसा क्यों नहीं करता? इसके अतिरिक्त, वहाँ इतने अधिक बुद्ध हैं। वे आपका रोग ठीक करके अपनी दया क्यों नहीं दिखाते? यह इसलिए क्योंकि साधारण मानव समाज इसी प्रकार होना चाहिए। जन्म, वृद्धावस्था , रोग, और मृत्यु इसी प्रकार की परिस्थितियाँ हैं। उन सभी के कार्मिक कारण होते हैं और कर्म प्रतिफल की वजह से होते हैं। यदि आपने ऋण लिया है आपको इसे चुकाना होगा।

यदि आप किसी का रोग ठीक करते हैं, यह उस सिद्धांत की अवहेलना करने जैसा होगा, क्योंकि व्यक्ति बिना भुगतान किए बुरे कार्य कर सकेगा। यह कैसे संभव हो सकता है? साधना अभ्यास के व्यक्ति की भांति, जब आपके पास इस समस्या को पूर्ण रूप से सुलझाने का महान सामर्थ्य नहीं होता, आपको करुणाभाववश किसी रोगी को ठीक करने की अनुमति है। क्योंकि आपकी करुणा उभर आई है, आपको ऐसा करने की अनुमति है। किन्तु यदि आप इस प्रकार की समस्या को वास्तव में सुलझा सकें, इसके बड़े पैमाने पर करने की अनुमति नहीं होगी। उस अवस्था में, आप साधारण मानव समुदाय की स्थिति को गम्भीर रूप से हानि पहुँचा रहे होंगे- उसकी अनुमति नहीं है। इसलिए, साधारण लोगों के अस्पतालों को चीगोंग से प्रतिस्थापित करना बिल्कुल कारगर नहीं होगा, क्योंकि चीगोंग एक दिव्य फा है।

यदि चीन में चीगोंग अस्पतालों को स्थापित करने की अनुमति दे दी जाए और अनेक महान चीगोंग गुरु उपचार करने आ जाएं, आप क्या समझते हैं यह किस प्रकार होगा? उसकी अनुमति नहीं होगी, क्योंकि वे सब साधारण मानव समाज की स्थिति को बनाए रखते हैं। यदि चीगोंग अस्पताल, चीगोंग क्लीनिक, चीगोंग स्वास्थ्य केन्द्र, और उपचार विहार स्थापित कर दिए जाते हैं, चीगोंग गुरुओं के उपचार की प्रभावशीलता बहुत कुछ कम हो जाएगी, और उपचारों के परिणाम तुरन्त अच्छे नहीं होंगे। ऐसा क्यों है? क्योंकि वे यह साधारण लोगों के बीच करते हैं, उनका फा उतना ही ऊँचा होना चाहिए जितना कि साधारण लोगों का। उन्हें उसी स्तर पर रहना होगा जो साधारण लोगों का स्तर है। उनके उपचार की प्रभावशीलता उतनी ही होनी चाहिए जितनी एक अस्पताल की। इसलिए उनके उपचार सही कारगर नहीं होते, और उन्हें किसी रोग को

ठीक करने के लिए तथाकथित कई "उपचार सत्र" करने पड़ते हैं।

चीगोंग अस्पताल हों या न हों, यह कोई नकार नहीं सकता कि चीगोंग रोगों को ठीक कर सकता है। चीगोंग जनता में इतने समय से प्रसिद्ध रहा है। वास्तव में कई लोग अभ्यास द्वारा आरोग्य और स्वास्थ्य के ध्येय को प्राप्त कर चुके हैं। भले ही रोग चीगोंग गुरु द्वारा हटाया गया या जिस प्रकार भी इसका उपचार किया गया, इसके बाद अब यह रोग चला गया है। दूसरे शब्दों में, यह कोई नकार नहीं सकता कि चीगोंग रोगों का उपचार कर सकता है। अधिकांश लोग जो चीगोंग गुरुओं के पास जाते हैं उन्हें कठिन और जटिल रोग होते हैं जिनका अस्पताल में उपचार नहीं हो सकता। वे चीगोंग गुरुओं के पास अपना भाग्य आजमाने जाते हैं, और रोग अन्तत: ठीक हो जाते हैं। वे जिनके रोग अस्पतालों में ठीक हो सकते हैं, चीगोंग गुरुओं के पास नहीं जाएंगे। विशेष रूप से आरम्भ में, सभी लोग इस प्रकार सोचते हैं। चीगोंग इसलिए रोगों का उपचार कर सकता है, केवल इसका इस प्रकार प्रयोग नहीं किया जा सकता जैसे साधारण मानव समाज में दूसरी वस्तुएँ की जाती हैं। क्योंकि बड़े पैमाने पर विघ्न की बिल्कुल अनुमति नहीं है, इसे छोटे पैमाने पर करने या इसके प्रभावहीन और एकान्त अभ्यास बने रहने की अनुमति है। किन्तु यह पूर्ण रूप से रोग ठीक नहीं करेगा - यह भी निश्चित है। अपने रोग ठीक करने का सर्वोत्तम तरीका है स्वयं चीगोंग का अभ्यास करना।

ऐसे भी कई चीगोंग गुरु हैं जो दावा करते हैं कि अस्पताल रोगों को ठीक नहीं कर सकते, और यह कि अस्पताल उपचारों की प्रभावशीलता बस इतनी ही होती है। हम इसके बारे में क्या बोलें? नि:संदेह, इसमें कई प्रकार के कारण सम्मिलित हैं। मेरे विचार में, मुख्य कारण यह है कि मानव नैतिक आदर्श बहुत नीचे गिर गए हैं, जिससे अनेक प्रकार के विचित्र रोग पैदा हो गए हैं जो अस्पताल ठीक नहीं कर सकते। दवा लेना भी प्रभावशाली नहीं होता। बहुत सी नकली दवाइयाँ भी उपलब्ध हैं। यह सब इसलिए है क्योंकि मानव समाज का इस अवस्था तक पतन हो गया है। इसके लिए किसी को दूसरे पर दोष नहीं डालना चाहिए, क्योंकि सभी ने आग में घी डालने का काम किया है। परिणामस्वरूप, सभी को साधना अभ्यास में कठिनाइयों का सामना करना होगा।

कुछ रोगों का अस्पताल में पता नहीं लगाया जा सकता, भले ही लोग वास्तव में बीमार हों। कुछ लोगों की जांच के बाद पाया जाता है कि उन्हें वे रोग हैं जिनके नाम

नहीं है, क्योंकि उन्हें पहले कभी नहीं देखा गया। अस्पताल उन सभी को "आधुनिक रोग" कहते हैं। क्या अस्पताल रोगों को ठीक कर सकते हैं? नि:संदेह वे कर सकते हैं। यदि अस्पताल रोगों को ठीक नहीं कर पाते, लोग उनमें विश्वास क्यों करते और वहाँ उपचार के लिए क्यों जाते? अस्पताल अब भी रोगों को ठीक कर सकते हैं, किन्तु उनके उपचार के तरीके साधारण लोगों के स्तर के हैं जबकि रोग अलौकिक हैं। कुछ रोग बहुत गंभीर होते हैं, इसलिए यदि व्यक्ति को ऐसा रोग है तब अस्पतालों में आरम्भ में ही उपचार की आवश्यकता होती है। यदि यह बहुत गंभीर हो जाए तो अस्पताल मदद नहीं कर सकेंगे, क्योंकि दवा के अधिक प्रयोग से व्यक्ति में जहर भर सकता है। वर्तमान चिकित्सा उपचार उसी स्तर पर हैं जितने हमारे विज्ञान और तकनीक - वे सब साधारण लोगों के स्तर पर हैं। इस प्रकार, उनकी उपचार प्रभावशीलता केवल इतनी ही होती है। एक विषय जिसे स्पष्ट करना आवश्यक है वह यह है कि साधारण चीगोंग उपचार और अस्पताल उपचार उन कठिनाइयों को जो रोगों के मूलभूत कारण हैं, बाकी आधे जीवन या उसके भी बाद के लिए टाल देते हैं। कर्म बिल्कुल भी समाप्त नहीं होता।

आइए चीनी चिकित्सा के बारे में बात करें। चीनी चिकित्सा चीगोंग उपचार के बहुत समीप है। प्राचीन चीन में, अलौकिक सिद्धियाँ लगभग सभी चीनी चिकित्सकों के पास होती थीं, जैसे वे महान चिकित्सा वैज्ञानिक : सन सिमिओ, ह्वा तोआ, ली शजन, ब्येन च्यू[11]। उन सभी के पास अलौकिक सिद्धियाँ थीं जो सब चिकित्सा शास्त्रों में लिखित हैं। हालांकि अब इन उत्कृष्ट भागों की अक्सर आलोचना की जाती है। जो चीनी चिकित्सा ने वंशानुगत प्राप्त किया है वह केवल वे नुस्खे या खोज के अनुभव हैं। प्राचीन चीनी चिकित्सा बहुत विकसित थी, और इसके विकास का स्तर आधुनिक चिकित्सा विज्ञान से आगे था। कुछ लोग सोच सकते हैं कि आधुनिक चिकित्सा इतनी विकसित है कि इसके सी.टी.स्कैन द्वारा मानव शरीर के अन्दर देखा जा सकता है और इसमें अल्ट्रासाउंड, फोटोग्राफी और एक्स-रे हैं। हालांकि आधुनिक उपकरण बहुत विकसित हैं, मेरे विचार में यह तब भी प्राचीन चीनी चिकित्सा से निम्न हैं।

ह्वा तोआ ने त्साओ-त्साओ[12] के मस्तिष्क में एक गिल्टी देखी और वह इसकी चिकित्सा करना चाहता था। त्साओ-त्साओ ने सोचा कि ह्वा तोआ उसे मारना चाहता है, इसलिए उसने ह्वा तोआ को बंदी बना लिया। परिणामस्वरूप, ह्वा तोआ की बंदीगृह में मृत्यु हो गई। जब त्साओ-त्साओ का रोग सामने आया, उसने ह्वा तोआ को याद

किया और उसे खोजा, किन्तु ह्वा तोआ की पहले ही मृत्यु हो चुकी थी। बाद में, त्साओ-त्साओ की वास्तव में इस रोग के कारण मृत्यु हुई। ह्वा तोआ इसे क्यों जान सका? उसने इसे देखा था। यह हमारी अलौकिक सिद्धि है जो विगत के सभी चिकित्सकों के पास थी। दिव्य-नेत्र के खुल जाने के बाद, व्यक्ति एक ओर से, एक साथ मानव शरीर के चारों ओर देख सकता है। वह सामने से पीछे का भाग, बायां भाग और दायां भाग देख सकता है। वह परत दर परत देख सकता है। या इस आयाम के आगे रोग का मूलभूत कारण देख सकता है। क्या आधुनिक चिकित्सा साधन ऐसा कर सकते हैं? वे बहुत दूर हैं। इसमें एक हजार वर्ष और लगेंगे! सी.टी.स्कैन, अल्ट्रासाउंड, और एक्स-रे भी आन्तरिक मानव शरीर की जांच कर सकते हैं, किन्तु उपकरण बहुत भारी हैं, और इतनी बड़ी वस्तुएँ सुविधाजनक नहीं हैं; न ही वे बिजली के बिना कार्य करती हैं। यह दिव्य-नेत्र, हालांकि, हर कहीं जा सकता है जहाँ व्यक्ति जाता है, और इसके लिए बिजली की आवश्यकता नहीं होती। उनकी समानता कैसे की जा सकती है?

कुछ लोग बात करते हैं कि आधुनिक चिकित्सा कितनी उत्कृष्ट है। मैं कहूँगा कि यह आवश्यक नहीं है, क्योंकि प्राचीन चीनी औषधियाँ, प्रयोग करने पर, वास्तव में रोगों को ठीक करती थीं। ऐसी बहुत सी वस्तुएँ हैं जो वंशानुगत हस्तांतरित नहीं हुई हैं, किन्तु अनेक लुप्त नहीं हुई हैं और लोगों के बीच अब भी उपयोग में हैं। जब मैंने चीचीहार में एक कक्षा ली, मैंने एक व्यक्ति को देखा जो सड़क पर दुकान लगाए था और लोगों के लिए उनके दांत निकल रहा था। यह आसानी से बताया जा सकता था कि यह व्यक्ति दक्षिण से आया था, क्योंकि वह एक उत्तर-पूर्वी व्यक्ति की तरह कपड़े नहीं पहने था। जो कोई उसके पास आता था वह किसी को मना नहीं कर रहा था। जो कोई उसके पास आता वह उसका दांत निकालता, और उसके पास निकाले हुए दांतों का ढेर मौजूद था। उसका उद्देश्य दांत निकालना नहीं था, बल्कि उसकी तरल दवा को बेचना था। तरल दवा से बहुत गहन पीला धुआँ निकल रहा था। दांत निकालते समय, वह दवा की बोतल खोलता और इसे रोगी के गाल पर खराब दांत वाले भाग की ओर लगा देता। रोगी को पीली तरल दवा के धुएँ को सूँघने के लिए कहा जाता, जो बहुत कम ही खर्च होती। दवा की बोतल को बंद करके एक ओर रख दिया जाता। वह व्यक्ति अपनी जेब से एक माचिस की तीली निकालता। अपने दवा के बारे में बात करते हुए, वह खराब दांत को माचिस की तीली से धकेलता और यह बाहर निकल आता। इसमें

दर्द नहीं होता था। दांत पर केवल कुछ रक्त के छींटे होते, किन्तु रक्त नहीं निकलता था। आप सब यह सोचें : एक माचिस की तीली को यदि बलपूर्वक प्रयोग किया जाए तो यह टूट सकती है, किन्तु उसने इसे दांत निकालने के लिए केवल छूने भर से प्रयोग किया।

मैंने कहा है कि चीन में अब भी कुछ वस्तुएँ हैं जो लोगों के बीच पहले से हस्तांतरित होती आ रही हैं, जिनका सामना पाश्चात्य चिकित्सा के सटीक उपकरण नहीं कर सकते। आइए देखते हैं किसका उपचार बेहतर है। उसकी माचिस की तीली दांत निकाल सकती है। यदि पाश्चात्य चिकित्सा का चिकित्सक दांत निकालना चाहता है, चिकित्सक पहले रोगी को सुन्न करने की सुई इधर-उधर लगाएगा। सुईयाँ बंहुत दु:खदायी होती हैं, और तब तक प्रतीक्षा करनी होती है जब तक सुन्न होने का असर न हो। तब चिकित्सक एक संडासी से दांत खींचेगा। बहुत से समय और प्रयत्न के बाद, यदि चिकित्सक सावधान नहीं हो, दांत के मुहाने में इसकी जड़ टूट सकती है। तब चिकित्सक इसे खोदने के लिए एक हथौड़ी और छेदक का प्रयोग करेगा, जो रोगी को डर और चिन्ता से धड़का सकते हैं। बाद में छेदने के लिए एक सटीक यंत्र का प्रयोग किया जाएगा। कुछ लोग छेदने से इतने अधिक दर्द में होते हैं कि वे उछल ही पड़ते हैं। दांत से बहुत सा रक्त निकलेगा, और रोगी कुछ देर तक रक्त थूकता रहेगा। किसका उपचार आप कहेंगे कि बेहतर है? किसका अधिक विकसित है? हमें केवल औजारों का रूप ही नहीं देखना चाहिए, बल्कि उनकी प्रभावशीलता भी देखनी चाहिए। प्राचीन चीनी चिकित्सा बहुत विकसित थी, और वर्तमान पाश्चात्य चिकित्सा आने वाले अनेक वर्षों तक इस तक नहीं पहुँच पाएगी।

प्राचीन चीनी विज्ञान हमारे वर्तमान विज्ञान से भिन्न है जो हमने पश्चिम से सीखा है, क्योंकि इसने दूसरा मार्ग अपनाया जिससे दूसरी अवस्था सामने आ सकी। इसलिए, हम प्राचीन चीनी विज्ञान और तकनीक को हमारे वस्तुओं को समझने के वर्तमान तरीके से नहीं समझ सकते। क्योंकि प्राचीन चीनी विज्ञान सीधे मानव शरीर, जीवन और विश्व पर केन्द्रित होता था, यह इन विषयों का सीधे अध्ययन करता था, इसने एक भिन्न मार्ग अपनाया। उस समय, जब छात्र पाठशाला जाते, वे ध्यान में बैठने का अभ्यास करते और अच्छी बैठने की मुद्रा पर ध्यान देते। जब वे अपनी कूंची उठाते, वे अपना श्वास और ची नियन्त्रित करते। सभी पेशे मन को रिक्त करने और श्वास को

नियन्त्रित करने में विश्वास करते, और पूरे समाज में यही स्थिति थी।

किसी ने कहा है : "यदि हम प्राचीन चीनी विज्ञान को अपनाते तो क्या हमारे पास कार और रेलगाड़ियाँ होतीं? क्या हमारे पास आज की आधुनिकता होती?" मैं कहूँगा कि आप दूसरी परिस्थिति को इस वातावरण के दृष्टिकोण से नहीं समझ सकते। आपके विचारों में एक क्रान्ति आनी चाहिए। बिना टेलीविजन के, वे लोगों के पास उनके माथे में होते, और वे कुछ भी देख पाते जो वे चाहते। उनके पास दिव्य सिद्धियाँ भी होतीं। बिना रेलगाड़ियों और जहाजों के, लोग बैठे हुए बिना ऊँचा उठाने वाले यन्त्र का प्रयोग किए हुए हवा में उड़ सकते। इससे एक विभिन्न प्रकार का सामाजिक विकास होता, और यह आवश्यक नहीं कि यह इसी रूपरेखा में बंधा होता। पर-ग्रहियों की उड़न तश्तरियाँ आगे और पीछे अविश्वसनीय गति से यात्रा कर सकती हैं और बड़ी या छोटी हो सकती हैं। उन्होंने विकास का दूसरा तरीका अपनाया है, जो दूसरा वैज्ञानिक मार्ग है।

---

1. हन — भोजन जो बुद्धमत में निषेध है।
2. जीगोंग — दक्षिणी सोंग राजवंश में एक सुप्रसिद्ध भिक्षु (1127 ए.डी. – 1279 ए.डी.)।
3. ग्वांगडोंग और ग्वांगशी — दक्षिणी चीन के दो राज्य।
4. देवताओं का राज्याभिषेक — एक चीनी काल्पनिक साहित्य।
5. शेन गोंगबाओ — देवताओं का राज्याभिषेक में एक ईर्ष्या करने वाला पात्र।
6. जियांग जिया — देवताओं का राज्याभिषेक में एक पात्र।
7. मौद्गल्यायन — बुद्ध शाक्यमुनि के दस मुख्य पुरुष शिष्यों में से एक।
8. उत्पलवर्णा — बुद्ध शाक्यमुनि की दस मुख्य महिला शिष्यों में से एक।
9. इमेई पर्वत — यह लिंगयिन मठ से करीब एक हजार मील दूर है जहाँ कुआँ था।
10. सन वूकोंग — वानर राजा के नाम से भी जाना जाता है, चीनी काल्पनिक साहित्य पश्चिम की ओर यात्रा का एक पात्र।
11. सन सिमियो, ह्वा तोआ, ली शजन, ब्येन च्यू — इतिहास में चीनी चिकित्सा के सुप्रसिद्ध चिकित्सक।
12. त्साओ-त्साओ — तीन राज्यों में एक का शासक

उपदेश आठ

बीगू[1]

कुछ लोगों ने बीगू का विषय उठाया है। यह बीगू की घटना देखी जाती है। यह न केवल हमारे साधकों के समुदाय में होता है, बल्कि हमारे संपूर्ण मानव समुदाय के बहुत से लोगों के बीच भी देखा जाता है। कुछ लोग अनेक वर्षों तक या दस से भी अधिक वर्षों तक कुछ खाते या पीते नहीं हैं, किन्तु वे अच्छी प्रकार रहते हैं। ऐसे कुछ लोग हैं जो बीगू को किसी विशेष स्तर का सूचक कहते हैं, जबकि दूसरे इसे शरीर के शुद्धिकरण की निशानी मानते हैं। कुछ लोगों द्वारा यह एक उच्च स्तर की साधना प्रक्रिया भी कही जाती है।

वास्तव में, यह उपरोक्त में से कुछ भी नहीं है। तब यह क्या है? बीगू का अर्थ वास्तव में एक विशिष्ट वातावरण की एक विशिष्ट साधना पद्धति से है। इसका प्रयोग किस परिस्थिति में किया जाता है? प्राचीन चीन में, विशेष रूप से धर्मों की स्थापना से पहले, कई अभ्यासी मानव बस्तियों से दूर पर्वतों या गुफाओं में गुप्त रूप से अभ्यास या एकान्तवास साधना करते थे। एक बार ऐसा करने का निर्णय लेने पर, इसमें भोजन उपलब्ध कराने की समस्या आ जाती थी। यदि व्यक्ति बीगू पद्धति का प्रयोग नहीं करता, वह साधना अभ्यास कर ही नहीं पाता और वहाँ भूख और प्यास से मर जाता था। मैं चोंगचिंग[2] से वूहान तक फा सिखाने गया, और मैंने यांग्त्ज़े नदी पर पूर्व की ओर नाव की सवारी की। मैंने पर्वतों के बीच के भाग में तीन घाटियों के दोनों ओर कुछ गुफाओं को देखा; कई सुप्रसिद्ध पर्वतों में भी ये होती हैं। प्राचीनकाल में, गुफा में रस्सी की मदद से चढ़ने के बाद, अभ्यासी गुफा में अभ्यास करने के लिए रस्सी काट देता था। यदि यह व्यक्ति साधना में सफल नहीं हो पाता, वह इसके अन्दर ही मर जाता था। बिना भोजन और पानी के, यह इन विशेष परिस्थितियों में था कि वह इस विशिष्ट साधना पद्धति की मदद लेता था।

कई पद्धतियों में यह प्रक्रिया चली आ रही है, और इसलिए उनमें बीगू सम्मिलित रहता है। बहुत सी पद्धतियों में बीगू सम्मिलित नहीं होता है। आज, अधिकांश पद्धतियाँ जिन्हें सार्वजनिक किया गया है उनमें बीगू सम्मिलित नहीं होता है। हम कह चुके हैं कि व्यक्ति को एक पद्धति में एकाग्रचित होना चाहिए, और आपको वह नहीं करना चाहिए जो कुछ आप मानवीय रूप से चाहते हैं। हो सकता है आप सोचते हों कि बीगू अच्छा है और इसकी इच्छा रखें। आप इसे किसलिए चाहते हैं? कुछ लोग सोचते हैं कि यह अच्छा है और कौतुहल करते हैं, और शायद वे सोचते हैं कि उनके कौशल दिखावे के लिए अच्छे हैं। सभी प्रकार की मानसिकताओं वाले लोग होते हैं। यदि इस प्रणाली को साधना अभ्यास के लिए प्रयोग किया भी जाता है, व्यक्ति को इस भौतिक शरीर को चलाये रखने के लिए अपनी ही शक्ति व्यय करनी पड़ती है। इसलिए, इसका प्रयत्न के अनुरूप लाभ नहीं होता। आप जानते हैं कि विशेष रूप से धर्मों की स्थापना के बाद, ध्यान अवस्था में बैठने के दौरान या मठों में एकान्त साधना के दौरान व्यक्ति को भोजन और चाय उपलब्ध रही है। विशेष रूप से, हम साधना साधारण मानव समाज के बीच करते हैं। आपको इस प्रणाली को अपनाने की बिल्कुल आवश्यकता नहीं है। इसके अतिरिक्त, यदि आपकी अभ्यास पद्धति में यह सम्मिलित नहीं है, आपको इच्छानुसार अकारण कुछ नहीं करना चाहिए। यदि आप वास्तव में बीगू का अभ्यास करना चाहते हैं, आप कर सकते हैं। जहाँ तक मैं जानता हूँ अक्सर जब कोई गुरु एक उच्च स्तर का अभ्यास सिखाता है और सच्चे रूप से किसी शिष्य का मार्गदर्शन करता है, और यदि उसकी अभ्यास पद्धति में बीगू है, तो यह परिस्थिति आ सकती है। तब भी, वह इसे जनता में नहीं फैला सकता; वह शिष्य को गुप्त रूप से या एकान्तवास अभ्यास के लिए दूर ले जाता है।

आज ऐसे भी चीगोंग गुरु हैं जो बीगू सिखा रहे हैं। क्या बीगू की परिस्थिति आई? अन्ततः, असल में नहीं। इसमें कौन सफल हुआ है? मैंने कई लोगों को अस्पताल में भर्ती होते देखा है, और बहुत से लोगों का जीवन खतरे में है। तब, ऐसी परिस्थिति क्यों है? क्या बीगू का अस्तित्व नहीं होता है? हाँ, यह होता है। किन्तु, यहाँ एक पहलू है: किसी को भी अकारण साधारण मानव समाज की स्थिति को हानि पहुँचाने की अनुमति नहीं है - इसमें बाधा उत्पन्न करने की अनुमति नहीं है। कहने की आवश्यकता नहीं कि पूरे देश में कितने लोगों के खाने और पीने की जरूरत नहीं रह

जाएगी, मैं कहूँगा कि इससे वस्तुएँ बहुत सरल हो जाएंगी यदि चांगचुन क्षेत्र में लोगों को खाने ओर पीने की आवश्यकता ही न रहे! हमें खाना बनाने की चिन्ता करने की आवश्यकता ही नहीं रहेगी। किसान खेतों में इतना पसीना बहाते हैं, और अब किसी को खाने की आवश्यकता ही नहीं रहेगी। इससे वास्तव में वस्तुएँ बहुत सरल हो जाएंगी, क्योंकि लोग कुछ भी खाए बिना ही काम करेंगे। उसकी अनुमति कैसे हो सकती है? क्या वह मानव समुदाय कहलाएगा? इसकी निश्चित ही मनाही है, क्योंकि साधारण मानव समाज के साथ इतने बड़े पैमाने पर विघ्न डालने की अनुमति नहीं है।

जब कुछ चीगोंग गुरु बीगू सिखाते हैं, कई लोगों के जीवन खतरे में आ जाते हैं। कुछ लोग बीगू की इच्छा के पीछे पड़े हुए हैं, किन्तु इस मोहभाव को, साधारण लोगों के कई और मोहभावों के बीच, हटाया नहीं गया है। ऐसा व्यक्ति जब कुछ स्वादिष्ट भोजन देखता है उसके मुँह में पानी आएगा। एक बार इस इच्छा के जागृत होने पर, वह इसे नियन्त्रित नहीं कर सकता और भोजन खाने के लिए चिन्तित हो जाएगा। जब उसकी भूख जागेगी, वह खाना चाहेगा; अन्यथा उसे भूख लगेगी। हालांकि, यदि वह खाता है वह उसे उलट देगा। क्योंकि वह खा नहीं सकता, वह बहुत चिन्तित हो जाएगा और डर जाएगा। कई लोग अस्पताल में भर्ती हो जाते हैं और, वास्तव में, कई लोगों का जीवन खतरे में आ जाता है। कई लोग हैं जो मुझे खोजते हैं और ऐसी बिगड़ी हुई स्थिति को संभालने के लिए कहते हैं, और मैं यह नहीं करना चाहता। कुछ चीगोंग गुरु बिना उत्तरदायित्व के कार्य करते हैं। कोई भी उनके लिए इन समस्याओं का समाधान नहीं करना चाहता।

इसके अलावा, यदि आप बीगू के अभ्यास द्वारा समस्या से घिर जाते हैं, तो क्या यह आपके अपने हठ प्रयास द्वारा नहीं है? हम कह चुके हैं कि इन घटनाओं का अस्तित्व होता है, किन्तु वे तथाकथित "उच्च स्तर की अवस्था" या तथाकथित "विशेष प्रतिक्रियाएँ" नहीं हैं। यह केवल एक अभ्यास पद्धति है जो एक विशेष परिस्थिति में प्रयोग की जाती है, इसलिए इसे अधिक नहीं फैलाया जा सकता। बहुत से लोग बीगू के पीछे पड़े रहते हैं और इसे तथाकथित बीगू या अर्ध-बीगू में वर्गीकृत करते हैं, और इसे विभिन्न स्तरों में विभाजित करते हैं। कुछ लोग दावा करते हैं कि उन्हें केवल पानी पीने की आवश्यकता होती है, जबकि दूसरे दावा करते हैं कि उन्हें केवल फल खाने की आवश्यकता होती है। वे सब नकली बीगू हैं, और जैसे समय बीतता है,

उनका असफल होना निश्चित है। एक सच्चा अभ्यासी बिना कुछ खाए-पिए गुफा में रहेगा - वह सच्चा बीगू है।

ची को चुराना

जब ची को चुराने के बारे में बात की जाती है, कुछ लोग भय से पीले पड़ जाते हैं जैसे एक शेर का नाम ले लिया गया हो, और वे इतने भयभीत हो जाएंगे कि चीगोंग का अभ्यास भी नहीं करेंगे। साधना पागलपन, ची चुराने, आदि की घटनाओं की अफवाहों के कारण, साधकों के समाज में कई लोग चीगोंग का अभ्यास करने या चीगोंग के बारे में जानने से घबराते हैं। यदि इस प्रकार की अफवाहें नहीं होतीं, शायद और अधिक लोग चीगोंग का अभ्यास कर रहे होते। किन्तु निम्न शिनशिंग वाले ऐसे चीगोंग गुरु हैं जो विशेष रूप से इन वस्तुओं को सिखाते हैं। इससे साधकों के समाज में बहुत उलझन मची है। वास्तव में, यह उतना भयावह नहीं है जितना उन्होंने वर्णन किया है। हम कह चुके हैं कि ची केवल ची होती है, हालांकि आप इसे "मिश्रित प्राथमिक ची" और यह ची या वह ची कह सकते हैं। जब तक किसी व्यक्ति के शरीर में ची होती है, वह आरोग्य और स्वास्थ्य के स्तर पर होता है और अभी अभ्यासी नहीं बना है। जब तक उसके पास ची है, इसका अर्थ है कि उसका शरीर अभी बहुत अधिक शुद्ध नहीं हुआ है और इसलिए इसमें अब भी रोगग्रस्त ची है - यह निश्चित है। वह व्यक्ति जो ची को चुराता है, वह भी ची के स्तर पर है। हमारे अभ्यासियों के बीच, उस अशुद्ध ची को कौन चाहेगा? एक व्यक्ति जो अभ्यासी नहीं है उसके शरीर की ची बहुत कुछ अशुद्ध होती है, हालांकि यह चीगोंग अभ्यास करने से स्वच्छ हो सकती है। इसलिए रोग के स्थान पर उच्च घनत्व के काले पदार्थ का एक बहुत बड़ा पुँज दिखाई देगा। अभ्यास निरन्तर रखने पर, यदि व्यक्ति वास्तव में रोग से ठीक हो जाता है और स्वस्थ हो जाता है, उसकी ची धीरे-धीरे पीली हो जाएगी। यदि वह आगे अभ्यास नियमित रखता है, रोग वास्तव में ठीक हो जाएगा, और उसकी ची भी लुप्त हो जाएगी। वह दुग्ध श्वेत शरीर की अवस्था में प्रवेश कर जाएगा।

कहने का अर्थ है, यदि किसी के पास ची है, तो उसके पास अब भी रोग हैं। हम अभ्यासी हैं - हमें अभ्यास में ची की क्या आवश्यकता है? हमारे अपने शरीरों को

शुद्ध करने की आवश्यकता है। हमें उस अशुद्ध ची की आवश्यकता क्यों होनी चाहिए? निश्चित ही नहीं। जो ची चाहता है, अभी भी ची के स्तर पर है। ची के उस स्तर पर होने के कारण, वह अच्छी ची और बुरी ची के बीच भेद नहीं कर सकता, क्योंकि उसमें वह योग्यता नहीं है। आपके शरीर के दानत्येन की सच्ची ची उसके द्वारा नहीं हटाई जा सकती क्योंकि वह मूल ची केवल किसी उच्च स्तर की सिद्धियों वाले व्यक्ति द्वारा हटाई जा सकती है। जहाँ तक आपके शरीर की अशुद्ध ची की बात है, उसे यह चुराने दीजिए - यह कोई बड़ी बात नहीं है। अभ्यास के दौरान, यदि मैं स्वयं को ची से भरना चाहूँ, केवल इस पर एक विचार के द्वारा, जल्द ही मेरा पेट ची से भर जाएगा।

ताओ विचारधारा में खड़े हो कर करने का व्यायाम *त्येन-ज़ ज्वांग* [3] सिखाया जाता है जबकि बुद्ध विचारधारा में सर के ऊपर ची को उड़ेलना सिखाया जाता है। विश्व में ची बहुतायत में है जिससे आप स्वयं को हर रोज भर सकते हैं। लाओगोंग बिंदु और *बाई-हुइ* [4] बिंदु के खुल जाने पर, दानत्येन पर ध्यान केन्द्रित रखते हुए आप अपने हाथों द्वारा स्वयं को ची से भर सकते हैं। कुछ देर में ही आप इससे भर जाएंगे। भले ही आप कितनी भी ची से भरे हों, इसका क्या उपयोग है? जब कुछ लोगों ने ची का बहुत अभ्यास किया होता है, उनकी उंगलियाँ और शरीर इस प्रकार महसूस होते हैं जैसे सूज गये हों। जब और लोग ऐसे व्यक्ति के पास जाते हैं, उन्हें उसके चारों ओर एक प्रभाव क्षेत्र महसूस होगा : "वास्तव में, आपने बहुत अच्छा अभ्यास किया है।" मैं कहूँगा कि यह कुछ नहीं है। आपका गोंग कहाँ है? यह अब भी ची का अभ्यास है, जो गोंग का स्थान नहीं ले सकता भले ही व्यक्ति के पास कितनी भी ची क्यों न हो। ची के अभ्यास का प्रयोजन व्यक्ति के शरीर के अन्दर की ची को बाहर की अच्छी ची से प्रतिस्थापित करना है, और शरीर को शुद्ध करना है। व्यक्ति ची को किसलिए एकत्रित करता है? इस स्तर पर, बिना किसी मूलभूत बदलाव के, ची अब भी गोंग नहीं है। आपने कितनी भी ची क्यों न चुराई हो, आप अब भी ची के एक बड़े बोरे के अलावा कुछ नहीं हैं। इसका क्या उपयोग है? यह अभी उच्च शक्ति पदार्थ में रूपांतरित नहीं हुई है। इसलिए, आपको किस बात का भय होना चाहिए? यदि वह वास्तव में चाहता है तो उसे ची को चुराने दीजिए।

आप सब यह सोचें : यदि आपके शरीर में ची है, तो इसमें रोग हैं। तब, जब व्यक्ति आपकी ची चुराता है, क्या वह आपकी रोगग्रस्त ची भी नहीं चुरा रहा? वह इन

दोनों में बिल्कुल भेद नहीं कर सकता, क्योंकि जो व्यक्ति ची चाहता है वह भी ची के स्तर पर होता है और उसके पास कोई सिद्धियाँ नहीं होतीं। जिस व्यक्ति के पास गोंग होता है वह ची नहीं चाहता - यह निश्चित है। यदि आप इस पर विश्वास नहीं करते, हम एक प्रयोग कर सकते हैं। यदि कोई व्यक्ति वास्तव में आपकी ची चुराना चाहता है, आप वहाँ खड़े होकर उसे चुराने दें। आप अपना मन यहाँ अपने शरीर को विश्व की ची से भरने पर केन्द्रित करें, जबकि वह आपके पीछे आपकी ची चुरा रहा है। आप देखेंगे कि यह कितनी अच्छी स्थिति है, क्योंकि यह आपके शरीर के शुद्धिकरण को शीघ्र करने में आपकी मदद करेगी, और आपको अपने शरीर में ची भरने और निष्कासित करने की आवश्यकता नहीं रहेगी। क्योंकि उसका एक बुरा मनो-विचार है और वह दूसरों से कुछ चुराता है, हालांकि उसने जो चुराया है वह कोई अच्छी वस्तु नहीं है, उसने एक ऐसा कार्य किया है जिससे द की हानि होती है। इसलिए, वह आपको द देगा। यह एक परिपथ बन जाता है जिसमें जब वह यहाँ आपकी ची लेता है, वह वहाँ आपको द देता है। व्यक्ति जो ची को चुराता है यह नहीं जानता- यदि वह यह जानता होता, वह इसे करने का साहस नहीं करता!

वे सब लोग जो ची को चुराते हैं उनके चेहरे नीलापन लिए होते हैं, और वे सब इसी प्रकार होते हैं। कई लोग जो उद्यानों में चीगोंग अभ्यास करने जाते हैं वे रोग को दूर करने की इच्छा रखते हैं, और उनके पास सभी प्रकार के रोग होते हैं। जब कोई व्यक्ति किसी रोग को ठीक कर रहा होता है, उसे रोगग्रस्त ची को निष्कासित करना चाहिए। किन्तु जो व्यक्ति ची को चुराता है वह ची को निष्कासित नहीं करेगा और वह अपने पूरे शरीर पर सभी प्रकार की रोगग्रस्त ची को एकत्रित कर लेगा। यहाँ तक कि उसका आन्तरिक शरीर भी बहुत काला पड़ जाता है। क्योंकि वह हमेशा द की हानि करता रहता है, उसका रूपरंग काला पड़ जाता है। कर्म का बहुत अधिक क्षेत्र होने के कारण और द की अत्यधिक हानि होने के कारण, वह अन्दर-बाहर से काला पड़ जाएगा। व्यक्ति जो ची को चुराता है यदि वह स्वयं इस बदलाव को अनुभव कर सके और जान सके कि वह इस मूर्खतापूर्ण कार्य से दूसरों को द दे रहा है, वह ऐसा बिल्कुल नहीं करेगा।

कुछ लोगों ने ची को बहुत अधिक चर्चित कर दिया है : "यदि आप अमेरिका में हैं, आप वह ची ग्रहण कर सकते हैं जो मैं निष्कासित करता हूँ।" "आप दीवार के

दूसरी ओर प्रतीक्षा कर सकते हैं, और आप ची प्राप्त करेंगे जो मैं निष्कासित करूँगा।" कुछ लोग बहुत संवेदनशील होते हैं और जब ची निष्कासित की जाती है वे इसे महसूस कर सकते हैं। किन्तु ची इस आयाम में भ्रमण नहीं करती। यह दूसरे आयाम में गति करती है जहाँ ऐसी कोई दीवार नहीं है। जब कोई चीगोंग गुरु एक खुले क्षेत्र में ची निष्कासित करता है आप कुछ महसूस क्यों नहीं करते? वहाँ दूसरे आयाम में एक विभाजन है। इस प्रकार, ची की इतनी भेदन शक्ति नहीं होती जितना लोगों ने वर्णन किया है।

जो वास्तव में प्रभावशाली होता है वह गोंग है। जब कोई अभ्यासी गोंग निष्कासित कर सकता है, उसके पास कोई ची नहीं होती और वह उच्च शक्ति पदार्थ छोड़ सकता है, जो दिव्य नेत्र के द्वारा प्रकाश के रूप में दिखाई पड़ता है। जब यह दूसरे व्यक्ति के पास पहुँचता है, यह उस व्यक्ति को गरमाहट महसूस कराता है; यह एक साधारण व्यक्ति में ठहराव ला सकता है। हालांकि, यह अब भी पूरी तरह रोगों को ठीक करने का ध्येय प्राप्त नहीं कर सकता, क्योंकि इसका केवल एक ठहराव लाने का प्रभाव होता है। रोगों को पूरी तरह ठीक करने के लिए, दिव्य सिद्धियाँ आवश्यक हैं। प्रत्येक रोग के लिए एक विशिष्ट दिव्य सिद्धि होती है। अत्यन्त सूक्ष्म स्तर पर, गोंग का प्रत्येक सूक्ष्म कण आपकी अपनी छवि धारण कर लेता है। यह लोगों को पहचान सकता है और प्रज्ञावान होता है, क्योंकि यह उच्च शक्ति पदार्थ है। यदि कोई इसे चुरा ले, यह वहाँ कैसे रह सकता है? यह वहाँ नहीं रूकेगा और इसे वहाँ नहीं रखा जा सकता, क्योंकि यह उस व्यक्ति की अपनी संपत्ति नहीं है। जहाँ तक उन सच्चे अभ्यासियों की बात है, उनके गोंग विकसित करने के बाद उनकी देखभाल उनके गुरुओं द्वारा की जाती है। आपका गुरु देख रहा है आप क्या करते हैं। जब आप दूसरे व्यक्ति से वस्तुएँ लेने का प्रयत्न करते हैं, उस व्यक्ति का गुरु इसे नहीं होने देगा।

ची एकत्रित करना

उच्च स्तरों पर साधना अभ्यास सिखाने में, ची चुराने और ची एकत्रित करने के विषय ऐसे नहीं हैं जिन्हें हम सभी के लिए सुलझाने में मदद करेंगे। यह इसलिए क्योंकि मुझे अभी भी साधना अभ्यासों की प्रसिद्धि बनाए रखने और कुछ अच्छे कार्य

करने की इच्छा है। मैं इस प्रकार की बुरी घटनाओं को उजागर करूँगा, जिनके बारे में विगत में किसी ने नहीं बताया। मैं आप सब को यह जानने देना चाहता हूँ जिससे कुछ लोग हर समय बुरे कार्य न करें। कुछ लोग जो चीगोंग की सच्चाई नहीं जानते हैं इसके बारे में बात करने से हमेशा घबराते हैं।

विश्व में ची बहुतायत में है। कुछ लोग आकाशिक यैंग ची और भूमि की यिन ची के बारे में बात करते हैं। क्योंकि आप भी विश्व के एक तत्व हैं, आप आगे बढ़ कर ची एकत्रित कर सकते हैं। किन्तु कुछ लोग विश्व से ची एकत्रित नहीं करते। वे लोगों को पौधों से ची एकत्रित करना सिखाने में विशेषज्ञ होते हैं। उन्होंने अपने अनुभव भी संक्षेप में लिखे हैं : इस ची को कैसे और कब एकत्रित करें, चिनार वृक्ष की ची सफेद होती है, या चीड़ वृक्ष की ची पीली होती है। कोई यह भी दावा करता है : "हमारे घर के सामने एक वृक्ष था। क्योंकि मैंने इसकी ची एकत्रित कर ली यह मर गया।" यह किस प्रकार की योग्यता है? क्या यह एक बुरा कार्य नहीं है? यह सब जानते हैं कि जब हम वास्तव में साधना अभ्यास करते हैं, हम अच्छे संदेश चाहते हैं और विश्व की प्रकृति से आत्मसात होना चाहते हैं। क्या आपको करुणा का अभ्यास नहीं करना चाहिए? विश्व की प्रकृति, ज़न-शान-रेन, से आत्मसात होने के लिए, व्यक्ति को करुणा का अभ्यास करना आवश्यक है। यदि आप सदैव बुरे कार्य करते हैं, आप अपना गोंग कैसे बढ़ा सकेंगें? आपका रोग कैसे ठीक किया जा सकता है? क्या यह उसके विपरीत नहीं है जो हमारे अभ्यासियों को करना चाहिए? वह भी जीवों को मारने और बुरे कार्य करने जैसा है! कोई कह सकता है : "आप जितना अधिक कहते हैं, यह उतना ही अविश्वसनीय हो जाता है- एक पशु को मारना एक जीव को मारना है, और एक पौधे को मारना भी एक जीव को मारना है।" वास्तव में, यह इसी प्रकार है। बुद्धमत में संसार के बारे में कहा गया है। हो सकता है आपने संसार के चक्र में एक पौधे के रूप में जन्म लिया हो। यह इस प्रकार बुद्धमत में कहा गया है। हम यहाँ इसके बारे में उस प्रकार बात नहीं करते, किन्तु हम सभी को बताते हैं कि वृक्षों में जीवन होता है। न केवल उनमें जीवन होता है, बल्कि उनमें बहुत उच्च स्तरीय विचार प्रक्रिया भी होती है।

उदाहरण के लिए, अमेरिका में एक व्यक्ति है जो इलेक्ट्रॉनिक शिक्षा का विशेषज्ञ है और वह दूसरों को झूठ पकड़ने के उपकरणों का प्रयोग करना सिखाता है। एक दिन, उसे अचानक एक विचार आया। उसने झूठ पकड़ने के उपकरण के दोनों सिरों

को एक पौधे पर लगा दिया और इसकी जड़ों में पानी डाला। उसने तब पाया कि झूठ पकड़ने के उपकरण के इलेक्ट्रॉनिक पेन ने तुरन्त ही एक घुमावदार रेखा खींच दी। यह घुमावदार रेखा उसी प्रकार खिंची थी जैसे जब मानव मस्तिष्क एक क्षण भर का उत्साह या प्रसन्नता उत्पन्न करता है। उस पल, वह आश्चर्यचकित रह गया। एक पौधे में भावनाएँ कैसे हो सकती हैं? वह सड़क पर जा कर चिल्लाना चाहता था : "पौधों में भावनाएँ होती हैं!" इस घटना से उत्साहित हो कर, वह इस क्षेत्र में शोध करता रहा और उसने अनेक प्रयोग किए।

एक बार उसने दो पौधों को एक साथ रख दिया और अपने छात्र को एक पौधे को दूसरे पौधे के सामने कुचल कर मार डालने के लिए कहा। इसके बाद वह दूसरे पौधे को एक कमरे में ले गया और उसे एक झूठ पकड़ने के उपकरण से जोड़ दिया। उसने अपने पाँच छात्रों को उस कमरे में बारी-बारी से प्रवेश करने के लिए कहा। जब पहले चार छात्र कमरे में आए तो पौधे ने कोई प्रतिक्रिया नहीं की। जब पांचवाँ छात्र- जिसने पौधे को नष्ट किया था- कमरे में आया, इससे पहले कि वह पौधे के पास आता, इलेक्ट्रॉनिक पेन ने तुरन्त एक घुमावदार रेखा खींची जो केवल तभी आती है जब कोई व्यक्ति भयभीत होता है। उसे वास्तव में झटका लगा! इस घटना से एक बहुत महत्वपूर्ण विषय सामने आता है : हम सदैव विश्वास करते रहे हैं कि मनुष्य एक उच्च स्तर का जीवन है जिसमें संवेदनशील क्रियाएँ होती हैं जो वस्तुओं में भेद कर सकती हैं और एक मस्तिष्क है जो वस्तुओं का विश्लेषण कर सकता है। एक पौधा कैसे वस्तुओं में भेद कर सकता है? क्या इससे यह पता नहीं चलता कि उनके भी संवेदनशील अंग होते हैं? विगत में, यदि किसी ने कहा होता कि पौधों के संवेदनशील अंग, विचारशील मन, भावनाएँ होते हैं, और वे लोगों को पहचान सकते हैं, इस व्यक्ति को अंधविश्वासी कहा जाता। इनके अलावा, ऐसा प्रतीत होता है कि कुछ पहलुओं में वे हमारे आज के लोगों से भी आगे हैं।

एक दिन उसने झूठ पकड़ने के उपकरण को एक पौधे से जोड़ दिया और सोचा: "मैं किस प्रकार का प्रयोग करूँ? मैं इसकी पत्तियों को आग से जला कर देखता हूँ कि यह कैसे प्रतिक्रिया करता है।" इस विचार से - इससे पहले वह पत्तियों को जला पाता - इलेक्ट्रोनिक पेन ने तुरन्त ही एक घुमावदार रेखा खींची जो उसी प्रकार की थी जो केवल तब बनती है जब कोई मदद के लिए चिल्लाता है। इस उच्च संवेदनशील क्रिया

को विगत में मन को पढ़ना कहा जाता था; यह एक छिपी हुई मानव क्रिया है और एक सहज योग्यता है। किन्तु समस्त मानवजाति आज भ्रष्ट हो चुकी है। उन्हें दोबारा प्राप्त करने के लिए, आपको आरम्भ से साधना करनी होगी और अपने मूल, सच्चे आत्मस्वभाव या अपनी मूल प्रकृति की ओर लौटना होगा। किन्तु पौधे में ये होती हैं, और यह जानता है कि आपके मन में क्या है। यह बहुत आश्चर्यजनक लगता है, किन्तु यह एक वास्तविक वैज्ञानिक परीक्षण था। उसने विभिन्न परीक्षण किए हैं, जैसे दूरवर्ती नियन्त्रण की योग्यता का परीक्षण। उसके शोध-पत्रों ने छपने के बाद, पूरे जगत में एक सनसनी फैला दी।

विभिन्न देशों के जीव-वैज्ञानिकों ने जिनमें हमारे देश के भी सम्मिलित हैं ने इस क्षेत्र में शोध आरम्भ कर दिया है, और इसे अब अन्धविश्वास जैसा नहीं माना जाता। एक और दिन मैंने कहा था कि हमारी मानवजाति ने जो आज अनुभव किया है, आविष्कार किया है, और खोजा है, वह हमारी वर्तमान पाठय-पुस्तकों को बदलने के लिए बहुत है। पारम्परिक मानसिकताओं के प्रभाव के कारण, हालांकि, लोग उन्हें स्वीकार करने में अनिच्छुक रहते हैं। न ही कोई इन वस्तुओं को प्रणालीबद्ध संकलित कर रहा है।

उत्तर-पूर्व के एक उद्यान में, मैंने देखा कि चीड़ के वृक्षों का एक समूह मर गया था। कोई नहीं जानता कि कुछ लोग वहाँ किस प्रकार के चीगोंग का अभ्यास कर रहे थे: वे भूमि पर लेट कर सब ओर घूमते और इसके बाद अपने पैरों को एक ओर रख कर और हाथों को दूसरी ओर वे पेड़ों से ची एकत्रित करते। इसके बाद जल्द ही, वहाँ के सभी चीड़ के वृक्ष पीले पड़ गए और मृत हो गए। जो उन्होंने किया वह एक अच्छा कार्य था या बुरा कार्य? हमारे अभ्यासियों के दृष्टिकोण से, यह जीवों को मारने जैसा था। आप एक अभ्यासी हैं। इस प्रकार, विश्व की प्रकृति के साथ निरन्तर आत्मसात होने और अपनी उन बुरी वस्तुओं को बाहर निकालने के लिए, आपका एक अच्छा व्यक्ति होना आवश्यक है। एक साधारण व्यक्ति के दृष्टिकोण से भी, यह एक अच्छा कार्य नहीं था। यह सरकारी संपत्ति का दुरूपयोग करना था, और इससे हरे-भरे वातावरण और प्राकृतिक सन्तुलन को हानि पहुँची। यह किसी भी दृष्टिकोण से एक अच्छा कार्य नहीं है। विश्व में बहुत सी ची है, और आप जितना चाहें उतना इसे एकत्रित कर सकते हैं। कुछ लोगों के पास बहुत शक्ति होती है। एक विशिष्ट स्तर पर अभ्यास करने पर, वे

अपने हाथों को हिला कर वास्तव में एक बड़े क्षेत्र के पौधों की ची एकत्रित कर सकते हैं। तब भी, वह कुछ और नहीं केवल ची है। भले ही आप इसे कितना भी एकत्रित करें, इसका क्या उपयोग है? जब कुछ लोग किसी उद्यान में जाते हैं, वे कुछ और नहीं करते। एक दावा करता है : "मुझे चीगोंग अभ्यास करने की आवश्यकता नहीं है। जब मैं चारों ओर टहलता हूँ तो ची को एकत्रित करना भर पर्याप्त होता है, और मेरा अभ्यास पूर्ण हो जाता है। ची को प्राप्त करना पर्याप्त होता है।" वे सोचते हैं कि ची गोंग है। जब लोग इस व्यक्ति के पास आते हैं, वे महसूस करेंगे कि उसका शरीर बहुत सर्द है। क्या पौधों की ची यिन प्रकृति की नहीं होती? एक अभ्यासी को यिन और यैंग में संतुलन बना कर रखना चाहिए। हालांकि इस व्यक्ति के शरीर से चीड़ के वृक्ष के तेल की गंध आती है, हो सकता है वह अभी भी सोचता है कि वह अपने अभ्यास में अच्छा कर रहा है।

जो कोई साधना अभ्यास करता है वही गोंग प्राप्त करेगा

कौन गोंग का अभ्यास करता है और कौन गोंग प्राप्त करेगा का विषय बहुत महत्वपूर्ण है। जब मुझे फालुन दाफा के लाभ बताने के लिए कहा जाता है, मैं कहता हूँ कि फालुन दाफा गोंग द्वारा अभ्यासियों को संवर्धित कर सकता है और इसलिए अभ्यास के समय को कम कर सकता है। यह व्यक्ति के पास अभ्यास के लिए समय न होने और तब भी निरन्तर संवर्धित होते रहने की समस्या को हल करता है। साथ ही, हमारा मन और शरीर का एक सच्चा साधना अभ्यास है। हमारे भौतिक शरीरों में महान बदलाव आएँगे। फालुन दाफा का एक और भी लाभ है, जो महानतम है, जिसका मैंने पहले उल्लेख नहीं किया। केवल आज हम इसे उजागर कर रहे हैं। यह इसलिए क्योंकि इसमें ऐतिहासिक महत्व के एक मुख्य पहलू का समावेश है और इसका साधकों के समाज पर एक बड़ा प्रभाव है, इतिहास में किसी ने भी इसे प्रकट करने का साहस नहीं किया, और न ही किसी को इसे उजागर करने की अनुमति है। किन्तु मेरे पास इसे बताने के अलावा कोई विकल्प नहीं है।

कुछ शिष्यों ने कहा है : "प्रत्येक शब्द जो गुरु ली होंगजी ने कहा है एक दिव्य रहस्य है और दिव्य रहस्यों को प्रकट करना है।" हम, हालांकि, वास्तव में लोगों को

उच्च स्तरों की ओर ले जा रहे हैं, अर्थात लोगों को बचा रहे हैं। हम हर किसी के लिए उत्तरदायी होने की जिम्मेदारी निभा सकते हैं। इसलिए, यह दिव्य रहस्य को उजागर करना नहीं है। यदि कोई इसके बारे में बिना जिम्मेदारी से बात करता है, तो वह दिव्य रहस्यों को उजागर करना है। आज हम इस विषय को सार्वजनिक कर रहे हैं कि कौन गोंग का अभ्यास करता है और कौन गोंग को प्राप्त करता है। मेरे विचार में, आज सभी अभ्यास - जिनमें संपूर्ण इतिहास के बुद्ध विचारधारा, ताओ विचारधारा, और चीमन विचारधारा के अभ्यास सम्मिलित हैं - व्यक्ति की सह आत्मा का संवर्धन करते हैं, और यह सह आत्मा है जिसे गोंग प्राप्त होता है। मुख्य आत्मा जिसकी हम बात कर रहे हैं उसका संदर्भ हमारे अपने मन से है। व्यक्ति को चेतन होना चाहिए कि वह किस बारे में सोच रहा है या कर रहा है - वह आपका वास्तविक आत्मस्वरूप है। किन्तु आप यह बिल्कुल भी नहीं जानते कि आपकी सह आत्मा क्या करती है। हालांकि आप और यह एक साथ समान नाम, समान रूप के साथ पैदा हुए हैं, और एक ही शरीर को नियन्त्रित करते हैं, यथार्थ में यह आप नहीं हैं।

इस विश्व में एक सिद्धांत है : जो कोई त्याग करता है प्राप्त करता है। जो कोई साधना करता है गोंग प्राप्त करता है। संपूर्ण इतिहासकाल में, सभी पद्धतियों ने लोगों को सिखाया है कि अभ्यास के दौरान वे अचेतन अवस्था में रहें, और यह कि व्यक्ति को कुछ और नहीं सोचना चाहिए। तब व्यक्ति को एक गहन अचेतनता में होना चाहिए जब तक, अन्त में, वह हर वस्तु की सुध-बुध नहीं खो देता। कुछ लोग तीन घण्टे तक ध्यानावस्था में बैठते हैं जैसे केवल एक पल ही बीता हो। क्या उसने वास्तव में अभ्यास किया? वह स्वयं भी इसके बारे में कुछ नहीं जानता। विशेष रूप से, ताओ विचारधारा सिखाती है की *शशन* [5] की मृत्यु होती है और मूल आत्मा का जन्म होता है। जो "शशन" का अर्थ है हम उसे "मुख्य आत्मा" कहते हैं, और जो इसमें "मूल आत्मा" का अर्थ है उसे हम "सह आत्मा" कहते हैं। यदि आपके शशन की वास्तव में मृत्यु हो जाए, तब आप वास्तव में मृत हो जाएँगे, और आपके पास वास्तव में मुख्य आत्मा नहीं होगी। किसी दूसरी पद्धति के व्यक्ति ने मुझे बताया : "गुरुजी, जब मैं अभ्यास करता हूँ मैं घर में किसी को पहचान नहीं पाता।" एक और व्यक्ति ने मुझे बताया : "मैं और लोगों की तरह अभ्यास नहीं करता जो प्रात:काल या देर रात में अभ्यास करते हैं। घर वापस जाकर, मैं एक सोफे पर लेट जाता हूँ और अपने शरीर से बाहर जाकर अभ्यास करता

हूँ। वहाँ लेट कर मैं स्वयं को अभ्यास करते हुए देखता हूँ।" मुझे यह बहुत दु:खद लगा, किन्तु यह दु:खद भी नहीं था।

वे सह आत्मा को क्यों बचाते हैं? ल्यू दोंगबिन[6] ने एक बार एक कथन कहा था: "मैं एक मनुष्य के स्थान पर एक पशु को बचाना चाहूँगा।" वास्तव में, लोगों का ज्ञानोदय होना अत्यन्त कठिन है क्योंकि साधारण लोग साधारण मानव समाज के भ्रमजाल में फँसे हैं। व्यावहारिक लाभ उनके सामने होने के कारण, वे मोहभाव नहीं छोड़ सकते। यदि आप इस पर विश्वास नहीं करते, इस कक्षा की समाप्ति के बाद, कुछ लोग इस सभागार से दोबारा एक साधारण व्यक्ति की भाँति बाहर निकलेंगे। यदि कोई उन्हें नाराज करता है या उनसे भिड़ जाता है, वे उससे संभल नहीं पाते। कुछ समय पश्चात, वे अपना बर्ताव एक अभ्यासी की भाँति बिल्कुल नहीं करते। अनेक ताओ गुरुओं ने इतिहास में यह जाना है : मनुष्यों को बचाना बहुत कठिन होता है, क्योंकि उनकी मुख्य आत्मा बहुत भ्रमित होती है। कुछ लोगों का ज्ञानप्राप्ति का गुण अच्छा होता है और वे तुरन्त एक इशारे से समझ जाएँगे। कुछ लोग आप पर विश्वास नहीं करेंगे भले ही आप कुछ भी कहें। वे सोचते हैं कि आप बड़बोली बातें कर रहे हैं। हम व्यक्ति के शिनशिंग की साधना के बारे में इतनी अधिक बात कर रहे हैं, किन्तु यह व्यक्ति जब साधारण लोगों के बीच होता है तो अब भी हमेशा की तरह बर्ताव करता है। वह सोचता है कि उसके दायरे के वास्तविक और दृश्यमान लाभ व्यावहारिक हैं, और वह उनका अनुसरण करेगा; गुरु का फा भी उचित जान पड़ता है, किन्तु उसका पालन नहीं किया जा सकता। मुख्य आत्मा को बचाना सबसे कठिन होता है, जबकि सह आत्मा दूसरे आयामों के कुछ दृश्यों को देख सकती है। इसलिए वे सोचते हैं : "मैं आपकी मुख्य आत्मा को क्यों बचाऊँ? आपकी सह आत्मा भी आप हैं। यदि मैं इसे बचाता हूँ तो क्या यह समान नहीं होगा? यह सब आप हैं, इसलिए जो कोई भी इसे प्राप्त करता है वह इसी प्रकार होगा जैसे आप इसे प्राप्त करते हैं।"

मैं उनके अभ्यासों की प्रणालियों का विशेष रूप से वर्णन करना चाहूँगा। यदि किसी के पास दूरदृष्टि की दिव्य सिद्धि हो, कदाचित वह यह दृश्य देखेगा : जब आप ध्यान में बैठते हैं, जैसे ही आप अचेतन अवस्था में पहुँचते हैं, आप जैसे स्वरूप वाला कोई अचानक ही आपके शरीर को छोड़ देगा। यदि आप भेद करना चाहें, आपकी अपनी चेतना कहाँ हैं? आप यहीं बैठे हैं। जब आप उस व्यक्ति को आपका शरीर छोड़ते

हुए देखते हैं, गुरु इस व्यक्ति को साधना कराने के लिए गुरु द्वारा रूपांतरित एक आयाम में ले जाएगा। यह कोई अतीत का समुदाय, आज का समुदाय, या दूसरे आयाम का समुदाय हो सकता है। व्यक्ति को एक या दो घंटे रोज अभ्यास सिखाया जाएगा और वह अनेक कठिनाइयों से गुजरेगा। जब व्यक्ति अभ्यास से वापस लौटता है, आप भी अचेतनता से जाग जाएँगे। यह स्थिति उन लोगों के लिए है जो देख सकते हैं।

यह और भी खेदजनक है यदि व्यक्ति नहीं देख सकता। इस प्रकार का व्यक्ति बिना कुछ जाने हुए दो घण्टे अचेतनता में बैठने के बाद जागता है। अभ्यास के तरीके में, कुछ लोग दो या तीन घण्टे के लिए सो जाते हैं और स्वयं को पूरी तरह दूसरों को दे देते हैं। यह एक निश्चित अवधि के लिए रोज ध्यान में बैठ कर भागों में किया जाता है। दूसरे प्रकार का एक साथ पूरा किया जाता है। सभी ने बोधिधर्म के बारे में सुना होगा, जो एक दीवार के सामने नौ वर्ष तक बैठे थे। विगत में, ऐसे अनेक भिक्षु थे जो दशकों के लिए बैठते थे। इतिहास में, सबसे अधिक समय तक बैठने का उच्चमान नब्बे वर्ष का है। कुछ इससे भी अधिक समय के लिए बैठे थे। उनकी पलकों पर भारी धूल जम गई और शरीरों पर घास उग गई, वे निरन्तर वहाँ बैठे रहे। ताओ विचारधारा में भी कुछ इसे सिखाते हैं। विशेषरूप से, चीमन विचारधारा में कुछ पद्धतियाँ सोने को अभ्यास के एक प्रकार की तरह सिखाती हैं। अचेतन अवस्था से उठे बिना व्यक्ति दशकों तक सो सकता है, और वह उठता नहीं है। किन्तु किसने अभ्यास किया है? व्यक्ति की सह आत्मा ने बाहर जाकर अभ्यास किया है। यदि वह इसे देख सकता, वह पायेगा कि गुरु उसकी सह आत्मा को अभ्यास के लिए ले जा रहे हैं। सह आत्मा के पास भी बहुत कर्म हो सकता है, और गुरु के पास पूरे कर्म को हटाने की योग्यता नहीं होती। इसलिए, गुरु इसे कहता है : "तुम यहाँ अभ्यास करो। मैं जा रहा हूँ और कुछ देर में वापस आऊँगा। तुम मेरी प्रतीक्षा करना।"

गुरु जानता है कि वास्तव में क्या होगा, किन्तु उसे इस प्रकार करना आवश्यक है। अन्तत: एक असुर इसको डराने के लिए या एक अप्सरा में रूपांतरित होकर इसे लुभाने के लिए आएगा - सभी प्रकार की घटनाएँ होंगी। तब असुर यह जानेगा इस पर वास्तव में कोई प्रभाव नहीं पड़ रहा। यह इसलिए क्योंकि सह आत्मा के लिए साधना अभ्यास करना अपेक्षाकृत सरल होता है, क्योंकि यह सत्य जान सकती है। निराश होकर, प्रतिशोध के लिए असुर इसे मारने का प्रयत्न करेगा, और वास्तव में इसे मार

देगा। उसके साथ, तुरन्त ही इसके ऋण का भुगतान हो जाएगा। मृत्यु के पश्चात, सह आत्मा एक घुएँ की तरह निकल कर उड़ेगी और एक बहुत निर्धन परिवार में पुनर्जन्म लेगी। कम उम्र से ही बालक कष्ट झेलने लगेगा। जब यह बड़ा होगा, गुरु वापस आ जायेगा। निश्चित ही, बालक उसे नहीं पहचान सकता। दिव्य सिद्धियों द्वारा, गुरु उसकी दबी हुई स्मृति को खोल देगा। इसे तुरन्त सब याद आ जायेगा। "क्या यह मेरे गुरु नहीं हैं?" गुरु इसे बताएगा : "अब, अभ्यास आरम्भ करने का समय आ गया है।" इस प्रकार, कई वर्ष पश्चात गुरु उसे शिक्षाएँ प्रदान करेगा।

शिक्षा के बाद, गुरु इसे फिर बताएगा : "तुम्हारे पास अब भी बहुत से मोहभाव छोड़ने बाकी हैं। तुम्हें बाहर भ्रमण के लिए जाना चाहिए।" समाज में इधर-उधर भ्रमण करना बहुत दु:खदाई होता है। इसे भोजन के लिए भिक्षा मांगनी पड़ती है और विभिन्न प्रकार के लोगों से मिलना पड़ता है जो इसे फटकारेंगे, इसका अपमान करेंगे, या लाभ उठायेंगे। इसे हर प्रकार की वस्तुओं का सामना करना पड़ सकता है। यह स्वयं को एक अभ्यासी मानेगा और दूसरों के साथ उचित संबंध रखेगा, और सदैव शिनशिंग को संभाल कर और बढ़ाते हुए रखेगा। यह साधारण लोगों के बीच विभिन्न लाभों के लोभ से विचलित नहीं होगा। कई वर्षों बाद, यह भ्रमण करके वापस आयेगा। गुरु कहेगा : "तुम पहले ही ताओ प्राप्त कर चुके हो और साधना पूर्ण कर चुके हो। यदि तुम्हारे पास कुछ और करने के लिए नहीं है, तुम सामान बांध कर छोड़ने के लिए तैयारी कर लो। यदि अभी कुछ करना शेष है, तो तुम जाकर उस साधारण लोगों के कार्य को पूरा कर सकते हो।" कई वर्षों पश्चात, सह आत्मा वापस आती है। सह आत्मा के वापस आने पर, मुख्य आत्मा भी अचेतन अवस्था से बाहर आ जाती है, और मुख्य आत्मा जाग जाती है।

किन्तु इस व्यक्ति ने वास्तव में अभ्यास नहीं किया है। उस सह आत्मा ने यह अभ्यास किया है, इसलिए सह आत्मा गोंग प्राप्त करेगी। किन्तु मुख्य आत्मा ने भी पीड़ा सही है। अन्तत:, व्यक्ति ने अपना पूरा युवाकाल वहाँ बैठ कर बिता दिया, और एक साधारण व्यक्ति के लिए यह जीवनकाल पूर्ण हो गया। तब क्या होगा? अचेतन अवस्था से जागने के बाद, इस व्यक्ति को लगेगा कि अपने अभ्यास द्वारा उसने गोंग प्राप्त कर लिया है और दिव्य सिद्धियाँ प्राप्त कर ली हैं। यदि वह किसी रोगी का उपचार करना चाहता है या कुछ करना चाहता है, वह कर सकेगा, क्योंकि सह आत्मा उसे सन्तुष्ट

करने का प्रयत्न करेगी। क्योंकि यह व्यक्ति मुख्य आत्मा है, अन्ततः, मुख्य आत्मा शरीर को नियन्त्रित करती है और निर्णय लेती है। इसके अतिरिक्त, उसने यहाँ बैठकर इतने वर्ष गुजार दिये कि उसका जीवनकाल पूर्ण हो गया है। जब इस व्यक्ति की मृत्यु होती है, सह आत्मा शरीर त्याग देती है। दोनों अपने-अपने भिन्न मार्गों पर जायेंगी। बुद्धमत के अनुसार, यह व्यक्ति अभी भी संसार के चक्र से गुजरेगा। क्योंकि उसके शरीर से एक महान ज्ञानप्राप्त व्यक्ति ने सफलतापूर्वक साधना की है, यह व्यक्ति बहुत सा द भी प्राप्त करता है। तब क्या होगा? हो सकता है वह अपने अगले जन्म में एक उच्च पदाधिकारी बन जाए या बहुत सा धन अर्जित करे। यह केवल इस प्रकार हो सकता है। क्या उसकी साधना व्यर्थ समाप्त नहीं हुई?

इस विषय का खुलासा करने की अनुमति के लिए हमें बहुत प्रयत्न लगा है। मैंने चिर रहस्य को उजागर कर दिया है - यह रहस्यों का रहस्य था जिसे बिल्कुल उजागर नहीं किया जा सकता था। मैंने संपूर्ण इतिहास के सभी विभिन्न साधना अभ्यासों के मूल को उजागर कर दिया है। क्या मैंने नहीं कहा था कि इसमें गहन रूप से ऐतिहासिक कारण सम्मिलित हैं। ये कारण हैं। इसके बारे में सोचें : कौन सा अभ्यास या पद्धति इस प्रकार साधना अभ्यास नहीं करती? आप साधना करते हुए आते-जाते रहते हैं, किन्तु गोंग प्राप्त नहीं करते। क्या आप दुःखी नहीं हैं? तो किसका दोष है? मनुष्य इतने भ्रमित हैं कि उन्हें इसका ज्ञानोदय नहीं होता, भले ही उन्हें कैसे भी संकेत दिए जाएँ। यदि किसी वस्तु को एक ऊँचे दृष्टिकोण से समझाया जाता है, वे इसे अविश्वसनीय पाएँगे। यदि किसी वस्तु को एक निम्न दृष्टिकोण से समझाया जाता है, उन्हें इसका ज्ञानोदय नहीं हो पाता कि उच्च क्या है? यहाँ तक कि जब मैं इस प्रकार समझाता हूँ, कुछ लोग तब भी मुझसे अपने रोग ठीक कराना चाहते हैं। मैं वास्तव में नहीं जानता कि उन्हें क्या कहूँ। हम साधना अभ्यास सिखाते हैं, और हम केवल उन्हीं की देख-रेख कर सकते हैं जो ऊँचे स्तरों की ओर साधना करते हैं।

हमारी अभ्यास पद्धति में, यह मुख्य चेतना है जो गोंग प्राप्त करती है। तब, क्या मुख्य चेतना गोंग प्राप्त करेगी यदि आप ऐसा कहें? इसकी अनुमति कौन देता है? यह उस प्रकार नहीं है, क्योंकि इसकी एक पूर्व आवश्यकता होनी चाहिए। हर कोई जानता है कि साधना अभ्यास में हमारी साधना पद्धति में साधारण मानव समाज को नहीं त्यागा जाता है, और न ही यह मतभेदों से बचती या दूर भागती है। इस साधारण लोगों

के जटिल वातावरण में, आपका मन स्पष्ट होना चाहिए और लाभ के सामने जानबूझ कर त्याग करना चाहिए। जब आपका निजी-लाभ दूसरों द्वारा ले लिया जाता है, आप इसके लिए दूसरों की तरह द्वन्द या झगड़ा नहीं करेंगे। विभिन्न शिनशिंग विघ्न के बीच, आप हानि सहेंगे। इस कठिन वातावरण में, आप अपनी इच्छाशक्ति को दृढ़ करेंगे और अपने शिनशिंग में सुधार करेंगे। साधारण लोगों के विभिन्न बुरे विचारों के प्रभाव के बीच, आप इसके ऊपर और आगे जा सकेंगे।

आप सब इसके बारे में सोचें : क्या यह आप नहीं हैं जो जानबूझकर सहते हैं? क्या यह आपकी मुख्य आत्मा नहीं है जो त्याग करती है? जहाँ तक साधारण लोगों के बीच आपने जो खोया है, क्या आपने जानबूझकर इसे नहीं खोया है? तब यह गोंग आपका होना चाहिए, क्योंकि जो त्याग करता है, प्राप्त करता है। इसलिए, इस कारण हमारी पद्धति इस साधारण लोगों के जटिल वातावरण में साधना करने से कतराती नहीं है। हम साधारण लोगों के मतभेदों के बीच साधना क्यों करते हैं? यह इसलिए क्योंकि हम स्वयं गोंग प्राप्त करने जा रहे हैं। मठों के भविष्य के पेशेवर अभ्यासियों के लिए, अपने साधना अभ्यास में, साधारण लोगों के बीच भ्रमण करना आवश्यक होगा।

कुछ लोगों ने पूछा है : "क्या आजकल दूसरी पद्धतियाँ भी साधारण लोगों के बीच अभ्यास नहीं करतीं?" किन्तु वे पद्धतियाँ आरोग्य और स्वास्थ्य को प्रचलित कर रही हैं। किसी ने भी वास्तव में, सार्वजनिक रूप से उच्च स्तरों की ओर पद्धतियाँ नहीं सिखाई हैं केवल उन्हें छोड़कर जो एक शिष्य को लेकर एकान्त शिक्षा देते हैं। जो सच्चे रूप से अपने शिष्यों को सिखाते हैं वे उन्हें एकान्त शिक्षा देने के लिए पहले ही ले जा चुके हैं। कई वर्षों में, किसने जनता के बीच इस बारे में बात की है? यह किसी ने नहीं किया है। हमारी अभ्यास पद्धति ने इस प्रकार शिक्षा दी है, क्योंकि हम ठीक इसी प्रकार साधना करते हैं, और हम ठीक इसी प्रकार गोंग प्राप्त करते हैं। इसके साथ ही, हमारी साधना पद्धति आपकी मुख्य आत्मा को सैकड़ों और हजारों वस्तुएँ देती है जिससे आप स्वयं गोंग प्राप्त करने में वास्तव में सक्षम हो सकें। मैं कह चुका हूँ कि मैंने यह अभूतपूर्व कार्य किया है और द्वार को अधिकतम खोल दिया है। कुछ लोग मेरे इन शब्दों को समझ गए हैं, क्योंकि जो मैंने कहा है वह वास्तव में अविश्वसनीय नहीं है। एक व्यक्ति की भाँति, मेरा एक स्वभाव है : यदि मेरे पास एक गज है और मैं इसका एक इंच ही कहता हूँ, आप तब भी कह सकते हैं कि मैं बड़बोली बात कर रहा हूँ, किन्तु जो

कहा गया है वह वास्तव में केवल एक छोटा भाग ही है। स्तरों में विशाल दूरियों के कारण, मैं आपको उच्च दाफा तनिक भी उजागर नहीं कर सकता।

हमारी पद्धति इस प्रकार साधना करती है, जो स्वयं आपको वास्तव में गोंग प्राप्त करने के लिए योग्य बनाती है। आकाश और पृथ्वी के आरम्भ से यह अभूतपूर्व है - आप इतिहास जांच सकते हैं। यह अच्छा है क्योंकि आप स्वयं गोंग प्राप्त करेंगे, किन्तु यह बहुत कठिन भी है। साधारण लोगों के जटिल वातावरण और इसके परस्पर शिनशिंग संघर्षो के बीच, आप इसके ऊपर और आगे उठ पाते हैं - यह सबसे कठिन वस्तु है। यह कठिन है क्योंकि आप साधारण लोगों के बीच जानबूझकर अपने निजी लाभों का त्याग करते हैं। अपने निर्णायक निजी लाभों के बीच, क्या आप विचलित होते हैं? परस्पर मानसिक षड्यंत्रों के बीच, क्या आप विचलित होते हैं? जब आपके मित्र या परिवारजन दु:ख उठाते हैं, क्या आप विचलित होते हैं? आप उन्हें कैसे मापेंगे? एक अभ्यासी होना इतना ही कठिन है! किसी ने मुझसे कहा : "गुरुजी, साधारण लोगों के बीच एक अच्छा व्यक्ति बनना ही बहुत है। साधना में कौन सफल हो सकता है?" यह सुनने के बाद, मुझे वास्तव में निराशाजनक लगा! मैंने उसे एक शब्द भी नहीं कहा। यहाँ हर प्रकार के शिनशिंग हैं। जो जितना ऊँचा चाहता है उसे उतना ज्ञानोदय होता है; जिस किसी को ज्ञानोदय होता है उसे प्राप्ति होती है।

लाओ ज़ ने कहा था : "ताओ वह मार्ग है जिसका अनुसरण किया जा सके, किन्तु यह एक साधारण मार्ग नहीं है।" ताओ मूल्यवान नहीं होगा यदि इसे कोई कहीं भी जमीन पर पड़े हुए उठा ले और इसके अभ्यास में सफल हो जाए। हमारी अभ्यास पद्धति आपको मतभेदों के बीच गोंग प्राप्त करना सिखाती है। इसलिए, हमें साधारण लोगों के साथ जितना हो सके उतना मेलजोल से रहना चाहिए। भौतिक रूप से, आपको वास्तव में किसी वस्तु की हानि नहीं होने दी जाएगी। किन्तु इस भौतिक वातावरण में आपके लिए अपने शिनशिंग को बढ़ाना आवश्यक है। इस कारण यह सुविधाजनक है। हमारी साधना पद्धति सबसे सुविधाजनक है, क्योंकि व्यक्ति इसका अभ्यास साधारण लोगों के बीच कर सकता है न कि सन्यासी बन कर। इस कारण यह सबसे कठिन भी है, क्योंकि व्यक्ति साधारण लोगों के इस सर्वाधिक जटिल वातावरण में साधना करेगा। इसके अतिरिक्त, यह इस कारण सर्वोत्तम है, क्योंकि यह व्यक्ति को स्वयं गोंग प्राप्त करने में योग्य बनाती है। यह हमारी साधना पद्धति में सबसे निर्णायक

बिंदु है, और आज मैंने इसे सबके लिए उजागर कर दिया है। नि:संदेह, जब मुख्य आत्मा गोंग प्राप्त करती है, तब सह आत्मा भी इसे प्राप्त करती है। ऐसा क्यों है? जब आपके शरीर में सभी संदेश, जीवन सत्ताएँ, और कोशिकाएँ गोंग प्राप्त करती हैं, सह आत्मा भी निश्चित ही इसे प्राप्त करती है; किन्तु, किसी भी समय इसका गोंग स्तर उतना ऊँचा नहीं होगा जितना आपका। आप मालिक हैं जबकि यह फा की संरक्षक है।

यह बात करने पर, मैं यह भी कहना चाहूँगा कि साधकों के समुदाय में अनेक लोग हैं जो सदैव उच्च स्तरों की ओर अभ्यास करने के लिए प्रयत्नशील रहे हैं। उन्होंने हर जगह भ्रमण किया है और बहुत सा धन व्यय किया है। वे पूरे देश में घूम कर भी सुप्रसिद्ध गुरुओं को नहीं खोज सके हैं। सुप्रसिद्ध होने का अर्थ यह आवश्यक नहीं है कि वह वस्तुओं को अच्छी प्रकार से जानता हो। अन्त में, ये लोग इधर-उधर भ्रमण कर चुके होते हैं, और व्यर्थ में बहुत सा धन और प्रयत्न व्यय कर चुके होते हैं। आज हमने आपके लिए इस महान अभ्यास को सार्वजनिक कर दिया है। मैंने पहले ही इसे आपके द्वार तक पहुँचा दिया है। यह आप पर है कि आप साधना अभ्यास कर पाते हैं और सफल हो पाते हैं। यदि आप इसे कर सकते हैं, आप अपनी साधना निरन्तर रख सकते हैं। यदि आप इसे नहीं कर सकते या साधना अभ्यास नहीं कर सकते, अब से आप साधना का अभ्यास करने के बारे में भूल सकते हैं। केवल असुरों को छोड़ कर जो आप को धोखा देंगे, कोई और आपको नहीं सिखाएगा, और भविष्य में आप साधना नहीं कर सकेंगे। यदि मैं आपको नहीं बचा सकता, तो कोई और भी नहीं। वास्तव में, आपको सिखाने के लिए किसी पारम्परिक फा से एक सच्चे गुरु को खोजना आकाश पर चढ़ाई करने से भी कठिन है। ऐसा कोई भी नहीं है जो देख-रेख करता हो। धर्मविनाशकाल में, यहाँ तक कि सबसे ऊँचे स्तर भी कलयुग के अन्त में है। कोई भी साधारण लोगों की देख-रेख नहीं कर रहा है। यह सबसे सुविधाजनक साधना पद्धति है। इसके अतिरिक्त, इसका अभ्यास सीधे विश्व की प्रकृति के अनुसार किया जाता है। यह सबसे शीघ्र, सबसे सीधा मार्ग है, और यह सीधे व्यक्ति के हृदय को लक्ष्य करता है।

अलौकिक परिपथ

ताओ विचारधारा में, महान और लघु अलौकिक परिपथ सिखाये जाते हैं। हम समझायेंगे कि "अलौकिक परिपथ" क्या होता है? अलौकिक परिपथ जिसका हम अक्सर उल्लेख करते हैं *रेन* और डू की दो शक्ति नाड़ियों[7] के जोड़ने को कहा जाता है। यह अलौकिक परिपथ एक सतही अलौकिक परिपथ है जिसका प्रयोग केवल आरोग्य और स्वास्थ्य के लिए किया जाता है। इसे लघु अलौकिक परिपथ कहा जाता है। दूसरा अलौकिक परिपथ जिसे न तो "लघु अलौकिक परिपथ" कहा जाता है न ही "महान अलौकिक परिपथ" वह ध्यान में साधना करने के लिए एक प्रकार का अलौकिक परिपथ है। व्यक्ति के शरीर के अन्दर से आरम्भ हो कर, यह नीवान की परिधि करके अन्दर से नीचे की ओर दानत्येन तक आता है, जहाँ यह परिधि करता है और ऊपर जाता है। यह आन्तरिक धारा है। यह ध्यान में साधना अभ्यास करने के लिए सच्चा अलौकिक परिपथ है। इस अलौकिक परिपथ के बन जाने पर, यह एक बहुत प्रबल शक्ति प्रवाह बन जाता है जो तब एक शक्ति नाड़ी द्वारा सैकड़ों शक्ति नाड़ियों को गति में लाता है, जिससे और सभी शक्ति नाड़ियाँ खुल सकें। ताओ विचारधारा अलौकिक परिपथ सिखाती है, किन्तु बुद्ध विचारधारा नहीं। बुद्ध विचारधारा क्या सिखाती है? जब शाक्यमुनि ने अपना धर्म सिखाया, उन्होंने व्यायामों का अभ्यास नहीं समझाया, और न ही उन्होंने उन्हें सिखाया। किन्तु उनके अभ्यास में भी साधना में उनके रूपान्तरण का अपना स्वरूप होता है। बुद्धमत में शक्ति नाड़ी कैसे गति करती है? यह बाई-हुइ बिंदु से आरम्भ होकर जाती है। तब सर के ऊपर से विकसित होकर शरीर के निचले भाग में घुमावदार रूप से जाती है, और अन्त में, इस प्रणाली द्वारा यह सैकड़ों शक्ति नाड़ियों को गति में लाती है और उन्हें खोलती है।

तन्त्र विद्या में मध्य शक्ति नाड़ी का भी यही प्रयोजन होता है। किसी ने कहा है : "कोई मध्य शक्ति नाड़ी नहीं होती। तब तन्त्र विद्या इस मध्य शक्ति नाड़ी को कैसे विकसित कर सकती है?" वास्तव में, जब मानव शरीर में सभी शक्ति नाड़ियों को एक साथ जोड़ा जाए, वे संख्या में सैकड़ों या दसियों हजार होती हैं। वे ठीक रक्त की नसों की तरह आड़े और तिरछे काटती हैं, और वे रक्त की नसों से भी अधिक होती हैं; आन्तरिक अंगों के बीच कोई रक्त की नसें नहीं होती, किन्तु शक्ति नाड़ियाँ होती हैं। वे व्यक्ति के सर से शरीर के विभिन्न भागों तक आड़ी और तिरछी जुड़ी होती हैं। कदाचित

वे आरम्भ में सीधी नहीं होतीं, और उन्हें जोड़ने के लिए खोला जाता है। तब वे धीरे-धीरे फैलेंगी और एक सीधी शक्ति नाड़ी बनाएंगी। इस शक्ति नाड़ी को धुरी बना कर, यह स्वयं घूम कर अनेक सैध्दान्तिक चक्रों को समतल घुमाव में लाती है। इसका ध्येय भी शरीर की सभी शक्ति नाड़ियों को खोलना है।

हमारे फालुन दाफा के साधना अभ्यास में एक शक्ति नाड़ी द्वारा सैकड़ों शक्ति नाड़ियों को गति में लाने की प्रणाली का प्रयोग नहीं किया जाता। बिल्कुल आरम्भ से, हमारी आवश्यकता है कि सैकड़ों शक्ति नाड़ियों को खोल दिया जाए और एक साथ घुमाव में लाया जाए। एक साथ ही, हम एक बहुत ऊँचे स्तर पर अभ्यास करते हैं और निम्न स्तर की वस्तुओं का प्रयोग नहीं करते। कुछ लोगों के लिए एक शक्ति नाड़ी द्वारा सैकड़ों शक्ति नाड़ियों को खोलने में, एक पूरा जीवनकाल अपर्याप्त हो सकता है। कुछ लोगों के लिए दशकों तक साधना अभ्यास करना आवश्यक होता है, और यह बहुत कठिन होता है। कई पद्धतियों में कहा जाता है कि साधना में सफल होने के लिए एक जीवनकाल पर्याप्त नहीं है, जबकि उच्च स्तर अभ्यासों में अनेक अभ्यासी हैं जो अपने जीवन को बढ़ा सकते हैं - क्या वे जीवन के संवर्धन के बारे में बात नहीं करते? वे साधना अभ्यास के लिए अपने जीवन को बढ़ा सकते हैं, जिसमें बहुत लम्बा समय लगेगा।

लघु अलौकिक परिपथ मूल रूप से आरोग्य और स्वास्थ्य के लिए है, जबकि महान अलौकिक परिपथ गोंग के अभ्यास के लिए है - अर्थात जब व्यक्ति वास्तव में साधना करता है। महान अलौकिक परिपथ जिसका ताओ विचारधारा में उल्लेख होता है, इतनी प्रबलता से नहीं आता जितना हमारा, जो सैकड़ों शक्ति नाड़ियों को एक साथ खोलता है। ताओ विचारधारा में महान अलौकिक परिपथ के घूमने से अर्थ अनेक शक्ति नाड़ियों से है जो एक बार व्यक्ति की तीन यिन और तीन यैंग[8] नाड़ियों से व्यक्ति के हाथों से पैरों के नीचे तलवे तक, दोनों टांगों से, बालों से होते हुए, और पूरे शरीर के ऊपर घूमता है। यह गतिमान महान अलौकिक परिपथ है। जैसे ही महान अलौकिक परिपथ गति में आता है, यह गोंग का अभ्यास है। इसलिए, कुछ चीगोंग गुरु महान अलौकिक परिपथ नहीं सिखाते, क्योंकि जो वे सिखाते हैं वे केवल स्वास्थ्य और आरोग्य की वस्तुएँ हैं। कुछ लोगों ने महान अलौकिक परिपथ की बात भी की है, किन्तु उन्होंने आपके शरीर में कुछ भी स्थापित नहीं किया है, और आप स्वयं उन्हें नहीं खोल

सकते। बिना प्रणाली के स्थापित किए, व्यक्ति के मनो-विचार की सहायता से वस्तुओं को सरलता से कैसे खोला जा सकता है? यह व्यायाम करने जैसा है - वह उन्हें कैसे खोल सकता है? साधना व्यक्ति के प्रयत्नों पर आधारित होती है जबकि गोंग का रूपांतरण गुरु द्वारा किया जाता है। आन्तरिक "प्रणाली" को पूरी तरह आपको दे दिये जाने के बाद ही, यह प्रभाव आ सकता है।

पूरे इतिहासकाल में ताओ विचारधारा ने मानव शरीर को एक लघु विश्व माना है : यह मानती है कि विश्व का बाहरी स्वरूप उतना ही बड़ा है जितना आन्तरिक, और यह कि इसका बाहरी स्वरूप वैसा ही दिखाई पड़ता है जैसा आन्तरिक। यह विचार अविश्वसनीय जान पड़ता है और सरलता से समझ नहीं आता। यह विश्व इतना बड़ा है - इसकी तुलना एक मानव शरीर से कैसे हो सकती है? हम यह बात सामने ला रहे हैं : हमारी वर्तमान भौतिकी में पदार्थ के तत्वों पर शोध होता है - अणुओं से परमाणुओं, इलेक्ट्रॉन, प्रोटोन, और क्वार्क से न्यूट्रिनो तक, किन्तु इससे और नीचे क्या आकार होता है? एक सूक्ष्मदर्शी इसे उस बिंदु पर नहीं जांच सकती, तब इसके और नीचे अत्यन्त सूक्ष्म कण कैसा होगा? यह अज्ञात है। वास्तव में, जो हमारी भौतिकी आज जानती है वह विश्व के सूक्ष्मतम कण से कहीं दूर है। यदि किसी के पास यह भौतिक शरीर नहीं है, उसकी आँखें वस्तुओं को वृहत रूप में देख सकेंगी और सूक्ष्म स्तर को देखेंगी। जितना ऊँचा व्यक्ति का स्तर होता है, उतना ही अधिक सूक्ष्म स्तर वह देख सकता है।

अपने स्तर पर, शाक्यमुनि ने तीन हजार संसारों के सिद्धांत की चर्चा की थी, जिसके अनुसार इस आकाश गंगा में ऐसे लोग हैं जिनके भौतिक शरीर हमारी मानवजाति जैसे है। उन्होंने यह भी बताया कि रेत के एक कण में तीन हजार संसार समाहित होते हैं, और यह हमारी आधुनिक भौतिकी की समझ के अनुरूप है। इलेक्ट्रॉन के नाभिक के चारों ओर घूमने और पृथ्वी के सूर्य के चारों ओर घूमने में क्या अन्तर है? इसलिए, शाक्यमुनि ने कहा था कि सूक्ष्म स्तर पर, रेत के एक कण में तीन हजार संसार होते हैं। यह ठीक एक जगत की तरह है जिसमें जीवन और पदार्थ समाहित होते हैं। यदि यह सत्य है, इसके बारे में सोचें : क्या उस रेत के कण के संसारों में रेत है? क्या उस रेत के कण के रेत में तीन हजार संसार हैं? तब क्या रेत के भी रेत के तीन हजार संसारों में रेत है? यदि यह खोज नीचे की ओर चलती रहे, तो यह अनन्त रहेगी। इसलिए, तथागत

के स्तर पर भी, शाक्यमुनि ने यह वक्तव्य कहा था : "यह वृहत है, जिसका बाह्य नहीं है, और यह सूक्ष्म है, जिसका आन्तरिक नहीं है।" यह इतना वृहत है कि वे विश्व की परिधि को नहीं देख सके, और इतना सूक्ष्म है कि वे पदार्थ के मूल से सूक्ष्मतम कण का पता नहीं लगा सके।

एक चीगोंग गुरु ने कहा था : "एक रोम छिद्र में एक नगर है जिसमें रेलगाड़ियाँ और कारें चलती हैं।" यह बहुत अविश्वसनीय जान पड़ता है, किन्तु हमें यह वक्तव्य तब अविश्वसनीय नहीं लगता यदि हम इसे वास्तव में वैज्ञानिक दृष्टिकोण से समझें और जानें। दूसरे दिन जब मैंने दिव्य नेत्र के खुलने की बात की, दिव्य नेत्र के खुलने के दौरान कई लोगों को यह परिस्थिति दिखाई दी : वे अपने माथे में एक सुरंग में से भागे जा रहे थे जैसे वे उसके अन्त तक पहुँच ही न सकें। उनके अभ्यास के प्रत्येक दिन, उन्हें महसूस हुआ कि वे इस बड़े मार्ग पर भागे जा रहे हों, जहाँ दोनों ओर पर्वत और नदियाँ हैं। भागते समय, वे नगरों से गुजरे और उन्हें बहुत से लोग दिखाई पड़े, और उन्होंने सोचा कि यह एक भ्रम है। यह क्या है? जो देखा गया वह बहुत स्पष्ट है और कोई भ्रम नहीं है। मैंने कहा है कि व्यक्ति का शरीर सूक्ष्म स्तर पर वास्तव में इतना बड़ा है, यह कोई भ्रम नहीं है। यह इसलिए क्योंकि ताओ विचारधारा ने सदैव मानव शरीर को एक विश्व माना है। यदि यह वास्तव में एक विश्व है, माथे से पिनियल ग्रन्थि तक की दूरी 108 हजार ली से अधिक होगी। आप बाहर की ओर जा सकते हैं, किन्तु यह एक बहुत सुदूर दूरी है।

यदि साधना अभ्यास के दौरान महान अलौकिक परिपथ पूरी तरह खुल जाता है, इससे अभ्यासी में एक दिव्य सिद्धि आएगी। कौन सी दिव्य सिद्धि? आप जानते हैं कि महान अलौकिक परिपथ को "मध्य अलौकिक परिपथ," "*च्येन-कुन* [9] आवर्तन," या "*ह-च* [10] आवर्तन" भी कहा जाता है। एक बहुत निम्न स्तर पर, महान अलौकिक परिपथ का आवर्तन एक शक्ति धारा को उत्पन्न करेगा, जो निरन्तर और सघन होती जाएगी, और उच्च स्तरों की ओर रूपांतरित होते हुए एक बड़ी, उच्च घनत्व की शक्ति परिधि बन जाएगी। इस शक्ति परिधि की आवर्तन की गति होगी। इसके आवर्तन में, हम, एक बहुत निम्न स्तर के दिव्य नेत्र द्वारा, पाते हैं कि यह व्यक्ति के शरीर की ची को स्थानान्तरित कर सकती है। हृदय से ची आंतों में जा सकती है, और यकृत से ची उदर में जा सकती है.....। सूक्ष्म स्तर पर हम देख सकते हैं यह जो स्थानान्तरित करती है वह बहुत बड़ी वस्तु है। यदि इस शक्ति परिधि को व्यक्ति के शरीर के बाहर छोड़ दिया जाता

है, यह दूर-स्थानान्तरण की दिव्य सिद्धि है। जिसके पास बहुत प्रबल गोंग होता है वह बहुत बड़ी वस्तु को स्थानान्तरित कर सकता है, और इसे महान स्थानान्तरण कहा जाता है। जिसका गोंग दुर्बल होता है वह किसी बहुत छोटी वस्तु को स्थानान्तरित कर सकता है, और इसे लघु स्थानान्तरण कहा जाता है। ये दूर-स्थानान्तरण के प्रकार और उनकी उत्पत्ति हैं।

महान अलौकिक परिपथ में सीधे गोंग का अभ्यास सम्मिलित होता है। इस प्रकार, इसके द्वारा विभिन्न परिस्थितियाँ और गोंग के प्रकार सामने आते हैं। यह हमारे सामने एक बहुत विशिष्ट परिस्थिति भी लाएगी। यह परिस्थिति क्या है? हर किसी ने प्राचीन पुस्तकों जैसे देवताओं की एक जीवनकथा, तान-जिंग, ताओ जांग, या शिंगमिंग गुइजी में यह वाक्य "दिन के उजाले में उत्थान करना" *(बाइरी फेइशंग)* पढ़ा होगा। इसका अर्थ है कि कोई व्यक्ति दिन के उजाले में हवा में उठ सकता है। वास्तव में, मैं आपको बताना चाहूँगा कि जैसे ही महान अलौकिक परिपथ खुलता है व्यक्ति उत्थान कर सकता है - यह इतना सरल है। कुछ लोग सोचेंगे कि ऐसे बहुत से लोग होंगे जिनके इतने वर्षों के अभ्यास के बाद महान अलौकिक परिपथ खुल चुके होंगे। मैं यहाँ तक कहूँगा कि यह अविश्वसनीय नहीं होगा यदि दसियों हजार व्यक्ति इस स्तर पर पहुँच चुके हों, क्योंकि साधना अभ्यास में महान अलौकिक परिपथ एक आरम्भिक स्तर है।

तब, किसी ने लोगों को उत्थान करते हुए या हवा में उठते हुए क्यों नहीं देखा? साधारण मानव समाज की दशा में विघ्न नहीं डाला जा सकता, और न ही साधारण मानव समाज को अकारण अवरुद्ध किया जा सकता है या बदला जा सकता है। हर किसी को हवा में उठने की अनुमति कैसे दी जा सकती है? क्या वह एक साधारण मानव समाज कहलाएगा? यह एक प्राथमिक पहलू है। दूसरे दृष्टिकोण से, मनुष्य साधारण लोगों के बीच मनुष्य बने रहने के लिए नहीं जीते, बल्कि अपनी मूल, सच्ची प्रकृति की ओर लौटने के लिए जीते हैं। इसलिए इसके लिए ज्ञानोदय होने का विषय है। यदि कोई देखता है कि कई लोग वास्तव में उत्थान कर सकते हैं, वह भी साधना अभ्यास करना चाहेगा, और वहाँ ज्ञानोदय का विषय नहीं रहेगा। इसलिए, यदि आप साधना द्वारा उत्थान कर पाते हैं, आपको इसे अकारण औरों को दिखाना या प्रदर्शित नहीं करना चाहिए, क्योंकि उन्हें भी साधना करने की आवश्यकता है। परिणामस्वरूप, आपके महान अलौकिक परिपथ के खुल जाने पर, यदि आपकी उंगली का सिरा, या

पैर की उंगली का सिरा, या शरीर का कोई भाग बंधित कर दिया जाता है, आप उत्थान नहीं कर सकेंगे।

जब हमारा महान अलौकिक परिपथ खुलने वाला होता है, एक परिस्थिति आएगी जिसमें कुछ लोग ध्यान में बैठते समय आगे की ओर झुक जाएंगे। क्योंकि व्यक्ति के पीछे का प्रवाह अच्छी प्रकार से खुला है, उसके पीछे का भाग बहुत हल्का महसूस होगा जबकि शरीर के आगे का भाग भारी महसूस होगा। कुछ लोग पीछे की ओर झुक जाते हैं और महसूस करते हैं कि उनके पीछे का भाग भारी है जबकि उनके शरीर के आगे का भाग हल्का महसूस होता है। यदि आपका पूरा शरीर अच्छी तरह खुल गया है, आपको महसूस होगा जैसे आप ऊपर उठ रहे हों, जैसे जमीन से ऊपर उठ रहे हों। जब आप वास्तव में उत्थान कर सकेंगे, आपको उत्थान करने की अनुमति नहीं होगी - किन्तु यह अटल नहीं है। जिनकी दिव्य सिद्धियाँ विकसित होती हैं वे अक्सर दोनों सिरों पर होते हैं : बच्चों में मोहभाव नहीं होते, और न ही वृद्ध लोगों में - विशेषकर वृद्ध महिलाओं में। वे सरलता से इस सिद्धि को विकसित और संरक्षित रख सकते हैं। पुरुषों में, विशेषकर युवा पुरुषों में, जैसे ही उनके पास कोई सिद्धि आती है, वे दिखावे की मानसिकता से ऊपर नहीं उठ पाते। उसी समय, वे इसे साधारण लोगों के बीच प्रतिद्वन्द के लिए भी प्रयोग कर सकते हैं। इस प्रकार इसके बने रहने की अनुमति नहीं है और अभ्यास के दौरान जैसे ही यह विकसित होगी इसे बंधित कर दिया जाएगा। यदि शरीर का एक भाग बंधित किया जाता है, यह व्यक्ति उत्थान नहीं कर सकेगा। कहने का अर्थ यह नहीं है कि आपके लिए इस दशा का होना पूर्णत: निषेध होगा। आपको इसे प्रयोग करने की अनुमति हो सकती है, और कुछ लोग इसे रख पाते हैं।

जहाँ कहीं मैं व्याख्यान देता हूँ ये परिस्थितियाँ होती हैं। जब मैंने शानडोंग में एक कक्षा को पढ़ाया, वहाँ बीजिंग और जीनान[11] के अभ्यासी थे। किसी ने पूछा: "गुरुजी, मेरे साथ क्या हो रहा है? जब मैं चलता हूँ, मुझे लगता है जैसे मैं जमीन छोड़ रहा हूँ। घर में सोते समय भी मुझे ऐसा महसूस होता है जैसे मैं उड़ रहा हूँ। यहाँ तक कि चादरें भी गुब्बारे की तरह उड़ने लगती हैं।" जब मैंने ग्वे-यांग[12] में एक कक्षा ली, वहाँ ग्वे-जू से एक वृद्ध अभ्यासी आई थी जो एक वृद्ध महिला थी। उसके कमरे में दो बिस्तर थे, जिसमें एक बिस्तर एक दीवार के साथ था और दूसरा बिस्तर दूसरी दीवार के साथ। जब वह बिस्तर पर ध्यान में बैठी थी, उसे महसूस हुआ जैसे वह उड़ रही हो, और जब

उसने अपनी आँखें खोलीं उसने स्वयं को दूसरे बिस्तर पर स्थानान्तरित पाया। उसने मन में सोचा, "मुझे अपने बिस्तर पर लौट जाना चाहिए," और वह उड़ कर वापस पहुँच गई।

चिंगदाओ[13] में एक अभ्यासी था जो लंच की छुट्टी के दौरान, जब उसके दफ्तर में आसपास कोई नहीं था, एक बिस्तर पर ध्यान में बैठा। जैसे ही वह वहाँ बैठा, वह ऊपर उठा और तेजी से एक मीटर तक ऊपर-नीचे उठने लगा। ऊपर उठने के बाद वह नीचे आ जाता, और ऐसा होता रहा। बिस्तर की चादर भी उछल कर जमीन पर गिर गई। वह थोड़ा बहुत जोश में था और कुछ डर रहा था। यह ऊपर-नीचे होने का क्रम पूरे लंच के समय में चलता रहा। अन्ततः, दफ्तर की घंटी बजी, और उसने मन में सोचा : "मुझे यह दूसरों को नहीं देखने देना चाहिए। वे आश्चर्य करेंगे कि क्या हो रहा है? मुझे तुरन्त रूक जाना चाहिए।" वह रूक गया। इसलिए वृद्ध लोग अपना आचरण उचित प्रकार रख सकते हैं। यदि यह किसी युवा व्यक्ति के साथ हुआ होता, जब दफ्तर की घंटी बजती वह सोचता : "तुम सब आ कर मुझे उड़ते हुए देखो।" यहीं पर व्यक्ति अपनी दिखावे की मानसिकता को सरलता से नियन्त्रित नहीं कर पाता : "देखा मैंने कितना अच्छा अभ्यास किया है - मैं उड़ सकता हूँ।" जैसे ही व्यक्ति इसका दिखावा करता है, सिद्धि चली जाएगी, क्योंकि इसके इस प्रकार बने रहने की अनुमति नहीं है। हर जगह अभ्यासियों के बीच ऐसी बहुत सी घटनाएँ हैं।

हमारी आवश्यकता है कि सैकड़ों शक्ति नाड़ियाँ बिल्कुल आरम्भ से ही खोल दी जाएं। इस दिन तक, हमारे अस्सी से नब्बे प्रतिशत अभ्यासी उस अवस्था तक पहुँच चुके हैं जहाँ उनके शरीर बहुत हल्के हैं और रोगों से मुक्त हैं। उसी समय, हम कह चुके हैं कि इस कक्षा में आपको न केवल इस अवस्था में धकेल दिया जाता है जहाँ आपका शरीर पूरी तरह शुद्ध हो चुका है, बल्कि आपके शरीर में बहुत सी वस्तुएँ भी स्थापित की जा चुकी हैं जिससे इस कक्षा में आप गोंग विकसित कर सकें। यह उसी प्रकार है जैसे मैं आपको ऊपर उठाऊँ और तब आगे की ओर बढ़ा दूँ। मैं कक्षा में सभी को फा पढ़ा रहा हूँ, और सभी का शिनशिंग भी निरन्तर बदल रहा है। इस सभाग्रह से बाहर जाने के बाद, आपमें से कई लोग भिन्न व्यक्ति की तरह महसूस करेंगे, और आपका दृष्टिकोण निश्चित ही बदलेगा। आप जानेंगे कि भविष्य में अपना आचरण कैसा रखें, और आप इतने भ्रमित नहीं रहेंगे। यह निश्चित ही इस प्रकार होगा। इसलिए, आपका

शिनशिंग पहले ही बढ़ने लगा है।

महान अलौकिक परिपथ की बात की जाए तो, यद्यपि आपको उत्थान करने की अनुमति नहीं है, आपको महसूस होगा जैसे आपका शरीर हल्का हो गया हो, जैसे आप हवा पर चल रहे हों। पहले आप कुछ कदम चलने के बाद थक जाते थे, किन्तु अब यह बहुत सरल है भले ही आप कितना भी चलें। साइकिल चलाते समय आपको महसूस होगा जैसे कोई धकेल रहा हो, और सीढ़ियाँ चढ़ते समय आप नहीं थकेंगे - भले ही वहाँ कितने भी तल हों। यह निश्चित ही इस प्रकार होगा। मैं ऐसा व्यक्ति हूँ जो वह नहीं कहेगा जो वह नहीं कहना चाहता, किन्तु जो मैं कहता हूँ सत्य होना चाहिए। विशेषकर इस परिस्थिति में, यदि मैं फा को सिखाने में सच्चाई नहीं बताता, यदि मैं अविश्वसनीय वक्तव्य देता हूँ, या मैं इधर-उधर की और अकारण बात करता हूँ, तो मैं एक दुष्ट फा सिखा रहा हूँ। मेरे लिए इस प्रकार की वस्तु करना सरल नहीं है, क्योंकि पूरा विश्व देख रहा है। यह अनुमति नहीं है कि कोई भटक जाए।

एक साधारण व्यक्ति केवल इस महान अलौकिक परिपथ को जानेगा, और यह समुचित होगा। वास्तव में, यह समुचित नहीं है। क्योंकि शरीर को पूरी तरह उच्च शक्ति पदार्थ से जितना शीघ्र हो सके परिवर्तित और रूपान्तरित करने के लिए, एक और अलौकिक परिपथ होना चाहिए जो आपके शरीर में सभी शक्ति नाड़ियों को गति में लाए। इसे "*माओयो* [14] अलौकिक परिपथ" कहा जाता है, और इसके बारे में शायद बहुत कम लोगों को जानकारी है। इस शब्द का कभी-कभार पुस्तकों में उल्लेख आता है, किन्तु किसी ने आपको इसे समझाया या बताया नहीं है। इसकी केवल एक सिद्धांत के रूप में चर्चा की जाती है, क्योंकि यह रहस्यों का रहस्य है। हम इसे पूर्णरूप से यहाँ आपको उजागर करेंगे। यह बाइहुइ बिंदु (या ह्वेयिन बिंदु से भी) आरम्भ हो सकता है, और यह बाहर आकर यिन और यैंग के बीच की परिधि रेखा के साथ चलता है। यह तब कान से नीचे आकर कन्धे तक आता है, प्रत्येक अंगुली के साथ चलते हुए, आपके शरीर के किनारे से, और तब आपके पैर के तलवे तक नीचे आता है। तब यह जांघ के अन्दर के भाग से ऊपर की ओर आता है और दूसरी जांघ के अन्दर के भाग से नीचे जाता है, आपके दूसरे पैर के तलवे से निकलते हुए और आपके शरीर के दूसरे भाग से ऊपर आता है। यह दोबारा प्रत्येक अंगुली के साथ चलता है और आपके सर के ऊपर तक पहुँचता है, यह एक आवर्तन पूर्ण होता है। यह माओयो अलौकिक

परिपथ है। दूसरे इसके बारे में एक पुस्तक लिख सकते हैं, और मैंने इसकी व्याख्या कुछ ही शब्दों में कर दी। मैं सोचता हूँ कि इसे एक दिव्य रहस्य नहीं मानना चाहिए, किन्तु और इन वस्तुओं को बहुत अनमोल मानते हैं और अपने शिष्यों को सच्चे रूप से सिखाने के अलावा उनकी चर्चा भी नहीं करते। यद्यपि मैंने इसे उजागर कर दिया है, आपमें से किसी को भी अभ्यास में इसे निर्देशित या नियन्त्रित करने के लिए मनो-विचार का प्रयोग नहीं करना चाहिए। यदि आप करते हैं, आप हमारे फालुन दाफा का अभ्यास नहीं कर रहे हैं। उच्च स्तरों की ओर सच्चा अभ्यास वूवेई की अवस्था में होता है और किसी भी मानसिक क्रिया से मुक्त होता है। आपके शरीर में सभी कुछ पूर्वनिर्मित स्थापित है। वे स्वयं सुचारू होते हैं, और ये आन्तरिक प्रणालियाँ आपका संवर्धन करती हैं; समय आने पर वे स्वयं आवर्तन करेंगी। एक दिन अभ्यास करते समय हो सकता है आपका सर एक ओर से दूसरी ओर झूमेगा। यदि यह इस ओर झूमता है, यह इस ओर आवर्तन कर रहा है। यदि आपका सर दूसरी ओर झूमता है, यह उस ओर आवर्तन कर रहा है। यह दोनों ओर आवर्तन करता है।

जब महान और लघु परिपथ को खोल दिया जाता है, व्यक्ति का सर ध्यान में बैठते समय आगे की ओर हिलेगा, और यह शक्ति के गुजरने का सूचक है। वैसा ही फालुन अलौकिक परिपथ के लिए सत्य है जिसका हम अभ्यास करते हैं; हम केवल इसका इस प्रकार अभ्यास करते हैं। वास्तव में, जब आप अभ्यास नहीं करते, यह स्वयं आवर्तन करता है। यह निरन्तर सदा के लिए घूमता रहेगा; जब आप अभ्यास करते हैं, आप प्रणालियों को सुदृढ़ करते हैं। क्या हमने फा द्वारा अभ्यासियों के संवर्धन की बात नहीं की है? साधारणत:, आप पायेंगे कि आपका अलौकिक परिपथ सदैव आवर्तन करता है। यद्यपि आप अभ्यास नहीं कर रहे हैं, आपके शरीर के बाहर स्थापित शक्ति प्रणालियों की यह परत, जो बड़ी बाह्य नाड़ियों की परत है, आपके शरीर को अभ्यास में चला रही होती है - यह सब स्वचालित है। यह विपरीत दिशा में भी घूम सकती है, क्योंकि यह दोनों ओर घूमती है और निरन्तर आपकी शक्ति नाड़ियों को खोलती है।

तब अलौकिक परिपथ को खोलने का क्या ध्येय है? अलौकिक परिपथ को खोलना भर अभ्यास का ध्येय नहीं है। यदि आपका अलौकिक परिपथ खुल भी जाए, मैं कहूँगा यह तब भी कुछ नहीं है। यदि व्यक्ति की साधना बढ़ती है, अलौकिक परिपथ की पद्धति द्वारा व्यक्ति एक शक्ति नाड़ी द्वारा सैकड़ों शक्ति नाड़ियों को खोलने का ध्येय

बनाता है, और इस प्रकार वह शरीर की सभी शक्ति नाड़ियों को खोल सकता है। हमने पहले ही ऐसा करना आरम्भ कर दिया है। और अभ्यास द्वारा, व्यक्ति महान अलौकिक परिपथ के आवर्तन में पायेगा कि शक्ति नाड़ियाँ एक अंगुली की भाँति बहुत चौड़ी हो जाएंगी और अन्दर बहुत फैल जाएंगी। क्योंकि शक्ति भी बहुत प्रबल हो गयी है, शक्ति प्रवाह के बन जाने पर, यह बहुत चौड़ी और उज्जवल बन जाएगी। यह अब भी कुछ नहीं है। अभ्यास कब समुचित अच्छा कहलाएगा? व्यक्ति की सैकड़ों शक्ति नाड़ियाँ निरन्तर चौड़ी होती जानी चाहिएँ, और शक्ति प्रबल और उज्जवल होती जानी चाहिए। अन्त में, हजारों शक्ति नाड़ियाँ एक साथ जुड़ जाएंगी और शरीर को बिना किसी शक्ति नाड़ियों या एक्यूपंक्चर बिंदुओं वाले शरीर में परिवर्तित कर देंगी; वे एक साथ जुड़ कर एक पूर्ण शरीर बना देंगी। यह शक्ति नाड़ियों को खोलने का उच्चतम प्रयोजन है। ध्येय है मानव शरीर को पूरी तरह उच्च शक्ति पदार्थ से रूपान्तरित करना।

इस बिंदु पर, व्यक्ति का शरीर मूलत: उच्च शक्ति पदार्थ द्वारा रूपांतरित हो चुका होगा। दूसरे शब्दों में, वह त्रिलोक-फा के उच्चतम स्तर पर पहुँच चुका है। मानव भौतिक शरीर उच्चतम सीमा तक सवंर्धित हो चुका होगा। इस समय, व्यक्ति को दूसरी अवस्था का अनुभव होगा। किस प्रकार की अवस्था? वह व्यक्ति बहुत समृद्ध गोंग विकसित कर चुका होगा। एक साधारण व्यक्ति के शरीर को सवंर्धित करने में या त्रिलोक-फा साधना के दौरान, समस्त मानव दिव्य सिद्धियाँ और सभी वस्तुएँ विकसित होंगी। हालांकि, साधारण लोगों के बीच अभ्यास करते हुए, उनमें से अधिकांश बंधित कर दी जाती हैं। इसके अतिरिक्त, व्यक्ति का गोंग स्तम्भ बहुत ऊँचा हो जाएगा। सामर्थ्यवान गोंग द्वारा गोंग के सभी स्वरूप सुदृढ़ किए जाएँगे, जो बहुत प्रबल होंगे। किन्तु वे केवल हमारे इस आयाम में कार्य कर सकते हैं, और दूसरे आयामों में कार्य नहीं कर सकते क्योंकि वे हमारे साधारण मानव शरीरों द्वारा सवंर्धित दिव्य सिद्धियाँ हैं। तब भी, वे बहुतायत में होंगी। विभिन्न आयामों में, और शरीर के विभिन्न आयामों में स्वरूपों के दृष्टिकोण से, वहाँ बहुत से बदलाव आएँगे। आयामों के प्रत्येक स्तर पर जो वस्तुएँ यह शरीर धारण करेगा वे बहुतायत में होंगी और बहुत भयावह दिखाई पड़ेंगी। कुछ लोगों की उनके पूरे शरीरों पर आँखें होंगी, और उनके शरीर के सभी रोम छिद्र आँखें बन जाएँगे। इस व्यक्ति के संपूर्ण आयाम क्षेत्र में आँखें होंगी। क्योंकि यह बुद्ध विचारधारा का गोंग है, कुछ लोग अपने पूरे शरीरों पर बोधिसत्व या बुद्ध की छवि

धारण करेंगे। सभी प्रकार के गोंग बहुत सघन अवस्था में पहुँच चुके होंगे।

इस समय, एक अवस्था जिसे "सर के ऊपर तीन पुष्प एकत्रित होना" कहा जाता है होगी। यह एक बहुत स्पष्ट अवस्था है जो दर्शनीय है। एक निम्न स्तर के दिव्य नेत्र द्वारा भी इसे देखा जा सकता है। व्यक्ति के सर के ऊपर तीन पुष्प होंगे। एक कमल पुष्प है, किन्तु यह हमारे भौतिक आयाम का कमल पुष्प नहीं है। दो और पुष्प भी दूसरे आयाम से हैं और अत्यधिक सुन्दर हैं। तीनों पुष्प बारी-बारी से व्यक्ति के सर के ऊपर आवर्तन करते हैं। वे घड़ी की दिशा या उसकी विपरीत दिशा में घूमते हैं, व प्रत्येक पुष्प स्वयं भी घूम सकता है। प्रत्येक पुष्प के पास एक बड़ा स्तम्भ होगा जो पुष्प के व्यास जितना चौड़ा होगा। ये तीन बड़े स्तम्भ निकल कर आकाश के ऊपर तक पहुँचेंगे, किन्तु वे गोंग स्तम्भ नहीं हैं - वे केवल इस अवस्था में हैं और अत्यन्त आश्चर्यजनक हैं। यदि आप उन्हें देख सकें, आप भी स्तब्ध रह जाएँगे। जब व्यक्ति की साधना इस अवस्था तक पहुँचती है, व्यक्ति का शरीर श्वेत और शुद्ध होगा, और त्वचा स्वच्छ और कोमल होगी। इस बिंदु पर, व्यक्ति त्रिलोक-फा साधना के उच्चतम स्वरूप पर पहुँच चुका होगा, किन्तु यह अन्तिम ध्येय नहीं है। व्यक्ति को अब भी निरन्तर साधना अभ्यास करते रहने और आगे बढ़ने की आवश्यकता है।

जैसे व्यक्ति आगे बढ़ता है वह त्रिलोक-फा और पर-त्रिलोक-फा के बीच के स्तर में प्रवेश करता है, जिसे शुद्ध श्वेत शरीर की अवस्था कहा जाता है (इसे "रत्न श्वेत शरीर" भी कहा जाता है)। जब भौतिक शरीर की साधना त्रिलोक-फा के उच्चतम स्वरूप पर पहुँच जाती है, यह केवल यह है कि मानव भौतिक शरीर उच्चतम स्वरूप में रूपान्तरित हो चुका है। जब पूरा शरीर वास्तव में इस स्वरूप में होता है, यह पूरी तरह उच्च शक्ति पदार्थ से बना होता है। इसे शुद्ध श्वेत शरीर क्यों कहा जाता है? यह इसलिए क्योंकि यह शरीर पहले ही उच्चतम स्तर की शुद्धता तक पहुँच गया है। जब इसे दिव्य नेत्र द्वारा देखा जाता है, पूरा शरीर पारदर्शी होता है- एक पारदर्शी शीशे की भाँति। जब आप इसे देखते हैं वहाँ कुछ नहीं होता, यह ऐसी अवस्था दर्शाएगा। सरल शब्दों में, यह शरीर पहले ही एक बुद्ध शरीर है। यह इसलिए क्योंकि उच्च शक्ति पदार्थ से निर्मित शरीर पहले ही हमारे भौतिक शरीरों से भिन्न है। इस बिंदु पर, सभी दिव्य सिद्धियाँ और अलौकिक सिद्धियाँ तुरन्त छोड़ दी जाएंगी। उन्हें एक बहुत गहन आयाम में रख दिया जाएगा, क्योंकि वे व्यर्थ हैं और किसी कार्य के लिए उपयोगी नहीं होंगी। भविष्य में एक

दिन जब आप साधना में सफल होते हैं, आप पीछे मुड़ कर अपनी साधना अभ्यास की यात्रा की समीक्षा उन्हें निकाल कर देख सकते हैं। इस समय, केवल दो वस्तुएँ शेष रहेंगी : गोंग स्तम्भ अब भी रहेगा, और संवर्धित अमर शिशु बहुत बड़ा हो चुका होगा। किन्तु दोनों एक बहुत गहरे आयाम में होते हैं और साधारण स्तर के दिव्य नेत्र वाले किसी व्यक्ति द्वारा नहीं देखे जा सकते। जो देखा जा सकता है वह यह कि इस व्यक्ति का शरीर पारदर्शी है।

क्योंकि शुद्ध श्वेत शरीर की अवस्था केवल एक माध्यमिक स्तर है, आगे के साधना अभ्यास द्वारा व्यक्ति वास्तव में पर-त्रिलोक-फा साधना आरम्भ करेगा, जिसे बुद्ध शरीर की साधना भी कहा जाता है। संपूर्ण शरीर गोंग से बना होगा। अब तक व्यक्ति का शिनशिंग स्थिर हो चुका होगा। वह साधना अभ्यास का आरम्भ एक नए सिरे से करेगा और दिव्य सिद्धियाँ पूर्णत: दोबारा विकसित करेगा, और उन्हें अब "दिव्य सिद्धियाँ" नहीं कहना चाहिए। उन्हें "बुद्ध फा की अलौकिक शक्तियाँ" कहना चाहिए, क्योंकि वे सभी आयामों में अपनी असीमित शक्ति के साथ कार्यशील हो सकती हैं। जैसे आप भविष्य में अपना साधना अभ्यास जारी रखेंगे, आप उच्च स्तरों की वस्तुएँ, साधना का अभ्यास कैसे किया जाए, और साधना अभ्यास के स्वरूप स्वयं जान जायेंगे।

उत्साह का मोहभाव

मैं एक विषय के बारे में बताऊँगा जो उत्साह के मोहभाव से संबंधित है। अनेक लोगों ने बहुत लम्बे समय तक चींगोंग का अभ्यास किया है। ऐसे भी लोग हैं जिन्होंने इसका कभी अभ्यास नहीं किया, किन्तु सत्य और मानव जीवन के अर्थ की खोज और चिन्तन किया है। एक बार हमारे फालुन दाफा को सीखने पर, वे तुरन्त जीवन के अनेक प्रश्नों को समझ जाते हैं जो वे समझना चाहते थे किन्तु उत्तर नहीं दे पाते थे। कदाचित उनके मन का उत्थान होने के साथ, वे बहुत उत्साहित हो जाएंगे - यह निश्चित है। मैं जानता हूँ कि एक सच्चा अभ्यासी इसका वजन जानेगा और हृदय से आभार करेगा। किन्तु यह समस्या अक्सर आती है : मानवीय उत्तेजना के कारण, व्यक्ति अनावश्यक उत्साह उत्पन्न कर लेगा। यह व्यक्ति के बर्ताव को, कार्य करने के तरीके में, साधारण

मानव समाज में दूसरों के साथ मेल-जोल में, या साधारण मानव समाज के वातावरण में, असाधारण कर देता है। मैं कहूँगा कि यह अस्वीकार्य है।

हमारी पद्धति में अधिकांश लोग साधारण मानव समाज में साधना अभ्यास करेंगे, इसलिए आपको साधारण मानव समाज से स्वयं को दूर नहीं कर लेना चाहिए और आपको एक स्पष्ट मन से साधना करनी चाहिए। एक-दूसरे के बीच संबंध सामान्य बने रहने चाहिए। नि:संदेह, आपका एक बहुत ऊँचा शिनशिंग स्तर और एक उचित मन है। आप अपने शिनशिंग और अपने स्तर में सुधार करेंगे; आप बुरे कार्य नहीं करते और केवल अच्छे कार्य करते हैं - ये केवल इसी प्रकार दिखाई देते हैं। कुछ लोग स्वयं इस प्रकार बर्ताव करते हैं जैसे या तो वे मानसिक रूप से असामान्य हैं या उन्होंने इस सांसारिक जगत को बहुत देख लिया है। वे वैसी वस्तुएँ कहते हैं जो और लोग नहीं समझ सकते। और लोग कहेंगे : "ऐसा कैसे है कि जो व्यक्ति फालुन दाफा सीखता है इस प्रकार हो जाता है? ऐसा लगता है जैसे उसे कोई मानसिक समस्या हो।" वास्तव में, ऐसा नहीं है। वह केवल अति उत्साहित है और इसलिए बिना सामान्य बुध्दि के सनकी जान पड़ता है। इसके बारे में सब सोचें : आपका इस प्रकार का बर्ताव करना भी अनुचित है, और आप एक दूसरी सीमा तक चले गए हैं- जो दोबारा एक मोहभाव है। आपको इसे छोड़ देना चाहिए और साधारण मानव समाज में और सब लोगों की तरह सामान्य रूप से रहते हुए साधना करनी चाहिए। यदि साधारण लोगों के बीच दूसरे लोग आपको सनकी पाते हैं, वे आपके साथ संबंध नहीं रखेंगे और आपसे दूरी बना कर रखेंगे। कोई भी आपको शिनशिंग में सुधार करने के अवसर उपलब्ध नहीं करेगा, न ही आपको एक सामान्य व्यक्ति की तरह मानेगा- मैं कहूँगा कि यह उचित नहीं है! इसलिए, सभी को इस विषय पर अवश्य ध्यान देना चाहिए और अपना बर्ताव उचित रखना चाहिए।

हमारा अभ्यास साधारण पद्धतियों की तरह नहीं है जो व्यक्ति को भ्रमित, अचेत अवस्था में, या सनकी बना देती हैं। हमारे अभ्यास में आवश्यक है कि आप पूरी जागरूकता के साथ स्वयं साधना करें। कोई हमेशा कहता है : "गुरुजी, जैसे ही मैं अपनी आँखें बंद करता हूँ मेरा शरीर झूमने लगता है।" मैं कहूँगा कि यह इस प्रकार होना आवश्यक नहीं है। आपने पहले ही अपनी मुख्य चेतना को छोड़ने की आदत बना ली है। जैसे ही आप अपनी आँखें बंद करते हैं आप मुख्य चेतना को शिथिल कर देते

हैं, और यह लुप्त हो जाती है। आपने पहले ही यह आदत डाल ली है। यहाँ बैठे हुए, आपका शरीर क्यों नहीं झूमता? यदि आप वह अवस्था बनाए रखें जिसमें आपकी आँखें खुली होती हैं, तो क्या आँखों के धीमे से बंद होने पर आपका शरीर झूमेगा? निश्चित ही नहीं। आप सोचते हैं कि चीगोंग का अभ्यास इस प्रकार करना चाहिए और आपने ऐसी धारणा बना ली है। जैसे ही आप आपनी आँखें बंद करते हैं, आप यह जाने बिना कि आप कहाँ हैं लुप्त हो जाते हैं। हम कह चुके हैं कि आपकी मुख्य चेतना जागरूक होनी चाहिए, क्योंकि यह अभ्यास आपकी अपनी प्रकृति का संवर्धन करता है। आपको एक चेतन मन के साथ आगे बढ़ना चाहिए। हमारा एक ध्यान का व्यायाम भी है। हम ध्यान का अभ्यास कैसे करते हैं? हमारी सभी से आवश्यकता है कि आप कितना भी गहरा ध्यान करें, आपको पता होना चाहिए कि आप यहाँ अभ्यास कर रहे हैं। आपको अचेतनता की अवस्था में जाने की सख्त मनाही है जहाँ आप कुछ नहीं जानते। तब, कैसी विशिष्ट अवस्था उत्पन्न होगी? जब आप बैठते हैं, आपको आश्चर्यजनक और बहुत आरामदेह अनुभव होना चाहिए जैसे एक अण्डे के कवच में बैठे हों; आप व्यायाम का अभ्यास करते हुए स्वयं के बारे में जागरूक होंगे, किन्तु आपको अनुभव होगा जैसे आपका पूरा शरीर हिल नहीं सकता। हमारे अभ्यास में इसी प्रकार होना चाहिए। एक और प्रकार की अवस्था होती है जिसमें जब व्यक्ति कुछ समय बैठता है, उसे लगता है कि उसके पैर चले गए हैं, और सोच नहीं पाता कि पैर कहाँ गए; शरीर भी चला जाता है; बाहें भी चली जाती हैं; हाथ भी चले जाते हैं- केवल सर शेष रहता है। जैसे व्यक्ति अभ्यास करता रहता है, वह पाता है कि सर भी चला गया, और उसका केवल अपना मन बचा है, एक थोड़ा सा विचार कि वह यहाँ अभ्यास कर रहा है। यदि हम इस अवस्था को प्राप्त कर सकें तो यह समुचित होगा। ऐसा क्यों है? जब व्यक्ति इस अवस्था में अभ्यास करता है, शरीर पूर्ण रूप से रूपांतरित हो रहा होता है, और यह परिपूर्ण अवस्था है। हम इसलिए चाहते हैं कि आप इस शान्त अवस्था को प्राप्त करें। हालांकि, आपको निद्रा नहीं आनी चाहिए या अचेतन नहीं होना चाहिए, अन्यथा अच्छी वस्तुओं का अभ्यास कोई और कर रहा होगा।

हमारे सभी अभ्यासियों को ध्यान रखना चाहिए कि वे साधारण लोगों के बीच कभी भी बहुत असामान्य रूप से बर्ताव न करें। यदि आप साधारण लोगों के बीच बुरा उदाहरण प्रस्तुत करते हैं, दूसरे लोग कह सकते हैं : "ऐसा क्यों है कि वे लोग जो फालुन

दाफा सीखते हैं सब इस प्रकार बर्ताव करते हैं?" यह उसी प्रकार है जैसे फालुन दाफा के मान का अनादर करना, इसलिए इस विषय पर अवश्य ध्यान रखें। दूसरे विषयों में और साधना अभ्यास के क्रम के दौरान, व्यक्ति को ध्यान रखना चाहिए कि वह उत्साह का मोहभाव उत्पन्न न करे- इस मानसिकता का असुरों द्वारा बहुत सरलता से लाभ उठाया जा सकता है।

बोल-चाल की साधना

बोल-चाल की साधना अतीत में धर्मों में भी आवश्यक रही है। यद्यपि, बोल-चाल की साधना जिसका संदर्भ धर्मों में था मुख्य रूप से पेशेवर अभ्यासियों से था - भिक्षु और ताओ जो बोलने के लिए मुँह नहीं खोलते थे। क्योंकि वे पेशेवर अभ्यासी थे, वे मानवीय मोहभावों को और अधिक सीमा तक छोड़ना चाहते थे। वे विश्वास करते थे कि जैसे ही व्यक्ति सोचता है, यह कर्म है। धर्मों ने कर्म को "अच्छा कर्म" और "दुष्कर्म" में वर्गीकृत किया है। भले ही यह अच्छा कर्म है या दुष्कर्म, बुद्ध विचारधारा के शून्यवाद के मार्ग से या ताओ विचारधारा के रिक्तवाद के मार्ग से, इसे उत्पन्न नहीं किया जाना चाहिए। इसलिए, वे कहते थे कि वे कुछ नहीं करेंगे क्योंकि वे घटनाओं के कर्म संबंधों को नहीं देख सकते, अर्थात, यह कि वे विषय अच्छे हैं या बुरे, या उनके क्या कर्म संबंध हैं। एक सामान्य अभ्यासी जो इतने उच्च स्तर पर नहीं पहुँचा है इन वस्तुओं को नहीं देख सकता, इसलिए उसे चिन्ता होगी कि हालांकि कोई वस्तु सतह पर अच्छी जान पड़ती है, एक बार किए जाने पर यह बुरी हो सकती है। इसलिए, वह वूवेई का अभ्यास करने का ध्यान रखता है और कुछ नहीं करेगा जिससे वह कर्म उत्पन्न करने से बच सके। यह इसलिए क्योंकि जैसे ही कर्म उत्पन्न होता है, उसे इसे समाप्त करना होता है और इसके लिए पीड़ा भोगनी होती है। उदाहरण के लिए, हमारे अभ्यासियों के लिए यह पूर्व निश्चित है कि वे किस अवस्था पर ज्ञान प्राप्त करेंगे। यदि आप अनावश्यक रूप से आधे रास्ते में इसमें कुछ मिला दें, यह आपके पूरे साधना अभ्यास में कठिनाइयाँ उत्पन्न करेगा। इसलिए व्यक्ति वूवेई का अभ्यास करता है।

बुद्ध विचारधारा में बोल-चाल की साधना की आवश्यक होती है, अर्थात, व्यक्ति की बोल-चाल उसके विचारों द्वारा निर्देशित होती है। परिणामस्वरूप, व्यक्ति के

विचारों में उद्देश्य होते हैं। यदि व्यक्ति का मन स्वयं थोड़ा-बहुत सोचना चाहता है, कुछ स्पष्ट करना चाहता है, कुछ करना चाहता है, या अपने संवेदनशील अंगों और चार हाथ-पैरों को चलाना चाहता है, यह साधारण लोगों के बीच एक मोहभाव हो सकता है। उदाहरण के लिए, एक-दूसरे के बीच मतभेद होते हैं, जैसे "तुम अच्छे हो, किन्तु वह अच्छा नहीं है," या "तुम्हारी साधना अच्छी है, किन्तु उसकी नहीं।" ये स्वयं में मतभेद हैं। आइए उस बारे में बात करें जो सामान्य है, जैसे "मैं यह या वह करना चाहता हूँ," या "इस कार्य को इस प्रकार या उस प्रकार करना चाहिए।" हो सकता है यह अनजाने में किसी को दु:ख पहुँचाए। क्योंकि आपसी मतभेद सभी बहुत जटिल होते हैं, व्यक्ति अनजाने में कर्म उत्पन्न कर सकता है। परिणामस्वरूप, व्यक्ति पूरी तरह अपना मुँह बंद रखना चाहता है और कुछ नहीं बोलना चाहता। अतीत में, धर्म बोल-चाल की साधना को बहुत गम्भीरता से लेते थे, और यही धर्म में सिखाया गया है।

हमारे फालुन दाफा अभ्यासियों में से अधिकांश (उन्हें छोड़ कर जो पेशेवर अभ्यासी हैं) साधारण लोगों के बीच साधना करते हैं। इसलिए वे साधारण मानव समाज में सामान्य जीवन जीने से और समाज से मिलने-जुलने में बच नहीं सकते। सभी के पास एक व्यवसाय है और उसे यह अच्छे प्रकार करना चाहिए। कुछ लोगों को अपना कार्य बातचीत द्वारा करना होता है। इसलिए यह एक मतभेद नहीं है। यह मतभेद क्यों नहीं है? बोल-चाल की साधना जिससे हमारा तात्पर्य है वह दूसरों से बहुत भिन्न है। साधना मार्गों में भिन्नताओं के कारण, आवश्यकताएँ भी भिन्न होती हैं। हम सबको अभ्यासी के शिनशिंग से बोलना चाहिए न कि मतभेद उत्पन्न करने चाहिएँ या कुछ अनुचित कहना चाहिए। अभ्यासियों की भाँति, हमें स्वयं को फा के आदर्श से मापना चाहिए जिससे यह निर्धारित हो सके कि हमें अमुक बातें कहनी चाहिएँ या नहीं। जो कहना चाहिए उससे समस्या उत्पन्न नहीं होगी यदि व्यक्ति फा के अनुसार अभ्यासियों के शिनशिंग आदर्श का पालन करता है। इसके अतिरिक्त, हमें फा को फैलाने के लिए बोलना आवश्यक होता है, इसलिए नहीं बोलना असंभव है। बोल-चाल की साधना जो हम सिखाते हैं उससे तात्पर्य है : कि जो व्यक्ति के मान और निजी-लाभ से संबंधित है जिसे साधारण लोगों के बीच नहीं छोड़ा जा सकता, वह जिसका समाज में अभ्यासियों के वास्तविक कार्यों से कोई संबंध नहीं है, समान पद्धति के अभ्यासियों के बीच बिन बुध्दि की गपशप, वे मोहभाव जो दिखावे को उजागर करते हैं, सुनी-सुनाई

बातें या अफवाहें फैलाना, या कुछ सामाजिक विषयों पर वे वार्तालाप जिनके बारे में व्यक्ति उत्साहित है। मैं मानता हूँ कि ये सब साधारण लोगों के मोहभाव हैं। मैं सोचता हूँ कि इन क्षेत्रों में हमें ध्यान रखना चाहिए कि हम क्या कहते हैं- यह बोल-चाल की साधना है जिससे हमारा तात्पर्य है। अतीत में भिक्षु इन वस्तुओं को बहुत गम्भीरता से लेते थे, क्योंकि जैसे ही व्यक्ति सोचना आरम्भ करता है वह कर्म उत्पन्न करेगा। इसलिए, वे "शरीर, वचन, और मन" की साधना किया करते थे। शरीर की साधना से अर्थ था कि व्यक्ति को बुरे कार्य नहीं करने चाहिएँ। वचन की साधना का अर्थ था कि व्यक्ति को बोलना नहीं चाहिए। मन की साधना का अर्थ था कि व्यक्ति को सोचना भी नहीं चाहिए। अतीत में, मठों की पेशेवर साधना में इन वस्तुओं की कठोर आवश्यकताएँ थीं। हमें एक अभ्यासी के शिनशिंग आदर्श के अनुसार बर्ताव करना चाहिए। यह उचित होना चाहिए कि व्यक्ति समझ सके कि उसे क्या बोलना या क्या नहीं बोलना चाहिए।

---

1. बीगू — "अनाज का बहिष्कार"; खाना व पानी से परहेज के लिए प्राचीन शब्द।
2. चोंगचिंग — दक्षिण-पश्चिम चीन का सबसे अधिक जनसंख्या वाला शहर।
3. त्येन-ज़ ज्वांग — ताओ विचारधारा में खड़े होकर करने वाला एक व्यायाम।
4. बाई हुइ — सर की चोटी पर स्थिति एक्यूपंक्चर बिंदु।
5. शशन — मुख्य आत्मा के लिए एक ताओ शब्द।
6. ल्यू दोंगबिन — ताओ विचारधारा में आठ देवताओं में से एक।
7. शक्ति नाड़ी — चीनी चिकित्सा में, इन्हें ची की वाहिकाएँ कहा जाता है जिनकी शक्ति प्रवाह के लिए एक जटिल रचना होती है।
8. तीन यिन और तीन यैंग — दोनों हाथों और पैरों की तीन यिन और तीन यैंग नाड़ियों के लिए एक शब्द।
9. च्येन-कुन — आकाश और पृथ्वी।
10. ह-च — नदी मार्ग।
11. जीनान — शान्डोंग प्रान्त की राजधानी।
12. ग्वेयांग — ग्वेजू प्रान्त की राजधानी।
13. चिंगदाओ — शान्डोंग प्रान्त में एक समुद्रतटीय नगर।
14. माओ-यो — शरीर के यिन और यैंग भागों के बीच की सीमा रेखा।

उपदेश नौ

चीगोंग और शारीरिक व्यायाम

साधारण स्तर पर, लोग सहज ही चीगोंग को शारीरिक व्यायामों से संबंधित मानते हैं। नि:संदेह, एक निम्न स्तर पर, जहाँ तक एक स्वस्थ शरीर प्राप्त करने का प्रश्न है चीगोंग और शारीरिक व्यायाम समान हैं। किन्तु इसकी विशिष्ट व्यायाम क्रियाएँ और अपनाई गई पद्धतियाँ शारीरिक व्यायामों से बहुत भिन्न हैं। शारीरिक व्यायामों द्वारा एक स्वस्थ शरीर प्राप्त करने के लिए, व्यक्ति को व्यायाम की मात्रा को बढ़ाते रहने और प्रशिक्षण को तीव्र करने की आवश्यकता होती है। चीगोंग अभ्यास, हालांकि, ठीक विपरीत है, क्योंकि इसमें गति की आवश्यकता नहीं होती। यदि कोई गति क्रिया होती है, यह सौम्य, धीमी, और घुमावदार होती है। यह बिना गति के और शान्त भी होती है- यह शारीरिक व्यायामों से स्वरूप में बहुत भिन्न होती है। एक उच्च स्तर के दृष्टिकोण से, चीगोंग केवल आरोग्य और स्वास्थ्य तक सीमित नहीं है, क्योंकि इसमें बहुत-कुछ उच्च स्तरों और गहन आधार की वस्तुओं का समावेश होता है। चीगोंग साधारण लोगों के स्तर पर कुछ वस्तुओं का ऊपरी ज्ञान भर नहीं है। यह दिव्य है और इसकी विभिन्न स्तरों पर विभिन्न अभिव्यक्तियाँ हैं। यह ऐसा कुछ है जो साधारण लोगों से कहीं आगे है।

जहाँ तक व्यायामों के प्रकार का प्रश्न है, उनमें भी बहुत भिन्नताएँ हैं। इस आधुनिक स्तर की प्रतियोगिता के लिए शरीर को तैयार करने के लिए और इसकी आवश्यकताओं पर पहुँचने के लिए, एक खिलाड़ी, विशेषकर आज के खिलाड़ी को व्यायाम की मात्रा को बढ़ाने की आवश्यकता होती है। इसलिए, व्यक्ति को अपना शरीर हमेशा उत्कृष्ट अवस्था में रखना होता है। इस ध्येय को प्राप्त करने के लिए, व्यक्ति को व्यायाम की मात्रा बढ़ानी होती है जिससे शरीर के अन्दर रक्त का प्रवाह उचित प्रकार से हो सके, उपापचय में वृध्दि हो सके, और शरीर हमेशा एक उन्नत अवस्था में रह सके। उपापचय में वृध्दि की आवश्यकता क्यों होती है? यह इसलिए क्योंकि एक खिलाड़ी का शरीर प्रतियोगिता के लिए हमेशा उन्नत और बेहतर अवस्था में होना

चाहिए। मानव शरीर अनेक कोशिकाओं से निर्मित होता है। इन सब की निम्न प्रकार की प्रक्रिया होती है : नई विभाजित हुई कोशिका का जीवन बहुत क्रियाशील होता है, और कोशिका एक विकास की अवस्था दर्शाती है। जब यह उच्चतम बिंदु तक विकसित हो चुकी होती है, यह और अधिक विकसित नहीं हो सकती और इसमें केवल अपने निम्नतम बिंदु की ओर गिराव आ सकता है। एक नई कोशिका तब इसे प्रतिस्थापित कर देगी। उदाहरण के लिए एक कोशिका सुबह 6 बजे विभाजित होती है और विकास की अवस्था दर्शाती है। जब यह 8 बजे, 9 बजे, या 10 बजे तक पहुँचती है, ये सब बहुत अच्छे समय हैं। जब तक दोपहर आती है, यह और अधिक विकास नहीं कर सकती, और केवल नीचे की ओर जा सकती है। इस बिंदु पर, कोशिका का आधा शेष जीवन अब भी बचा है, किन्तु यह शेष आधा एक खिलाड़ी की प्रतियोगिता की अवस्था के लिए अनुपयुक्त है।

तब, क्या किया जाना चाहिए? व्यक्ति को प्रशिक्षण और तीव्र कर देना चाहिए और रक्त के प्रवाह को बढ़ाना चाहिए, और तब नई विभाजित कोशिकाएँ पुरानी को प्रतिस्थापित कर सकती हैं। यह इस मार्ग को अपनाता है। कहने का अर्थ है, कोशिका का पूरा जीवन पूर्ण होने से पहले या जब इसका केवल आधा जीवन ही हुआ होता है, इसे प्रतिस्थापित कर दिया जाता है। शरीर इस प्रकार हमेशा प्रबल बना रहेगा और विकास की अवस्था में रहेगा। किन्तु कोशिकाएँ इस प्रकार अनगिनत समय तक विभाजित नहीं हो सकतीं, क्योंकि कोशिका विभाजन की संख्या सीमित होती है। उदाहरण के लिए मानिये कि एक कोशिका अपने जीवन में एक सौ बार विभाजित हो सकती है। वास्तव में, यह दस लाख से भी अधिक बार विभाजित हो सकती है। और मानिये कि जब एक कोशिका एक सामान्य व्यक्ति के लिए सौ बार विभाजित होती है, वह सौ वर्ष तक जी सकता है। किन्तु अब इस कोशिका ने अपना केवल आधा जीवन जिया है, इसलिए वह केवल पचास वर्ष तक जी सकता है। किन्तु हमने खिलाड़ियों के लिए कोई बड़ी समस्याएँ होती नहीं देखी हैं, क्योंकि खिलाड़ियों को आजकल तीस से पहले की उम्र में अवकाश ले लेना पड़ता है। विशेषकर, अब प्रतियोगिता स्तर बहुत ऊँचा है, और अवकाश प्राप्त खिलाड़ियों की संख्या भी बहुत अधिक है। एक खिलाड़ी इस प्रकार एक सामान्य जीवन पुन: आरम्भ कर सकता है और वह अधिक प्रभावित प्रतीत नहीं होगा। सैद्धांतिक रूप से, यह अवश्य ही इस प्रकार है। शारीरिक व्यायाम

व्यक्ति को एक स्वस्थ शरीर बनाए रखने में मदद कर सकते हैं, किन्तु ये उसके जीवन को छोटा कर देंगे। देखने पर, एक खिलाड़ी अपनी किशोरावस्था में बीस वर्ष की उम्र का दिखाई पड़ता है, जबकि बीस वर्ष के आसपास का व्यक्ति तीस का दिखाई पड़ता है। एक खिलाड़ी जल्दी उम्र पकड़ता हुआ प्रतीत होता है। यदि इसमें कोई लाभ है, तो एक विपरीत दृष्टिकोण से एक हानि भी होगी। वास्तव में, यह इस मार्ग को अपनाता है।

चीगोंग अभ्यास शारीरिक व्यायामों से ठीक विपरीत होता है। इसमें थका देने वाली गति क्रियाओं की आवश्यकता नहीं होती। यदि कोई गति होती है, यह सौम्य, धीमी, और घुमावदार होती है। यह इतनी सौम्य और धीमी होती है कि यह बिना गति के या शान्त अवस्था में भी होती है। आप जानते हैं कि ध्यान में बैठने की साधना पद्धति में शान्त अवस्था की आवश्यकता होती है। सभी कुछ, जैसे हृदय का धड़कना और रक्त प्रवाह, धीमा पड़ जाएगा। भारत में, ऐसे अनेक योग आचार्य हैं जो कई दिनों तक पानी के अन्दर बैठ सकते हैं या जमीन के अन्दर दबे रह सकते हैं। वे स्वयं को पूरी तरह शान्त कर सकते हैं और अपने हृदय की धड़कन को भी नियन्त्रित कर सकते हैं। उदाहरण के लिए यदि व्यक्ति की कोशिकाएँ दिन में एक बार विभाजित होती हैं। एक अभ्यासी अपने शरीर की कोशिकाओं को दो दिन में एक बार, एक सप्ताह में एक बार, आधे महीने में एक बार, या उससे भी अधिक समय में विभाजित कर सकता है। उसने तब अपने जीवन को पहले ही बढ़ा लिया है। इसका संदर्भ केवल उन अभ्यासों से है जो केवल मन की साधना करते हैं और शरीर की नहीं, क्योंकि वे भी इसे प्राप्त कर सकते हैं और अपने जीवन को बढ़ा सकते हैं। कोई सोच सकता है : "क्या व्यक्ति का जीवनकाल पूर्व-निर्धारित नहीं होता? बिना शरीर की साधना किए हुए कोई कैसे अधिक जी सकता है?" सही है। यदि किसी अभ्यासी का स्तर तीन लोकों से आगे पहुँचता है, उसके जीवन को बढ़ाया जा सकता है, किन्तु सतह पर वह बहुत वृद्ध दिखाई पड़ेगा।

एक सच्चा अभ्यास जो शरीर की साधना करता है व्यक्ति के शरीर की कोशिकाओं में एकत्रित उच्च शक्ति पदार्थ को निरन्तर जमा करेगा और निरन्तर इसके घनत्व को बढ़ाएगा जिससे वे साधारण व्यक्ति की कोशिकाएँ धीरे-धीरे क्षीण हो सकें और प्रतिस्थापित हो सकें। इस समय एक गुणात्मक बदलाव आएगा, और यह व्यक्ति सदा के लिए युवा बना रहेगा। नि:संदेह, साधना का क्रम बहुत धीमा और निरन्तर होता

है, और व्यक्ति को बहुत त्याग करने की आवश्यकता होती है। व्यक्ति के लिए शारीरिक और मानसिक रूप से स्वयं को दृढ़ करना बहुत सरल नहीं होता। क्या व्यक्ति दूसरों के साथ शिनशिंग मतभेद में शान्त रह सकता है? क्या वह प्रभावमुक्त रहेगा जब स्वयं अपने, निजी लाभ दाव पर लगे हों? ऐसा करना बहुत कठिन है, इसलिए ऐसा नहीं है कि जब तक व्यक्ति इस ध्येय को प्राप्त करना चाहता है, वह इसे प्राप्त कर सकता है। केवल जब व्यक्ति के शिनशिंग और द में सुधार हो चुका होता है केवल तभी वह इस ध्येय को प्राप्त कर सकता है।

कई लोग चीगोंग को साधारण शारीरिक व्यायाम मानते रहे हैं, जबकि वास्तव में अन्तर बहुत अधिक है; वे बिल्कुल भी समान वस्तुएँ नहीं हैं। केवल जब निम्नतम स्तर पर ची का अभ्यास किया जाता है, जो एक स्वस्थ शरीर पाने के लिए आरोग्य और स्वास्थ्य के लिए है, तब यह निम्नतम स्तर का ध्येय शारीरिक व्यायामों के समान है। एक उच्च स्तर पर, हालांकि, वे पूरी तरह भिन्न वस्तुएँ हैं। चीगोंग में शरीर के शुद्धिकरण का भी अपना उद्देश्य है और, इसके अतिरिक्त, अभ्यासियों के लिए दिव्य नियमों का पालन करने की आवश्यकता होती है न कि साधारण लोगों के नियमों का। किन्तु शारीरिक व्यायाम केवल साधारण लोगों के लिए हैं।

मनो-विचार

जहाँ तक मनो-विचार का प्रश्न है, इसका संबंध मन की गतिविधियों से है। साधकों के समुदाय में, मस्तिष्क में मन की गतिविधियों को किस प्रकार देखा जाता है? यह विभिन्न प्रकार के मानव विचारों (मनो-विचार) को किस प्रकार देखता है? और वे किस प्रकार प्रकट होते हैं? आधुनिक चिकित्सा आज भी मानव मस्तिष्क के अपने शोध में अनेक प्रश्नों को हल नहीं कर सकती, क्योंकि यह उतना सरल नहीं है जितना हमारे शरीरों की सतह का अध्ययन करना। गहरे स्तरों पर, विभिन्न आयाम विभिन्न स्वरूप धारण कर लेते हैं। किन्तु यह उस प्रकार भी नहीं है जैसा कुछ चीगोंग गुरुओं ने कहा है। कुछ चीगोंग गुरु स्वयं भी नहीं जानते कि क्या हो रहा है, और न ही वे इसे स्पष्ट रूप से समझा सकते हैं। वे सोचते हैं कि एक बार वे अपने मन का प्रयोग करते हैं और एक विचार उत्पन्न करते हैं, वे कुछ कर सकेंगे। वे दावा करते हैं कि वे वस्तुएँ उनके

विचारों के द्वारा या उनके मनो-विचार के द्वारा की गई हैं। वास्तव में, वे वस्तुएँ उनके मनो-विचार द्वारा बिल्कुल नहीं की जातीं।

सर्वप्रथम, व्यक्ति के विचारों के मूल के बारे में बात करते हैं। प्राचीन चीन में, एक वाक्य था "हृदय द्वारा सोचना।" इसे हृदय द्वारा सोचना क्यों कहा जाता था? प्राचीन चीनी विज्ञान बहुत विकसित था क्योंकि इसकी शोध सीधे मानव शरीर, जीवन, और विश्व जैसी वस्तुओं पर केन्द्रित होती थी। कुछ लोग वास्तव में महसूस करते हैं कि यह उनका हृदय है जो सोचता है, जबकि दूसरे महसूस करते हैं कि यह उनका मस्तिष्क है जो सोचता है। ऐसी परिस्थिति क्यों है? जब कुछ लोग हृदय द्वारा सोचने की बात करते हैं यह बहुत तर्कसंगत है। यह इसलिए क्योंकि हमने पाया है कि एक साधारण व्यक्ति की मूल आत्मा बहुत सूक्ष्म होती है, और मानव मस्तिष्क के वास्तविक संदेश स्वयं मानव मस्तिष्क की क्रिया नहीं हैं- वे मस्तिष्क द्वारा उत्पन्न नहीं किए जाते, बल्कि व्यक्ति की मूल आत्मा द्वारा किए जाते हैं। व्यक्ति की मूल आत्मा केवल नीवान महल में वास नहीं करती। ताओ विचारधारा में नीवान महल पिनियल ग्रन्थि है जिसे आधुनिक चिकित्सा ने समझा है। यदि व्यक्ति की मूल आत्मा नीवान महल में होती है, वह वास्तव में महसूस करेगा कि मस्तिष्क किसी के बारे में सोच रहा है या संदेश भेज रहा है। यदि यह व्यक्ति के हृदय में होती है, वह वास्तव में महसूस करेगा कि हृदय किसी वस्तु के बारे में सोच रहा है।

मानव शरीर एक लघु विश्व होता है। एक अभ्यासी के शरीर में अनेक जीवन सत्ताएँ स्थान बदलने में समर्थ हो सकती हैं। जब मूल आत्मा अपना स्थान बदलती है, यदि यह व्यक्ति के उदर में जाती है, वह महसूस करेगा कि उदर वास्तव में किसी वस्तु के बारे में सोच रहा है। यदि मूल आत्मा व्यक्ति के पैर या टखने में जाती है, वह वास्तव में महसूस करेगा कि पैर या टखना किसी वस्तु के बारे में सोच रहा है। यह निश्चित ही इस प्रकार है, और बहुत अविश्वसनीय जान पड़ता है। जब आपका साधना स्तर बहुत ऊँचा नहीं होता, आप पाएँगे कि यह परिस्थिति होती है। यदि मानव शरीर में मूल आत्मा और स्वभाव, प्रकृति, और व्यक्तित्व जैसी वस्तुएँ नहीं होतीं, यह केवल एक मांस का टुकड़ा होता न कि अपनी पहचान के साथ एक पूर्ण व्यक्ति। तब मानव मस्तिष्क के क्या कार्य होते हैं? जैसा मैं इसे देखता हूँ, इस भौतिक आयाम के स्वरूप में, मानव मस्तिष्क केवल एक क्रियाशील कारखाना है। वास्तविक संदेश मूल आत्मा

द्वारा भेजा जाता है। हालांकि, जो भेजा जाता है भाषा नहीं है, किन्तु विश्व का एक संदेश है जो एक विशिष्ट अर्थ को दर्शाता है। इस प्रकार की आज्ञा को प्राप्त करके, हमारा मस्तिष्क इसे क्रिया द्वारा आज की भाषा या हाव-भाव के दूसरे किसी रूप में ला देगा; हम इसे हाथ की मुद्राओं, आँखों के मिलने, और पूर्ण गतिविधि द्वारा प्रदर्शित करते हैं। मस्तिष्क का केवल यही प्रभाव है। वास्तविक आज्ञाएँ और विचार व्यक्ति की मूल आत्मा से आते हैं। कुछ लोग मानते हैं कि वे मस्तिष्क की सीधी और स्वतन्त्र क्रियाएँ हैं। वास्तव में, मूल आत्मा कई बार हृदय में होती है, इसलिए कुछ लोग वास्तव में महसूस कर सकते हैं कि उनका हृदय सोच रहा है।

वर्तमान में, वे लोग जो मानव शरीर पर शोध करते हैं, विश्वास करते हैं कि जो मानव मस्तिष्क भेजता है वह इलेक्ट्रिक तरंग की तरह होता है। हम पहले ही नहीं बताएँगे कि वास्तव में क्या प्रेषित किया जाता है, किन्तु उन्होंने स्वीकार किया है कि इसका एक प्रकार का पदार्थ का अस्तित्व है। इस प्रकार, यह अन्धविश्वास नहीं है। इस पदार्थ का क्या प्रभाव होता है? कुछ चीगोंग गुरु दावा करते हैं : "मैं अपने मनो-विचार का प्रयोग करके दूर-स्थानांतरण कर सकता हूँ, आपका दिव्य नेत्र खोल सकता हूँ, आपका रोग ठीक कर सकता हूँ, आदि।" वास्तव में, जहाँ तक कुछ चीगोंग गुरुओं का प्रश्न है, वे जानते भी नहीं हैं, और न ही वे स्पष्ट हैं कि उन्हें क्या दिव्य सिद्धियाँ अर्जित हैं। वे केवल यह जानते हैं कि वे जो चाहें कर सकते हैं, जब तक वे इसके बारे में सोचते हैं। वास्तव में, यह उनका मनो-विचार है जो कार्य कर रहा है : दिव्य सिद्धियाँ मस्तिष्क के मनो-विचार द्वारा निर्देशित होती हैं, और वे विशिष्ट कार्य मनो-विचार की आज्ञा से पूर्ण करती हैं। किन्तु मनो-विचार स्वयं कुछ नहीं कर सकता। जब एक अभ्यासी कुछ विशिष्ट कार्य करता है, ये उसकी दिव्य सिद्धियाँ हैं जो कार्य करती हैं।

दिव्य सिद्धियाँ मानव शरीर की सक्रिय सिद्धियाँ हैं। मानव समुदाय के विकास के साथ-साथ, मानव मन अधिकाधिक जटिल बन गया है, जिसमें "यथार्थ" को अधिक महत्व दिया जाता है और तथाकथित आधुनिक साधनों पर निर्भरता बढ़ गई है। परिणामस्वरूप, मानव जन्मजात सिद्धियाँ निरन्तर क्षीण हो गई हैं। ताओ विचारधारा मूल, सच्ची प्रकृति की ओर लौटना सिखाती है। साधना अभ्यास के क्रम में, आपको सत्य की खोज करनी चाहिए, और अन्त में अपनी मूल, सच्ची प्रकृति और अपने आत्मस्वभाव की ओर लौटना चाहिए। केवल तभी आप अपनी इन जन्मजात सिद्धियों

को प्रकट कर सकेंगे। आजकल, हम उन्हें "अलौकिक सिद्धियाँ" कहते हैं जबकि वे सब वास्तव में मानवीय जन्मजात सिद्धियाँ हैं। मानव समुदाय विकास करता हुआ प्रतीत होता है, किन्तु वास्तव में इसका गिराव हो रहा है और यह विश्व की प्रकृति से और दूर जा रहा है। दूसरे दिन मैंने बताया था कि जांग गुओलाओ ने एक गधे पर उल्टे बैठ कर सवारी की, किन्तु लोग नहीं समझ सके कि इसका क्या अर्थ था। उन्होंने जाना कि आगे की ओर जाना पीछे जाना है, और यह कि मनुष्य जाति विश्व की प्रकृति से और दूर जा रही है। विश्व के विकास के क्रम में और विशेष रूप से वर्तमान उपभोग अर्थव्यवस्था की बड़ी लहर से जुड़ने के बाद, कई लोग नैतिक रूप से बहुत भ्रष्ट हो गये हैं, और वे ज़न-शान-रेन जो विश्व की प्रकृति है, से और दूर जा रहे हैं। जो साधारण लोगों के बहाव में बहे जा रहे हैं वे मानवजाति के नैतिक पतन की अवस्था को समझ भी नहीं सकते। इसलिए कुछ लोग सोचते हैं कि सब ठीक है। केवल वे लोग जिनका शिनशिंग साधना द्वारा बढ़ा दिया गया है, पीछे मुड़कर देखने पर जानेंगे, कि मानवीय नैतिक आदर्श कितनी बुरी अवस्था तक बिगड़ चुके हैं।

कुछ चीगोंग गुरुओं ने दावा किया है : "मैं आपकी दिव्य सिद्धियों को विकसित कर सकता हूँ।" वे कौन सी दिव्य सिद्धियाँ विकसित कर सकते हैं? बिना शक्ति के, व्यक्ति की दिव्य सिद्धियाँ कार्य नहीं करेंगी। इसके बिना आप उन्हें कैसे विकसित कर सकते हैं? जब व्यक्ति की दिव्य सिद्धियाँ उसकी अपनी शक्ति द्वारा निर्मित और क्रियाशील नहीं होती हैं, आप उन्हें कैसे विकसित कर सकते हैं? यह बिल्कुल असंभव है। जो उन्होंने दिव्य सिद्धियों को विकसित करने की बात की है, वह और कुछ नहीं केवल आपकी पहले से बनी दिव्य सिद्धियों को आपके मस्तिष्क से जोड़ना भर है। वे आपके मस्तिष्क के मनो-विचार की आज्ञा पर कार्य करेंगी। दिव्य सिद्धियों को विकसित करने के नाम पर वे यह करते हैं। वास्तव में, उन्होंने आपकी कोई भी दिव्य सिद्धि विकसित नहीं की है, बल्कि केवल यह छोटा सा काम किया है।

एक अभ्यासी के लिए, उसका मनो-विचार कार्य करने के लिए दिव्य सिद्धियों को निर्देशित करता है। एक साधारण व्यक्ति के लिए, व्यक्ति का मनो-विचार चार हाथ-पैरों और संवेदनशील अंगों को कार्य के लिए निर्देशित करता है, ठीक जैसे एक कारखाने में उत्पादन कार्यालय होता है : निदेशक का कार्यालय विशिष्ट कार्यों के सभी विभागों के पास कर्तव्य के लिए आज्ञा जारी करता है। यह सैन्य मुख्यालय जैसा भी है :

सेनापति का कार्यालय आज्ञा देता है और पूरी सेना को कोई उद्देश्य पूर्ण करने के लिए निर्देशित करता है। जब मैं व्याख्यान देने के लिए नगर से बाहर गया था, मैं इस विषय पर स्थानीय चीगोंग संस्थाओं के प्रशासकों से अक्सर चर्चा करता था। वे सब बहुत चकित होते थे : "हम पढ़ते आ रहे हैं कि मानव मन में कितनी सामर्थ्य शक्ति और चेतना है।" वास्तव में, यह इस प्रकार नहीं है। वे आरम्भ से ही सही दिशा में नहीं हैं। मैंने कहा है कि मानव शरीर के विज्ञान को समझने के लिए व्यक्ति को अपने विचारों में क्रान्ति लानी होगी। उन दिव्य वस्तुओं को समझने के लिए, व्यक्ति साधारण लोगों के निष्कर्षवादी तरीकों और वस्तुओं को समझने के उनके तरीकों को प्रयोग नहीं कर सकता।

मनो-विचार की बात की जाए तो इसके अनेक स्वरूप होते हैं। उदाहरण के लिए, कुछ लोग घुंधली स्मृति, अवचेतन मन, प्रेरणा, स्वप्न, इत्यादि के बारे में बात करते हैं। स्वप्न की बात की जाए तो, कोई चीगोंग गुरु उनके बारे में समझाना नहीं चाहता। क्योंकि जन्म के समय आप विश्व के अनेक आयामों में एक साथ पैदा हुए थे, ये आपके दूसरे स्वरूप आपको एक पूर्ण, अखण्ड प्राणी बनाते हैं और एक दूसरे के साथ मानसिक रूप से जुड़े होते हैं। इसके अतिरिक्त, शरीर में आपके पास अपनी मुख्य आत्मा, सह आत्मा, और दूसरे विभिन्न प्राणियों के प्रतिबिम्ब होते हैं। दूसरे आयामों में अस्तित्व के स्वरूप होने के कारण प्रत्येक कोशिका और सभी आन्तरिक अंग आपके प्रतिबिम्ब के संदेश को दर्शाते हैं। इस प्रकार, यह अत्यन्त जटिल है। स्वप्न में, परिस्थितियाँ किसी पल इस प्रकार होती हैं तो दूसरे पल किसी और प्रकार। तब भी, वे कहाँ से आती हैं? चिकित्सा विज्ञान में कहा जाता है कि यह इसलिए है क्योंकि व्यक्ति का तंत्रिका तंत्र बदलाव अनुभव करता है। यह एक प्रतिक्रिया है जो भौतिक रूप में प्रकट होती है। वास्तव में, यह दूसरे आयामों से संदेश प्राप्त करने के कारण है। इसलिए, जब आप स्वप्न में होते हैं आपका मन चकराया हुआ महसूस होता है। इसका आपसे कोई लेना-देना नहीं है, और आपको इस पर ध्यान देने की आवश्यकता नहीं है। एक प्रकार का स्वप्न है जो आप पर सीधा प्रभाव डालता है। हमें इस प्रकार के स्वप्न को "स्वप्न" नहीं कहना चाहिए। आपकी मुख्य चेतना या मुख्य आत्मा ने स्वप्न में यह देखा होगा कि कोई पारिवारिक सदस्य आपके पास आया है, यह कि आपने वास्तव में कुछ अनुभव किया है, या यह कि आपने कुछ देखा या किया होगा। उस परिस्थिति में,

यह आपकी मुख्य आत्मा है जिसने वास्तव में दूसरे आयाम में कुछ किया या देखा है, क्योंकि आपकी चेतना स्पष्ट और वास्तविक थी। उन वस्तुओं का वास्तव में अस्तित्व होता है, केवल यह कि वे दूसरे भौतिक आयाम में होती हैं और उन्हें दूसरे काल-अवकाश में किया जाता है। आप इसे स्वप्न कैसे कह सकते हैं? यह वह नहीं है। आपका भौतिक शरीर यहाँ वास्तव में सो रहा है, इसलिए आप इसे केवल एक स्वप्न कह सकते हैं। केवल इस प्रकार के स्वप्नों का आपसे सीधा कोई संबंध होता है।

मानवीय प्रेरणा, अवचेतन मन, धुंधली स्मृति, आदि की बात की जाए तो, मैं कहूँगा कि उन शब्दों को वैज्ञानिकों ने नहीं बनाया है। ये शब्द लेखकों द्वारा गढ़े गए हैं और साधारण लोगों की मान्यताओं पर आधारित हैं- वे अवैज्ञानिक हैं। "धुंधली स्मृति" क्या होती है जिसके बारे में लोग बात करते हैं? इसे स्पष्टता से समझाना कठिन है और यह बहुत अनेकार्थी है, क्योंकि अनेक मानव संदेश बहुत जटिल होते हैं, वे उलझी हुई स्मृतियों के रेशों की तरह प्रतीत होते हैं। जहाँ तक अवचेतन मन का संदर्भ है जो लोग बात करते हैं, हम इसे सरलता से समझा सकते हैं। अवचेतन मन की परिभाषा के अनुसार, साधारणत: इसका अर्थ है कि कोई व्यक्ति अनजाने में कोई कार्य करता है। और लोग अक्सर कहेंगे कि इस व्यक्ति ने यह कार्य अवचेतन मन से किया, न कि जान बूझकर। यह अवचेतन मन ठीक हमारी सह चेतना जैसा ही है जिसका हमने उल्लेख किया है। जब व्यक्ति की मुख्य चेतना विश्राम करती है और मस्तिष्क को नियंत्रित नहीं करती, तब व्यक्ति की एक स्पष्ट चेतना नहीं होती, जैसे उसे निद्रा आ गई हो। किसी स्वप्न में या किसी अवचेतन अवस्था में, व्यक्ति सरलता से सह चेतना या सह आत्मा द्वारा नियंत्रित हो जाएगा। उस समय, सह चेतना कुछ कार्य कर सकेगी, कहने का अर्थ है कि आप एक स्पष्ट मन के बिना कार्य करेंगे। हालांकि ये कार्य अक्सर बहुत अच्छे प्रकार से किए गए होते हैं, क्योंकि सह चेतना दूसरे आयाम से पदार्थ की प्रकृति को देख सकती है और हमारे साधारण समुदाय द्वारा भ्रमित नहीं होती। इसलिए, जब व्यक्ति को पता चलता है कि उसने क्या किया है, वह पीछे की ओर देखेगा : "मैं इसे इतना खराब कैसे कर सकता था? मैं इसे एक स्पष्ट मन के साथ इस प्रकार नहीं करता।" आप अभी कह सकते हैं कि यह अच्छा नहीं है, किन्तु जब आप दस दिन, या आधा महीने के बाद पीछे देखते हैं, आप कहेंगे : "वाह! इसे कितना अच्छा किया गया था! मैंने इसे तब कैसे किया?" ये वस्तुएँ अक्सर होती हैं। क्योंकि सह चेतना उस पल होने वाले प्रभाव

की परवाह नहीं करती, किन्तु, फिर भी, इसका भविष्य में अच्छा प्रभाव होता है। ऐसी भी वस्तुएँ होती हैं जिनका कोई भविष्य प्रभाव नहीं होता और केवल उसी पल प्रभाव होता है। जब सह चेतना इन वस्तुओं को करती है, हो सकता है यह ठीक तभी एक अच्छा कार्य कर दे।

इसमें एक और प्रकार होता है : जो है कि आपमें से जिनका जन्मजात गुण अच्छा है उन्हें सरलता से उच्च प्राणियों द्वारा नियंत्रित किया जा सकता है और कार्य करवाया जा सकता है। निश्चित ही, यह एक और विषय है, और इसकी यहाँ व्याख्या नहीं की जाएगी। हम मुख्यत: विचारों की चर्चा कर रहे हैं जो स्वयं हमसे आते हैं।

जहाँ तक "प्रेरणा" की बात है, यह भी लेखकों द्वारा गढ़ा गया एक शब्द है। यह साधारणत: माना जाता है कि प्रेरणा, व्यक्ति के जीवनभर जमा किए ज्ञान के रूप में एक बिजली के कौंधने की तरह फट कर बाहर आ जाती है। मैं कहूँगा कि भौतिकवाद के दृष्टिकोण से, व्यक्ति जीवन में जितना अधिक ज्ञान अर्जित करता है, जितना अधिक वह मन का प्रयोग करता है, यह उतना ही पैना हो जाता है। उस समय जब व्यक्ति इसका प्रयोग करता है, यह निरंतर बाहर आना चाहिए, और प्रेरणा जैसा कोई विषय नहीं होना चाहिए। यह तथाकथित प्रेरणा, जब यह आती है, इस अवस्था में नहीं होती। अक्सर जब व्यक्ति मस्तिष्क का प्रयोग करता है, वह इसका तब तक प्रयोग करता रहता है जब तक उसे यह न लगे उसका ज्ञान समाप्त हो गया है और जैसे वह अपनी समझ के अन्त तक पहुँच गया है। उसके लिए किसी लेख को लिखते रहना संभव नहीं हो पाएगा, संगीत के किसी भाग को संयोजित करते हुए वह विचारहीन हो जाएगा, या किसी वैज्ञानिक शोध कार्य को पूरा नहीं कर सकेगा। इस समय पर, व्यक्ति अक्सर थका हुआ होता है, उसका मस्तिष्क निढाल होता है और सिगरेट के टुकड़े जमीन पर फैले होते हैं। वह फंस जाता है, उसे सरदर्द होता है, और तब भी कोई विचार नहीं आता। अन्त में, किन अवस्थाओं में प्रेरणा आती है? यदि वह थका होता है, वह सोचेगा : "इसे भूल जाओ। मैं कुछ अवकाश लूँगा।" क्योंकि जितना अधिक उसकी मुख्य चेतना उसके मस्तिष्क को नियंत्रित करती है उतना ही कम दूसरी सत्ताएँ प्रवेश कर सकती हैं, इस अवकाश और उसके मन के विश्राम के साथ, अचानक ही अनजाने में उसे उसके मस्तिष्क से कुछ याद आ सकता है। अधिकतर प्रेरणाएँ इस प्रकार आती हैं।

प्रेरणा इस समय क्यों आती है? क्योंकि जब व्यक्ति का मन मुख्य चेतना द्वारा नियंत्रित किया जाता है, वह मस्तिष्क का जितना अधिक प्रयोग करता है, मुख्य चेतना का नियंत्रण उतना ही अधिक होता है, और उतनी ही कम सह चेतना आ सकती है। जब वह सोच रहा होता है, कोई सरदर्द होता है, और पीड़ा भोगता है, तब सह चेतना भी पीड़ा भोगती है और बहुत दु:खदायी सरदर्द सहन करती है। उसी के शरीर का एक भाग होने के कारण और एक साथ एक ही माँ के गर्भ से पैदा होने के कारण, यह भी उसके शरीर के एक भाग को नियंत्रित करती है। जब व्यक्ति की मुख्य चेतना विश्राम करती है, सह चेतना मस्तिष्क में वह दर्शा देती है जो वह जानती है। क्योंकि यह दूसरे आयाम में पदार्थ की प्रकृति को देख सकती है, इस प्रकार कोई कार्य किया जा सकता है, एक लेख लिखा जा सकता है, या संगीत संयोजित किया जा सकता है।

कुछ लोग कहेंगे : "उस अवस्था में, हमें सह चेतना का उपयोग करना चाहिए।" यह उसी प्रकार है जैसे किसी ने अभी पर्ची में पूछा है : "हम सह चेतना से संपर्क कैसे कर सकते हैं?" आप इससे संपर्क नहीं कर सकते क्योंकि आपका अभ्यास अभी आरम्भ हुआ है और आपके पास कोई योग्यताएँ नहीं हैं। अच्छा होगा कि आप कोई संपर्क न करें, क्योंकि आपकी इच्छा अवश्य ही मोहभाव बन जाएगी। कुछ लोग सोच सकते हैं : "क्या हम सह चेतना का उपयोग हमारे लिए और धन अर्जित करने के लिए और मानव समुदाय के विकास को तेज करने के लिए कर सकते हैं?" नहीं! क्यों नहीं? यह इसलिए क्योंकि जो आपकी सह चेतना जानती है वह भी बहुत सीमित है। आयामों की जटिलताओं और इतने अधिक स्तरों के साथ, विश्व की संरचना बहुत जटिल है। सह चेतना केवल यह जान सकती है कि इसके आयाम में क्या है और यह अपने आयाम से आगे कुछ नहीं जानेगी। इसके अतिरिक्त, अनेक विभिन्न लम्बवत स्तर और आयाम होते हैं। मनुष्य जाति का विकास एक बहुत उच्च स्तर पर केवल उच्च प्राणियों द्वारा नियंत्रित किया जा सकता है, और यह विकास के नियम के अनुसार आगे प्रगति करती है।

हमारा साधारण मानव समुदाय इतिहास के विकास के नियम के अनुसार आगे प्रगति करता है। आप इसके एक विशिष्ट रूप से विकसित होने और किसी विशेष उद्देश्य को प्राप्त करने की इच्छा रख सकते हैं, किन्तु वे उच्च प्राणी इसे इस प्रकार नहीं

मानते। क्या प्राचीन समय में लोगों ने आज के हवाई जहाज, रेल गाड़ी, और साइकिल कि बारे में नहीं सोचा होगा? मैं कहूँगा कि यह असंभव है कि उन्होंने नहीं सोचा होगा। क्योंकि इतिहास का उस अवस्था तक विकास नहीं हुआ था, वे उनका आविष्कार नहीं कर सके। सतह पर, या पारम्परिक सिद्धांतों और वर्तमान मानवीय ज्ञान के दृष्टिकोण से, यह इसलिए क्योंकि मानव विज्ञान उस समय इस स्तर तक नहीं पहुँचा था और इसलिए वे उनका आविष्कार नहीं कर सके। वास्तव में, मानव विज्ञान को कैसे प्रगति करनी चाहिए यह भी इतिहास की व्यवस्था के अनुसार निर्धारित होता है। यदि आप मानवीय रूप से कोई विशेष उद्देश्य पूर्ण करना चाहते हैं, इसे प्राप्त नहीं किया जा सकता। नि:संदेह, ऐसे लोग हैं जिनकी सह चेतना सरलता से भूमिका निभाती है। एक लेखक दावा करता है : "मैं अपनी पुस्तक के लिए बिना थके हुए एक दिन में दस हजार से भी अधिक शब्द लिख सकता हूँ। यदि मैं चाहूँ, मैं इसे बहुत तेजी से लिख सकता हूँ, और दूसरे लोग इसे पढ़ने पर तब भी इसे बहुत अच्छा पायेंगे।" ऐसा क्यों हैं? यह उसकी मुख्य चेतना और सह चेतना के एक साथ प्रयास का परिणाम है, क्योंकि उसकी सह चेतना भी आधा कार्य कर लेती है। किन्तु यह इस प्रकार हमेशा नहीं होता। अधिकांश सह चेतनाएँ बिल्कुल भी सम्मिलित नहीं होतीं। यदि आप इससे कुछ करवाना चाहते हैं तो यह अच्छा नहीं होगा, क्योंकि आप विपरीत परिणाम प्राप्त करेंगे।

एक स्पष्ट और स्वच्छ मन

कई लोग अभ्यास के दौरान मन शान्त नहीं कर पाते, और वे हर जगह जा कर चीगोंग गुरुओं से पूछते हैं: "गुरुजी, मैं शान्त अवस्था प्राप्त नहीं कर पाता भले ही मैं कैसे भी अभ्यास करूँ। जैसे ही मैं बैठता हूँ, मैं सभी वस्तुओं के बारे में सोचने लगता हूँ, जिनमें इधर-उधर के विचार और बातें शामिल हैं।" यह उफनती हुई नदियों और सागरों की तरह है जिसमें सब कुछ सतह पर आ जाता है, और व्यक्ति किसी भी प्रकार शान्त नहीं हो पाता। व्यक्ति शान्त अवस्था प्राप्त क्यों नहीं कर पाता? कुछ लोग इसे नहीं समझ पाते और मानते हैं कि इसके लिए कोई गुप्त विधि अवश्य होगी। वे सुप्रसिद्ध चीगोंग गुरुओं को खोजेंगे : "कृपया मुझे कोई विकसित विधि सिखा दें जिससे मेरा मन शान्त हो सके।" मेरे विचार में, यह बाहरी मदद को देखने जैसा है। यदि आप स्वयं में सुधार

करना चाहते हैं, आपको अपने अन्तरमन में देखना चाहिए और अपने हृदय पर परिश्रम करना चाहिए- केवल तभी आप वास्तव में उत्थान कर सकते हैं और ध्यान में बैठते समय शान्त अवस्था प्राप्त कर सकते हैं। शान्त अवस्था को प्राप्त करने की योग्यता गोंग है, और दिंग की गहराई व्यक्ति के स्तर को दर्शाती है।

एक साधारण व्यक्ति कैसे इच्छानुसार शान्त अवस्था प्राप्त कर सकता है? वह इसे बिल्कुल नहीं कर सकता जब तक उसका जन्मजात गुण बहुत अच्छा न हो। दूसरे शब्दों में, व्यक्ति का शान्त अवस्था प्राप्त न कर पाने का मूल कारण किसी विधि का विषय नहीं है, बल्कि यह कि आपके मन और हृदय स्वच्छ नहीं हैं। साधारण मानव समाज में और आपसी मतभेदों में, आप अपने निजी लाभ, सभी प्रकार की मानव भावुकताओं, और इच्छाओं के मोह के लिए प्रतिद्वन्द और संघर्ष करते हैं। यदि आप इन वस्तुओं को नहीं छोड़ते और हल्केपन से नहीं लेते, आप सरलता से शान्त अवस्था कैसे प्राप्त कर सकते हैं? चीगोंग का अभ्यास करते समय, कोई कहता है : "मैं इस पर विश्वास नहीं करता। मेरे लिए आवश्यक है कि मैं मन को शान्त करूँ और सोचना बंद कर दूँ।" जैसे ही यह कहा जाता है, सभी विचार दोबारा उभर आते हैं, क्योंकि यह आपका मन है जो स्वच्छ नहीं है। इसलिए आप शान्त मन प्राप्त नहीं कर पाते।

कुछ लोग मेरे दृष्टिकोण से असहमत हो सकते हैं : "क्या कुछ चीगोंग गुरु लोगों को विशेष विधियाँ प्रयोग करना नहीं सिखाते? व्यक्ति ध्यान लगा सकता है, किसी वस्तु की कल्पना कर सकता है, अपना मन दानत्येन पर केन्द्रित कर सकता है, दानत्येन की ओर अन्दर देख सकता है, बुद्ध के नाम का जाप कर सकता है, इत्यादि।" ये सभी विधियों के प्रकार हैं। किन्तु ये केवल विधियाँ ही नहीं हैं, किन्तु व्यक्ति की योग्यताओं को भी दर्शाती हैं। इस प्रकार, ये योग्यताएँ सीधे हमारी शिनशिंग साधना और हमारे सुधार के स्तर से संबंधित हैं। इसके अतिरिक्त, व्यक्ति केवल इस प्रकार की विधियों के प्रयोग भर से शान्त अवस्था प्राप्त नहीं कर सकता। यदि आप इस पर विश्वास नहीं करते, आप प्रयास करके देख सकते हैं। विभिन्न प्रबल इच्छाओं और मोहभावों सहित और बिना सब कुछ छोड़ पाने में समर्थ हुए, आप प्रयास कर सकते और देख सकते हैं कि आप शान्त अवस्था प्राप्त कर सकते हैं या नहीं। कुछ लोग कहते हैं कि बुद्ध के नाम का जाप करने से यह हो जाएगा। क्या आप बुद्ध के नाम का जाप करने से शान्त अवस्था प्राप्त कर सकते हैं? कोई कहता है : "बुद्ध अमिताभ की पद्धति में

अभ्यास करना सरल है। इसमें केवल बुद्ध के नाम का जाप करना होता है।" आप उस प्रकार जाप करने का प्रयास क्यों नहीं करते? मैं इसे एक योग्यता कहूँगा। आप कहते हैं कि यह सरल है, किन्तु मैं कहता हूँ कि यह सरल नहीं है, क्योंकि कोई अभ्यास पद्धति सरल नहीं है।

हर कोई जानता है कि शाक्यमुनि ने "समाधि" सिखाई थी। उन्होंने समाधि से पहले क्या सिखाया था? उन्होंने "शील" और समस्त इच्छाओं और व्यसनों को छोड़ना सिखाया था जब तक कुछ शेष न बचे- तब व्यक्ति समाधि प्राप्त कर सकता है। क्या यह इस प्रकार का नियम नहीं है? किन्तु "समाधि" एक योग्यता भी है, क्योंकि आप "शील" को पूरी तरह एक साथ प्राप्त नहीं कर सकते। धीरे-धीरे सभी बुरी वस्तुओं को छोड़ते हुए, व्यक्ति की ध्यान लगाने की योग्यता में भी सतह से गहराई की ओर सुधार आयेगा। जब व्यक्ति बुद्ध के नाम का जाप करता है, उसे यह एकाग्रचित होकर करना चाहिए जिससे मन में कुछ और न रहे और जब तक मस्तिष्क के और भाग सुन्न न पड़ जाएँ और उसे किसी भी वस्तु की सुधबुध न रहे, जिसमें एक विचार दूसरे हजारों विचारों को हटा दे, या जब तक "बुद्ध अमिताभ" का प्रत्येक शब्द आँखों के सामने न आने लगे। क्या यह एक योग्यता नहीं है? क्या व्यक्ति इसे बिल्कुल आरम्भ में कर सकता है? वह नहीं कर सकता। यदि वह इसे नहीं कर सकता, वह अवश्य ही शान्त अवस्था प्राप्त करने में असमर्थ रहेगा। यदि आप इस पर विश्वास नहीं करते, आप इसे करके देख सकते हैं। अपने मुँह से बुद्ध के नाम का लगातार जाप करते हुए, व्यक्ति का मन सभी वस्तुओं के बारे में सोचता है : "कार्यालय में मेरा अधीक्षक मुझे इतना नापसंद क्यों करता है? इस माह मेरा बोनस इतना कम क्यों है।" जितना अधिक वह इसके बारे में सोचता है, उतना ही वह क्रोधित होता जाता है, जबकि उसका मुंह अब भी बुद्ध के नाम का जाप कर रहा होता है। क्या आप सोचते हैं कि यह व्यक्ति चीगोंग का अभ्यास कर सकता है? क्या यह योग्यता का विषय नहीं है? क्या यह आपके मन के अस्वच्छ होने का विषय नहीं है? कुछ लोगों के दिव्य नेत्र खुले होते हैं, और वे अन्दर की ओर दानत्येन को देख सकते हैं। जहाँ तक दान का प्रश्न है जो व्यक्ति के उदर के निचले भाग में जमा होता है, यह शक्ति पदार्थ जितना शुद्ध होता है, यह उतना ही उज्जवल हो जाता है। जितना यह कम शुद्ध होता है, उतना ही यह अपारदर्शी और प्रकाशहीन होता है। क्या व्यक्ति केवल अन्दर की ओर दानत्येन में उस दान को देख कर शान्त अवस्था प्राप्त कर सकता है?

वह इसे प्राप्त नहीं कर सकता। यह स्वयं केवल विधि पर निर्भर नहीं है। कुंजी यह है कि व्यक्ति के मन और विचार स्पष्ट और स्वच्छ नहीं हैं। जब आप अन्दर की ओर दानत्येन पर देखते हैं, दान उज्जवल और सुन्दर दिखाई पड़ता है। पलभर में, यह दान एक मकान में बदल जाता है : "यह कमरा मेरे पुत्र के लिए होगा जब उसकी शादी हो जाएगी। यह कमरा मेरी पुत्री के लिए होगा, हम वृद्ध दम्पत्ति दूसरे कमरे में रहेंगे, और बीच का कमरा एक बैठक कक्ष होगा। यह बहुत अच्छा है! क्या मुझे यह मकान मिलेगा? मुझे इसे प्राप्त करने का रास्ता खोजना पड़ेगा। क्या करना चाहिए?" लोग केवल इन वस्तुओं के मोहभाव में रहते हैं। क्या आप सोचते हैं कि आप इस प्रकार शान्त अवस्था प्राप्त कर लेंगे? यह कहा गया है : "जब मैं इस साधारण मानव समाज में आता हूँ, यह ठीक एक होटल में कुछ दिन रूकने जैसा है। तब मैं जल्दबाजी में चला जाता हूँ।" कुछ लोगों को केवल इस स्थान से मोह हो गया है और वे अपने घरों को भूल गये हैं।

सच्चे साधना अभ्यास में व्यक्ति को स्वयं अपने हृदय और आंतरिक प्रकृति का संवर्धन करना चाहिए। उसे अपने अन्दर खोज करनी चाहिए न कि बाहर। कुछ साधना पद्धतियाँ कहती हैं कि बुद्ध व्यक्ति के हृदय में होते हैं, और इसमें भी कुछ सत्य है। कुछ लोग इस वाक्य को ठीक से नहीं समझे और कहते हैं कि उनके हृदय में बुद्ध है, जैसे कि वे स्वयं बुद्ध हों, या जैसे उनके हृदय में कोई बुद्ध हो - उन्होंने इसे इस प्रकार समझा है। क्या यह गलत नहीं है? इसे इस प्रकार कैसे समझा जा सकता है? इसका अर्थ है कि यदि आपको साधना में सफल होना है आपको अपने हृदय का संवर्धन करना चाहिए - यह इस नियम को बताता है। आपके शरीर में एक बुद्ध कैसे हो सकता है? आपको सफल होने के लिए साधना करना आवश्यक है।

आप शान्त अवस्था प्राप्त नहीं कर पाते इसका कारण यह है कि आपका मन रिक्त नहीं है और आप उतने ऊँचे स्तर पर नहीं पहुँचे हैं, जिसे केवल क्रमदर प्राप्त किया जा सकता है। यह आपके सुधार के स्तर के साथ-साथ ही चलता है। जब आप मोहभाव छोड़ देते हैं, आपके स्तर में सुधार कर दिया जाता है, और आपकी ध्यान लगाने की क्षमता में भी सुधार होता है। यदि आप किसी विधि या प्रणाली द्वारा शान्त अवस्था प्राप्त करना चाहते हैं, मैं इसे बाहरी मदद को खोजना कहूँगा। चीगोंग अभ्यास में, हालांकि, भटक जाने और दुष्ट मार्ग का अनुसरण करने का तात्पर्य है कि लोगों द्वारा बाहरी मदद को खोजना। विशेष रूप से बुद्धमत में, यदि आप बाहरी मदद को खोजते

हैं, यह कहा जाता है कि आपने एक आसुरिक मार्ग अपना लिया है। सच्चे साधना अभ्यास में व्यक्ति को हृदय का संवर्धन करना चाहिए : केवल जब आप अपने शिनशिंग में सुधार करते हैं तभी आप एक स्पष्ट और स्वच्छ मन, और विचारमुक्त अवस्था *(वूवेई)* प्राप्त कर सकते हैं। केवल जब आपके शिनशिंग में सुधार हो जाता है तब आप विश्व की प्रकृति के साथ आत्मसात हो सकते हैं और विभिन्न मानवीय इच्छाओं, मोहभावों, और दूसरी बुरी वस्तुओं को छोड़ सकते हैं। केवल तभी आप अपने अन्दर की बुरी वस्तुओं को छोड़ सकेंगे और उत्थान कर सकेंगे जिससे आप विश्व की प्रकृति द्वारा नहीं रोके जाएंगे। तब द पदार्थ को गोंग में रूपांतरित किया जा सकता है। क्या वे साथ-साथ ही नहीं चलते? यह केवल इस प्रकार का नियम है!

यह व्यक्ति के अपने कारण है कि वह शान्त अवस्था प्राप्त क्यों नहीं कर पाता, क्योंकि वह एक अभ्यासी के आदर्श तक नहीं पहुंच पाता। बाहरी कारणों के दृष्टिकोण से, एक वर्तमान अवस्था है जो आपके उच्च स्तरों की ओर साधना अभ्यास करने में गम्भीर बाधा डालती है, और यह अभ्यासियों पर गम्भीर प्रभाव डालती है। आप जानते हैं कि सुधारीकरण और उदारीकरण के साथ, अर्थव्यवस्था उदार हो गयी है और नीतियाँ भी कम रूकावट वाली हो गयी हैं। अनेक नई तकनीकें लाई गई हैं, और लोगों के रहन-सहन के स्तर में सुधार हुआ है। सभी साधारण लोग सोचते हैं कि यह एक अच्छी वस्तु है। किन्तु वस्तुओं को विपरीत दिशा से, दोनों ओर से देखा जाना चाहिए। सुधारीकरण और उदारीकरण के साथ, विभिन्न प्रकार की बुरी वस्तुओं का भी आयात हुआ है। यदि किसी साहित्यिक कथा को कुछ वासनायुक्त नहीं लिखा जाता, तो पुस्तक बिक नहीं पाती क्योंकि इससे बिक्री की संख्या पर प्रभाव पड़ता है। यदि फिल्म और टेलीविजन के कार्यक्रम शयनकक्ष के दृश्य नहीं दिखाते, तो उन्हें कोई भी देखता हुआ प्रतीत नहीं होता। जहाँ तक कलाकृतियों की बात है, कोई नहीं बता सकता कि यह सच्ची कला है या कुछ और। हमारी प्राचीन चीनी सांस्कृतिक कलाओं में ऐसी कोई वस्तुएँ नहीं थीं। हमारी चीनी राष्ट्र की संस्कृतियों का आविष्कार या निर्माण किसी एक व्यक्ति ने नहीं किया था। पूर्व ऐतिहासिक संस्कृति के बारे में बात करते हुए, मैंने बताया था कि सभी वस्तुओं का अपना मूल है। मानवीय नैतिक गुण भ्रष्ट हो गये हैं और बदल गये हैं। अच्छाई और बुराई को मापने वाले आदर्श सब बदल गये हैं। ये साधारण लोगों के विषय हैं। किन्तु यह विश्व की प्रकृति, ज़न-शान-रेन, अपरिवर्तनीय रहती है जो अच्छे

और बुरे लोगों में भेद करने के लिए एकमात्र मानक है। एक अभ्यासी की भाँति, यदि आप ऊपर उठकर आगे जाना चाहते हैं, आपको वस्तुओं को जांचने के लिए इस मानक का प्रयोग करना चाहिए - न कि साधारण लोगों के आदर्श का। इस प्रकार, यह बाहरी विघ्न होता है। इसमें और भी हैं, जैसे समलैंगिकता, वासना की छूट, और नशे की दवाओं का सेवन।

जब मानव समुदाय आज इस स्तर तक विकसित हो गया है, इसके बारे में सोचें: यदि यह इसी प्रकार चलता रहा तो क्या होगा? क्या इसके सदैव इसी प्रकार रहने की अनुमति हो सकती है? यदि मानवजाति इसके बारे में कुछ नहीं करती, देवलोक करेगा। जब कभी मानवजाति का विपत्तियों से सामना होता है, वह इसी प्रकार की परिस्थितियों में होता है। इतने व्याख्यानों में, मैंने मानवजाति के महान प्रलयों के विषय के बारे में बात नहीं की है। इस सनसनीखेज विषय पर धर्मों में और अनेक लोगों द्वारा चर्चा की गई है। मैं सभी के लिए यह प्रश्न उठा रहा हूँ, इसलिए सब इसके बारे में सोचें। हमारे साधारण मानव समाज में, मानव नैतिक आदर्श में इतना बदलाव आ गया है! एक-दूसरे के बीच तनाव इतना बढ़ गया है! क्या आप नहीं सोचते कि यह एक खतरनाक बिंदु तक पहुँच गया है? इसलिए, यह वर्तमान, समकालीन वातावरण गम्भीर रूप से हमारे अभ्यासियों की उच्च स्तरों की ओर साधना में विघ्न डालता है। सड़क के बीच में, ठीक ऊपर नग्न तस्वीरें दर्शाने के लिए लगी होती हैं। यदि आप नजर उठाएँगे, आप उन्हें देखेंगे।

लाओ ज़ ने एक बार यह वक्तव्य दिया था : "जब एक बुद्धिमान व्यक्ति ताओ के बारे में सुनता है, यह व्यक्ति इसका लगन से अभ्यास करेगा।" जब एक बुद्धिमान व्यक्ति ताओ के बारे में सीखता है, वह सोचता है : "अन्ततः मुझे उचित साधना पद्धति मिल गई है। और प्रतीक्षा क्यों की जाए और अभ्यास को आज से ही आरम्भ क्यों न किया जाए?" मेरे विचार में, जटिल वातावरण, बल्कि एक अच्छी वस्तु है। जितना अधिक यह जटिल होगा, उतना ही महान व्यक्ति यह उत्पन्न करेगा। यदि कोई स्वयं को इससे ऊपर और आगे उठा सके, उसकी साधना सर्वाधिक सघन होगी।

एक अभ्यासी के लिए जो सच्चे रूप से साधना अभ्यास करने के लिए प्रणबद्ध है, मैं कहूँगा कि यह उसके लिए एक अच्छी वस्तु हो जाती है। बिना मतभेद उत्पन्न हुए या बिना आपके शिनशिंग में सुधार के अवसरों के, आप विकास नहीं कर सकते। यदि

हर कोई एक-दूसरे से अच्छा बना रहेगा, आप साधना कैसे करेंगे? जहाँ तक उसकी बात है जो एक साधारण अभ्यासी है, जो "एक साधारण व्यक्ति है जो ताओ को सुनता है," और जिसके लिए यह ठीक होगा कि वह कभी साधना अभ्यास करे या कभी न करे; संभवत: वह साधना में असफल रहेगा। कुछ लोग जो यहाँ सुन रहे हैं पाते हैं कि जो गुरु कह रहे हैं उचित है। साधारण मानव समाज में लौटने के बाद, वे तब सोचेंगे कि वे तुरन्त लाभ अधिक व्यावहारिक और वास्तविक हैं। वे वास्तविक हैं। न केवल आप, बल्कि पश्चिम के अनेक करोड़पतियों और धनी लोगों ने पाया है कि मृत्यु के बाद कुछ शेष नहीं बचता। भौतिक संपत्ति जन्म के साथ नहीं आती, न ही यह मृत्यु के बाद आपके साथ जाएगी - यह बिल्कुल खोखली है। किन्तु यह गोंग इतना अनमोल क्यों है? यह इसलिए क्योंकि यह आपकी मूल आत्मा के शरीर से जुड़ा होता है, और यह जन्म के समय आपके साथ आता है और मृत्यु के बाद आपके साथ जाता है। हम कह चुके हैं कि व्यक्ति की मूल आत्मा लुप्त नहीं होती, और यह एक अन्धविश्वास नहीं है। जब हमारे भौतिक शरीरों की कोशिकाएँ हट जाती हैं, दूसरे भौतिक आयामों में कोशिकाओं से छोटे कण नष्ट नहीं होते। केवल एक कवच उतर जाता है।

जो सब मैंने अभी कहा वह व्यक्ति के शिनशिंग के विषय से संबंधित है। शाक्यमुनि ने एक बार यह वक्तव्य दिया था, जो बोधिधर्म ने भी कहा था : "चीन की यह प्राचीन भूमि वह स्थान है जहाँ महान गुणों के लोग उत्पन्न होते हैं।" संपूर्ण इतिहासकाल में, अनेक भिक्षु और बहुत से चीनी लोग इससे बहुत गर्वान्वित रहे हैं; इससे यह जान पड़ता है कि वे उच्च स्तर के गोंग की साधना कर सकते हैं, और इसलिए कई लोग प्रसन्न होते हैं और गर्व महसूस करते हैं : "सही है, हम चीनी लोग! चीन की भूमि महान जन्मजात गुण और महान नैतिक गुण के लोग उत्पन्न कर सकती है।" वास्तव में, कई लोग इसके पीछे का अर्थ नहीं समझे हैं। चीन की भूमि महान गुण और उच्च स्तर के गोंग के लोगों को क्यों उत्पन्न कर पाती है? जो उन उच्च स्तर के लोगों ने कहा है कई लोग उसका सच्चा अर्थ नहीं समझते, न ही वे उन लोगों का स्तर या मनोस्थिति समझते हैं जो ऊँचे स्तरों और ऊँचे लोकों में हैं। नि:संदेह, हम कह चुके हैं कि हम यह नहीं सुझायेंगे कि इसका क्या अर्थ है। आप सब यह सोचें : केवल सर्वाधिक जटिल लोगों के समुदाय में और सर्वाधिक जटिल वातावरण में रहते हुए व्यक्ति उच्च स्तर के गोंग की साधना कर सकता है - इसका यह अर्थ है।

जन्मजात गुण

व्यक्ति का जन्मजात गुण उसके दूसरे आयाम के शरीर में स्थित पदार्थ द की मात्रा से निर्धारित होता है। द कम होने और काला पदार्थ अधिक होने से, व्यक्ति का कर्म क्षेत्र बड़ा होगा। उस स्थिति में, व्यक्ति निम्न जन्मजात गुण का होता है। बहुत अधिक द या श्वेत पदार्थ होने पर, व्यक्ति का कर्म क्षेत्र छोटा होगा। परिणामस्वरूप, यह व्यक्ति अच्छे जन्मजात गुण वाला होगा। व्यक्ति का श्वेत पदार्थ और काला पदार्थ एक-दूसरे में परिवर्तित किया जा सकता है। उन्हें कैसे परिवर्तित किया जा सकता है? अच्छे कार्य करने से श्वेत पदार्थ उत्पन्न होता है, क्योंकि श्वेत पदार्थ कठिनाइयों के सहने, दु:ख भोगने, या अच्छे कार्यों को करने से प्राप्त होता है। काला पदार्थ गलत या बुरे कार्यों को करने से प्राप्त होता है, और यह कर्म है। इसमें परिवर्तन की यह प्रक्रिया होती है। साथ ही, इसका आगे ले जाने का भी संबंध होता है। क्योंकि यह मूल आत्मा के साथ जाता है, यह किसी एक जीवनकाल से उत्पन्न वस्तु नहीं हैं, बल्कि एक सुदूर काल से संचित होता आ रहा है। इसलिए, लोग कर्म प्राप्त करने और द संचित करने के बारे में बात करते हैं। इसके अतिरिक्त, वे पूर्वजों द्वारा भी हस्तांतरित किए जा सकते हैं। कई बार, मैं याद करता हूँ जो पुराने चीनी लोग या वृद्ध लोग कहते थे: "उसके पूर्वजों ने द जमा किया है। द जमा करो या द खो दो।" वह कितना सही कहा गया था? यह बिल्कुल सही है, वास्तव में।

एक व्यक्ति का अच्छा या निम्न जन्मजात गुण यह निर्धारित कर सकता है कि उसका ज्ञानोदय का गुण अच्छा है या निम्न। एक व्यक्ति का निम्न जन्मजात गुण उसके ज्ञानोदय के गुण को भी बहुत निम्न कर सकता है। ऐसा क्यों है? यह इसलिए क्योंकि जिसका जन्मजात गुण अच्छा होता है उसके पास बहुत अधिक श्वेत पदार्थ होता है जो हमारे विश्व और प्रकृति ज़न-शान-रेन के साथ बिना किसी बाधा के आत्मसात होता है। विश्व की प्रकृति सीधे आपके शरीर में अभिव्यक्त हो सकती है और आपके शरीर के निकट संपर्क में रह सकती है। किन्तु काला पदार्थ ठीक विपरीत है। क्योंकि यह बुरे कार्यों को करने से प्राप्त होता है, यह हमारे विश्व की प्रकृति से विपरीत दिशा में जाता है। इसलिए, काला पदार्थ हमारे विश्व की प्रकृति से अलग हो जाता है। जब यह काला

पदार्थ अत्यधिक मात्रा में संचित हो जाता है, यह व्यक्ति के शरीर को घेर कर एक क्षेत्र बना लेता है और उसे अन्दर लपेट लेता है। जितना बड़ा क्षेत्र होता है, उतना अधिक इसका घनत्व और मोटाई, और यह व्यक्ति के ज्ञानोदय के गुण को और बुरा बना देता है। यह इसलिए क्योंकि व्यक्ति विश्व की प्रकृति ज़न-शान-रेन को प्राप्त करने में असमर्थ रहता है, क्योंकि उसने बुरे कार्यों को करने से काला पदार्थ प्राप्त किया है। अक्सर, ऐसे व्यक्ति के लिए साधना अभ्यास में विश्वास करना कठिन होता है। उसका ज्ञानोदय का गुण जितना निम्न होता है, उतने ही अधिक कर्म प्रतिरोध का वह सामना करेगा। जितनी अधिक कठिनाई वह सहन करेगा, उतना ही कम वह इसमें विश्वास करेगा और उतना ही अधिक कठिन उसके लिए साधना अभ्यास करना होगा।

जिस व्यक्ति के पास श्वेत पदार्थ बहुत अधिक होता है उसके लिए साधना करना सरल होता है। यह इसलिए क्योंकि साधना के क्रम के दौरान, जब तक यह व्यक्ति विश्व की प्रकृति के साथ आत्मसात होता है और उसके शिनशिंग में सुधार होता है, उसका द सीधे गोंग में परिवर्तित हो जाएगा। जिसका काला पदार्थ बहुत अधिक होता है, हालांकि, उसके लिए एक अतिरिक्त प्रक्रिया होती है। यह एक उत्पाद की भांति है जो एक कारखाना बनाता है : बाकि सब पूर्वनिर्मित पदार्थ के साथ आते हैं, जबकि यह व्यक्ति कच्चे पदार्थ के साथ आता है जिसे प्रक्रिया से गुजारना आवश्यक होता है। इसलिए, यह आवश्यक है कि वह पहले कठिनाइयाँ सहे और कर्म को हटाए, जिससे यह श्वेत पदार्थ में परिवर्तित हो सके, और यह पदार्थ द बन सके। केवल तभी वह उच्च स्तर के गोंग को उत्पन्न कर सकता है। किन्तु अक्सर इस प्रकार के व्यक्ति का जन्मजात गुण अच्छा नहीं होता। यदि आप उसे दु:ख सहने के लिए कहते हैं, वह इसमें और कम विश्वास करेगा और उसके लिए उसे सहन करना और कठिन होगा। इसलिए, बहुत अधिक काले पदार्थ वाले व्यक्ति के लिए साधना अभ्यास करना कठिन होता है। इसलिए, ताओ विचारधारा या वह अभ्यास पद्धति जो केवल एक शिष्य को सिखाती थी उसमें अक्सर आवश्यक होता था कि गुरु शिष्य को खोजे न कि इसके विपरीत। यह इससे निर्धारित होता था कि किसी शिष्य के शरीर में ये वस्तुएँ कितनी अधिक मात्रा में हैं।

जन्मजात गुण व्यक्ति के ज्ञानोदय के गुण को निर्धारित करता है, किन्तु यह अटल नहीं है। कुछ लोगों का जन्मजात गुण बहुत अच्छा नहीं होता, किन्तु उनके घर

का वातावरण बहुत अच्छा होता है; परिवार के कई सदस्य साधना का अभ्यास करते हैं। उनमें से कुछ धर्म उपासक भी होते हैं और साधना अभ्यास के विषय में बहुत विश्वास करते हैं। इस वातावरण में, उसे इसमें विश्वास कराया जा सकता है, और इससे ज्ञानोदय के गुण में सुधार हो सकता है। इसलिए यह अटल नहीं है। कुछ लोगों का जन्मजात गुण बहुत अच्छा होता है, किन्तु हमारे व्यावहारिक समाज में उस थोड़ी सी जानकारी द्वारा शिक्षित हो जाने पर, और विशेषकर क्योंकि कुछ वर्ष पहले धारणावादी शिक्षा में अटल पद्धतियों के कारण, उनके मन बहुत संकुचित बन गए हैं और वे अपनी जानकारी से आगे कुछ विश्वास नहीं करेंगे। यह उनके ज्ञानोदय के गुण को गम्भीर रूप से प्रभावित कर सकता है।

उदाहरण के लिए, मैंने कक्षा में दिव्य नेत्र के खुलने के बारे में बताया था। तुरन्त ही, एक अच्छे जन्मजात गुण के व्यक्ति का दिव्य नेत्र एक बहुत ऊँचे स्तर पर खुल गया। उसने बहुत से दृश्य देखे जो और लोग नहीं देख सके। उसने औरों को बताया : "वाह, मैंने पूरे सभागार में लोगों के शरीरों पर फालुन को बर्फ की तरह गिरते हुए देखा। मैंने देखा कि गुरु ली का वास्तविक शरीर कैसा दिखाई पड़ता है, गुरु ली का प्रभामण्डल, फालुन कैसा दिखाई पड़ता है, और वहाँ कितने फा-शरीर हैं।" उसने देखा कि गुरु विभिन्न स्तरों पर व्याख्यान दे रहे थे और कैसे फालुन अभ्यासियों के शरीरों को व्यवस्थित कर रहे थे। उसने यह भी देखा कि व्याख्यान के दौरान यह गुरु का *गोंग-शरीर* [2] था जो प्रत्येक विभिन्न स्तर पर व्याख्यान दे रहा था। इसके अतिरिक्त, उसने देखा कि अप्सराएँ पुष्प वर्षा कर रही हैं, और इत्यादि। उसने इस प्रकार की कुछ आश्चर्यजनक वस्तुएँ देखीं, जो दर्शाता है कि उसका जन्मजात गुण बहुत अच्छा था। जैसे-जैसे वह बताता गया, अन्त में उसने कहा : "मैं इन वस्तुओं में विश्वास नहीं करता।" इनमें से कुछ वस्तुएँ पहले ही विज्ञान द्वारा प्रमाणित की जा चुकी हैं, और कई वस्तुएँ आधुनिक विज्ञान द्वारा समझाई भी जा सकती हैं; हम उनमें से कुछ पर चर्चा भी कर चुके हैं। यह इसलिए क्योंकि जो चीगोंग समझता है वह वास्तव में आधुनिक विज्ञान की समझ से आगे है- यह निश्चित है। इस विचार से, व्यक्ति का जन्मजात गुण पूरी तरह उसके ज्ञानोदय के गुण को निर्धारित नहीं करता।

ज्ञानप्राप्ति

"ज्ञानप्राप्ति" क्या है? "ज्ञानप्राप्ति" शब्द धर्म से आया है। बुद्धमत में, यह एक अभ्यासी की बौद्ध धर्म की समझ, ज्ञानोदय की समझ, और उच्चतम ज्ञानप्राप्ति की समझ को दर्शाता है। इसका अर्थ है विवेक का ज्ञानोदय। हालांकि, आजकल इसे पहले ही साधारण लोगों में प्रयोग किया जा रहा है। इसका अर्थ माना जाता है कि यह व्यक्ति बहुत चतुर है और यह पढ़ सकता है कि उसके अधीक्षक के मन में क्या है। वह वस्तुओं को तेजी से सीख सकता है और जानता है कि अधीक्षक को कैसे प्रसन्न रखा जाए। लोग उसे अच्छा ज्ञानोदय का गुण कहते हैं, और इसे अक्सर इस प्रकार समझा जाता है। आप एक बार साधारण लोगों के स्तर से कुछ ही ऊपर उठते हैं, आप पाएंगे कि इस स्तर पर नियम, जैसा साधारण लोगों द्वारा समझे जाते हैं, अक्सर गलत हैं। यह वह ज्ञानप्राप्ति नहीं है जिससे हमारा संदर्भ है। बल्कि, एक चतुर व्यक्ति का ज्ञानोदय का गुण अच्छा नहीं होता, क्योंकि जो व्यक्ति अधिक चतुर है केवल दिखावे के लिए काम करेगा जिससे अपने प्रशासक या अधीक्षक की प्रशंसा पा सके। उस स्थिति में, क्या वास्तविक कार्य किसी दूसरे के द्वारा नहीं किया जाएगा? इस प्रकार, यह व्यक्ति दूसरों का ऋणि होगा। क्योंकि वह चतुर है और जानता है कि दूसरों को कैसे प्रसन्न किया जाए, वह अधिक लाभ प्राप्त करेगा जबकि दूसरे अधिक हानि। क्योंकि वह चतुर है, उसे कोई हानि नहीं सहनी पड़ेगी, न ही वह सरलता से कुछ त्याग करेगा। परिणामस्वरूप, दूसरों को हानियाँ सहनी होंगी। जितना अधिक वह इस तुच्छ व्यावहारिक लाभ की परवाह करता है उतना ही वह मन से संकुचित बन जाता है, और उतना ही वह महसूस करता है कि वह साधारण लोगों के भौतिक लाभ नहीं छोड़ सकता। इसलिए वह स्वयं को बहुत व्यावहारिक मानेगा, और कोई हानि नहीं सहेगा।

कुछ लोग इस व्यक्ति से ईर्ष्या भी करते हैं! मैं आपको बता रहा हूँ कि उससे ईर्ष्या न करें। आप नहीं जानते कि वह कितना थकावट भरा जीवन जीता है: वह ठीक से खा या सो नहीं सकता; उसे सपने में भी स्व-लाभ के खोने का भय लगा रहता है, और वह निजी लाभ के लिए पूरा जोर लगा देता है। क्या आप नहीं कहेंगे कि वह एक थकावट भरा जीवन जीता है, क्योंकि उसका पूरा जीवन उसी के लिए समर्पित है? हम

कहते हैं कि जब आप मतभेद में एक कदम पीछे हटते हैं, आप सागरों और आकाश को असीमित पाएंगे, और यह निश्चित ही दूसरी अवस्था होगी। उस प्रकार का व्यक्ति, हालांकि, हार नहीं मानेगा और बहुत थकावट भरा जीवन जिएगा। आपको उससे नहीं सीखना चाहिए। साधकों के समुदाय में यह कहा जाता है : "इस प्रकार का व्यक्ति पूरी तरह खो चुका है। वह साधारण लोगों के बीच भौतिक लाभों के लिए पूरी तरह खो चुका है।" उसे द संरक्षित रखने के लिए कहना उतना सरल नहीं होगा! यदि आप उसे साधना अभ्यास करने के लिए कहेंगे, वह आप पर विश्वास नहीं करेगा : "साधना अभ्यास? जब तुम्हें पीटा जाता है या भला-बुरा कहा जाता है, अभ्यासी होने पर, तुम वापस नहीं झगड़ते। जब और लोग तुम्हारे लिए कठिनाइयाँ उत्पन्न करते हैं, इसके बजाय कि तुम वैसा ही करो जैसा वे करते हैं, तुम्हें अपने मन में उन्हें धन्यवाद भी कहना पड़ता है। तुम सब आह क्यू बन गए हो! तुम सब मानसिक रूप से बीमार हो!" इस प्रकार के व्यक्ति के लिए, कोई तरीका नहीं है जिससे वह साधना अभ्यास समझ जाए। वह कहेगा कि आप अविश्वसनीय और मूर्ख हैं। क्या आप नहीं कहेंगे कि उसे बचाना कठिन है?

यह वह ज्ञानोदय नहीं है जिससे हमारा संदर्भ है। बल्कि, जिसे यह व्यक्ति स्व-लाभ की दृष्टि से "मूर्खता" कहता है, वह ज्ञानोदय है जिसकी हमने बात की है। नि:संदेह, इस प्रकार का व्यक्ति वास्तव में मूर्ख नहीं हैं। हम केवल निजी, स्व-लाभों को अलगाव की दृष्टि से देखते हैं, जबकि दूसरे क्षेत्रों में हम बहुत बुद्धिमान हैं। वैज्ञानिक शोध परियोजनाओं या हमारे अधीक्षकों द्वारा सौंपे गए कार्य या दूसरे कर्तव्यों को पूरा करने में, हम बहुत स्पष्ट-मन हैं और उन्हें बहुत अच्छी तरह करते हैं। केवल अपने निजी लाभों या अपने पारस्परिक मतभेदों के दृष्टिकोण से हम कम परवाह करते हैं। आपको कौन मूर्ख कहेगा? कोई नहीं कहेगा कि आप मूर्ख हैं - यह निश्चित ही इस प्रकार है।

आइए एक वास्तविक मूर्ख व्यक्ति के बारे में बात करें, क्योंकि यह नियम ऊँचे स्तरों पर पूरी तरह विपरीत हो जाता है। एक मूर्ख व्यक्ति साधारण लोगों के बीच कोई बड़ा गलत कार्य नहीं कर सकता, और न ही वह स्व-लाभ के लिए संघर्ष या झगड़ा करेगा। वह प्रसिद्धि नहीं चाहता या द नहीं खोता, बल्कि दूसरे उसे द देते हैं। उसकी पिटाई करने या उसे भला-बुरा कहने, दोनों से उसे द मिलता है, और यह पदार्थ अत्यधिक मूल्यवान है। हमारे विश्व में, यह नियम है : त्याग नहीं तो लाभ नहीं। लाभ

प्राप्त करने के लिए, त्याग आवश्यक है। जब और लोग इस बहुत मूर्ख व्यक्ति को देखते हैं, वे सब उसे अपशब्द कहते हैं : "तुम इतने मूर्ख हो।" इस अपशब्द के कहने से, द का एक भाग उसकी ओर फेंक दिया जाएगा। उसका लाभ लेने पर, आप लाभ पाने वाले पक्ष में हैं, इसलिए आपको कुछ त्यागना आवश्यक है। यदि कोई वहां जाता है और उसे ठोकर मारता है : "तुम इतने बड़े मूर्ख हो।" तभी, द का एक बड़ा भाग उसकी ओर दोबारा उछाला जाएगा। जब कोई उस पर जोर चलाता है या उसे ठोकर मारता है, वह केवल मुस्कुराएगा : "इसे लाओ। तुम मुझे द दे रहे हो, और मैं इसमें से जरा भी नहीं ठुकराऊँगा!" तब उच्च स्तरों के नियमों के अनुसार, इसके बारे में सोचें, कौन चतुर है? क्या यह व्यक्ति चतुर नहीं है। वह सबसे अधिक चतुर है क्योंकि वह बिल्कुल द नहीं खोता। जब आप इसकी ओर द उछालते हैं, वह इसमें से जरा भी नहीं ठुकराता। वह इसमें से सारा ले लेता है और एक मुस्कुराहट के साथ स्वीकार करता है। वह इस जीवन में मूर्ख हो सकता है, किन्तु अगले में नहीं - उसकी मूल आत्मा मूर्ख नहीं है। धर्म में यह कहा गया है कि बहुत द के साथ, व्यक्ति अगले जीवन में एक उच्च पदाधिकारी बनेगा या बहुत सा धन अर्जित करेगा; ये दोनों व्यक्ति के द से बदले जाते हैं।

हम कह चुके हैं कि द को सीधे गोंग में रूपांतरित किया जा सकता है। क्या आपके साधना स्तर की ऊँचाई इस द को रूपांतरित करने से नहीं आती? इसे सीधे गोंग में रूपांतरित किया जा सकता है। क्या गोंग जो व्यक्ति का स्तर निर्धारित करता है और गोंग सामर्थ्य इस पदार्थ से रूपांतरित नहीं होते? क्या आप नहीं कहेंगे यह बहुत मूल्यवान है? यह जन्म के साथ आ सकता है और मृत्यु के बाद साथ जा सकता है। बुद्धमत में यह कहा गया है कि आपका साधना स्तर आपकी फल पदवी है। जितना आप त्याग करेंगे उतनी मात्रा में आप लाभ प्राप्त करेंगे - यह केवल ऐसा एक नियम है। धर्म में कहा गया है कि द के साथ व्यक्ति अगले जीवन में उच्च पदाधिकारी बन सकता है या बहुत सा धन अर्जित कर सकता है। कम द होने पर, व्यक्ति को भीख मांग कर भोजन मिलना भी कठिन होगा क्योंकि बदलने के लिए कोई द नहीं है। त्याग नहीं तो प्राप्ति नहीं! बिना किसी द के, व्यक्ति दोनों शरीर और आत्मा से नष्ट हो जाएगा; वह वास्तव में मृत हो जाएगा।

अतीत में, एक चीगोंग गुरु था जो जब पहली बार जनता के बीच आया उसका स्तर बहुत ऊँचा था। यह चीगोंग गुरु बाद में प्रसिद्धि और स्व-लाभ में लिप्त हो गया।

उसका गुरु उसकी सह-आत्मा को साथ ले गया क्योंकि वह उन लोगों से संबंधित था जो सह-आत्मा की साधना करते थे। जब उसकी सह-आत्मा साथ थी, वह अपनी सह-आत्मा के प्रभाव में था। उदाहरण के लिए, एक दिन उसके कार्यालय ने एक मकान का आबंटन किया। अधीक्षक ने कहा : "जिन सभी को मकान की आवश्यकता है यहाँ आकर अपनी परिस्थितियों का वर्णन करें और समझायें कि आप में से सभी को मकान क्यों चाहिए।" सभी ने अपने कारण बताए जबकि इस व्यक्ति ने एक शब्द भी नहीं कहा। अन्त में, अधीक्षक ने पाया कि इस व्यक्ति को इसकी औरों से अधिक आवश्यकता है, और मकान उसे देना चाहिए। और लोगों ने दावा किया : "नहीं, मकान उसे नहीं दिया जाना चाहिए। यह मुझे दिया जाना चाहिए क्योंकि मुझे मकान की बहुत आवश्यकता है।" इस व्यक्ति ने कहा "तब तुम आगे बढ़ो और इसे ले लो।" एक साधारण व्यक्ति उसे मूर्ख मानेगा। कुछ लोग जानते थे कि वह एक अभ्यासी है और उससे पूछा : "एक अभ्यासी की भांति, तुम कुछ नहीं चाहते। तुम क्या चाहते हो?" उसने उत्तर दिया, "मैं वह लूँगा जो और नहीं चाहते।" वास्तव में, वह मूर्ख नहीं था और वह बहुत बुद्धिमान था। केवल निजी, स्व-लाभ के दृष्टिकोण से, वह इस प्रकार था। वह प्रकृति के क्रम का अनुसरण करने में विश्वास करता था। औरों ने उससे दोबारा पूछा : "इन दिनों व्यक्ति क्या नहीं चाहता?" उसने उत्तर दिया : "कोई भी जमीन पर पड़े हुए पत्थर के टुकड़ों को नहीं चाहता जो इधर-उधर ठोकर खाते हैं। इसलिए मैं उसे उठा लूँगा।" साधारण लोग इसे अविश्वसनीय पाते हैं और अभ्यासियों को नहीं समझ सकते। वे इसे नहीं समझ सकते, क्योंकि उनके विचारों के आयाम कहीं दूर हैं और उनके स्तरों की दूरी बहुत अधिक है। नि:संदेह, वह उस पत्थर को उठाने नहीं जा रहा था। उसने एक नियम बताया जो एक साधारण व्यक्ति नहीं समझ सकता : "मैं साधारण लोगों के बीच कुछ इच्छा नहीं रखता।" आइए पत्थर के बारे में बात करें। आप जानते हैं कि बुद्धमत के शास्त्रों में लिखा है : "सुखावती दिव्यलोक में, वृक्ष सोने के बने हैं, और इसी प्रकार भूमि, पक्षी, पुष्प, घर सोने के हैं। बुद्ध शरीर भी सुनहरा और आभावान है।" वहाँ कोई पत्थर का टुकड़ा नहीं मिलता। कहा जाता है कि वहाँ मुद्रा के रूप में पत्थर का प्रयोग होता है। वह वहाँ पत्थर का टुकड़ा लेकर नहीं जाने वाला था, किन्तु उसने यह नियम बताया जो एक साधारण व्यक्ति नहीं समझ सकता। वास्तव में, अभ्यासी कहेंगे : "साधारण लोगों की अपनी इच्छाएँ हैं, और हम उनकी चाह नहीं रखते। जहाँ तक जो साधारण लोगों के पास है, हमें उसमें भी रुचि नहीं है। किन्तु जो हमारे पास है वह ऐसा है जो साधारण

लोग नहीं प्राप्त कर सकते, भले ही वे उसे चाहते हों।"

वास्तव में, ज्ञानप्राप्ति जिसकी हमने अभी बात की उसका संदर्भ साधना अभ्यास के दौरान एक प्रकार के ज्ञानोदय से है, और यह साधारण लोगों के ज्ञानोदय से बिल्कुल विपरीत है। ज्ञानप्राप्ति जिससे हमारा वास्तव में संदर्भ है वह यह विषय है कि व्यक्ति साधना अभ्यास के दौरान गुरु द्वारा सिखाए गए फा या ताओ गुरु द्वारा सिखाए गए ताओ की ज्ञानप्राप्ति कर सकता है और स्वीकार कर सकता है, यह कि वह विपत्तियों का सामना करते हुए स्वयं को एक अभ्यासी मानता है, और यह कि वह साधना करते समय फा से जुड़ा रह सकता है अथवा नहीं। जहाँ तक कुछ लोगों की बात है, भले ही आप उन्हें यह कैसे भी बताएँ, वे तब भी विश्वास नहीं करेंगे और सोचेंगे कि साधारण व्यक्ति होना अधिक व्यावहारिक है। वे अपने जिद्दी विश्वासों को छोड़ने की जगह उन पर अड़े रहेंगे, और यह उन्हें विश्वास करने में असमर्थ बना देता है। कुछ लोग केवल रोगों को ठीक करना चाहते हैं। जब कभी मैं यह कहता हूँ कि चीगोंग का रोगों को ठीक करने में किसी भी प्रकार प्रयोग नहीं होता, उनके मन विपरीत प्रतिक्रिया करेंगे और, इसलिए, जो बाद में पढ़ाया गया है वे विश्वास नहीं करेंगे।

कुछ लोग अपने ज्ञानोदय के गुण में सुधार कर ही नहीं सकते। वे बिना परवाह किए मेरी पुस्तक में चिन्ह बना देते हैं। हमारे वे अभ्यासी जिनके दिव्य नेत्र खुले हैं देख सकते हैं कि यह पुस्तक बहुरंगी, सुनहरी, और आभावान है। प्रत्येक शब्द मेरे फा-शरीर का स्वरूप दर्शाता है। यदि मैं असत्य कहता हूँ, तो इसे सबको धोखा देना माना जाएगा। जो चिन्ह आपने बनाया बहुत काला दिखाई पड़ता है। आप इसमें बिन परवाह चिन्ह बनाने का साहस कैसे कर सकते हैं? हम यहाँ क्या कर रहे हैं? क्या हम उच्च स्तरों की ओर साधना अभ्यास के लिए आपका मार्गदर्शन नहीं कर रहे हैं? ऐसी वस्तुएँ हैं जिन पर आपको भी विचार करना चाहिए। यह पुस्तक आपके साधना अभ्यास का मार्गदर्शन कर सकती है। क्या आप नहीं सोचते कि यह अनमोल है? क्या आप बुद्ध की उपासना द्वारा वास्तव में साधना अभ्यास कर सकते हैं? आप बहुत श्रद्धालु हैं और उस बुद्ध प्रतिमा जिसके लिए आप रोज धूपबत्ती जलाते हैं, को हल्के से छूने भर का भी साहस नहीं करते किन्तु आप दाफा का अनादर करने का साहस करते हैं जो वास्तव में साधना अभ्यास में आपका मार्गदर्शन कर सकता है।

व्यक्ति के ज्ञानोदय के गुण के विषय पर बात करने पर, इसका संदर्भ आपकी किसी वस्तु की समझ की गहराई से है जो साधना अभ्यास के दौरान विभिन्न स्तरों पर होती है, या किसी विशिष्ट फा से है जो गुरु ने सिखाया है। किन्तु यह अब भी मूलभूत ज्ञानप्राप्ति नहीं है जिससे हमारा संदर्भ है। मूलभूत ज्ञानप्राप्ति जिसके बारे में हम बात करते हैं उसका अर्थ है : व्यक्ति के जीवनकाल में, साधना अभ्यास आरम्भ होने के समय से वह निरन्तर उत्थान करेगा और मानव मोहभावों और विभिन्न इच्छाओं को छोड़ता जाएगा, और उसका गोंग भी निरन्तर बढ़ता जाएगा जब तक साधना अभ्यास का अन्तिम पड़ाव न आ जाए। जब यह पदार्थ द पूरी तरह गोंग में रूपांतरित हो जाता है और उस व्यक्ति के गुरु द्वारा रचित साधना यात्रा अन्तिम पड़ाव तक आ जाती है, "बूम!" समस्त बंधन धमाके के साथ उसी पल खुल जाएंगे। उसका दिव्य नेत्र उसके स्तर के उच्चतम बिंदु तक पहुँच जाएगा, और अपने स्तर पर वह विभिन्न आयामों के सत्य को, विभिन्न काल-अवकाशों में विभिन्न जीवों के स्वरूपों, और हमारे विश्व के सत्य को देख सकता है। उसकी समस्त दिव्य शक्तियाँ प्रकट होंगी, और वह विभिन्न प्रकार की जीवन सत्ताओं से संपर्क कर सकेगा। इस समय, क्या यह व्यक्ति एक महान ज्ञानप्राप्त व्यक्ति या साधना अभ्यास द्वारा ज्ञानप्राप्त व्यक्ति नहीं है? इसका प्राचीन भारतीय भाषा में अनुवाद किया जाए तो, वह एक बुद्ध है।

ज्ञानप्राप्ति जिससे हमारा संदर्भ है वह यह मूलभूत ज्ञानप्राप्ति है जो आकस्मिक ज्ञानप्राप्ति से संबंधित है। आकस्मिक ज्ञानप्राप्ति का अर्थ है कि व्यक्ति अपनी जीवनभर की साधना के दौरान बंधित रहता है, वह नहीं जानता कि उसका गोंग स्तर कितना ऊँचा है या उसका सवंर्धित गोंग किस रूप में दिखाई पड़ता है। वह कुछ भी महसूस नहीं करता, और उसके शरीर की समस्त कोशिकाएँ भी बंधित रहती हैं। गोंग जिसकी उसने साधना की है अन्तिम पड़ाव तक बंधित रहता है, और केवल तभी यह बंधनमुक्त हो सकता है। केवल कोई महान जन्मजात गुण वाला व्यक्ति इसे कर सकता है, क्योंकि यह साधना अभ्यास बहुत दु:खदाई होता है। उसे आरम्भ से ही एक अच्छा व्यक्ति होना आवश्यक होता है। उसे सदैव शिनशिंग में सुधार करना होता है, सदैव कठिनाइयाँ सहनी होती हैं, साधना में निरन्तर उत्थान करना होता है, और सदैव शिनशिंग सुधार के लिए तत्पर रहना होता है, भले ही वह स्वयं अपना गोंग न देख सके। इस प्रकार के

व्यक्ति के लिए साधना सर्वाधिक कठिन होती है, और यह आवश्यक है कि वह कोई महान जन्मजात गुण वाला व्यक्ति हो। यह व्यक्ति अनेक वर्षों तक बिना कुछ जाने साधना अभ्यास करेगा।

ज्ञानप्राप्ति का एक और प्रकार होता है जिसे क्रमदर ज्ञानप्राप्ति कहते हैं। बिल्कुल आरम्भ से ही, कई लोग फालुन का आवर्तन महसूस कर चुके हैं। उसी समय, मैंने सभी के दिव्य नेत्र भी खोल दिए हैं। अनेक कारणों से, कुछ लोग यदि अभी नहीं तो भविष्य में वस्तुओं को देख सकेंगे। वे वस्तुओं को धुंधलेपन से देखते हुए और स्पष्ट देख सकेंगे, और वे इसे प्रयोग न कर पाने से प्रयोग कैसे करें यह जान सकेंगे। व्यक्ति का स्तर निरन्तर बढ़ेगा। जैसे-जैसे आपके शिनशिंग में सुधार होता है और विभिन्न मोहभाव छूटते हैं, अनेक दिव्य सिद्धियाँ विकसित हो रही होती हैं। साधना अभ्यास की संपूर्ण रूपांतरण प्रक्रिया और शरीर की रूपांतरण प्रक्रिया सब इस परिस्थिति में होंगी कि आप उन्हें देख या महसूस कर सकते हैं। परिवर्तन अन्तिम पड़ाव तक निरन्तर होते रहेंगे जब आप पूरी तरह विश्व के सत्य को समझ सकते हैं, और जब आप साधना में उच्चतम आशान्वित बिंदु तक पहुँचते हैं। मूल शरीर का रूपांतरण और दिव्य सिद्धियों का प्रबलन एक विशिष्ट अंश तक पहुँच चुका होगा और क्रमबद्ध इस ध्येय को प्राप्त करेगा। यह क्रमदर ज्ञानप्राप्ति है। यह क्रमदर ज्ञानप्राप्ति की प्रणाली भी सरल नहीं है। दिव्य सिद्धियाँ होने पर, कुछ लोग अपने मोहभाव नहीं छोड़ सकते और कदाचित उनका दिखावा करेंगे या कोई बुरे कार्य करेंगे। आप इस प्रकार गोंग की हानि करेंगे, और आपका साधना अभ्यास व्यर्थ रहेगा और असफलता में समाप्त होगा। कुछ लोग विभिन्न स्तरों पर विभिन्न जीवन सत्ताओं को देख और परख सकते हैं। कोई आपको यह या वह करने के लिए कह सकता है। वह व्यक्ति आपको अपनी वस्तुओं का अभ्यास करने के लिए और अपना शिष्य बनाने के लिए कह सकता है, किन्तु वह आपको उचित फल प्राप्त करने में मदद नहीं कर सकता क्योंकि उसने, स्वयं भी, उचित फल प्राप्त नहीं किया है।

इसके अतिरिक्त, उच्च आयामों में सभी प्राणी देव होते हैं जो वृहत रूप धारण कर सकते हैं और पूरी तरह अपनी अलौकिक शक्तियों का प्रदर्शन कर सकते हैं। यदि आपका मन उचित नहीं है, क्या आप उनका अनुसरण नहीं करेंगे? एक बार आप उनका अनुसरण करते हैं, आपका साधना अभ्यास व्यर्थ समाप्त होगा। यदि वह प्राणी

एक सच्चा बुद्ध या सच्चा ताओ भी हो, आपको तब भी साधना अभ्यास दोबारा आरम्भ करना होगा। क्या वे देव नहीं है भले ही वे दिव्यलोक के किसी भी स्तर से आए हों? जब व्यक्ति साधना में एक बहुत ऊँचे स्तर पर पहुँच जाता है और ध्येय प्राप्त कर लेता है केवल तभी वह ऊपर और आगे उठ सकता है। एक साधारण व्यक्ति के लिए, हालांकि, एक देव निश्चित ही बहुत ऊँचा, बड़ा, और बहुत सामर्थ्यवान दिखाई दे सकता है। किन्तु हो सकता है कि उस प्राणी ने भी उचित फल प्राप्त न किया हो। विभिन्न संदेशों द्वारा विघ्नों और विभिन्न दृश्यों द्वारा ध्यान भंग होने से, क्या आप स्थिर रह सकते हैं? इसलिए, दिव्य नेत्र खुले होने से भी साधना अभ्यास करना कठिन होता है, और अपने शिनशिंग को उचित प्रकार नियन्त्रित रखना दुष्कर होता है। सौभाग्यवश, हालांकि, हमारे अभ्यासियों में से अनेकों की दिव्य सिद्धियाँ उनकी साधना प्रक्रिया के आधे रास्ते में खोल दी जाएंगी, और वे क्रमदर ज्ञानप्राप्ति के स्तर पर पहुँच जाएंगे। हर किसी का दिव्य नेत्र खोला जाएगा, किन्तु अनेक लोगों की दिव्य सिद्धियों को प्रकट होने की अनुमति नहीं होगी। जब आपका शिनशिंग क्रमशः एक विशिष्ट स्तर तक पहुँचता है और आप स्वयं को एक स्थिर मन से संभाल सकते हैं, वे सब एक साथ धमाके साथ खुल जाएंगी। एक विशिष्ट स्तर पर, आप क्रमदर ज्ञानप्राप्ति की अवस्था में प्रवेश करेंगे, और इस समय पर आपको स्वयं को उचित प्रकार संभालना सरल होगा। विभिन्न दिव्य सिद्धियाँ उभर कर आएंगी। आप साधना में स्वयं उत्थान करेंगे जब तक, अन्त में, वे सब बंधनमुक्त नहीं हो जातीं। आपको अपने साधना अभ्यास के आधे रास्ते में उन्हें रखने की अनुमति होगी। हमारे अनेक अभ्यासी इस वर्ग से संबंधित हैं, इसलिए आपको वस्तुओं को देखने के लिए चिन्तित नहीं होना चाहिए।

हर किसी ने सुना होगा कि ज़ेन बुद्धमत भी आकस्मिक ज्ञानप्राप्ति और क्रमदर ज्ञानप्राप्ति के बीच मतभेदों के बारे में कहता है। ह्वेनेंग, ज़ेन बुद्धमत के छठे धर्माचार्य ने, आकस्मिक ज्ञानप्राप्ति सिखाई थी जबकि शनश्यो[3] जो ज़ेन बुद्धमत की उत्तरी विचारधारा से थे, ने क्रमदर ज्ञानप्राप्ति सिखाई थी। बुद्धमत के शिक्षण पर दोनों के बीच मतभेद इतिहास में बहुत लम्बे समय तक चला। मैं इसे व्यर्थ मानता हूँ। क्यों? यह इसलिए क्योंकि जिससे उनका संदर्भ था वह साधना अभ्यास की प्रक्रिया में केवल एक सिद्धांत की समझ के बारे में था। जहाँ तक इस सिद्धांत का प्रश्न है, कुछ लोग इसे एक साथ समझ सकते हैं, जबकि दूसरे इसके बारे में ज्ञानोदय कर सकते हैं और क्रमदर

समझ सकते हैं। क्या यह महत्वपूर्ण है कि कोई कैसे ज्ञानप्राप्त करता है? यह बेहतर होगा यदि कोई इसे एक साथ समझ सके, किन्तु यह भी अच्छा है कि कोई इसके बारे में क्रमदर ज्ञानोदय करे। क्या दोनों ज्ञानप्राप्ति के प्रकार नहीं हैं? दोनों ही ज्ञानप्राप्ति हैं, इसलिए कोई भी गलत नहीं हैं।

महान जन्मजात गुण वाला व्यक्ति

"महान जन्मजात गुण" वाला व्यक्ति क्या है? किसी महान जन्मजात गुण वाले व्यक्ति और किसी अच्छे या निम्न जन्मजात गुण वाले व्यक्ति के बीच भिन्नताएँ होती हैं। किसी महान जन्मजात गुण वाले व्यक्ति को खोजना बहुत कठिन होता है, क्योंकि ऐसे व्यक्ति का जन्म बहुत लम्बे ऐतिहासिक काल के बाद होता है। नि:संदेह एक महान जन्मजात गुण वाले व्यक्ति के पास सर्वप्रथम बहुताधिक मात्रा में द और इस श्वेत पदार्थ का बहुत बड़ा क्षेत्र होना चाहिए- यह निश्चित है। साथ ही, यह व्यक्ति सबसे कठोरतम कठिनाइयों को सहने में भी समर्थ होना चाहिए। उसके पास एक महान सहनशीलता का मन भी होना चाहिए, और वह त्याग करने के लिए समर्थ होना चाहिए। उसे द को अच्छी तरह संरक्षित भी रखना चाहिए, अच्छा ज्ञानोदय का गुण होना चाहिए, इत्यादि।

सबसे कठोरतम कठिनाई क्या है? बुद्धमत में यह माना जाता है कि मानव होना दु:ख भोगना है- जब तक आप मनुष्य हैं, आपको दु:ख भोगना होगा। यह विश्वास करता है कि दूसरे आयामों में प्राणियों के हमारे समान साधारण मानव शरीर नहीं होते। वे इसलिए रोगग्रस्त नहीं होते, और न ही वहाँ जन्म, वृद्धावस्था , रोग, और मृत्यु की समस्याएँ होती हैं। वहाँ आरम्भ से ही इस प्रकार की पीड़ा नहीं होती। दूसरे आयाम में लोग उड़ सकते हैं क्योंकि वे भारमुक्त होते हैं और बहुत अद्भुत होते हैं। इस शरीर के कारण, साधारण लोगों का इस समस्या से सामना होगा : वे सर्दी, गर्मी, प्यास, भूख, या थकान को सहन नहीं कर सकते और उन्हें जन्म, वृद्धावस्था, रोग, और मृत्यु से भी गुजरना होता है।

मैंने एक समाचार पत्र में पढ़ा था कि तांगशान[4] में भूकम्प के समय, भूकम्प से बहुत से लोग मारे गए, किन्तु कुछ बचा लिए गए। इस वर्ग के लोगों का एक विशेष सामाजिक सर्वेक्षण किया गया। उनसे पूछा गया : "मृत्यु की अवस्था में आपको कैसा

महसूस हुआ?" आश्चर्यजनक रूप से, इन सब लोगों ने सहमत रूप से एक ही विशिष्ट परिस्थिति के बारे में बताया। जो यह थी कि मृत्यु के समय पर उन्हें भय नहीं लगा; इसके विपरीत, उन्हें अचानक कुछ प्रकार के आन्तरिक उल्लास के साथ, एक राहत का आभास हुआ। कुछ लोगों को शरीर के बंधन से मुक्ति का एहसास हुआ और वे बहुत हल्केपन से और अद्भुत तरीके से उड़ सकते थे; वे अपने शरीरों को भी देख सकते थे। कुछ लोग दूसरे आयामों के प्राणियों को भी देख सके, और जबकि दूसरे कहीं और चले गए। उन सभी ने ठीक उस पल एक राहत के एहसास का उल्लेख किया, और कुछ प्रकार के आन्तरिक उल्लास का, जिसमें पीड़ा का कोई एहसास नहीं था। यह बताता है कि इस मानव भौतिक शरीर के साथ, व्यक्ति पीड़ा महसूस करेगा, किन्तु क्योंकि हर कोई माँ के गर्भ से इसी प्रकार आता है, कोई नहीं जानता कि यह पीड़ा है।

मैंने बताया है कि व्यक्ति को सबसे कठोर कठिनाइयाँ सहनी चाहिएँ। दूसरे दिन मैंने कहा था मनुष्यजाति के काल-अवकाश की अवधारणा दूसरे, वृहत काल-अवकाश से भिन्न है। यहाँ, एक शचन दो घण्टे है, जो उस अन्तरिक्ष में एक वर्ष है। यदि कोई व्यक्ति इस कठोर परिस्थिति में साधना करता है, उसे वास्तव में उल्लेखनीय माना जाएगा। जब यह व्यक्ति ताओ के लिए हृदय विकसित कर लेता है और साधना करना चाहता है, वह वास्तव में महान है। इतनी कठिनाइयों के साथ, उसने अभी भी अपनी मूल प्रकृति को नहीं खोया है और साधना अभ्यास द्वारा अपने मूल की ओर वापस जाना चाहता है। अभ्यासियों की बिना शर्त मदद क्यों की जा सकती है? यह केवल इसीलिए है। जब यह व्यक्ति साधारण लोगों के इस आयाम में एक रात ध्यान में बैठता है, इसे देख कर, दूसरे कहेंगे कि वह व्यक्ति वास्तव में उल्लेखनीय है क्योंकि वह वहाँ छ: वर्ष से बैठा है। यह इसलिए क्योंकि हमारा एक शचन वहाँ के एक वर्ष के बराबर है। हमारी मनुष्यजाति का आयाम बहुत विशिष्ट है।

व्यक्ति सबसे कठोर कठिनाइयाँ कैसे सहता है? उदाहरण के लिए, एक व्यक्ति काम पर जाता है और कार्यस्थल का हाल-चाल ठीक नहीं चल रहा। यह परिस्थिति और अधिक नहीं चल सकती क्योंकि लोग अपना काम नहीं कर रहे। कार्यस्थल में सुधार किया जाएगा और ठेके के कारीगरों का प्रयोग किया जाएगा। अतिरिक्त कर्मियों की छंटनी की जाएगी, और यह व्यक्ति उनमें से एक है जिसकी रोजी-रोटी अचानक छिन जाती है। उसे कैसा महसूस होगा? आमदनी कमाने के और दूसरे स्थान नहीं हैं।

वह अपनी जीविका कैसे चलाएगा? उसके पास कोई और कौशल भी नहीं है, इसलिए वह दु:खी होकर घर वापस जाता है। जैसे ही वह घर पहुँचता है, घर में उसके बुजुर्ग माता-पिता में से एक बीमार है और गंभीर अवस्था में है। चिन्तित होकर, वह जल्द ही बुजुर्ग पिता को किसी अस्पताल में ले जाएगा। अस्पताल में भर्ती के लिए धन उधार लेने के लिए वह बहुत परेशानियों से गुजरेगा। वह तब बुजुर्ग पिता के लिए कुछ खाना बनाने के लिए घर वापस आएगा। जैसे ही वह घर आता है, विद्यालय का शिक्षक द्वार खटखटाता हुआ आएगा : "आपके बच्चे ने लड़ाई-झगड़े में किसी को जख्मी कर दिया है, आप तुरन्त उसे देखने के लिए चलो।" इस परिस्थिति से निपट कर जैसे ही वह घर वापस आता है, जैसे ही वह बैठता है, एक फोन आएगा, जो उसे बताता है : "तुम्हारी पत्नी का किसी के साथ संबंध है।" निश्चित ही, आप इस प्रकार की परिस्थिति से नहीं गुजरेंगे। एक साधारण व्यक्ति इस प्रकार की कठिनाइयों को सहन नहीं कर सकता और सोचेगा : "मैं किस लिए जी रहा हूँ? मैं कोई रस्सी का फंदा लेकर लटक क्यों नहीं जाता और इस सबको समाप्त कर देता?" मैं केवल यह कह रहा हूँ कि व्यक्ति को सबसे कठोर कठिनाइयों को सहने में सक्षम होना चाहिए। नि:संदेह, हो सकता है कि वे इस रूप में न आएँ। तब भी, एक-दूसरे के बीच मतभेद, संघर्ष जो आपके शिनशिंग को कड़ा करते हैं, और निजी लाभ के लिए प्रतिद्वन्द भी इन समस्याओं से कम सरल नहीं हैं। अनेक लोग केवल अपनी बात सिद्ध करने के लिए या चेहरा बचाने के लिए जीते हैं और जब वे परिस्थितियों से और नहीं जूझ पाते आत्महत्या कर लेते हैं। इसलिए हमें इस जटिल वातावरण में साधना करनी चाहिए और सबसे कठोर कठिनाइयाँ सहने में सक्षम होना चाहिए। साथ ही, हमारे पास एक महान धैर्य का हृदय होना चाहिए।

"महान धैर्य का हृदय" क्या होता है? एक अभ्यासी की भांति, जो पहला कार्य आपको करने में सक्षम होना चाहिए वह है कि जब आपको पीटा या भला-बुरा कहा जाता है आपको वापस झगड़ा नहीं करना चाहिए- आपको सहनशील होना चाहिए। अन्यथा, आप किस प्रकार के अभ्यासी होंगे? कोई कहता है : "सहनशील होना वास्तव में कठिन है, और मैं गर्म स्वभाव का हूँ।" यदि आपका स्वभाव अच्छा नहीं है, आपको इसे बदल देना चाहिए, क्योंकि एक अभ्यासी को सहनशील होना चाहिए। कुछ लोग बच्चों को अनुशासित करने में बहुत क्रोधित हो जाते हैं और उन पर चिल्लाते हैं, और हाहाकार मचा देते हैं। आपको बच्चों को अनुशासित करते समय

उस प्रकार नहीं होना चाहिए, और न ही आपको स्वयं बहुत नाराज हो जाना चाहिए। आपको बच्चों को तर्क के साथ शिक्षा देनी चाहिए जिससे आप वास्तव में उन्हें अच्छी तरह पढ़ा सकें। यदि आप छोटी-मोटी बातों से भी ऊपर नहीं उठ सकते और आसानी से क्रोधित हो जाते हैं, आप कैसे अपने गोंग को बढ़ाने की आशा रख सकते हैं? कोई कहता है : "यदि कोई मुझे तब ठोकर मारे जब मैं सड़क पर जा रहा हूँ और आसपास कोई मुझे नहीं जानता हो, मैं इसे सहन कर सकता हूँ।" मैं कहूँगा कि यह समुचित नहीं है। हो सकता है भविष्य में आपको चेहरे पर दो बार थप्पड़ मारा जाए, और आपका उसके सामने अपमान हो जिसे आप सबसे कम चाहते हैं कि वह यह देखे। ये यह देखने के लिए है कि आप इस विषय से कैसे निपटते हैं और आप इसे सहन कर पाते हैं या नहीं। यदि आप इसे सहन कर पाते हैं और तब भी यह आपके मन पर छाया रहता है, तब भी यह समुचित नहीं है। जैसा कि आप जानते हैं, जब कोई व्यक्ति अरहत स्तर पर पहुँचता है, उसे अपने हृदय में किसी बात की चिन्ता नहीं होती। वह अपने हृदय में किसी भी साधारण मानवीय विषय के बारे में जरा भी परवाह नहीं करता, और वह सदैव मुस्कुराएगा और अच्छे स्वभाव में रहेगा। भले ही वह कितना भी नुकसान सहे, वह तब भी मुस्कुराएगा और बिना किसी चिन्ता के अच्छे स्वभाव में रहेगा। यदि आप वास्तव में इसे कर सकते हैं, आप पहले ही अरहत की फल पदवी के प्रवेश द्वार पर पहुँच गए हैं।

कोई कहता है, "यदि सहनशीलता का इस सीमा तक अभ्यास किया जाए, साधारण लोग कहेंगे कि हम बहुत डरपोक हैं और हमारा बहुत सरलता से लाभ उठाया जा सकता है।" मैं इसे डरपोक होना नहीं कहता। आप सब यह सोचें : साधारण लोगों के बीच भी, अधेड़ उम्र या वृद्ध लोग और जिन्हें उच्च शिक्षा प्राप्त है वे भी स्वयं-नियन्त्रण का पालन करते हैं और दूसरों के साथ मतभेद से बचते हैं, हमारे अभ्यासियों का उल्लेख आवश्यक नहीं हैं। इसे डरपोक होना कैसे माना जा सकता है? मैं कहूँगा कि यह महान धैर्य को दर्शाता है और दृढ़ संकल्प होने का परिचायक है। केवल एक अभ्यासी के पास महान धैर्य का यह हृदय हो सकता है। एक कहावत है, "जब किसी साधारण व्यक्ति का अपमान होता है, वह लड़ने के लिए अपनी तलवार निकाल लेगा।" एक साधारण व्यक्ति के लिए, यह स्वाभाविक है यदि तुम मुझे अपशब्द कहोगे तो मैं तुम्हें अपशब्द कहूँगा, और यह कि यदि तुम मुझे मारोगे तो मैं भी तुम्हे वापस मारूँगा।

वह एक साधारण व्यक्ति है। क्या उसे एक अभ्यासी कहा जा सकता है? एक अभ्यासी की भांति, बिना किसी दृढ़ संकल्प और स्वयं-नियंत्रण के, आप इसे नहीं कर सकेंगे।

आप जानते हैं कि प्राचीन समय में हान शिन[5] नाम का एक व्यक्ति था, जो ल्यू बांग[6] का प्रमुख सेनापति होते हुए बहुत सक्षम माना जाता था और देश का आधार स्तम्भ था। उसने वे महान उपलब्धियाँ कैसे प्राप्त कीं? यह कहा जाता था कि हान शिन कम उम्र में भी एक असाधारण व्यक्ति था। हान शिन के बारे में एक कहानी है, जिसके अनुसार उसने किसी की टांगों के बीच से निकलने का अपमान सहा। अपनी युवावस्था में हान शिन को युद्ध कला के अभ्यास की रुचि थी, और युद्ध कला अभ्यासी अक्सर एक तलवार रखते थे। एक दिन जब वह राह पर जा रहा था, एक स्थानीय बदमाश ने उसका रास्ता अपनी कमर पर हाथ रख कर रोका : "तुम यह तलवार क्यों ले जा रहे हो? तुम में किसी को मारने का साहस है? यदि है, तो मेरा सर काटो।" जैसे वह बात कर रहा था, उसने अपना सर आगे कर दिया। हान शिन ने सोचा : "मैं तुम्हारा सर क्यों काटूं?" उस समय में भी, किसी के वध के बारे में सरकार को सूचना दी जाती थी और उसका भुगतान व्यक्ति को अपने जीवन द्वारा करना पड़ता था। कोई किसी को इच्छानुसार कैसे मार सकता था? जब बदमाश ने देखा कि हान शिन ने उसे मारने का साहस नहीं किया, उसने कहा : "यदि तुम मुझे मारने का साहस नहीं करते, तो तुम मेरी टांगों के बीच से रेंग कर निकलोगे।" हान शिन वास्तव में उसकी दोनों टांगों के बीच से रेंग कर निकला। यह दिखाता है कि हान शिन के पास एक महान धैर्य का हृदय था। क्योंकि वह साधारण लोगों से भिन्न था, वह उन महान उपलब्धियों को पूर्ण कर सका। यह एक साधारण व्यक्ति का ध्येय होता है कि व्यक्ति को अपनी बात सिद्ध करने के लिए या चेहरा बचाने के लिए जीना चाहिए। आप सब यह सोचें : अपनी बात को सिद्ध करने या चेहरा बचाने के लिए जीना- क्या यह थकावटपूर्ण नहीं है? क्या यह दु:खदायी नहीं है? क्या यह करने योग्य है? हान शिन तब भी एक साधारण व्यक्ति था। अभ्यासियों की भांति, हमें उससे कहीं बेहतर होना चाहिए। हमारा ध्येय साधारण लोगों के स्तर से ऊपर और आगे उठना है और उच्च स्तरों की ओर प्रयत्न करना है। हम उस परिस्थिति से नहीं गुजरेंगे। किन्तु साधारण लोगों के बीच अपमान और परेशानी जो एक अभ्यासी सहता है वे आवश्यक नहीं कि उससे सरल हों। मैं कहूँगा कि एक-दूसरे के बीच संघर्ष जो आपके शिनशिंग को दृढ़ करते हैं वे किसी भी प्रकार उससे सरल नहीं हैं और उससे

बुरे भी हो सकते हैं- यह भी बहुत कठिन हैं।

साथ ही, एक अभ्यासी को त्याग करने, साधारण लोगों के विभिन्न मोहभावों और इच्छाओं को छोड़ने के लिए भी सक्षम होना चाहिए। इसे सब एक साथ कर पाना असंभव है, इसलिए हम इसे क्रमबद्ध कर सकते हैं। यदि आप इसे आज कर सकें, आप अभी एक बुद्ध होंगे। साधना अभ्यास में समय लगता है, किन्तु आपको ढील नहीं देनी चाहिए। आप कह सकते हैं : "गुरुजी ने कहा है कि साधना अभ्यास में समय लगता है- इसे धीरे-धीरे करते हैं।" यह नहीं चलेगा! आपको अपने साथ दृढ़ होना चाहिए। बुद्ध फा की साधना में, आपको तेजी से आगे की ओर बढ़ने का प्रयत्न करना चाहिए।

आपको द संरक्षित रखने, अपना शिनशिंग बनाए रखने, और मनमर्जी वस्तुएँ न करने के लिए भी सक्षम होना चाहिए। आपको बिन परवाह वह सब नहीं करना चाहिए जो आप चाहते हैं, और आपको अपना शिनशिंग बनाए रखने में सक्षम होना चाहिए। साधारण लोगों के बीच, यह वाक्य अक्सर सुना जाता है : "अच्छे कार्य करने से द जमा होता है।" एक अभ्यासी द को जमा करने के लिए अभ्यास नहीं करता, क्योंकि हम द को संरक्षित करने में विश्वास करते हैं। हम द को संरक्षित करने में क्यों विश्वास करते हैं? यह इसलिए क्योंकि हमने इस परिस्थिति को देखा है : द को जमा करना वह है जिसमें साधारण लोग विश्वास करते हैं, क्योंकि वे द जमा करना और अच्छे कार्य करना चाहते हैं जिससे अगले जन्म में अच्छा जीवन जी सकें। यदि आप साधना अभ्यास में सफल होते हैं, आपको ताओ की प्राप्ति होगी और आपके अगले जीवन का कोई विषय नहीं रहेगा। जब हम यहाँ द को संरक्षित करने की बात करते हैं, इसका एक अलग अर्थ है। अर्थात, हमारे शरीरों के ये दो पदार्थ एक जीवनकाल में जमा नहीं होते हैं- वे एक सुदूर काल से जमा होते आ रहे हैं। भले ही आप पूरे नगर में साइकिल चला कर घूमें, हो सकता है आपका सामना करने के लिए किसी अच्छे कार्य से न हो। भले ही आप हर रोज इस प्रकार वस्तुओं को खोजें, हो सकता है आपको ऐसे अवसर न मिलें।

इसका एक और अर्थ भी निकलता है : द जमा करने के प्रयत्न में, आप सोच सकते हैं कि अमुक एक अच्छा कार्य है, किन्तु यदि आप इसे करते हैं, हो सकता है यह एक बुरा कार्य निकले। यदि आप किसी ऐसे कार्य में विघ्न डालते हैं जो आप समझते हैं एक बुरी वस्तु है, हो सकता है यह एक अच्छी निकले। क्यों? यह इसलिए क्योंकि आप

इसका कर्म संबंध नहीं देख सकते। साधारण लोगों के कार्य-कलापों को कानून नियन्त्रित करते हैं, जो कोई समस्या नहीं है। एक अभ्यासी होना दिव्य है, इसलिए एक दिव्य व्यक्ति की भांति, आपको अपना आचरण दिव्य नियमों के अनुसार करना चाहिए न कि स्वयं को साधारण लोगों के नियमों से मापना चाहिए। यदि आप किसी विषय का कर्म संबंध नहीं जानते, शायद आप इसे अनुचित प्रकार से संभालेंगे। इसलिए, हम वूवेई सिखाते हैं, और आपको कुछ केवल इसलिए नहीं करना चाहिए क्योंकि आप चाहते हैं। कुछ लोग कहते हैं : "मैं केवल बुरे लोगों को अनुशासित करना चाहता हूँ।" मैं कहूँगा कि अच्छा होगा आप एक पुलिस अधीक्षक बन जाएँ। किन्तु हम यह नहीं कह रहे हैं जब आपका सामना किसी हत्या या लूटमार से हो तो आप उन वस्तुओं से दूर रहें। मैं सभी को बता रहा हूँ कि जब पारस्परिक मतभेद होते हैं या जब कोई किसी और को मारता या पीटता है, हो सकता है कि ये लोग अतीत में एक-दूसरे के ऋणि रहे हों, और वे ऋण का भुगतान कर रहे हैं। यदि आप इसे रोकने के लिए कदम बढ़ाते हैं, वे ऋण का भुगतान नहीं कर पाएँगे और उन्हें अगले समय तक दोबारा प्रतीक्षा करनी होगी। इसका अर्थ है कि यदि आप कर्म संबंध नहीं देख सकते, आप सरलता से बुरे कार्य कर सकते हैं और परिणामस्वरूप द की हानि कर सकते हैं।

इससे कोई अन्तर नहीं पड़ता यदि कोई साधारण व्यक्ति साधारण लोगों के कार्य-कलापों में सम्मिलित हो, क्योंकि वह वस्तुओं को मापने के लिए साधारण लोगों के नियमों का प्रयोग करेगा। आपको वस्तुओं को देखने के लिए दिव्य नियमों का प्रयोग करना चाहिए। यदि आप किसी हत्या या लूट-मार को रोकने में मदद नहीं करते जब आप इसे देखते हैं तो यह एक शिनशिंग विषय है। अन्यथा आप कैसे प्रदर्शित करेंगे कि आप एक अच्छे व्यक्ति हैं? यदि आप किसी हत्या या लूट-मार को रोकने में मदद नहीं करते, आप और किसमें सम्मिलित होंगे? किन्तु यहाँ यह बताना आवश्यक है : इन वस्तुओं का वास्तव में हमारे अभ्यासियों से कोई संबंध नहीं है। हो सकता है वे आपके सामने आने के लिए व्यवस्थित न हों। हम कह चुके हैं कि द को संरक्षित करना आपको गलतियाँ करने से बचाता है। हो सकता है यदि आप कुछ करते हैं, आप कोई बुरा कार्य कर दें, और तब आपको द की हानि होगी। एक बार द की हानि करने पर, आप अपने स्तर में कैसे सुधार कर सकते हैं? आप अपना उच्चतम ध्येय कैसे प्राप्त कर सकते हैं? इसमें यह विषय सम्मिलित है। इसके अतिरिक्त, व्यक्ति का ज्ञानोदय का गुण अच्छा

होना चाहिए। अच्छा जन्मजात गुण व्यक्ति को अच्छा ज्ञानोदय का गुण प्रदान करा सकता है। वातावरण का प्रभाव भी असर डाल सकता है।

हमने यह भी कहा है कि यदि हममें से प्रत्येक अपनी आन्तरिक प्रकृति की साधना करे, बुरे कार्यों के कारणों को देखने के लिए स्वयं अपने शिनशिंग की जांच करे जिससे अगली बार बेहतर कर सके, और कोई भी कदम उठाने से पहले औरों का ध्यान रखे, मानव समाज बेहतर हो जाएगा और नैतिक आदर्श का दोबारा उदभव होगा। आध्यात्मिक सभ्यता भी बेहतर बनेगी, और सामाजिक सुरक्षा भी। शायद कोई पुलिस भी नहीं होगी। किसी को अनुशासित करने की आवश्यकता नहीं रहेगी, क्योंकि हर कोई स्वयं को अनुशासित करेगा और अपनी आन्तरिक प्रकृति की जांच करेगा। क्या आप नहीं कहेंगे कि यह महान होगा? आप जानते हैं कि कानून और परिपूर्ण और उत्कृष्ट होते जा रहे हैं। किन्तु ऐसे लोग क्यों हैं जो अब भी बुरे कार्य करते हैं? वे कानून का पालन क्यों नहीं करते? यह इसलिए क्योंकि आप उनके हृदयों को शासित नहीं कर सकते। जब उन्हें नहीं देखा जाता, वे तब बुरे कार्य करेंगे। यदि हर कोई आन्तरिक प्रकृति का संवर्धन करता है, तो यह पूरी तरह भिन्न होगा। तब आपके लिए न्याय सुनिश्चित करने की कोई आवश्यकता नहीं होगी।

यह फा केवल इस स्तर तक सिखाया जा सकता है। उसे प्राप्त करना जो उच्च स्तरों पर है आपकी अपनी साधना पर निर्भर है। कुछ लोगों द्वारा उठाए प्रश्न अधिक विशिष्ट हो गए हैं। यदि मैं आपके जीवन में सभी प्रश्नों को समझा देता हूँ, आपको साधना के लिए क्या बचेगा? आपको स्वयं साधना करनी चाहिए और ज्ञानोदय करना चाहिए। यदि मैं आपको सब कुछ बता देता हूँ, आपको साधना के लिए कुछ शेष नहीं बचेगा। सौभाग्यवश, दाफा को सार्वजनिक कर दिया गया है, और आप दाफा के अनुसार वस्तुओं को कर सकते हैं।

* * * * * * *

मैं सोचता हूँ कि फा को सिखाने का समय समापन तक पहुँच गया है। इसलिए, मैं हर किसी के लिए सच्ची वस्तुओं को छोड़ कर जाना चाहता हूँ जिससे भविष्य के साधना अभ्यास में सभी के मार्गदर्शन के लिए फा रहे। इस फा को सिखाने के पूरे क्रम

के दौरान, मैंने वस्तुओं को हर किसी और समाज के प्रति उत्तरदायी होने के नियम के अनुसार करने का प्रयत्न किया है। वास्तव में, हमने इस नियम का पालन किया है। जहाँ तक परिणाम की बात है, मैं कोई टिप्पणी नहीं करूँगा। यह जनता के जांचने के लिए है। मेरी इच्छा इस दाफा को सार्वजनिक करना तथा हमारे और लोगों को इसका लाभ दिलाना है, जिससे वे लोग सक्षम हो सकें जो फा का अनुसरण करके अपने साधना अभ्यास में आगे बढ़ना चाहते हैं और वास्तव में साधना करना चाहते हैं। फा को सिखाने के समय ही, हमने मनुष्य होने के नियम भी समझाये हैं, और आशा करते हैं कि कक्षा के बाद यदि आप साधना अभ्यास करने के लिए इस दाफा का पालन न कर सकें, आप कम से कम एक अच्छे व्यक्ति होंगे। इससे हमारे समाज को लाभ होगा। वास्तव में, आप पहले ही जानते हैं कि एक अच्छा व्यक्ति कैसे बने। कक्षा के बाद, आप भी एक अच्छे व्यक्ति होंगे।

फा के सिखाने के क्रम के दौरान, ऐसी वस्तुएँ भी हुई हैं जो सुगम नहीं रही हैं, और विभिन्न प्रकार के विघ्न बहुतायत में हुए हैं। मेजबान संगठन, विभिन्न व्यावसायों के प्रशासकों, और कर्मचारी सदस्यों के प्रयत्नों द्वारा, हमारी कक्षाएँ बहुत सफल रही हैं।

जो कुछ मैंने अपने व्याख्यानों में बताया है वह हर किसी का उच्च स्तरों की ओर मार्गदर्शन करने के लिए है। अतीत में, किसी ने भी इन वस्तुओं को अपनी शिक्षाओं में नहीं सिखाया। जो हमने सिखाया है वह बहुत स्पष्ट है और इसमें आधुनिक विज्ञान और मानव शरीर के समकालीन विज्ञान को सम्मिलित किया है। इसके अतिरिक्त, जो सिखाया गया है वह एक बहुत ऊँचे स्तर पर है। यह प्राथमिक रूप से भविष्य में हर किसी को वास्तव में फा प्राप्त कराने और साधना अभ्यास द्वारा उत्थान कराने के उद्देश्य से है- मेरी यह इच्छा है। फा और गोंग को सिखाने के क्रम के दौरान, अनेक लोगों ने फा को बहुत अच्छा पाया है, किन्तु अनुसरण करने में बहुत कठिन। वास्तव में, मैं सोचता हूँ यह व्यक्ति पर निर्भर करता है कि यह कठिन है या नहीं। एक साधारण व्यक्ति के लिए जो साधना अभ्यास नहीं करना चाहता, वह साधना अभ्यास को अत्यधिक कठिन, अविश्वसनीय, या असंभव पायेगा। एक साधारण व्यक्ति की भांति, वह साधना का अभ्यास नहीं करना चाहता और उसे बहुत कठिन पायेगा। लाओ ज़ ने कहा था : "जब एक बुद्धिमान व्यक्ति ताओ को सुनता है, यह व्यक्ति इसका परिश्रम के साथ अभ्यास करेगा। जब एक साधारण व्यक्ति इसे सुनता है, यह व्यक्ति

इसका कभी-कभार अभ्यास करेगा। जब एक मूर्ख व्यक्ति इसे सुनता है, यह व्यक्ति इस पर जोर से हँसेगा। यदि यह व्यक्ति इस पर जोर से नहीं हँसता है, यह ताओ नहीं है।" एक सच्चे अभ्यासी के लिए, मैं कहूँगा कि यह बहुत सरल है और ऐसा कुछ नहीं है जो अप्राप्य हो। वास्तव में, कई अनुभवी अभ्यासी जो यहाँ बैठे हैं या जो उपस्थित नहीं है पहले ही अपने साधना अभ्यास में बहुत ऊँचे स्तरों पर पहुँच चुके हैं। मैंने आपको ऐसा नहीं बताया था, जिससे आपको कोई मोहभाव उत्पन्न न हो या आप शिथिल न पड़ जाएँ। वह आपके गोंग सामर्थ्य के विकास को प्रभावित कर सकता था। एक सच्चे दृढ़ निश्चयी अभ्यासी की भांति, व्यक्ति सब कुछ सह सकता है और विभिन्न निजी लाभों के सामने कोई भी मोहभाव छोड़ सकता है या उसकी कम परवाह कर सकता है। जब तक वह इसे कर सकता है, यह कठिन नहीं होगा। वे लोग इसे कठिन पाते हैं जो उन वस्तुओं को नहीं छोड़ सकते। साधना अभ्यास स्वयं कठिन नहीं है, और न ही अपने स्तर में सुधार करना स्वयं में कठिन है। यह इसलिए क्योंकि वे मानव मन को नहीं छोड़ पाते वे इसे कठिन कहते हैं। यह इसलिए क्योंकि व्यावहारिक लाभ के सामने किसी वस्तु को छोड़ना बहुत कठिन होता है। लाभ यहाँ सामने हैं, इसलिए आप इन मोहभावों को कैसे छोड़ सकते हैं? यह वास्तव में इस कारण है कि व्यक्ति इसे कठिन पाता है। जब कोई पारस्परिक मतभेद होता है, यदि आप इससे निपटने में धैर्य का अभ्यास नहीं कर पाते या स्वयं को एक अभ्यासी नहीं मान पाते, मैं कहूँगा कि यह अस्वीकार्य है। जब विगत में मैं साधना करता था, अनेक महान गुरुओं ने मुझे ये शब्द बताये, और उन्होंने कहा : "जब इसे सहन करना कठिन हो, आप इसे सहन कर सकते हैं। जब इसे करना असंभव हो, आप इसे कर सकते हैं।" वास्तव में, यह इसी प्रकार है। जब आप घर वापस पहुँचेंगे आप इसे एक बार करने का प्रयत्न क्यों नहीं करते। जब आप किसी वास्तविक कठिनाई या विपत्ति से जूझ रहे हों, आप इसका प्रयत्न करें। जब इसे सहन करना कठिन हो, सहन करने का प्रयत्न करें। जब यह असंभव दिखाई पड़ता है और असंभव कहा जाता है, प्रयत्न करें और देखें कि क्या यह संभव है। यदि आप वास्तव में इसे कर सकते हैं, आप वास्तव में पाएंगे : "सरकण्डे के अन्धकारमय पेड़ों से गुजर कर, उज्जवल पुष्प आएंगे और आगे एक और गांव पड़ेगा!"

क्योंकि मैं इतना अधिक बोल चुका हूँ, हर किसी के लिए बतायी गयी इतनी सारी वस्तुओं को याद रखना बहुत कठिन होगा। मैं मुख्यत: कुछ आवश्यकताएँ रखूँगा:

मैं आशा करता हूँ कि आपमें से हर कोई भविष्य के साधना अभ्यास में स्वयं को एक अभ्यासी मानेगा और सच्चे रूप से अपने साधना अभ्यास को निरन्तर रखेगा। मैं आशा करता हूँ कि अनुभवी और नए अभ्यासी दोनों दाफा में साधना कर सकेंगे और इसमें सफल हो सकेंगे! मैं आशा करता हूँ कि घर जाने के बाद हर कोई सच्चे साधना अभ्यास के लिए अपने समय का सदुपयोग करेगा।

---

1. भौतिकवाद — एक दार्शनिक सिद्धांत जो मानता है कि भौतिक पदार्थ का अपनी क्रियाओं और गतियों सहित केवल एक मात्र सत्य है।
2. गोंग-शरीर (गोंगशन) — गोंग से बना शरीर।
3. शनश्यो — तांग राजवंश में ज़ेन बुद्धमत की उत्तरी विचारधारा के संस्थापक।
4. तांगशान — हेबेई प्रान्त का एक नगर।
5. हान शिन — ल्यू बांग का एक प्रमुख सेनापति।
6. ल्यू बांग — हान राजवंश का संस्थापक और शासक (206 बी.सी.- 23 ए.डी.)।

....

सतही रूप से ज़ुआन फालुन भाषा के संदर्भ में बहुत आकर्षक नहीं है। हो सकता है यह आधुनिक व्याकरण के अनुरूप भी न हो। यदि मैं इस दाफा कि पुस्तक को लिखते समय आधुनिक व्याकरण का प्रयोग करता, तो एक गंभीर समस्या हो सकती थी जिसमें पुस्तक की भाषा संरचना तो व्यवस्थित और आकर्षक होती, किंतु इसमें और अधिक प्रगाढ़ और उच्च सामग्री का समावेश न हो पाता। यह इसलिये क्योंकि आधुनिक, व्यवस्थित शब्दावली विभिन्न उच्च स्तरों पर दाफा का मार्गदर्शन व्यक्त नहीं कर सकती, न ही यह अभ्यासियों के मूल शरीर और गोंग में रूपांतरण या अन्य कोई ऐसा मूल परिवर्तन ला सकती।

....

ली होंगजी
जनवरी 5, 1996

स्थानीय संपर्क

फालुन दाफा के अभ्यास स्वयंसेवकों द्वारा निःशुल्क सिखाये जाते हैं। इसके लिये कोई सदस्यता नहीं है और न ही कोई दान स्वीकार किया जाता है। अभ्यासियों को आपकी मदद करने में प्रसन्नता होगी।

अहमदाबाद	7021628166	कोच्ची	9072707240
बैंगलोर	9886500273	मुंबई	9619749428
	9341255561		9920801226
भोपाल	9916135350	नागपुर	9822569386
चेन्नई	9840125536	पुद्दुचेरी	9944025970
दिल्ली क्षेत्र	9871679992	पुणे	9423215580
हैदराबाद	9885476390	वाराणसी	9935529619
जमशेदपुर	9939500428	ऊधमपुर	9596748161
कोलकाता	9143066856	अन्य शहर	9491047043
	9821381501		

फालुन दाफा के निःशुल्क ऑनलाइन वर्कशॉप में भाग लेने के लिए रजिस्टर करें: www.LearnFalunGong.in

पुस्तकें, ऑडियो, वीडियो तथा सभी सामग्री फालुन दाफा वेबसाइट पर भी उपलब्ध हैं:
www.falundafa.org
www.falundafaindia.org